शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी

पर्दे के बारे में सुवाल जवाब

(मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा)

Parde ke Bare me Suwal Jawab (HINDI)

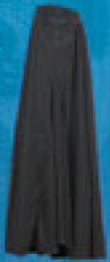

इस किताब में जगह ब जगह इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िलों
और
म-दनी कामों की म-दनी बहारें ब-र-कतें लुटा रही है

- औ़रत का किस किस से पर्दा है ?
- शोहर बाहर न निकलने दे तो ...?
- मियां का ह़क़ ज़ियादा या मां बाप का ?
- चादर और चार दीवारी की ता'लीम किस ने दी?
- जश्ने विलादत की ब-र-कत से मेरी ज़िन्दगी बदल गई
- इ़श्के़ मजाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब
- शादी कितनी उ़म्र में होनी चाहिये ?
- कोर्ट की शादी
- मियां बीवी का एक दूसरे पर शक करना कैसा ?

मक्त-बतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)

मिलेनेयम हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

पर्दे के बारे में सुवाल जवाब

येह किताब **(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

ड़ुन्वान	सफ़ह़ा	ड़ुन्वान	सफ़ह़ा

इस किताब में जगह ब जगह इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िलों और म-दनी कामों की म-दनी बहारें ब-र-कतें लुटा रही हैं

पर्दे के बारे में सुवाल जवाब

मुअल्लिफ़ :

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी
ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नाम किताब : **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**

मुअल्लिफ़ : शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सिने त़बाअ़त : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1435 सि. हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखे़ं

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/o) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपूर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 09343268414

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

"या फ़ातिमा बिन्ते मुस्तफ़ा" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से येह किताब पढ़ने की 15 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ٥ या'नी "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ इख़्लास के साथ मसाइल सीख कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ह़क़दार बनूंगी **﴾2﴿** ह़त्तल वुस्अ़ इस का बा वुज़ू और **﴾3﴿** क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगी **﴾4﴿** इस के मुत़ा-लए़ के ज़रीए़ फ़र्ज़ उ़लूम सीखूंगी **﴾5﴿** जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "तो ऐ लोगो ! इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।" (پ١٤ النّحل ٤٣) पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगी **﴾6﴿** (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगी **﴾7﴿** (ज़ाती नुस्ख़े के) याद दाश्त वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगी **﴾8﴿** जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढूंगी **﴾9﴿** ज़िन्दगी भर अ़मल करती रहूंगी **﴾10﴿** जो इस्लामी बहनें नहीं जानतीं उन्हें सिखाऊंगी **﴾11﴿** जो इ़ल्म में बराबर होगी उस से मसाइल में तकरार करूंगी **﴾12﴿** दूसरी इस्लामी बहनों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगी **﴾13﴿** (कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगी **﴾14﴿** इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगी **﴾15﴿** किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को लिख कर मुत्त़लअ़ करूंगी। (ज़बानी कहना या कहलवाना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मर्द का आज़ाद औ़रत अज्नबिय्या को देखना	29
औ़रत का लफ़्ज़ी मा'ना	1		
क्या आज कल भी पर्दा ज़रूरी है ?	2	चेहरा देखने की इजाज़त की सूरत में कान और गरदन देखने का मस्अला	31
ज़मानए जाहिलिय्यत की मुद्दत कितनी ?	3		
बे पर्दगी का वबाल	4	बे पर्दगी से तौबा	31
झांझन से मुराद कौन सा ज़ेवर है ?	5	जिस से निकाह़ करना है उस को देखना	34
हर घुंगुरू के साथ शैत़ान होता है	6	अगर देखना मुम्किन न हो तो क्या करना चाहिये	35
झांज वाले घर में फ़िरिश्ते नहीं आते	6	औ़रत का मर्द से इ़लाज करवाना	36
ज़ेवर की आवाज़ का हु़क्म	8	कमर का दर्द और म-दनी क़ाफ़िला	37
औ़रत का शोहर के लिये ज़ेवर पहनना	9	औ़रतों के कपड़ों की त़रफ़ मर्द का देखना	39
शहन्शाहे मदीना का दीदार नसीब हो गया	10	दामन का धागा	41
सित्र के बारे में सुवाल जवाब	12	घर से बाहर निकलने की एह़तियातें	42
सित्र किसे कहते हैं ?	12	औ़रत का किस किस से पर्दा है ?	44
मर्द का सित्र कहां से कहां तक है ?	13	मह़ारिम की क़िस्में	44
ह़ाजी साह़िबान और नीकर पोश	14	दूध के रिश्ते में पर्दा करना मुनासिब है	45
औ़रत का सित्र	15	न-सबी मह़ारिम में कौन कौन शामिल हैं ?	46
नमाज़ में थोड़ा सा सित्र खुला हो तो.....?	16	बा'ज़ सुसर पुर ख़त़र होते हैं	47
मैं नमाज़ नहीं पढ़ती थी	17	देवर भाभी का पर्दा	48
दिल ख़ुश करने की फ़ज़ीलत	19	सुसराल में किस त़रह़ पर्दा करे ?	50
सित्र की क़िस्मे दुवुम के चार ह़िस्से	20	पर्दादार के लिये आज़माइशें	52
मर्द का मर्द के लिये सित्र	21	आसिया की दर्दनाक आज़माइश	55
बच्चे का सित्र	22	मर्ह़ूमा अम्मीजान ने म-दनी काम करने की इजाज़त दिलवाई	57
बहुत छोटे बच्चे की रान को छूना कैसा ?	22		
अम्रद को देखने का हु़क्म	23	म-दनी काम की तड़प मरह़बा !	59
औ़रत का औ़रत के लिये सित्र	24	चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	59
औ़रत का अजनबी मर्द को देखना	24	घर में पर्दे का ज़ेह्न कैसे बने ?	60
काफ़िरा दाई से ज़चगी करवाना	25	मा तह़्त के बारे में पूछा जाएगा	61
मर्द के लिये औ़रत का सित्र	26	छोटे भाई की इन्फ़िरादी कोशिश	62
मर्द का अपनी ज़ौजा को देखना	27	दय्यूस की ता'रीफ़	64
मर्द का अपने मह़ारिम को देखना	27	अगर औ़रत ना फ़रमानी करे तो.....?	67
मर्द का मां के पाउं दबाना	29	क्या मुंह बोले भाई बहन का पर्दा है ?	67

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
ले पालक बच्चे का हु़क्म	68	ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है	109
बच्ची गोद लेना कैसा ?	69	दुन्या बहुत आगे निकल चुकी है !	111
ले पालक से पर्दा जाइज़ होने की सूरत	70	शोहर बाहर न निकलने दे तो......?	111
लड़का कब बालिग़ होता है ?	71	7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	113
लड़की कब बालिग़ा होती है ?	72	मियां का ह़क़ ज़ियादा या मां बाप का ?	116
कितनी उ़म्र के लड़के से पर्दा है ?	72	शोहर पर बीवी के हु़क़ूक़	117
काफ़िरा औ़रत से पर्दा	73	घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?	118
आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा	76	2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	119
फ़ाजिरा औ़रत से पर्दा	77	नमक ज़ियादा डाल दिया	120
मेरी ज़िन्दगी का मक़्सद	78	बीवी के लिये जन्नत की बिशारत	121
883 इज्तिमाआ़त	80	इस्लामी बहनों का म-दनी सेहरा	122
म-दनी इन्आ़मात किस के लिये कितने ?	81	सच्ची निय्यत की ब-र-कत से गुमशुदा हार मिल गया	124
आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा	82		
क्या उस्ताद से भी पर्दा है ?	83	अच्छी निय्यत के फ़ज़ाइल	126
पीर और मुरी-दनी का पर्दा	84	गुमशुदा चीज़ मिलने के लिये चार अवराद	127
औ़रत ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती	84	ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब औ़रत का निकाह़ से बाज़ रहना कैसा ?	127
ग़ैर औ़रतों से हाथ मिलाने का अ़ज़ाब	85		
औ़रत का क़ुरआन सीखने के लिये घर से निकलना	86	क्या निकाह़ न कर के औ़रत गुनहगार होगी	129
इस्तिक़ामत का फल	86	बे इज़्ने शोहर घर से निकलने का वबाल	130
हर बात पर एक साल की इ़बादत का सवाब	88	नथनों का ख़ून पीप चाटे तब भी......	131
औ़रत का पीर से इ़ल्म ह़ासिल करना	89	मैं कभी शादी न करूंगी	132
औ़रत पीर से बातचीत करे या न ?	90	मैके वाले मोह़तात़ रहें	134
पीर और मुरी-दनी की फ़ोन पर बातचीत	90	शोहर बे पर्दगी का हु़क्म दे तो......?	135
औ़रत के लिये फ़ोन वुसूल करने का त़रीक़ा ?	91	बच्चों का पहला मक्तब मां की गोद है	136
बद नसीब आ़बिद और जवान लड़की	93	2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	137
शह्वत परस्ती कुफ़्र तक ले गई	97	औ़रत शोहर से इ़ल्म ह़ासिल करे	137
आ़लिम ज़ादी अगर बे पर्दा हो तो ?	98	औ़रत का आ़लिमा के पास जा कर पढ़ना	139
आ़लिम बाप का दर्दनाक अन्जाम	99	इ़ल्म सीखने का ज़रीआ़ सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी हैं	140
औ़रत उ़म्रह करे या न करे ?	100	ज़ियारते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	141
उम्मुल मुअमिनीन उ़म्र भर घर से बाहर न निकलीं	102	आक़ा उम्मत की ह़ालत से बा ख़बर रहते हैं	143
औ़रत को मस्जिद की ह़ाज़िरी मन्अ़ होने की वज्ह	103	इजाज़त के बिग़ैर इज्तिमाअ़ के लिये घर से निकलना	144
15 दिन के बा'द जब क़ब्र खुली....	107	मर्द के पास औ़रत का पढ़ना	145

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
औ़रत आ़लिम का बयान सुनने के लिये निकल सकती है या नहीं ?	146	हुक्काम की मुला-ज़मत	178
		आज़्माइश में न डरें	179
जन्नत में ले जाने वाले आ'माल	147	नाविलें पढ़ना कैसा ?	179
दा'वते इस्लामी का 99% काम इन्फ़िरादी कोशिश से है	149	मैं फ़ेशन एबल थी	182
ख़त़रनाक ज़हरीला सांप	151	मुस्कुरा कर बात करना सुन्नत है	183
क्या पर्दा तरक़्क़ी में रुकावट है ?	152	क्या आज कल पर्दा ज़रूरी नहीं ?	185
ह़क़ीक़त में काम्याब कौन ?	154	आप तो घर के आदमी हैं !	185
जहन्नम में औ़रतों की कसरत	155	मर्द के हाथ से चूड़ियां पहनना	186
बे ग़ैरती की इन्तिहा	156	पर्दा करने में मुआ़-शरे से डर लगता है	187
सत्तर70 हज़ार ह़रामी बच्चे	158	ह़िकायत	187
चादर और चार दीवारी की ता'लीम किस ने दी ?	159	क्या घर में मय्यित हो जाए तब भी पर्दा ज़रूरी है ?	188
औ़रत की मुला-ज़मत के बारे में सुवाल जवाब	160	बेटा खोया है ह़या नहीं खोई	189
घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं ?	161	बेटी के गले का दर्द दूर हो गया	190
एयर होस्टेस की नोकरी करना कैसा ?	162	ग़ैर मह़रमा से ता'ज़ियत कर सकते हैं या नहीं ?	191
मर्द का एयर होस्टेस से ख़िदमत लेना कैसा ?	162	ग़ैर मह़रम की इ़यादत करना कैसा ?	191
औ़रत का तन्हा सफ़र करना कैसा ?	163	ज़चगी के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब	192
औ़रत का हवाई जहाज़ में तन्हा सफ़र करना कैसा ?	165	काफ़िरा दाई से ज़चगी करवाने का मस्अला	192
औ़रत का ब ग़-रज़े इ़लाज गली में टहलना कैसा ?	167	क्या दिल का पर्दा काफ़ी है ?	193
हम अब सिर्फ़ म-दनी चेनल देखते हैं	167	ज़ेह्नी मरीज़ तन्दुरुस्त हो गया	196
नमाज़ बुराइयों से बचाती है	168	पर्दा करने में झिजक होती हो तो......	198
इत्तिबाए़ न-बवी में ख़ुश्क टहनी हिलाई	169	बीबी फ़ाति़मा के कफ़न का भी पर्दा !	199
क्या औ़रत डोक्टर के पास जा सकती है ?	171	बीबी फ़ाति़मा का पुल सिरात़ पर भी पर्दा	201
औ़रत का मर्द से इन्जेक्शन लगवाना	171	मिलन-सारी की ब-र-कतें	202
मर्द का नर्स से इन्जेक्शन लगवाना	171	औ़रात की मज़ारात पर ह़ाज़िरी	204
सर में लोहे की कील	172	औ़रत जन्नतुल बक़ीअ़ में ह़ाज़िरी दे या नहीं ?	205
नर्स की नोकरी करना कैसा ?	172	औ़रत की रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी	206
ज़ख़्मियों की ख़िदमात और सह़ाबिय्यात	172	औ़रत मदीने में ज़ियारतें कर सकती हैं या नहीं	209
नर्स की नोकरी के जवाज़ की एक सूरत	173	औ़रत मस्जिदे न-बवी में ए'तिकाफ़ करे या न करे ?	209
अब्बू को बैरूने मुल्क नोकरी मिल गई	174	सह़ाबिय्यात के पर्दे की कैफ़िय्यात	210
मख़्लूत़ ता'लीम का शर-ई हुक्म	176	ह़ालते एह़राम में भी चेहरे का पर्दा	210
औ़रत और कोलेज	176	अन्सारिय्यात की सियाह चादरें	211
पर्दा नशीन लड़की की शादी नहीं होती	177	तहबन्द फाड़ कर दुपट्टे बना लिये	212

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
पर्दे की एह़तियात़ ! سُبْحٰنَ الله !!	212	ग़ैरे आ़लिम के बयान का त़रीक़ा	251
दुपट्टे बारीक न हों	213	मुबल्लिग़ीन के लिये अहम हिदायत	252
बारीक दुपट्टा फाड़ दिया	214	इस्लामी बहनें ना'तें पढ़ें या नहीं ?	254
अ़हदे रिसालत में ह़िजाब आज़ाद मुसल्मान औ़रत की अ़लामत था	215	इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें	255
		औ़रत के राग की आवाज़	256
हर ह़ाल में पर्दा	216	मेरी आवाज़ कांपती थी	257
बीवी घर से बाहर निकली ही क्यूं !	217	बरआ-मदे से एक दूसरी को पुकारना कैसा ?	259
औ़रत को छेड़ा तो जंग छिड़ गई	217	बच्चों को डांटने की आवाज़	260
औ़रत और शॉपिंग सेन्टर	219	औ़रत ना'तों की विडियो केसिट देखे या नहीं ?	261
औ़रत को घर में क़ैद रखो !	219	औ़रत ना'तों की केसिट सुने या नहीं ?	261
सौदा सुलफ़ मर्द ही लाएं	220	इस्लामी बहनें ना'त ख़्वानों की केसिटें न सुनें	262
औ़रत के टेक्सी में बैठने के बारे में सुवाल जवाब	222	क्या इस्लामी बहनें मर्ह़ूम ना'त ख़्वान की ना'तें सुन सकती हैं ?	263
घर के नोकर से औ़रत की बे तकल्लुफ़ी का ह़ुक्म	228		
इस्लामी बहन और राहे ख़ुदा में सफ़र	228	मुझे म-दनी चेनल ने म-दनी बुरक़अ़ पहना दिया !	264
म-दनी क़ाफ़िलों की 6 बहारें	230	इस्लामी बहनों के म-दनी चेनल देखने का शर-ई़ मस्अला	265
गुर्दे का दर्द दूर हो गया	231		
मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी	232	औ़रत आ़मिल के पास जाए या नहीं ?	267
ब्लड प्रेशर की मरीज़ा तन्दुरुस्त हो गई	234	औ़रत का मेकअप करना कैसा ?	268
100 घरों से बलाएं दूर	234	लिबास के बा वुजूद नंगी	268
सुकून की नींद	235	दिखावे के लिये ज़ेवरात पहनना	270
गरदन का दर्द काफ़ूर हो गया	237	औ़रत ख़ुश्बू लगाए या न ?	271
नाबीना बच्चे की ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायत	238	औ़रत ख़ुश्बू लगा कर बाहर न निकले	272
मुझे क़ै हो जाती थी	240	ख़ुश्बू लगाने वाली औ़रत की ह़िकायत	273
सोने का गुमशुदा बुन्दा मिल गया	241	पुर कशिश बुरक़अ़	273
जन्नत की भी क्या शान है !	242	म-दनी बुरक़अ़	274
इस्लामी बहन और नेकी की दा'वत	243	इस्लामी बहनों को तम्बीह	275
आवाज़ कैसे खुली !	244	मह़ल्ले में बुरक़अ़ खोल देना कैसा ?	276
इस्लामी बहनों का म-दनी मश्वरा	247	म-दनी बुरक़ए़ में गरमी लगती हो तो....?	276
दौराने इ़द्दत सुन्नतें सीखने के लिये निकलना कैसा ?	247	आक़ा तपते हुए सह़रा में	277
इस्लामी बहनों का इज्तिमाअ़ करना कैसा ?	247	बालों के बारे में सुवाल जवाब	278
ग़ैरे आ़लिम को बयान करना ह़राम है	249	बालों के बारे में एह़तियातें	279
आ़लिम की ता'रीफ़	250	औ़रत का सर मुंडवाना	279

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
औ़रत का मर्दाना बाल कटवाना	280	एक आंख वाला आदमी	302
वोह कफ़न फाड़ कर उठ बैठी	280	मैं गुनाहों की दलदल से निकल आई	306
कमज़ोर बहाने	281	दुआ़ के फ़ज़ाइल	308
औ़रत का दरज़ी को नाप देना कैसा ?	283	किसी के घर में मत झांकिये	310
भाई और भाभी की इन्फ़िरादी कोशिश	284	आंख फोड़ डालने का इख़्तियार	310
घर वालों की इस्लाह़ कीजिये	286	गुफ़्त-गू में निगाह कहां हो ?	312
अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं	286	निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की अदाएं	312
हिजड़े से भी पर्दा	287	जश्ने विलादत की ब-र-कत से मेरी ज़िन्दगी बदल गई	314
मुख़न्नस किसे कहते हैं ?	287		
हिजड़ा पन से बचने की ताकीद	288	जश्ने विलादत देख कर क़बूले इस्लाम	316
नक़्ली हिजड़ा	288	इ़श्क़े मजाज़ी के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब	318
जो मुख़न्नस न हो उस को हिजड़ा कह कर पुकारना कैसा ?	289	आ़शिक़ व मा'शूक़ शादी कर सकते हैं या नहीं ?	320
		ग़ैर शर-ई इ़श्क़े मजाज़ी की तबाह कारियां	321
मुख़न्नस को हिजड़ा कह कर बुलाना	290	तीन जवान बहनों की इज्तिमाई ख़ुदकुशी	323
हिजड़ों का किरदार	290	ना कामाने इ़श्क़ की ख़ुदकुशियां	324
तीसरी जिन्स या'नी ख़ुन्सा के बारे में अहम मा'लूमात	292	इ़श्क़े मजाज़ी से बचने का त़रीक़ा	324
		शादी कितनी उ़म्र में होनी चाहिये ?	325
एक हीजड़े की मग़्फ़िरत की ह़िकायत	294	जिन्न अगर औ़रत पर आ़शिक़ हो जाए तो...?	328
दुल्हन के क़दमों का धोवन छिड़क्ना कैसा ?	295	जिन्न अगर औ़रत को ज़बर दस्ती तोह़फ़ा दे तो...?	328
नज़र के बारे में सुवाल जवाब	296	आ़शिक़ व मा'शूक़ के तोह़फ़े का हुक्मे शर-ई	328
4 अह़ादीसे मुबा-रका	297	ना जाइज़ तोह़फ़े लौटाने का त़रीक़ा	329
नज़र फैर लो	297	अम्रद को तोह़फ़ा देना कैसा ?	330
जान बूझ कर नज़र मत डालो	297	औ़रत ना मह़रम को तोह़फ़ा दे सकती है या नही ?	330
नज़र की ह़िफ़ाज़त की फ़ज़ीलत	298	ज़ुलैख़ा की दास्तान	334
इब्लीस का ज़हरीला तीर	298	आ़शिक़ाने नादान का रद हो गया !	337
आंखों में आग भर दी जाएगी	298	बुरक़अ़ पोश आ'राबिय्या	339
आग की सलाई	299	इ़श्क़बाज़ी से पीछा छुड़ाने का रूह़ानी इ़लाज	343
नज़र दिल में शह्वत का बीज बोती है	299	अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की तौबा का सबब	343
औ़रत की चादर भी मत देखो	300	सांप मगस रानी कर रहा था	345
बद निगाही कर बैठे तो क्या करे ?	300	ख़ुश नसीब आ़बिद की साबित क़-दमी	345
गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा	301	अम्बियाए किराम पर भी इम्तिह़ानात आए	350
तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है	302	इ़श्क़े मजाज़ी ने तबाही मचाई हैए	353

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
आ़शिक़ों के जज़्बात के सात ह़या सोज़ कलिमात	354	फ़ासिक़ और बिन्ते मुत्तक़ी	374
आ़शिक़ात के जज़्बात के 12 ह़या सोज़ कलिमात	355	माल में किफ़ाअत (या'नी कुफ़ू होना)	375
इ़श्क़ में होने वाली शादियों के बारे में सुवाल जवाब	357	कुफ़ू से मु-तअ़ल्लिक़ मु-तफ़र्रिक़ात	375
कोर्ट की शादी	357	दूसरे को बाप बना लेना	379
कुफ़ू किसे कहते हैं ?	360	शादी कार्ड में बाप का नाम ग़लत़ डालना	379
कुफ़ू की तमाम शराइत़ की वज़ाह़त	361	मियां बीवी का एक दूसरे पर शक करना कैसा ?	385
नसब का बयान	361	किसी को रन्डी कहना कैसा ?	386
अ़-जमी लड़का और अ़-रबी लड़की	362	गाली की दुन्यवी सज़ा	386
आ़लिम की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत	363	शक की बिना पर इल्ज़ाम मत लगाइये	389
मैमन और सय्यिदह का कोर्ट मेरेज	365	लोहे के 80 कोड़े	389
सय्यिद ज़ादे और मैमन लड़की का कोर्ट मेरेज	366	ऐ़ब छुपाओ जन्नत में जाओ !	390
ग़ैरे सय्यिद और सय्यिदह का निकाह़	369	ऐ़ब खोलने का अ़ज़ाब	391
इस्लाम में कुफ़ू होना	370	जादू टोना करवाने का इल्ज़ाम	391
मुसल्मान लड़की का नौ मुस्लिम से निकाह़	370	बोहतान का अ़ज़ाब	392
पेशे (काम धन्दे) में कुफ़ू होना	371	तौबा के तक़ाज़े पूरे कर लीजिये !	393
ताजिर की लड़की का कुफ़ू है या नहीं ?	372	बद गुमानी के बारे में सुवाल जवाब	394
ह़ज्जाम और मोची का आपस में कुफ़ू होना	372	रोने वाले पर बद गुमानी का नुक़्सान	395
दियानत में कुफ़ू होना	373	मियां बीवी के ग़ुस्ले मय्यित के बारे में सुवाल जवाब	396

मौत की याद में भूकी रहने वाली ख़ातून

ह़ज़रते सय्यि-दतुना मुआ़ज़ह अ़-दविय्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا रोज़ाना सुब्ह़ के वक़्त फ़रमातीं : (शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है । फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं : (शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है । फिर सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ती रहतीं । (اِحیاءُ العُلُوم ج ٥ ص ١٥١)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेरा दिल कांप उठता है कलेजा मुंह को आता है
करम या रब अंधेरा क़ब्र का जब याद आता है

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

पर्दे के बारे में सुवाल ? जवाब

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह किताब (406 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का ख़ज़ानए ला जवाब हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआएं छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त **दुरूद ख़्वानी** में सर्फ़ करूंगा । तो **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج٤ ص٢٠٧ حدیث٢٤٦٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर दर्द की दवा है صلِّ علٰی محمد ता'वीज़े हर बला है صلِّ علٰی محمد

औ़रत का लफ़्ज़ी मा'ना

सुवाल : औ़रत के लफ़्ज़ी मा'ना क्या हैं ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

जवाब : औ़रत के लु-ग़वी मा'ना हैं **"छुपाने की चीज़।" अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि : औ़रत, "औ़रत" (या'नी छुपाने की चीज़) है जब वोह निकलती है तो उसे शैत़ान झांक कर देखता है। (या'नी उसे देखना शैत़ानी काम है) (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۲ ص ۳۹۲ حدیث۱۱۷۶)

क्या आज कल भी पर्दा ज़रूरी है ?

सुवाल : क्या पर्दा इस दौर में भी ज़रूरी है ?

जवाब : जी हां। चन्द बातें अगर पेशे नज़र रहें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पर्दे के मसाइल समझने में आसानी रहेगी। पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** की आयत नम्बर 33 में पर्दे का हुक्म देते हुए परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे नूरबार है :

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِکُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰی

(پ ۲۲ الاَحزاب ۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी**

عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی इस के तह़्त फ़रमाते हैं : "अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व मह़ासिन (या'नी बनाव सिंघार और जिस्म की ख़ूबियां म-सलन सीने के उभार वग़ैरा) का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें। लिबास ऐसे पहनती थीं, जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें।" (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 673) अफ़्सोस ! मौजूदा दौर में भी ज़मानए जाहिलिय्यत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है। यक़ीनन जैसे उस ज़माने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी है।

ज़मानए जाहिलिय्यत की मुद्दत कितनी ?

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : काश ! इस आयत से मौजूदा मुस्लिम औ़रतें इ़ब्रत पकड़ें। येह औ़रतें उन **उम्महातुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ से बढ़ कर नहीं। साह़िबे **रूह़ुल बयान** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡحَنَّان ने फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام व तूफ़ाने सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दरमियान का ज़माना **जाहिलिय्यते ऊला** कहलाता है जो बारह सो बहत्तर (1272)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

साल है और ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियान का ज़माना जाहिलिय्यते उख़्रा है जो तक़रीबन छ सो (600) बरस है।

واللّٰهُ وَ رسولُهٗ اَعلم عزَّوَجلَّ وصلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

(नूरुल इरफ़ान, स. 673, روحُ البیان ج۷ص ۱۷۰)

बे पर्दगी का वबाल

सुवाल : बे पर्दगी का क्या वबाल है ?

जवाब : औ़रत की बे पर्दगी मूजिबे ग़-ज़बे इलाही और सबबे तबाही है। इस सुवाल का जवाब पारह 18 **सूरए नूर** की आयत नम्बर 31 के इस ह़िस्से की तफ़्सीर में मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे इर्शादे इलाही होता है :

وَلَا یَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِیُعْلَمَ مَا یُخْفِیْنَ مِنْ زِیْنَتِهِنَّ ؕ

(پ۱۸ النور ۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार।

बयान कर्दा आयते मुबा-रका के तह़्त मुफ़स्सिरे कुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : या'नी औ़रतें घर के अन्दर

चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए, **मस्अला :** इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार **झांझन** न पहनें। ह़दीस शरीफ़ में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें **झांझन** पहनती हों।" (تفسیرات احمدیہ ص٥٦٥) **इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़-दमे क़बूले दुआ़ (या'नी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़** (का बिला इजाज़ते शर-ई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना) **और इस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़-ज़बे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है।**

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 566)

झांझन से मुराद कौन सा ज़ेवर है ?

सुवाल : ह़दीस में जिस बाजेदार झांझन पहनने की मुमा-न-अ़त की गई इस से कौन सा ज़ेवर मुराद है ?

जवाब : इस से घुंगुरू वाला ज़ेवर मुराद है। ऐसे ज़ेवर पहनने वालियों से **मु-तअ़ल्लिक़** एक ह़दीस में इर्शाद होता है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बाजेदार झांझन की आवाज़ को ऐसे ही ना पसन्द फ़रमाता है जिस त़रह़ ग़िना की आवाज़ को ना पसन्द

फ़रमाता है और उस का ह़श्र जो ऐसे ज़ेवर पहनती हो वैसा ही करेगा जैसा कि मज़ामीर वालों का होगा, कोई औ़रत **बाजेदार झांझन** नहीं पहनती मगर येह कि उस पर ला'नत बरसती है। (كَنْزُ الْعُمّال ج١٦ ص١٦٤رقم٤٥٠٦٣)

हर घुंगुरू के साथ शैत़ान होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हमारे यहां की लौंडी ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की लड़की को ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास लाई और उस के पाउं में **घुंगुरू** थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें काट दिया और फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि हर घुंगुरू के साथ शैत़ान होता है। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج ٤ ص١٢٤ حدیث ٤٢٣٠)

झांज वाले घर में फ़िरिश्ते नहीं आते

ह़ज़रते सय्यि-दतुना बुनाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास थीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में एक बच्ची लाई गई जिस पर **झांझन** थे जो आवाज़ कर रहे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं कि इसे मेरे

पास हरगिज़ न लाओ मगर इस सूरत में कि इस के **झांझन** तोड़ दिये जाएं मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि उस घर में फ़िरिश्ते नहीं आते जिस में **झांज** हो।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص١٢٥ حديث ٤٢٣١)

इस बाब की अहादीसे मुबा-रका के तह़त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "अजरास जम्अ़ जरस की ब मा'ना जलाजल या'नी **घुंगुरू** और इस जैसी आवाज़ देने वाली चीज़, ऊंट के गले में **घुंगुरू** और बाज़ (नामी परिन्दे) के पाउं के छल्लों को भी अजरास या जलाजल कहते हैं। हमारे हिन्दुस्तान में भी पहले औ़रतों में झांझन का रवाज था।" ह़दीसे आ़इशा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا में जो **झांझन** तोड़ देने का ज़िक्र है उस की शर्ह़ करते हुए मुफ़्ती साहि़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस त़रह़ (तोड़ दें) कि उन के अन्दर के कंकर निकाल दिये जाएं या इस त़रह़ कि उस के **घुंगुरू** अलग कर दिये जाएं या इस त़रह़ कि खुद **झांझन** ही तोड़ दिये जाएं ग़-रज़े कि उन में आवाज़ न रहे।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 136)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

ज़ेवर की आवाज़ का हुक्म

सुवाल : क्या औ़रत के लिये आवाज़ वाला ज़ेवर पहनना बिल्कुल मन्अ़ है ?

जवाब : नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 127 और 128 पर फ़रमाते हैं : बल्कि औ़रत का बा वस्फ़े कुदरत बिल्कुल बे ज़ेवर रहना मक्रूह है कि मर्दों से तशब्बोह (मुशा-बहत) है। मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْھَہٗ से फ़रमाया **''یَا عَلِیُّ مُرْ نِسَاءَکَ لَا یُصَلِّیْنَ عُطُلًا''** तरजमा : ऐ अ़ली ! अपने घर की ख़वातीन को हुक्म दो कि ज़ेवर के बिग़ैर नमाज़ न पढ़ें। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانِیّ ج٤ ص٢٦٢ حدیث ٥٩٢٩) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا औ़रत का बे ज़ेवर नमाज़ पढ़ना मक्रूह (या'नी ना पसन्दीदा) जानतीं और फ़रमातीं कुछ न पाए तो एक डोरा ही गले में बांध ले। (اَلسُّنَنُ الْکُبرٰی لِلْبَیْھَقِیّ ج٢ ص ٣٣٢ رقم ٣٢٦٧) **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बजने वाले ज़ेवर के इस्ति'माल के **मु-तअ़ल्लिक़** इर्शाद फ़रमाते हैं : बजने वाला ज़ेवर औ़रत के लिये इस ह़ालत में जाइज़ है कि ना महरमों म-सलन

ख़ाला मामूं चचा फूफी के बेटों, जेठ, देवर, बहनोई के सामने न आती हो न उस के ज़ेवर की झन्कार (या'नी बजने की आवाज़) ना महरम तक पहुंचे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है **:** وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शोहरों पर... اِلخ (پ۱۸،النور:۳۱) और फ़रमाता है **:** وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार। (پ۱۸،النور:۳۱) **फ़ाएदा :** येह आयते करीमा जिस तरह ना महरम को गहने (या'नी ज़ेवर) की आवाज़ पहुंचना मन्अ़ फ़रमाती है यूंही जब आवाज़ न पहुंचे (तो) इस का पहनना औ़रतों के लिये जाइज़ बताती है कि धमक कर पाउं रखने को मन्अ़ फ़रमाया न कि पहनने को।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 127, 128, मुलख़्ख़सन)

औ़रत का शोहर के लिये ज़ेवर पहनना

सुवाल : औ़रतों का अपने शोहर की रिज़ा मन्दी के लिये ज़ेवर पहनना कैसा ?

जवाब : कारे सवाब है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** औ़रत का अपने शोहर के लिये गहना (ज़ेवर)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

पहनना, बनाव सिंगार करना बाइ़से अज्रे अ़ज़ीम और उस के ह़क़ में नमाज़े नफ़्ल से अफ़्ज़ल है, बा'ज़ सालिह़ात (या'नी नेक बीबियां) कि खुद और उन के शोहर दोनों औलियाए किराम से थे हर शब बा'दे नमाज़े इ़शा पूरा सिंगार कर के दुल्हन बन कर अपने शोहर के पास आतीं अगर उन्हें अपनी त़रफ़ ह़ाजत पातीं ह़ाज़िर रहतीं वरना ज़ेवर व लिबास उतार कर मुसल्ले बिछातीं और नमाज़ में मश्ग़ूल हो जातीं। और दुल्हन को सजाना तो सुन्नते क़दीमा और बहुत अह़ादीस से साबित है बल्कि कुंवारी लड़कियों को ज़ेवर व लिबास से आरास्ता रखना कि उन की मंग्नियां आएं, येह भी सुन्नत है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 126) मगर याद रहे ! बनाव सिंघार घर की चार दीवारी में वोह भी सिर्फ़ मह़ारिम के सामने हो, उन को बना संवार कर ग़ैर मर्दों के सामने बे पर्दा लिये लिये फिरना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

शहन्शाहे मदीना का दीदार नसीब हो गया

इस्लामी बहनो ! शर-ई पर्दे के तअ़ल्लुक़ से इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। दा'वते इस्लामी का म-दनी काम भी

करती रहिये और **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** की मुसाफ़िरा बनने की सआ़दत भी ह़ासिल फ़रमाती रहिये।[1] अगर कोई पूछे कि म-दनी क़ाफ़िलों में क्या मिलता है ? तो मैं कहूंगा कि म-दनी क़ाफ़िलों में क्या नहीं मिलता ! इस **म-दनी बहार** को मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और इ़श्क़े रसूल से लबरेज़ दिल का फ़ैसला म-दनी बहार के इख़्तिताम पर दिये हुए शे'र पर سُبْحٰنَ الله कह कर मोहरे तस्दीक़ लगा कर कीजिये। चुनान्चे हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि हमारे अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी की **इस्लामी बहनों का एक म-दनी क़ाफ़िला** तशरीफ़ लाया। दूसरे दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे बयान में मुझे भी शिर्कत की सआ़दत मिली, बयान के बा'द जब सलातो सलाम के येह अश्आ़र पढ़े गए, **''ऐ शहन्शाहे मदीना** اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام'' तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने जागती

---

(1) इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िले की हर मुसाफ़िरा के साथ उस के बच्चों के अब्बू या क़ाबिले ए'तिमाद मह़रम का साथ होना लाज़िमी है नीज़ ज़िम्मेदारान को अपनी मरज़ी से म-दनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने की इजाज़त नहीं म-सलन पाकिस्तान की इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िले के लिये ''इस्लामी बहनों की मजलिस बराए पाकिस्तान'' की मन्ज़ूरी ज़रूरी है।

आंखों से देखा कि **शहन्शाहे मदीना**, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फूलों का हार पहने वहां तशरीफ़ ले आए हैं । अपने ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर मैं खुद पर क़ाबू न रख सकी और मेरी आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई । फिर वोह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र मेरी निगाहों से ओझल हो गया यहां तक कि इज्तिमाअ़ इख़्तिताम को पहुंचा ।

मिल गए वोह तो फिर कमी क्या है

दोनों आ़लम को पा लिया हम ने

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सित्र के बारे में सुवाल जवाब

सित्र किसे कहते हैं ?

सुवाल : सित्रे औ़रत किसे कहते हैं ?

जवाब : सित्र के लुग़वी मा'ना हैं छुपाना, ढांपना । जिन आ'ज़ा का छुपाना ज़रूरी है उन को **औ़रत** कहते हैं और मज्मूई तौ़र पर छुपाने के इस अ़मल को "**सित्रे औ़रत**" (या'नी पोशीदा आ'ज़ा का छुपाना) कहते हैं । हमारे उ़र्फ़ में उन मख़्सूस आ'ज़ा को भी **सित्र** कहते हैं जिन का छुपाया जाना ज़रूरी है । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़्हा 479 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं **: सित्रे औ़रत** (या'नी सित्र छुपाना) हर ह़ाल में वाजिब है ख़्वाह नमाज़ में हो या नहीं, तन्हा हो या किसी के सामने। **बिला किसी ग़-रज़े सह़ीह़ के तन्हाई में भी** (सित्र) **खोलना जाइज़ नहीं** और लोगों के सामने या नमाज़ में तो **सित्र** (छुपाना) बिल इज्माअ़ फ़र्ज़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 479)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सित्र के मु-तअ़ल्लिक़ अह़काम की दो अक़्साम हैं **:** ﴾1﴿ नमाज़ में मर्द व औ़रत के लिये **सित्र** के अह़काम ﴾2﴿ ग़ैरे नमाज़ में **सित्र** के अह़काम कि कौन किस किस के जिस्म के कौन से ह़िस्से पर नज़र कर सकता है। पहले **क़िस्मे अव्वल** की मुख़्तसरन तफ़्सील सुवालन जवाबन मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये **:**

मर्द का सित्र कहां से कहां तक है ?

सुवाल : मर्द के जिस्म का कौन सा ह़िस्सा **सित्र** है और नमाज़ में इस के लिये **सित्र** के क्या अह़काम हैं ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक (सित्र) औ़रत है या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। **नाफ़** इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं। इस ज़माने में बहुतेरे ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि पेडू (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ हिस्सा खुला रहता है और अगर कुरते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि जिल्द (या'नी खाल) की रंगत न चमके तो ख़ैर वरना **ह़राम** है और नमाज़ में **चौथाई** की मिक्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी और बा'ज़ बेबाक ऐसे हैं कि लोगों के सामने **घुटने** बल्कि रान तक खोले रहते हैं येह भी **ह़राम** है और इस की आ़दत है तो **फ़ासिक़** हैं।

(ऐज़न, स. 481)

ह़ाजी साहि़बान और नीकर पोश

एह़राम पहनने वाले बा'ज़ ह़ाजी भी बे एह़तियाति़यां करते हैं और उन के **सित्र** के बा'ज़ हि़स्से जैसा कि **नाफ़** के नीचे का कुछ हि़स्सा और घुटने बल्कि रानों के बा'ज़ हि़स्से सब के सामने ज़ाहिर होते रहते हैं, उन को **तौबा** करनी और आयिन्दा

एह़तियात़ करनी लाज़िमी है। नीज़ इस से नीकर (KNICKER) पहन कर मुकम्मल घुटने और रानों का कुछ ह़िस्सा खुला रख कर घूमने वाले अफ़राद भी सबक़ ह़ासिल करें और इस से **तौबा** करें, न ख़ुद गुनहगार हों न दूसरों को **बद निगाही** की दा'वत दें। अगर कोई नीकर पहने हुए हो तो दूसरे मुसल्मान के लिये लाज़िम है कि उस के खुले हुए घुटनों और रानों को देखने से अपने आप को बचाए।

औ़रत का सित्र

सुवाल : औ़रतों के **सित्र** के बारे में भी मा'लूमात फ़राहम कर दीजिये और येह भी बता दीजिये कि इन को **नमाज़** में क्या क्या छुपाना होगा।

जवाब : मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 ह़िस्सा 3 सफ़ह़ा 481 पर है : **आज़ाद औ़रतों** (गुलाम व लौंडी का दौर ख़त्म हुवा आज कल तमाम औ़रतें आज़ाद हैं) और **ख़ुन्सा मुश्किल** (या'नी जिस में मर्द व औ़रत दोनों की अ़लामतें पाई जाएं और येह साबित न हो कि मर्द है या औ़रत) के लिये सारा बदन **औ़रत** (या'नी छुपाने की जगह) है। सिवा मुंह की **टिकली** और **हथेलियों** और पाउं के **तल्वों** के, सर के लटके हुए बाल और गरदन और कलाइयां भी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) हैं (और) इन का **छुपाना भी फ़र्ज़** है। बा'ज़ उ़-लमा ने **पुश्ते दस्त** (या'नी हथेली की पीठ) और (पाउं के) **तल्वों** को **औ़रत** (या'नी छुपाने की चीज़) में दाख़िल नहीं किया। इतना बारीक दुपट्टा जिस से बाल की सियाही (या'नी कालक) चमके, औ़रत ने ओढ़ कर नमाज़ पढ़ी, न होगी। जब तक उस पर कोई ऐसी चीज़ न ओढ़े जिस से बाल वग़ैरा का रंग छुप जाए। (ऐज़न, स. 484)

नमाज़ में थोड़ा सा सित्र खुला हो तो.....?

सुवाल : अगर थोड़ा सा सित्र खुला रह गया तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "वाज़ेह़ रहे कि जिन आ'ज़ा का सित्र (या'नी छुपाना) फ़र्ज़ है उन में कोई उ़ज़्व चौथाई से कम खुल गया नमाज़ हो गई और अगर चौथाई उ़ज़्व खुल गया और फ़ौरन छुपा लिया जब भी हो गई और अगर ब क़दर एक रुक्न या'नी तीन मर्तबा سُبْحٰنَ اللّٰہ कहने के खुला रहा या बिल क़स्द खोला अगर्चे फ़ौरन छुपा लिया नमाज़ जाती रही। अगर चन्द आ'ज़ा में कुछ कुछ खुला रहा कि हर एक उस उ़ज़्व की चौथाई से कम है मगर मज्मूआ़ इन का उन खुले हुए आ'ज़ा

में जो सब से छोटा है उस की चौथाई के बराबर है नमाज़ न हुई म-सलन औ़रत के कान का नवां हि़स्सा और पिंडली का नवां हि़स्सा खुला रहा तो मज्मूअ़ा दोनों का कान की चौथाई की क़दर ज़रूर है (लिहाज़ा) नमाज़ जाती रही।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 481, 482)

मैं नमाज़ नहीं पढ़ती थी

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी की ब-र-कतों के क्या कहने ! इस सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल ने लाखों बे नमाज़ियों को नमाज़ी बना दिया, ऐसी ही एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे **पंजाब** (पाकिस्तान) में मुक़ीम इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मेरे घर का माह़ोल यूं तो मज़्हबी था कि मेरे अब्बूजान मस्जिद में **मुअज़्ज़िन** और बड़ी बहन और भाईजान **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता थे, मगर मेरा ज़ेह्न दुन्यावी लज़्ज़तों में बद मस्त और नफ़्स गुनाहों पर दिलेर था, **नमाज़ें क़ज़ा** कर डालना मेरी आ़दत थी। एक दिन चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ लाईं। उन के **मह़ब्बत** भरे अन्दाज़ से मेरा दिल पसीज गया और मैं ने इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत कर

ली। जब वहां गई तो एक **मुबल्लिग़ए** दा'वते इस्लामी ने **"बे नमाज़ी की सज़ाएं"** के मौज़ूअ़ पर दिल हिला देने वाला बयान किया जिसे सुन कर मैं थर्रा उठी और मैं ने पक्की निय्यत की, कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के बा'द मेरी कोई **नमाज़** क़ज़ा नहीं होगी। फिर माहे **रबीउ़न्नूर शरीफ़** का मौसिमे बहार आया तो मैं इस्लामी बहनों के **इज्तिमाए़ मीलाद** में शरीक हुई जहां एक इस्लामी बहन ने **"T.V. की तबाह कारियां"**[1] बयान कीं। उस बयान को सुन कर मेरे रौंगटे खड़े हो गए और मेरी आंखों से **आंसूओं** की झड़ी लग गई। वोह दिन और आज का दिन मैं **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर अपनी इस्लाह़ की कोशिशों में मस्रूफ़ हूं।

आप ख़ुद तशरीफ़ लाए अपने बे कस की त़रफ़
"आह" जब निकली तड़प कर बे कसो मजबूर की
आप के क़दमों में गिर कर मौत की या मुस्त़फ़ा
आरज़ू कब आएगी बर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आवाज़ में ओडियो केसिट और वीसीडी और इसी बयान का रिसाला मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।
-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

दिल ख़ुश करने की फ़ज़ीलत

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर घर जा कर **नेकी की दा'वत** देने की भी वाक़ेई बड़ी ब-र-कतें हैं, हो सकता है आप की थोड़ी सी कोशिश किसी की तक़्दीर बदल कर रख दे और वोह आख़िरत की बेहतरियां इकठ्ठी करने में मस्रूफ़ हो जाए और आप का भी बेड़ा पार हो जाए। सोचिये तो सही ! आप की **नेकी की दा'वत** सुन कर जो इस्लामी बहन **म-दनी माह़ोल** से मुन्सलिक हो जाती होगी उस को कितना सुकून मिलता होगा और उस का दिल किस क़दर ख़ुश हो जाता होगा ! سُبْحٰنَ اللہ ! मुसल्मान का दिल ख़ुश करना भी बहुत बड़े सवाब का काम है चुनान्चे शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और तौह़ीद बयान करता है। जब वोह बन्दा अपनी **क़ब्र** में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है **:**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

"क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है कि तू कौन है ? तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि मैं वोह ख़ुशी की शक्ल हूं जिसे तूने फ़ुलां मुसल्मान के दिल में दाख़िल किया था, अब मैं तेरी वह्शत में तेरा मूनिस होउंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और रोज़े क़ियामत मैं तेरे पास आऊंगा और तेरे लिये तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे **जन्नत** में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب ج ۳ ص ۲۶۶ حدیث ۲۳)

ताजो तख़्तो हुकूमत मत दे, कसरते मालो दौलत मत दे

अपनी ख़ुशी का दे दे मुज़्दा, या अल्लाह मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सित्र की क़िस्मे दुवुम के चार ह़िस्से

अब **सित्र** की दूसरी क़िस्म (या'नी इ़लावा नमाज़ के सित्र) की तफ़्सीलात सुवालन जवाबन पेशे ख़िदमत हैं। इस के अह़काम की चार अक़्साम हैं **:** ﴾1﴿ मर्द का मर्द के लिये सित्र ﴾2﴿ औ़रत का औ़रत के लिये सित्र ﴾3﴿ औ़रत के लिये अजनबी मर्द का सित्र ﴾4﴿ मर्द के लिये औ़रत का सित्र।

﴾1﴿ मर्द का मर्द के लिये सित्र

सुवाल : मर्द का सित्र कहां से कहां तक है ?

जवाब : मर्द का सित्र **नाफ़** के ऐन नीचे से ले कर **घुटनों** समेत है, नाफ़ सित्र में शामिल नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **मर्द**, मर्द के हर उस ह़िस्सए बदन की त़रफ़ नज़र कर सकता है सिवा उन आ'ज़ा के जिन का **सित्र** (या'नी छुपाना) ज़रूरी है वोह नाफ़ के नीचे से घुटने के नीचे तक है कि इस ह़िस्सए बदन का छुपाना फ़र्ज़ है। जिन आ'ज़ा का छुपाना ज़रूरी है उन को **औ़रत** कहते हैं कि किसी को **घुटना** खोले हुए देखे तो मन्अ़ करे और **रान** खोले हुए देखे तो सख़्ती से मन्अ़ करे और शर्मगाह खोले हुए हो तो उसे सज़ा दी जाएगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 85) याद रहे ! सज़ा देना अ़वाम का नहीं हुक्काम का काम है। ज़रूरतन बाप औलाद पर, उस्ताज़ शागिर्द पर, पीर मुरीद पर सख़्ती भी कर सकता है और सज़ा भी दे सकता है। चुनान्चे बहारे शरीअ़त जिल्द 1 **सफ़ह़ा** 482 पर है : अगर औ़रते ग़लीज़ (या'नी आगे और पीछे के मख़्सूस ह़िस्से) खोले हुए है तो जो मारने पर क़ादिर हो म-सलन बाप या ह़ाकिम वोह मारे।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

बच्चे का सित्र

सुवाल : क्या दूध पीते बच्चे और बच्ची के भी घुटने और रानें वग़ैरा छुपाना ज़रूरी हैं ?

जवाब : जी नहीं, **दूध पीता बच्चा** पूरा ही नंगा हो तब भी उस की त़रफ़ नज़र करने में कोई ह़रज नहीं। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़्ह़ात पर मुशतमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 85 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बहुत छोटे बच्चे के लिये औ़रत नहीं या'नी उस के बदन के किसी ह़िस्से को छुपाना फ़र्ज़ नहीं, फिर जब कुछ बड़ा हो गया तो उस के आगे पीछे का मक़ाम छुपाना ज़रूरी है। फिर जब और बड़ा हो जाए **दस बरस** से बड़ा हो जाए तो उस के लिये **बालिग़** का सा हुक्म है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 85)

बहुत छोटे बच्चे की रान को छूना कैसा ?

सुवाल : बहुत छोटे बच्चे की रान को छूना कैसा ?

जवाब : छू सकता है। हां अगर देखने और छूने से शह्वत आती हो तो अब एक दिन के बच्चे को भी न देख सकता है न छू

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

सकता है। आज कल ह़ालात बहुत नाज़ुक हो गए हैं مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो या तीन साल की बच्चियों के साथ भी गन्दे काम होने की ख़बरें सुनी गई हैं।

अम्रद को देखने का हुक्म

सुवाल : अम्रद को देखना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : अम्रद को देखना जाइज़ भी है और ना जाइज़ भी। इस की तफ़्सील बयान करते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : लड़का जब मुराहिक़ (या'नी दस बरस की उ़म्र के बा'द बालिग़ होने के क़रीब) हो जाए और वोह ख़ूब सूरत न हो तो नज़र के बारे में इस का वोही हुक्म है जो मर्द का है और ख़ूब सूरत हो तो औ़रत का जो हुक्म है वोह इस के लिये है या'नी शह्वत के साथ उस की त़रफ़ नज़र करना **ह़राम** है और शह्वत न हो तो उस की त़रफ़ नज़र भी कर सकता है और उस के साथ तन्हाई भी जाइज़ है। शह्वत न होने का मत़लब येह है कि उसे यक़ीन हो कि नज़र करने से शह्वत न होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे बोसे की ख़्वाहिश का पैदा होना भी शह्वत की ह़द में दाख़िल है। (ऐज़न) (तफ़्सीली मा'लूमात के

लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "**क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां**" का मुत़ा-लआ़ कीजिये)

﴾2﴿ औ़रत का औ़रत के लिये सित्र

सुवाल : क्या **औ़रत**, औ़रत के बदन के हर ह़िस्से को देख सकती है ?

जवाब : जी नहीं। **औ़रत** को औ़रत का **नाफ़** के नीचे से ले कर **घुटनों** समेत का ह़िस्सा देखने की इजाज़त नहीं चुनान्चे **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **औ़रत** का औ़रत को देखना, इस का वोही हुक्म है जो **मर्द** को मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है या'नी नाफ़ के नीचे से घुटने तक नहीं देख सकती बाक़ी आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र कर सकती है बशर्ते़ कि शह्वत का अन्देशा न हो। औ़रते सालिह़ा (या'नी नेक बीबी) को येह चाहिये कि अपने को **बदकार** (या'नी ज़ानिया व फ़ाह़िशा) औ़रत के देखने से बचाए या'नी उस के सामने दुपट्टा वग़ैरा न उतारे क्यूं कि वोह उसे देख कर मर्दों के सामने उस की शक्लो सूरत का ज़िक्र करेगी। (ऐज़न, स. 86)

﴾3﴿ औ़रत का अजनबी मर्द को देखना

सुवाल : औ़रत **ग़ैर मर्द** को देख सकती है या नहीं ?

जवाब : न देखने में आ़फ़िय्यत ही आ़फ़िय्यत है। अलबत्ता देखने

में जवाज़ की सूरत भी है मगर देखने से क़ब्ल अपने दिल पर ख़ूब ख़ूब और ख़ूब ग़ौर कर ले कहीं येह देखना गुनाहों के ग़ार में न धकेल दे। **फ़ु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام जवाज़ की सूरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "औ़रत का **मर्दे अजनबी** की त़रफ़ नज़र करने का वोही हुक्म है जो मर्द का **मर्द** की त़रफ़ नज़र करने का है और येह उस वक़्त है कि औ़रत को यक़ीन के साथ मा'लूम हो कि उस की त़रफ़ नज़र करने से शह्वत नहीं पैदा होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 86, عالمگیری ج٥ ص٣٢٧)

काफ़िरा दाई से ज़चगी करवाना

सुवाल : ऐसे मुमालिक जहां कुफ़्फ़ार की अक्सरिय्यत होती है वहां काफ़िरा दाई से ज़चगी करवा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं करवा सकते। जो मुसल्मान ऐसे मुमालिक में रहते हैं उन को पहले से ऐसे अस्पताल ज़ेहन में रखने चाहिएं जहां लेडी डॉक्टर्ज़, नर्सें और दाइयां मुसल्मान दस्त-याब हो जाती हों। अगर इमरजन्सी हो जाए और मुसल्मान दाई (MID WIFE) की फ़राहमी मुम्किन न हो और मु-तबादिल कोई सूरत न हो तो सख़्त मजबूरी की ह़ालत में काफ़िरा से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاكم)

येह ख़िदमत ले ली जाए। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुसल्मान औ़रत को येह भी ह़लाल नहीं कि **काफ़िरा** के सामने अपना सित्र खोले (मुसल्मान औ़रत का काफ़िरा से उसी त़रह़ पर्दा है जिस त़रह़ अजनबी मर्द से। काफ़िरा के लिये औ़रत के बदन के वोह तमाम ह़िस्से सित्र हैं जो कि एक अजनबी मर्द के लिये हैं) घरों में काफ़िरा औ़रतें आती हैं और बीबियां उन के सामने इसी त़रह़ मवाज़ेए़ सित्र खोले हुए होती हैं जिस त़रह़ मुस्लिमा के सामने रहती हैं उन को इस से इज्तिनाब (बचना) लाज़िम है। अक्सर जगह दाइयां (MID WIFES) काफ़िरा होती हैं और वोह बच्चा जनाने की ख़िदमत अन्जाम देती हैं, अगर **मुसल्मान दाइयां** मिल सकें तो **काफ़िरा** से हरगिज़ येह काम न कराया जाए कि **काफ़िरा** के सामने इन आ'ज़ा के खोलने की इजाज़त नहीं। (ऐज़न)

﴾4﴿ मर्द के लिये औ़रत का सित्र

फ़ी ज़माना इस की तीन सूरतें हैं : (الف) मर्द का अपनी ज़ौजा को देखना (ب) मर्द का अपने मह़ारिम की त़रफ़ नज़र करना (ج) मर्द का अज्नबिय्या औ़रत को देखना।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

(الف) मर्द का अपनी ज़ौजा को देखना

सुवाल : क्या कोई ऐसा ह़िस्सए बदन भी है जिन की त़रफ़ मियां बीवी नज़र नहीं कर सकते ?

जवाब : नहीं, ऐसा कोई ह़िस्सए बदन नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : (शोहर अपनी) औ़रत की एड़ी से चोटी तक हर उ़ज़्व की त़रफ़ नज़र कर सकता है शह्वत और बिला शह्वत दोनों सूरतों में देख सकता है। इसी त़रह़ येह दोनों क़िस्म की औ़रतें (या'नी बीवी और बांदी मगर अब बांदी का दौर नहीं रहा) उस मर्द के हर उ़ज़्व को देख सकती है। हां बेहतर येह है कि (दोनों में से कोई भी एक दूसरे के) मक़ामे मख़्सूस की त़रफ़ नज़र न करे क्यूं कि इस से निस्यान पैदा होता (या'नी ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर होता) है और नज़र में भी ज़ो'फ़ पैदा होता (या'नी निगाह भी कमज़ोर हो जाती) है। (ऐज़न, स. 87)

(ب) मर्द का अपने मह़ारिम को देखना

सुवाल : मर्द अपने **मह़ारिम म-सलन मां, बहन के किन आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र कर सकता है ?**

जवाब : मह़ारिम के बदन के बा'ज़ ह़िस्सों को देख सकता है और

बा'ज़ को नहीं देख सकता। इस की तफ़्सील बयान करते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो औ़रत उस के मह़ारिम में हो उस के सर, सीना, पिंडली, बाज़ू, कलाई, गरदन, क़दम की त़रफ़ नज़र कर सकता है जब कि दोनों में से किसी में शह्वत का अन्देशा न हो। **मह़ारिम** के पेट, पीठ और रान की त़रफ़ नज़र करना **ना जाइज़** है। इसी त़रह़ करवट और घुटने की त़रफ़ नज़र करना भी ना जाइज़ है। (येह हुक्म उस वक़्त है जब जिस्म के इन ह़िस्सों पर कोई कपड़ा न हो और अगर येह तमाम आ'ज़ा मोटे कपड़े से छुपे हुए हों तो वहां नज़र करने में ह़रज नहीं) कान और गरदन और शाने (या'नी कन्धे) और चेहरे की त़रफ़ नज़र करना जाइज़ है। **मह़ारिम** से मुराद वोह औ़रतें हैं जिन से हमेशा के लिये निकाह़ **ह़राम** है। हुरमत नसब से हो या सबब से म-सलन रज़ाअ़त (दूध का रिश्ता) या **मुसा-हरत**। अगर ज़िना की वज्ह से हुरमते मुसा-हरत हो जैसे मुज़्निया के उसूल व फ़ुरूअ़ (या'नी जिस औ़रत से ज़िना किया उस की मां, नानी, पर नानी ऊपर......तक और बेटियां, नवासियां, पर नवासियां......नीचे तक) उन की त़रफ़ नज़र का भी (ज़ानी के लिये) वोही हुक्म है। (ऐज़न, स. 87, 88)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

मर्द का मां के पाउं दबाना

सुवाल : इस्लामी भाई अपनी **अम्मीजान** के हाथ पाउं चूमना चाहे या दबाना चाहे तो इस की इजाज़त है या नहीं ?

जवाब : दोनों में से किसी को शह्वत न हो तो बिल्कुल इजाज़त बल्कि इस्लामी भाई के लिये इस में दोनों जहानों की सआ़दत है। मन्क़ूल है : जिस ने अपनी वालिदा का पाउं चूमा तो ऐसा है जैसे जन्नत की चौखट (या'नी दरवाज़े) को बोसा दिया (دُرِّمُختار ج۹ص۶۰۶) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **मह़ारिम** के जिन आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र कर सकता है उन को छू भी सकता है जब कि दोनों में से किसी को शह्वत का अन्देशा न हो। मर्द अपनी वालिदा के पाउं दबा सकता है मगर **रान** उस वक़्त दबा सकता है जब कपड़े से छुपी हुई हो, या'नी (दबा सकता है मगर) कपड़े के ऊपर से और बिग़ैर ह़ाइल छूना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 88)

(٧) मर्द का आज़ाद औ़रत अज्नबिय्या को देखना

सुवाल : मर्द ग़ैर औ़रत के चेहरे को देख सकता है या नहीं ?

जवाब : न देखे। अलबत्ता ज़रूरतन बा'ज़ क़ुयूदात के साथ देख

सकता है। इस की बा'ज़ सूरतें बयान करते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अजनबी औ़रत** की त़रफ़ नज़र करने का हुक्म येह है कि (ज़रूरत के वक़्त) उस के **चेहरे** और **हथेली** की त़रफ़ नज़र करना जाइज़ है क्यूं कि इस की ज़रूरत पड़ती है कि कभी इस के मुवाफ़िक़ या मुख़ालिफ़ शहादत (गवाही) देनी होती है या फ़ैसला करना होता है अगर उसे न देखा हो तो क्यूंकर गवाही दे सकता है कि इस ने ऐसा किया है। उस की त़रफ़ देखने में भी वोही शर्त़ है कि शह्वत का अन्देशा न हो और यूं भी ज़रूरत है कि (आज कल गलियों बाज़ारों में) बहुत सी औ़रतें घर से बाहर आती जाती हैं लिहाज़ा इस से बचना भी दुश्वार है। बा'ज़ उ़-लमा ने **क़दम** की त़रफ़ भी नज़र को जाइज़ कहा है। (ऐज़न, 89) मज़ीद फ़रमाते हैं : **अज्नबिय्या** औ़रत के चेहरे की त़रफ़ अगर्चे नज़र जाइज़ है जब कि शह्वत का अन्देशा न हो मगर येह ज़माना फ़ितने का है इस ज़माने में ऐसे लोग कहां जैसे अगले ज़माने में थे लिहाज़ा इस ज़माने में इस को (या'नी चेहरे को) देखने की मुमा-न-अ़त की जाएगी मगर गवाह व क़ाज़ी के लिये कि ब वज्हे ज़रूरत इन के लिये नज़र करना जाइज़ है। (ऐज़न, स. 89, 90)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

चेहरा देखने की इजाज़त की सूरत में कान और गरदन देखने का मस्अला

सुवाल : क्या कान और गरदन भी चेहरे में दाख़िल हैं और जहां **अज्नबिय्या** के चेहरे की त़रफ़ देखने की इजाज़त है वहां इन आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र की जा सकती है ?

जवाब : जी नहीं। कान, गरदन, गला चेहरे में दाख़िल नहीं और इन आ'ज़ा की त़रफ़ अजनबी का नज़र करना गुनाह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 483, मुलख़्ख़सन)

बे पर्दगी से तौबा

इस्लामी बहनो ! अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **म-दनी माह़ोल** ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी त़ौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती। अपना म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो जाइये। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और ब-र-कतें हैं। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे

माह़ोल में रचने बसने की ब-र-कत से मु-तअ़द्दद इस्लामी बहनों को शर-ई पर्दा करने की सआ़दत नसीब हो गई ऐसी ही एक बहार सुनिये, चुनान्चे **पंजाब** (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले **T.V.** पर **फ़िल्में डिरामे** देखने की आ़दी थी, बाज़ार वग़ैरा जाने के लिये **बे पर्दा** ही निकल खड़ी होती, **नमाज़** भी नहीं पढ़ती थी । यूं मेरे सुब्ह़ व शाम **ग़फ़्लत** व मा'सियत में बसर हो रहे थे । एक बार किसी ने मुझे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे **बयानात** के केसिट दिये, मैं ने उन्हें सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो गई । उन बयानात की ब-र-कत से मुझे **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की दौलत नसीब हुई, **इश्क़े रसूल** का जज़्बा मिला और मैं नमाज़ी बन गई, मैं ने अपने तमाम गुनाहों बिल ख़ुसूस **बे पर्दगी से पक्की तौबा** कर ली । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी बुरक़अ़** मेरे लिबास का ह़िस्सा बन गया । वोह बे लगाम ज़बान जो पहले **गाने** गुनगुनाने में मसरूफ़ रहती थी अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ना'ते मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनाने

लगी। ता दमे तह़रीर **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा–वरत की ख़ादिमा के त़ौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं।

कटी है ग़फ़्लतों में ज़िन्दगानी न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो
इलाही हूं बहुत कमज़ोर बन्दी न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! मक–त–बतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनना, सुनाना किस क़दर मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कई ख़ुश नसीब इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना कम अज़ कम एक सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं और जो साह़िबे हैसिय्यत होते हैं वोह तक़्सीम भी करते हैं। आप भी हर माह या कम अज़ कम हर साल रबीउ़न्नूर शरीफ़ में लंगरे रसाइल तक़्सीम करने की निय्यत फ़रमाइये और ह़स्बे तौफ़ीक़ इस में सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें और रसाइल वग़ैरा बांटिये। कि येह भी स–दक़ा है और राहे ख़ुदा में स–दक़ा व ख़ैरात के क्या कहने ! ह़ुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** मुसल्मान का **स–दक़ा** उ़म्र में ज़ियादती का सबब है और बुरी मौत को दफ़्अ़

करता है और **अल्लाह** तआला इस की वज्ह से **तकब्बुर व फ़ख़्र** को दूर फ़रमा देता है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْرُ لِلطَّبَرَانِيّ ج١٧ ص٢٢ حديث٣١)

रहे ह़क़ में सभी दौलत लुटा दूं
ख़ुदा ! ऐसा मुझे जज़्बा अ़ता हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिस से निकाह़ करना है उस को देखना

सुवाल : सुना है जिस से **निकाह़** करना हो उस लड़की को मर्द देख सकता है ?

जवाब : आप ने दुरुस्त सुना है दोनों ही एक दूसरे को देख सकते हैं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : (मर्द व औ़रत के एक दूसरे को देखने की इजाज़त की) एक सूरत और भी है वोह येह कि उस औ़रत से निकाह़ करने का इरादा हो तो इस निय्यत से देखना जाइज़ है कि **ह़दीस** में येह आया है कि जिस से **निकाह़** करना चाहते हो उस को देख लो कि येह बक़ाए **मह़ब्बत** का ज़रीआ़ होगा।[1] इसी त़रह़ औ़रत उस मर्द को जिस ने इस के पास (निकाह़ के लिये) पैग़ाम भेजा

(1) سُنَنُ التِّرْمِذِيّ ج٢ ص٣٤٦ حديث ١٠٨٩

है देख सकती है, अगर्चे अन्देशए शह्‌वत हो मगर देखने में दोनों की येही निय्यत हो कि **ह़दीस पर अ़मल** करना चाहते हैं।[1]

अगर देखना मुम्किन न हो तो क्या करना चाहिये

सुवाल : अगर लड़के लड़की का एक दूसरे को देखना मुम्किन न हो तो कोई और सूरत ?

जवाब : इस की सूरत बयान करते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस औ़रत से **निकाह़** करना चाहता है अगर उस को देखना ना मुम्किन हो जैसा कि इस ज़माने का रवाज येह है कि अगर किसी ने **निकाह़** का पैग़ाम दे दिया तो किसी त़रह़ भी उसे लड़की को नहीं देखने देंगे या'नी उस से इतना ज़बर दस्त पर्दा किया जाता है कि दूसरे से इतना पर्दा नहीं होता इस सूरत में उस शख़्स को येह चाहिये कि किसी औ़रत को भेज कर दिखवा ले और वोह आ कर उस के सामने सारा हुल्या व नक़्शा वग़ैरा बयान कर दे ताकि इसे उस की शक्लो सूरत के **मु-तअ़ल्लिक़** इत़्मीनान हो जाए। (ऐज़न, स. 90)

(1) बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 6, स. 90

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

औ़रत का मर्द से इलाज करवाना

सुवाल : त़बीब, मरीज़ा को देख और छू सकता है कि नहीं ?

जवाब : अगर त़बीबा (लेडी डॉक्टर) मुयस्सर न हो तो मजबूरी की ह़ालत में इजाज़त है। इस बारे में **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अजनबी औ़रत** की त़रफ़ नज़र करने में ज़रूरत की एक सूरत येह भी है कि औ़रत **बीमार** है, उस के इ़लाज में बा'ज़ आ'ज़ा की त़रफ़ नज़र करने की ज़रूरत पड़ती है बल्कि उस के जिस्म को छूना पड़ता है। म-सलन **नब्ज़** देखने में हाथ छूना होता है या पेट में **वरम** का ख़याल हो तो टटोल कर देखना होता है या किसी जगह **फोड़ा** हो तो उसे देखना होता है, बल्कि बा'ज़ मर्तबा टटोलना भी पड़ता है। इस सूरत में मौज़ए़ मरज़ (या'नी मरज़ की जगह) की त़रफ़ नज़र करना या इस ज़रूरत में ब क़दरे ज़रूरत उस जगह को छूना जाइज़ है। येह इस सूरत में है (कि) कोई **औ़रत** इ़लाज करने वाली न हो। वरना चाहिये येह कि **औ़रतों को भी इ़लाज** करना सिखाया जाए ताकि ऐसे मवाक़ेअ़ पर वोह काम करें, कि उन के देखने वग़ैरा में इतनी

ख़राबी नहीं जो मर्द के देखने वग़ैरा में है। अक्सर जगह दाइयां होती हैं जो पेट के वरम को देख सकती हैं। जहां दाइयां दस्त-याब हों मर्द को देखने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। इलाज की ज़रूरत से नज़र करने में भी येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि सिर्फ़ उतना ही ह़िस्सए बदन खोला जाए जिस के देखने की ज़रूरत है बाक़ी ह़िस्सए बदन को अच्छी त़रह **छुपा** दिया जाए कि उस पर नज़र न पड़े। (ऐज़न, स. 90, 91) अगर देखने से काम चल सकता है तो छूने की शरअ़न इजाज़त नहीं। याद रहे ! छूना देखने से ज़ियादा सख़्त है।

कमर का दर्द और म-दनी क़ाफ़िला

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में जहां सवाबे आख़िरत का ख़ज़ाना हाथ आता है वहीं बसा अवक़ात जिस्मानी बीमारियों से नजात भी ह़ासिल होती है, म-दनी क़ाफ़िले की एक ऐसी ही मुसाफ़िरा की म-दनी बहार सुनिये, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन (उ़म्र तक़रीबन 45 साल) का बयान कुछ यूं है कि मुझे अक्सर **कमर के दर्द** की शिकायत रहती थी ह़त्ता कि मैं ज़मीन पर बैठ नहीं सकती थी। जब मैं ने **इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया तो दर्द होना दर

कनार मुझे इस का एह़सास तक न हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने तीनों दिन **म-दनी क़ाफ़िले** के **जद्वल** के मुत़ाबिक़ गुज़ारे, फ़र्ज़ नमाज़ों के इ़लावा तहज्जुद, इशराक़ और चाश्त के नवाफ़िल भी पढ़ने नसीब हुए। **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कतें देखते हुए मैं ने निय्यत की है कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी बड़ी बेटी को भी **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करवाऊंगी।

केन्सर और अल्सर अब या हो दर्दे कमर चलिये हिम्मत करें क़ाफ़िले में चलो
फ़ाएदा आख़िरत के बनाने में है सारी बहनें कहें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतों के क्या कहने ! **कमर का दर्द** और दुन्या की तक्लीफ़ें तो बहुत मा'मूली चीज़ें हैं **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो **म-दनी क़ाफ़िलों** की ब-र-कत से क़ब्रो आख़िरत की मुसीबतें भी दूर होंगी। म-दनी क़ाफ़िलों में इ़ल्मे दीन ह़ासिल होता, इ़बादतें की जातीं और ख़ूब ख़ूब नेकियां कमाने के अस्बाब मुहय्या किये जाते हैं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नेकियों के सिले में **जन्नत** की अ-बदी और सरमदी ने'मतें ह़ासिल होंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सभी को जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब करे। आमीन।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

जन्नत की ने'मत व अ़-ज़मत के बारे में एक रिवायत समाअ़त कीजिये : **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जन्नत में एक कोड़े (या'नी चाबुक) जितनी जगह दुन्या और इस की चीज़ों से बेहतर है।" (بُخاری ج۲ ص۳۹۲ حدیث ۳۲۵۰)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : कोड़े (या'नी चाबुक) से मुराद है वहां की थोड़ी सी जगह। वाक़ेई जन्नत की ने'मतें दाइमी हैं, दुन्या की फ़ानी। फिर दुन्या की ने'मतें तकालीफ़ से मख़्लूत़ (या'नी मिली हुई), (और) वहां की ने'मतें ख़ालिस। फिर दुन्या की ने'मतें (जब कि) अदना, वोह आ'ला। इस लिये दुन्या को वहां की अदना जगह से कोई निस्बत ही नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 447)

औ़रतों के कपड़ों की त़रफ़ मर्द का देखना

सुवाल : अगर किसी ख़ातून ने मोटे भद्दे कपड़े के बुरक़अ़ में अपना सारा वुजूद छुपा रखा हो तो उस की त़रफ़ नज़र की जा सकती है या नहीं ?

जवाब : उस की त़रफ़ देखने में ह़रज नहीं। हां अगर उन कपड़ों की त़रफ़ देखने से शह्वत आती हो तो नहीं देख सकता कि जब

शह्वत से देखेगा तो ज़रूर गुनाहगार होगा। इस मस्अले की मज़ीद वज़ाह़त **बहारे शरीअ़त** में यूं है : **अज्नबिय्या** औ़रत ने ख़ूब मोटे कपड़े पहन रखे हैं कि बदन की रंगत वग़ैरा नज़र नहीं आती तो इस सूरत में उस की त़रफ़ नज़र करना जाइज़ है कि यहां औ़रत को देखना नहीं हुवा बल्कि उन कपड़ों को देखना हुवा। येह उस वक़्त है कि उस के कपड़े **चुस्त** न हों और अगर चुस्त कपड़े पहने हों कि जिस्म का नक़्शा खिंच जाता हो म-सलन चुस्त पाएजामे में पिंडली और रान की पूरी **हैअत** नज़र आती हो तो इस सूरत में नज़र करना **ना जाइज़** है। इसी त़रह़ बा'ज़ औ़रतें बहुत बारीक कपड़े पहनती हैं म-सलन आबे रवां या जाली या बारीक मलमल का दुपट्टा जिस से सर के बाल या बालों की सियाही या गरदन या कान नज़र आते हैं और बा'ज़ बारीक तन्ज़ेब (एक निहायत ही बारीक कपड़ा) या जाली के कुरते पहनती हैं कि पेट और पीठ बिल्कुल (साफ़) नज़र आती है इस ह़ालत में नज़र करना **ह़राम** है और ऐसे मौक़अ़ पर उन को इस क़िस्म के कपड़े पहनना भी ना जाइज़। (ऐज़न, स. 91) (सित्र के मसाइल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की

मत्बूआ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 हि़स्सा 3 सफ़ह़ा 478 ता 486 और हि़स्सा 16 सफ़ह़ा 85 ता 91 का मुत़ा–लआ़ फ़रमा लीजिये)

दामन का धागा

सुवाल : तरग़ीब के लिये किसी वलिय्या की शर–ई पर्दे के बारे में हि़कायत सुना दीजिये ।

जवाब : शर–ई पर्दा करने वालियों की बड़ी शानें होती हैं चुनान्चे "अख़्बारुल अख़्यार" में है, सख़्त क़ह़त़ साली हुई, लोगों की बहुत दुआ़ओं के बा वुजूद बारिश न हुई । ह़ज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन अबुल मुअय्यद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी अम्मीजान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के **कपड़े का एक धागा** हाथ में ले कर अ़र्ज़ की **:** या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह उस ख़ातून के **दामन का धागा** है जिस (ख़ातून) पर कभी किसी ना मह़रम की नज़र न पड़ी, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! इसी के सदक़े रह़मत की बरखा (बारिश) बरसा दे ! अभी दुआ़ ख़त्म भी न हुई थी कि रह़मत के बादल घिर गए और रिमझिम रिमझिम बारिश शुरूअ़ हो गई । (اخبار الاخیار ص۲۹٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

येही माएं हैं जिन की गोद में इस्लाम पलता था

ह़या से इन की इन्सां नूर के सांचे में ढलता था

سُبْحٰنَ الله ! बुज़ुर्गों के जिस्म से निस्बत रखने वाले लिबास के धागे की जब येह शान है कि हाथ में रखें तो इस की ब-र-कत और वसीले से दुआ क़बूल हो जाए तो ख़ुद बुज़ुर्गों के वुजूदे मस्ऊ़द की ब-र-कतों का क्या आ़लम होगा !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर से बाहर निकलने की एह़तियातें

सुवाल : घर से बाहर निकलते वक़्त इस्लामी बहनों को किन किन बातों का ख़याल रखना चाहिये ?

जवाब : शर-ई इजाज़त की सूरत में घर से निकलते वक़्त इस्लामी बहन ग़ैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढीला ढाला **म-दनी बुरक़अ़** ओढ़े, हाथों में दस्ताने और पाउं में जुराबें पहने। मगर दस्तानों और जुराबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके। जहां कहीं ग़ैर मर्दों की नज़र पड़ने का इम्कान हो वहां चेहरे से निक़ाब न उठाए म-सलन अपने या किसी के घर की सीढ़ी और गली मह़ल्ला वग़ैरा। नीचे की त़रफ़ से भी इसी त़रह़ बुरक़अ़ न उठाए कि बदन के रंग बिरंगे कपड़ों पर ग़ैर

मर्दों की नज़र पड़े। वाज़ेह़ रहे कि औ़रत के सर से ले कर पाउं के **गिट्टों** के नीचे तक जिस्म का कोई ह़िस्सा भी म-सलन **सर के बाल या बाज़ू या कलाई या गला या पेट या पिंडली** वग़ैरा अज्नबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो) पर बिला इजाज़ते शर-ई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झलके या ऐसा चुस्त है कि किसी उ़ज़्व की **हैअत** (या'नी शक्लो सूरत या उभार वग़ैरा) ज़ाहिर हो या दुपट्टा इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी **बे पर्दगी** है। **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जो वज़्ए लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व त़रीक़ए पोशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औ़रात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन

चमकता है या सर के बालों या गले या बाज़ू या कलाई या पेट या पिंडली का कोई ह़िस्सा खुला हो यूं तो सिवा ख़ास मह़ारिम के जिन से निकाह़ हमेशा को ह़राम है किसी के सामने होना **सख़्त ह़रामे क़त़ई** है।" (फ़तावा र-ज़विय्या ग़ैर मुख़र्रजा, जि. 10, स. 196, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 22, स. 217)

औ़रत का किस किस से पर्दा है ?

सुवाल : औ़रत का किस किस मर्द से पर्दा है और किस मर्द से पर्दा नहीं ?

जवाब : औ़रत का हर अजनबी बालिग़ मर्द से पर्दा है। जो मह़रम न हो वोह अजनबी होता है, मह़रम से मुराद वोह मर्द हैं जिन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम हो, ह़ुरमत नसब से हो या सबब से म-सलन रज़ाअ़त (दूध का रिश्ता) या मुसा-हरत।

मह़ारिम की क़िस्में

सुवाल : मह़ारिम में कौन कौन से लोग शामिल हैं ?

जवाब : मह़ारिम में तीन क़िस्म के अफ़राद दाख़िल हैं : ﴾1﴿ नसब की बिना पर जिन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम हो ﴾2﴿ रज़ाअ़त या'नी दूध के रिश्ते की बिना पर जिन से निकाह़ ह़राम हो ﴾3﴿ मुसा-हरत : या'नी सुसराली रिश्ते की

वज्ह से जिन से निकाह़ ह़राम हो जैसे सुसर के लिये बहू या सास के लिये दामाद। मुसा-हरत को यूं भी समझा जा सकता है कि औ़रत जिस मर्द से निकाह़ करती है तो उस मर्द के उसूल व फ़ुरूअ़ (उसूल से मुराद बाप दादा परदादा ऊपर तक और फ़ुरूअ़ से मुराद औलाद दर औलाद दर औलाद नीचे तक है) इस पर हमेशा के लिये ह़राम हो जाते हैं। यूंही शोहर पर अपनी बीवी के उसूल व फ़ुरूअ़ भी हमेशा के लिये ह़राम हो जाते हैं नीज़ ज़िना और दवाइये ज़िना (या'नी ज़िना की त़रफ़ दा'वत देने वाले उमूर म-सलन शह्वत के साथ जिस्म को बिला ह़ाइल छूने या बोसा लेने) के ज़रीए मर्द व औ़रत पर येही अह़काम साबित होंगे या'नी हुरमते मुसा-हरत साबित हो जाएगी। न-सबी मह़ारिम के सिवा दोनों त़रह़ के मह़ारिम से पर्दा वाजिब भी नहीं और मन्अ़ भी नहीं, ख़ुसूसन जब औ़रत जवान हो या फ़ितने का ख़ौफ़ हो तो पर्दा करे।

दूध के रिश्ते में पर्दा करना मुनासिब है

मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जिन से निकाह़ हमेशा को ह़राम है कभी ह़लाल नहीं हो सकता मगर वज्हे हुरमत (या'नी

निकाह़ ह़राम होने की वज्ह) इ़लाक़ए नसब (ख़ूनी रिश्ता) नहीं बल्कि इ़लाक़ए रज़ाअ़त (या'नी दूध का रिश्ता) है जैसे दूध के रिश्ते से बाप, दादा, नाना, भाई, भतीजा, भान्जा, चचा, मामूं, बेटा, पोता, नवासा, या इ़लाक़ए सिहर (सुसराली रिश्ता) हो जैसे ख़ुसर (या'नी सुसर), सास, दामाद, बहू, इन सब से न पर्दा वाजिब है न ना दुरुस्त है, (या'नी इन से पर्दा) करना न करना दोनों जाइज़, और ब ह़ालते जवानी या एह़तिमाले फ़ित्ना (या'नी फ़ितने के इम्कान में) पर्दा करना ही मुनासिब, ख़ुसूसन दूध के रिश्ते में कि अ़वाम के ख़याल में उस की हैबत बहुत कम होती है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 235)

न-सबी मह़ारिम में कौन कौन शामिल हैं ?

सुवाल : न-सबी मह़ारिम में कौन कौन से अफ़राद दाख़िल हैं ?

जवाब : न-सबी मह़ारिम में चार त़रह़ के अफ़राद दाख़िल हैं : ﴾1﴿ अपनी औलाद (या'नी बेटा बेटी) और अपनी औलाद की औलाद (या'नी पोता पोती नवासा नवासी) नीचे तक ﴾2﴿ अपने मां बाप और अपने मां बाप के मां बाप (या'नी दादा दादी नाना नानी) ऊपर तक ﴾3﴿ अपने मां बाप की औलाद (या'नी भाई बहन ख़्वाह ह़क़ीक़ी हों या सोतेले या'नी सिर्फ़ मां शरीक या सिर्फ़ बाप शरीक भाई बहन) और यूंही

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

अपने मां बाप की औलाद की औलाद (या'नी भतीजा भतीजी भान्जा भान्जी ख़्वाह ह़क़ीक़ी भाई बहन से हो या सोतेले से हो) नीचे तक **﴾4﴿** अपने दादा दादी, नाना नानी की औलाद (या'नी चचा फूफी मामूं ख़ाला येह रिश्ते सगे हों या सोतेले) अलबत्ता चचा फूफी मामूं ख़ाला की औलादें ग़ैर मह़रम हैं।

(मुस्तफ़ाद अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 11, स. 464)

नोट : मज़्कूरा बाला न-सबी महारिम में से मर्द औ़रतों पर और औ़रतें मर्दों पर ह़राम हैं।

बा'ज़ सुसर पुर ख़त़र होते हैं

सुवाल : क्या सुसर और बहू का पर्दा है ?

जवाब : हुरमते मुसा-हरत की वजह से पर्दा नहीं। अगर पर्दा करे तो ह़रज भी नहीं बल्कि ब ह़ालते जवानी या एह़तिमाले फ़ितना (या'नी फ़ितने के एह़तिमाल) की सूरत में जैसा कि इस दौर में पर्दा करने ही में आ़फ़िय्यत है क्यूं कि ह़ालात इन्तिहाई ना गुफ़्ता बेह हैं। सुसर और बहू के "मसाइल" सुनने में आते रहते हैं जो कि उ़मूमन यक त़रफ़ा या'नी सुसर की जानिब से होते हैं कि बा'ज़ अवक़ात सुसर अकेले में मौक़अ़ पा कर बहू पर दस्त अन्दाज़ी की कोशिश करता है। लिहाज़ा फ़ी ज़माना बहू को सुसर से बे तकल्लुफ़ नहीं होना चाहिये। बिल

ख़ुसूस बहू के ह़क़ में वोह सुसर ज़ियादा पुर ख़त़र साबित हो सकता है जो अपनी बीवी से दूर या मह़रूम हो।

(बराए मेह्रबानी ! बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 से ''मुह़र्रमात का बयान'' पढ़ लीजिये)

देवर भाभी का पर्दा

सुवाल : क्या इस्लामी बहन का अपने देवर व जेठ, बहनोई और ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, चचाज़ाद व फूफीज़ाद, फूफा और ख़ालू से भी पर्दा है ?

जवाब : जी हां। बल्कि इन से तो पर्दे के मुआ़-मले में एह़तियात़ ज़ियादा होनी चाहिये क्यूं कि आशनाई (या'नी जान पहचान) के सबब झिजक उड़ी हुई होती है और यूं ना वाक़िफ़ आदमी के मुक़ाबले में कई गुना ज़ियादा फ़ितने का ख़त़रा होता है मगर अफ़्सोस ! आज कल इन से पर्दा करने का ज़ेह्न ही नहीं, अगर कोई **मदीने की दीवानी** पर्दे की कोशिश करे भी तो बेचारी को त़रह़ त़रह़ से सताया जाता है। मगर हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। ना मुसाइद ह़ालात के बा वुजूद जो ख़ुश नसीब **इस्लामी बहन** शर-ई पर्दा निभाने में काम्याब हो जाए और जब दुन्या से रुख़सत हो तो क्या अ़जब ! मुस्त़फ़ा की नूरे ऐन, शहज़ादिये कौनैन, मादरे

ह़-सनैन, सय्यि-दतुन्निसा **फ़ाति़-मतुज़्ज़ह़रा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस का पुर तपाक इस्तिक़्बाल फ़रमाएं, उस को गले लगाएं और उसे अपने बाबाजान, दो जहान के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अन्जुमन में पहुंचाएं।

क्यूं करें बज़्मे शबिस्ताने जिनां की ख़्वाहिश
जल्वए यार जो शम्ए़ शबे तन्हाई हो

(ज़ौक़े ना'त)

देवर व जेठ, बहनोई और ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, फूफा और ख़ालू से पर्दे की ताकीद करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **"जेठ, देवर, बहनोई, फुप्पा, ख़ालू, चचाज़ाद, मामूंज़ाद, फुप्पीज़ाद, ख़ालाज़ाद भाई** येह सब लोग औ़रत के लिये मह़ज़ अजनबी (या'नी ग़ैर मर्द) हैं बल्कि इन का ज़रर (नुक़्सान) निरे (या'नी मुत़्लक़न) बेगाने (या'नी पराए) शख़्स के ज़रर से ज़ाइद है कि मह़ज़ ग़ैर (या'नी बिल्कुल ना वाक़िफ़) आदमी घर में आते हुए डरेगा और येह (या'नी बयान कर्दा रिश्तेदार) आपस के मेलजोल (और जान पहचान) के बाइ़स ख़ौफ़ नहीं रखते। औ़रत निरे अजनबी (या'नी

मुत़्लक़न ना वाक़िफ़) शख़्स से दफ़्अ़तन (फ़ौरन) मेल नहीं खा सकती (या'नी बे तकल्लुफ़ नहीं हो सकती) और इन (या'नी मज़्कूरा रिश्तेदारों) से लिह़ाज़ टूटा होता है (या'नी झिजक उड़ी हुई होती है) व लिहाज़ा जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैर औ़रतों के पास जाने को मन्अ़ फ़रमाया (तो) एक सह़ाबी अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जेठ देवर के लिये क्या हुक्म है ? फ़रमाया : **"जेठ देवर तो मौत हैं।"**

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 217)

सुसराल में किस त़रह़ पर्दा करे ?

सुवाल : सुसराल में **देवर** व जेठ वग़ैरा से किस त़रह़ पर्दा किया जाए ? सारा दिन पर्दे में रहना बहुत दुश्वार, घर के कामकाज करते वक़्त कैसे अपने चेहरे को छुपाए ?

जवाब : घर में रहते हुए भी बिल ख़ुसूस **देवर व जेठ** वग़ैरा के मुआ़-मले में मोह़तात़ रहना होगा। सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **पैकरे शर्मो ह़या, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा, मह़बूबे ख़ुदा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "औ़रतों के पास जाने से

बचो।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **देवर** के मु-तअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है? फ़रमाया : **"देवर मौत है।"** (بخاری ج٣ص٤٧٢ حدیث ٥٢٣٢) देवर का अपनी भाभी के सामने होना गोया मौत का सामना है कि यहां फ़ितने का अन्देशा ज़ियादा है। मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते वक़ारे मिल्लत मौलाना **वक़ारुद्दीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "उन रिश्तेदारों से जो ना मह़रम हैं, चेहरा, हथेली, गिट्टे, क़दम और टख़्नों के इ़लावा सित्र (पर्दा) करना ज़रूरी है, ज़ीनत बनाव सिंघार भी उन के सामने ज़ाहिर न किया जाए।" (वक़ारुल फ़तावा, जि. 3, स. 151)

मन्क़ूल है : **"जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के ह़ुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।"** (ھدایہ، ج٤ ص٣٦٨)

यक़ीनन **भाभी** भी अज्नबिय्या ही है। जो **देवर व जेठ** अपनी भाभी को क़स्दन शह्वत के साथ देखते रहे हों, बे तकल्लुफ़ बने रहे हों, मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हों, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर कर फ़ौरन से पेश्तर **सच्ची तौबा** कर लें। भाभी अगर **देवर** को छोटा भाई और **जेठ** को बड़ा भाई कह दे इस से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी जाइज़

नहीं हो जाती बल्कि येह अन्दाज़े गुफ़्त-गू भी फ़ासिले दूर कर के क़रीब लाता है और **देवर** व भाभी बद निगाही, बे तकल्लुफ़ी, हंसी मज़ाक़ वग़ैरा गुनाहों के दलदल में मज़ीद धंसते चले जाते हैं । ह़ालां कि जेठ और देवर व **भाभी** का आपस में गुफ़्त-गू करना भी मुसल्सल ख़त़रे की घन्टी बजाता रहता है !

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

देवर व जेठ और भाभी वग़ैरा ख़बरदार रहें कि ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा, "**اَلْعَیْنَانِ تَزْنِیَانِ**" या'नी आंखें ज़िना करती हैं । **(مُسنَد اِمام احمد ج۳ ص ۳۰۵ حدیث ۸۸۵۲)** बहर ह़ाल अगर एक घर में रहते हुए औ़रत के लिये क़रीबी ना मह़रम रिश्तेदारों से पर्दा दुश्वार हो तो चेहरा खोलने की तो इजाज़त है मगर कपड़े हरगिज़ ऐसे बारीक न हों जिन से बदन या सर के बाल वग़ैरा चमकें या ऐसे चुस्त न हों कि बदन के आ'ज़ा, जिस्म की हैअत (या'नी सूरत व गोलाई) और सीने का उभार वग़ैरा ज़ाहिर हो ।

पर्दादार के लिये आज़माइशें

सुवाल : आज कल पर्दा करने वालियों का "मुल्लानी" कह कर घर में मज़ाक़ उड़ाया जाता है । कभी औ़रतों की किसी तक़रीब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

में **म–दनी बुरक़अ़** ओढ़ कर चली जाए तो कोई कहती है, **अरे** ! येह क्या ओढ़ रखा है उतारो इस को ! कोई बोलती है, बस हमें मा'लूम हो गया कि तुम बहुत पर्दादार हो अब छोड़ो भी येह पर्दा वर्दा ! कोई कहती है, **दुन्या** बहुत तरक़्क़ी कर चुकी है और तुम ने क्या येह दक़्यानूसी अन्दाज़ अपना रखा है ! वग़ैरा। इस त़रह़ की दिल दुखाने वाली बातों से **शर–ई पर्दा करने वाली** का दिल टूट फूट कर चक्ना चूर हो जाता है। इन ह़ालात में उसे क्या करना चाहिये ?

जवाब : वाक़ेई निहायत ही नाज़ुक ह़ालात हैं, **शर–ई पर्दा** करने वाली इस्लामी बहन सख़्त आज़माइश में मुब्तला रहती है मगर हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। मज़ाक़ उड़ाने या ए'तिराज़ करने वालियों से ज़ोरदार बह़्स शुरूअ़ कर देना या गुस्से में आ कर लड़ पड़ना सख़्त नुक़्सान देह है कि इस त़रह़ मस्अला ह़ल होने के बजाए मज़ीद उलझ सकता है। ऐसे मौक़अ़ पर येह याद कर के अपने दिल को तसल्ली देनी चाहिये कि जब तक ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़म ए'लाने नुबुव्वत नहीं फ़रमाया था उस वक़्त तक कुफ़्फ़ारे बद अन्जाम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एह़तिराम की नज़र से देखते

थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अमीन** और **सादिक़** के लक़ब से याद करते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जूं ही अ़लल ए'लान इस्लाम का डंका बजाना शुरूअ़ किया वोही कुफ़्फ़ारे बद अत्वार त़रह़ त़रह़ से सताने, मज़ाक़ उड़ाने और गालियां सुनाने लगे, सिर्फ़ येही नहीं बल्कि जान के दर पै हो गए, मगर कुरबान जाइये ! सरकारे नामदार, उम्मत के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिल्कुल हिम्मत न हारी, हमेशा सब्र ही से काम लिया। अब इस्लामी बहन सब्र करते हुए ग़ौर करे कि मैं जब तक फ़ेशन एबल और बे पर्दा थी मेरा कोई मज़ाक़ नहीं उड़ाता था, जूं ही मैं ने **शर-ई पर्दा** अपनाया, सताई जाने लगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का शुक्र है कि मुझ से ज़ुल्म पर सब्र करने की सुन्नत अदा हो रही है।** म-दनी इल्तिजा है कि कैसा ही सदमा पहुंचे सब्र का दामन हाथ से मत छोड़िये नीज़ बिला इजाज़ते शर-ई हरगिज़ ज़बान से कुछ मत बोलिये। ह़दीसे कुदसी में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है **:** "ऐ इब्ने आदम ! अगर तू **अव्वल सदमे** के वक़्त **सब्र** करे और सवाब का त़ालिब हो तो मैं तेरे लिये जन्नत के सिवा किसी सवाब पर राज़ी नहीं।" (سُنَن ابن ماجہ ج۲ ص۲۶۶ حدیث۱۵۹۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

आसिया की दर्दनाक आज़माइश

सुवाल : जिस इस्लामी बहन को शर-ई पर्दा और सुन्नतों पर अ़मल वग़ैरा की वज्ह से मुआ़-शरे में مَعَاذَاللّٰہ ह़क़ीर समझते हों और ख़ानदान में भी सताया जाता हो उस की ढारस के लिये कोई दर्द अंगेज़ ह़िकायत बयान कीजिये।

जवाब : जिस इस्लामी बहन को शर-ई पर्दा करने के बाइ़स घर और ख़ानदान में सताया जाता हो उस के लिये ह़ज़रते सय्यि-दतुना आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के वाक़िआ़त में काफ़ी दर्से इ़ब्रत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़िरऔ़न की ज़ौजियत में थीं। जादूगरों की मग़्लूबिय्यत और ईमान आ-वरी पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا भी ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर ईमान ले आई। जब फ़िरऔ़न को इस का इ़ल्म हुवा तो उस ने त़रह़ त़रह़ से सज़ाएं देनी शुरूअ़ कीं कि किसी त़रह़ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ईमान से मुन्ह़रिफ़ हो जाएं मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا साबित क़दम रहीं। आख़िरे कार फ़िरऔ़न ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को चिल-चिलाती धूप में लकड़ी के तख़्ते पर लिटा कर **चौमैख़ा** कर दिया या'नी दोनों हाथों

और दोनों पाउं में मैख़ें (लोहे की कीलें) ठोंक दीं, ज़ुल्म बालाए ज़ुल्म येह कि मुबारक सीने पर **चक्की के पाट** रखवा दिये कि हिल भी न सकें। इस शदीद तरीन और ना क़ाबिले बरदाश्त तक्लीफ़ में भी उन के पाए सबात को ज़र्रा बराबर लग़्ज़िश न हुई, बे क़रार हो कर अपने रब्बे ग़फ़्फ़ार جَلَّ جَلَالُهٗ के दरबारे गोहर बार में अ़र्ज़ गुज़ार हुईं :

رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَكَ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۱﴾
(پ ۲۸ التّحریم ۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फ़िरऔन और इस के काम से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन (या'नी सय्यि-दतुना आसिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) पर फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा दिये जिन्हों ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर साया कर लिया और उन का **जन्नती घर** उन्हें दिखा दिया जिस से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا उन तमाम मुसीबतों को भूल गईं। बा'ज़ रिवायात में है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا मअ़ जिस्म आस्मान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

पर उठा ली गई । ह़ज़रते सय्यि-दतुना **आसिया** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا जन्नत में हमारे **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में होंगी । (नूरुल इरफ़ान, स. 896) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मर्हूमा अम्मीजान ने म-दनी काम करने की इजाज़त दिलवाई

इस्लामी बहनो ! आज़माइशों पर सब्र करने वालों पर आज भी रब عَزَّوَجَلَّ की इनायतों का ज़ुहूर होता है, चुनान्चे **एक** इस्लामी बहन का तह़रीरी बयान अपने अन्दाज़ में पेश करने की सअ़य करता हूं । **कोट अ़त्तारी** (कोटरी बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का बयान है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है, लिहाज़ा मैं ख़ूब बढ़ चढ़ कर **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करना चाहती थी मगर मेरे बच्चों के अब्बू इजाज़त नहीं देते थे । मैं फिर भी शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए अपनी बिसात़ के मुत़ाबिक़ **म-दनी काम** किया करती । मेरी ख़ुश नसीबी कि स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1430 हि. के मुबारक महीने में हमारे अ़लाक़े के एक घर में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

दा'वते इस्लामी की **इस्लामी बहनों का म-दनी क़ाफ़िला** तशरीफ़ लाया । **जद्वल** के मुताबिक़ दूसरे दिन होने वाले **तरबिय्यती इज्तिमाअ़** में मुझे भी शिर्कत की सआदत मिली । मैं ने वहां पर येह दुआ़ मांगी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! "इस म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से मेरे बच्चों के अब्बू मुझे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करने की इजाज़त दे दिया करें ।" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उसी रात मेरे बच्चों के अब्बू को मेरी मर्हूमा अम्मीजान (या'नी उन की सास जो उन्हें बेटों की त़रह़ चाहती थीं) की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, **मर्हूमा** ने फ़रमाया : "तुम मेरी बेटी को दा'वते इस्लामी के **म-दनी काम** क्यूं नहीं करने देते ! उसे इस की इजाज़त दे दो ।" मेरे बच्चों के अब्बू ने येह ख़्वाब सुना कर मुझे हंसी ख़ुशी **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी काम** करने की इजाज़त दे दी । यूं इस्लामी बहनों के **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से मेरे दिल की मुराद बर आई ।

क़ाफ़िले में ज़रा मांगो आ कर दुआ़ पाओगे ने'मतें क़ाफ़िले में चलो
होगा लुत़्फ़े ख़ुदा आओ बहनो दुआ़ मिल के सारे करें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

म-दनी काम की तड़प मरह़बा !

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! म-दनी क़ाफ़िलों की भी कैसी प्यारी प्यारी बहारें हैं ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस में ख़ूब दुआ़एं क़बूल होती हैं। **म-दनी काम** के ज़रीए़ नेकी की दा'वत आ़म करने की तड़प मरह़बा ! कि इस में सवाब ही सवाब है इस ज़िम्न में चार अह़ादीसे मुबा-रका पेश की जाती हैं :

चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है।[1] ﴾2﴿ अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों।[2] ﴾3﴿ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक़ यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां (पानी में) लोगों को **नेकी सिखाने वाले** पर ''सलात'' भेजते हैं।[3] **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ''**सलात**'' से उस की **ख़ास रह़मत** और मख़्लूक़ की ''सलात'' से ख़ुसूसी दुआ़ए रह़मत मुराद है।[4]

मدينه

(1) ترمذی ج٤ ص٣٠٥ حدیث ٢٦٧٩ (2) مسلم ص١٣١١ حدیث ٢٤٠٦
(3) ترمذی ج٤ ص٣١٤ حدیث ٢٦٩٤ (4) मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 200

﴾4﴿ बेहतरीन स–दक़ा येह है कि मुसलमान आदमी इल्म ह़ासिल करे फिर अपने मुसल्मान भाई को सिखाए। (سُنَن ابن ماجہ ج۱ ص۱۵۸ حدیث ۲۴۳)

घर में पर्दे का ज़ेह्न कैसे बने ?

सुवाल : घर में पर्दे का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाया जाए ?

जवाब : फ़ैज़ाने सुन्नत नीज़ इसी किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" से घर दर्स जारी कर के, मक–त–बतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुना सुना कर, **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए घर के मर्दों को **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म–दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर** बना कर घर में म–दनी माह़ोल क़ाइम करने की कोशिश जारी रखिये। उन के लिये दिल सोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये। ख़ुद को और अहले ख़ाना को हर गुनाह से बचाने की **कुढ़न** पैदा कीजिये और इस के लिये कोशिश भी जारी रखिये। मगर नरमी नरमी और नरमी को लाज़िम कर लीजिये। बिला मस्लह़ते शर–ई सख़्ती करना कुजा इस का सोचिये भी नहीं कि उ़मूमन जो काम "नरमी" से होता है वोह "गरमी" से नहीं होता।

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

बहर ह़ाल अपने अहलो इ़याल की इस्लाह़ की हर मुम्किन सूरत में तरकीब बनाते रहना चाहिये। पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयते करीमा में इर्शादे खु़दा वन्दी عَزَّوَجَلَّ है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ ۲۸ التحریم ٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

मा तह़्त के बारे में पूछा जाएगा

याद रखिये ! ख़ावन्द अपनी बीवी का, बाप अपने बच्चों का और हर शख़्स अपने अपने मा तह़्तों का एक त़रह़ से "ह़ाकिम" है और हर ह़ाकिम से उस के मा तह़्तों के बारे में बरोज़े मह़शर बाज़पुर्स होगी। चुनान्चे रह़मते आ़लम, नय्यरे आ'ज़म, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "तुम सब अपने **मु-तअ़ल्लिक़ीन** के सरदार व ह़ाकिम हो और ह़ाकिम से रोज़े क़ियामत उस की रइ़य्यत के बारे में पूछा जाएगा।"

(صَحِیحُ البُخارِی ج۱ ص ۳۰۹ حدیث۸۹۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

छोटे भाई की इन्फ़िरादी कोशिश

इस्लामी बहनो ! हलाकत से ख़ुद को बचाने और मग़्फ़िरत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का सुन्नतों भरा म-दनी माह़ोल भी है। बसा अवक़ात एक फ़र्द की दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी घर भर की इस्लाह़ का सबब बन जाती है ऐसी बीसियों बहारें मौजूद हैं, एक बहार मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि हमारा घराना बहुत मॉडर्न था। घर के अफ़राद **फ़िल्मों डिरामों** और **गाने बाजों** के रसिया थे। ख़ुदा का करना यूं हुवा कि मेरे छोटे भाई पर एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** की। इस पर उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत पाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में मुसल्सल ह़ाज़िरी से भाई के किरदार में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, वोह **नमाज़ों** के पाबन्द हो गए, **सुन्नतों** पर अ़मल की कोशिश और घर वालों की इस्लाह़ की फ़िक्र में रहने लगे। वोह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतें बताते और हमें इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे

इज्तिमाअ़ में शिर्कत की रग़बत दिलाते। उन की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** बिल आख़िर रंग लाई और मैं ने इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत पाई, वहां के माहोल की रूहानिय्यत और सुन्नतों भरे बयान ने मुझ पर अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी कर दी, **दुआ़** के दौरान मैं ने ख़ूब रो रो कर अपने गुनाहों से **तौबा** की और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी मह़ोल को कभी न छोड़ने का अ़ज़्मे **मुसम्मम** किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे **इज्तिमाआ़त** में पाबन्दी से शिर्कत की बदौलत **ख़ौफ़े ख़ुदा** और **इश्क़े मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़ाने का जज़्बा नसीब हुवा। **दा'वते इस्लामी** के सदक़े हमारे घर का बिगड़ा हुवा माह़ोल, **म-दनी माह़ोल** में तब्दील हो गया। घर वालों की बाहमी रिज़ा मन्दी से T.V. निकाल दिया गया क्यूं कि इस के होते हुए फ़िल्मों डिरामों से बचना बेह़द दुश्वार है और अब हमारे घर में फ़िल्में डिरामे और गाने नहीं बल्कि **सरकार** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तों के तराने सुने जाते हैं।

न मरना याद आता है न जीना याद आता है
मुह़म्मद याद आते हैं मदीना याद आता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! बिग़ैर हिम्मत हारे ख़ूब ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** करती रहें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नाकामी नहीं होगी। इस ज़िम्न में अगर कोई तक्लीफ़ भी पहुंच जाए तो सब्रो शिकेबाई का दामन हाथ से मत छोड़िये कि आने वाली मुसीबत اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ी भलाई का पेश ख़ैमा साबित होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है **:** ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्तला फ़रमा देता है।''

(صَحِیحُ البُخارِی ج٤ ص٤ حدیث ٥٦٤٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

दय्यूस की ता'रीफ़

सुवाल : ''दय्यूस'' किसे कहते हैं ?

जवाब : जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह ''दय्यूस'' हैं। रह़मते आ़-लमिय्यान, सुल्ताने दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, ''तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे **दय्यूस** और मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत और शराब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

नोशी का आदी।" (مجمع الزّوائد ج ٤ ص ٥٩٩ حديث ٧٧٢٢) मर्दों की त़रह़ बाल कटवाने और मर्दाना लिबास पहनने वालियां इस ह़दीसे पाक से इ़ब्रत ह़ासिल करें, छोटी बच्चियों के लड़कों जैसे बाल बनवाने और इन्हें लड़कों जैसे कपड़े और हेट वग़ैरा पहनाने वाले भी एह़तियात़ करें ताकि बच्ची इसी उ़म्र से अपने आप को मर्दों से मुम्ताज़ समझे और होश संभालने और बालिग़ा होने के बा'द इस को अपनी आ़दात व अत़्वार शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बनाने में मुश्किलात दरपेश न आएं। ह़दीसे पाक में येह जो फ़रमाया गया कि "कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे।" यहां इस से त़वील अ़र्से तक जन्नत में दाख़िले से मह़रूमी मुराद है। क्यूं कि जो भी मुसल्मान अपने गुनाहों की पादाश में مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ दोज़ख़ में जाएंगे वोह बिल आख़िर जन्नत में ज़रूर दाख़िल होंगे। मगर येह याद रहे कि एक लम्ह़े का करोड़वां ह़िस्सा भी जहन्नम का अ़ज़ाब कोई बरदाश्त नहीं कर सकता लिहाज़ा हमें हर गुनाह से बचने की हर दम कोशिश और जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िले की दुआ़ करते रहना चाहिये। "दय्यूस" के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन **ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "दय्यूस" वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या

किसी महरम पर ग़ैरत न खाए।" (دُرِّمُختار ج٦ ص ١١٣)

मा'लूम हुवा कि **बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना महरम रिश्तेदारों, ग़ैर महरम मुलाज़िमों, चोकीदारों और ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले दय्यूस, जन्नत से महरूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं।** मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "दय्यूस सख़्त अख़्बसे फ़ासिक़ (है) और फ़ासिक़े मो'लिन के पीछे नमाज़ मकरूहे तह़रीमी। उसे इमाम बनाना ह़लाल नहीं और उस के पीछे नमाज़ पढ़नी गुनाह और पढ़ी तो फैरना वाजिब।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 583)

बे पर्दा कल जो आई नज़र चन्द बीबियां
अक्बर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया
पूछा जो उन से आप का पर्दा वोह क्या हुवा ?
कहने लगीं, "वोह अ़क़्ल पे मर्दों की पड़ गया !"

अगर औ़रत ना फ़रमानी करे तो.....?

सुवाल : अगर मर्द की कोशिश के बा वुजूद औ़रतें बे पर्दगी से बाज़ न आएं क्या तब भी वोह **दय्यूस** है ?

जवाब : अगर मर्द अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ मन्अ़ करता है और बे पर्दगी से रोकने के शर-ई तक़ाज़े उस ने पूरे किये हैं और वोह नहीं मानतीं तो इस सूरत में मर्द पर न कोई इल्ज़ाम और न वोह **दय्यूस** । पस ह़त्तल इम्कान बे पर्दगी वग़ैरा के मुआ़-मले में औ़रतों को रोका जाए मगर ह़िक्मते अ़-मली के साथ। कहीं ऐसा न हो कि आप अपनी ज़ौजा या मां बहनों पर इस त़रह़ की सख़्ती कर बैठें जिस से घर का अम्न ही तहो बाला हो कर रह जाए।

क्या मुंह बोले भाई बहन का पर्दा है ?

सुवाल : क्या मुंह बोले बाप, भाई और बेटे वग़ैरा से भी इस्लामी बहन का पर्दा है ?

जवाब : जी हां ! इन से भी पर्दा है कि किसी को बाप, भाई या मुंह बोला बेटा बना लेने से वोह ह़क़ीक़ी बाप, भाई और बेटा नहीं बन जाता। इन से तो निकाह़ भी दुरुस्त है। हमारे मुआ़-शरे में **मुंह बोले रिश्तों** का रवाज आ़म है कोई मर्द किसी को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

"मां" बनाए हुए है, कोई लड़की किसी को "भाई" बना बैठी है तो किसी ख़ातून ने किसी को "बेटा" बना लिया है, कोई किसी जवान लड़की का **मुंह बोला चचा** है तो कोई **मुंह बोला बाप** और फिर बे पर्दगियों, बे तकल्लुफ़ियों और मख़्लूत़ दा'वतों के गुनाह व पाप का वोह सैलाब है कि اَلْاَمان وَ الْحَفِیظ। सिन्फ़े मुख़ालिफ़ के साथ मुंह बोले रिश्ते क़ाइम करने वालों और वालियों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना चाहिये। यक़ीनन शैत़ान पहले से बोल कर वार नहीं करता। ह़दीसे पाक में आता है, "दुन्या और औ़रतों से बचो क्यूं कि बनी इस्राईल में सब से पहला फ़ितना औ़रतों की वज्ह से उठा।" (صَحِیح مُسلِم ص١٤٦٥ حدیث٢٧٤٢)

ले पालक बच्चे का हुक्म

सुवाल : किसी का बच्चा गोद ले सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ले तो सकते हैं, मगर वोह ना मह़रम हो तो जब से औ़रतों के "मुआ़-मलात" समझने लगे, उस से पर्दा किया जाए। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मुराहिक़ (या'नी क़रीबुल बुलूग़ लड़के) की उ़म्र बारह साल है।

(رَدُّالْمُحتَار ج٤ ص١١٨)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं) गा। (ابن بشكوال)

बच्ची गोद लेना कैसा ?

सुवाल : किसी की बच्ची गोद लेना कैसा ? क्या इस को "बेटी" बना लेने से जवान होने पर मुंह बोले बाप से पर्दे के मसाइल में रिआयत हो जाएगी ?

जवाब : बच्ची लेनी हो तो आसानी इसी में है कि महूरमा म-सलन सगी भतीजी या सगी भान्जी ले ताकि रज़ा-ई (या'नी दूध का) रिश्ता क़ाइम न हो तब भी बालिग़ा होने के बा'द साथ रह सके मगर बालिग़ा होने के बा'द घर के ना महूरमों म-सलन सगे चचा या सगे मामूं जिन्हों ने पाला उन के बालिग़ लड़कों से (जब कि वोह दूध शरीक भाई न हों) पर्दा वाजिब हो जाएगा। अगर गोद ली बच्ची ना महूरमा थी तो बालिग़ा बल्कि क़रीबे बुलूग़ पहुंचे तो उस को पालने वाला ना महरम बाप अपने साथ न रखे। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 13 **सफ़हा** 412 पर फ़रमाते हैं : "लड़की बालिग़ा हुई या क़रीबे बुलूग़ पहुंची जब तक शादी न हो ज़रूर उस को बाप के पास रहना चाहिये यहां तक कि नव बरस की उम्र के बा'द सगी मां से

लड़की ले ली जाएगी और बाप के पास रहेगी **न कि अजनबी** (या'नी जिस से हमेशा के लिये शादी ह़राम नहीं उस के पास) **जिस के पास रहना किसी त़रह़ जाइज़ ही नहीं, बेटी कर के पालने से बेटी नहीं हो जाती।**" फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मुश्तहात (या'नी बालिग़ा होने के क़रीब लड़की) की कम अज़ कम उ़म्र नव साल है।

(رَدُّالْمُحتَارج٤ص١١٨)

ले पालक से पर्दा जाइज़ होने की सूरत

सुवाल : बचपन से हिले हुए बच्चों के समझदार होने पर "पर्दा" नाफ़िज़ करना इन्तिहाई दुश्वार मा'लूम होता है। कोई ऐसी सूरत हो तो बता दीजिये कि बच्चा गोद लें तो जवान हो जाने पर पर्दा वाजिब न हो।

जवाब : इस की सूरत येह है कि जो बच्चा या बच्ची गोद ली है उस से दूध का रिश्ता क़ाइम कर ले। लेकिन दूध का रिश्ता क़ाइम करने में येह बात मद्दे नज़र रखना ज़रूरी है कि अगर बच्ची गोद लेना हो तो शोहर से रज़ाअ़त का रिश्ता क़ाइम किया जाए। म-सलन शोहर की बहन या भान्जी या भतीजी उस बच्ची को अपना दूध पिला दे और अगर बच्चा गोद लेना हो तो बीवी उस से अपना रज़ाअ़त का रिश्ता क़ाइम करे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

म-सलन बीवी ख़ुद या बीवी की बहन या बेटी या भान्जी या भतीजी उस बच्चे को अपना दूध पिला दे। इस त़रह़ दोनों सूरत में बीवी और शोहर दोनों के लिये पर्दे के मसाइल ह़ल हो जाएंगे। येह याद रहे जब भी दूध का रिश्ता क़ाइम करना हो तो बच्चे को (हिजरी सिन के ह़िसाब से) दो साल की उ़म्र तक दूध पिलाया जाए। इस के बा'द दूध पिलाना जाइज़ नहीं बल्कि मां के लिये अपनी सगी औलाद को भी दो साल की उ़म्र के बा'द को दूध पिलाना जाइज़ नहीं लेकिन ढाई साल की उ़म्र के अन्दर भी अगर बच्चा किसी औ़रत का दूध पी ले तो भी दूध का रिश्ता क़ाइम हो जाता है।

लड़का कब बालिग़ होता है ?

सुवाल : लड़का कब बालिग़ होता है ?

जवाब : हिजरी सिन के ह़िसाब से 12 और 15 साल की उ़म्र के दौरान जब भी (जिमाअ़ या मुश्त ज़नी वग़ैरा के ज़रीए) इन्ज़ाल हुवा या सोते में एह़तिलाम हुवा या उस के जिमाअ़ से औ़रत ह़ामिला हो गई तो उसी वक़्त बालिग़ हो गया और उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया। अगर ऐसा न हुवा तो हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ 15 बरस का होते ही बालिग़ हो गया।

(دُرِّمُختار ج۹ ص۲۵۹ ملخصاً)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

लड़की कब बालिग़ा होती है ?

सुवाल : लड़की कब बालिग़ा होती है ?

जवाब : हिजरी सिन के ह़िसाब से 9 और 15 साल की उ़म्र के दौरान एह़तिलाम हो या ह़ैज़ आ जाए या ह़म्ल ठहर जाए तो बालिग़ा हो गई वरना हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ 15 साल की होते ही बालिग़ा है। (ایضاً)

कितनी उ़म्र के लड़के से पर्दा है ?

सुवाल : कितनी उ़म्र के लड़के से पर्दा किया जाए ?

जवाब : पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 31 में है **:**

اَوِ الطِّفْلِ الَّذِیْنَ لَمْ یَظْهَرُوْا عَلٰی عَوْرٰتِ النِّسَآءِ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** या वोह बच्चे जिन्हें औ़रतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं। इस आयते करीमा के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं **:** "या'नी वोह छोटे बच्चे जो अभी बुलूग़ के क़रीब भी न हों (उन से पर्दा नहीं) मा'लूम हुवा कि मुराहिक़ या'नी क़रीबुल बुलूग़ लड़के से पर्दा चाहिये।" (नूरुल इरफ़ान, स. 564) फु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं मुश्तहात (या'नी क़रीबुल बुलूग़ लड़की) की कम अज़ कम उ़म्र नव साल और मुराहिक़ (या'नी क़रीबुल बुलूग़ लड़के) की बारह साल है। (رَدُّالْمُحتَار ج ٤ ص ١١٨) मेरे आक़ा **आ'ला**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "नव बरस से कम की लड़की को पर्दे की ह़ाजत नहीं और जब पन्दरह बरस की हो सब ग़ैर मह़ारिम से पर्दा वाजिब, और नव से पन्दरह तक अगर आसारे बुलूग़ ज़ाहिर हों तो (भी पर्दा) वाजिब, और न ज़ाहिर हों तो मुस्तह़ब। खुसूसन बारह बरस के बा'द बहुत **मुअक्कद** (या'नी सख़्त ताकीद है) कि येह ज़माना कुर्बे बुलूग़ व कमाले इश्तिहा का है।" (या'नी 12 बरस की उ़म्र की लड़की के बालिग़ा हो जाने और शह्वत के कमाल तक पहुंचने का क़रीबी दौर है) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 639)

काफ़िरा औ़रत से पर्दा

सुवाल : क्या इस्लामी बहन का **काफ़िरा औ़रत** से भी पर्दा है ?

जवाब : जी हां। **काफ़िरा औ़रत** से भी उसी त़रह़ पर्दा है जिस त़रह़ ग़ैर मर्द से। काफ़िरा औ़रत से पर्दे की तफ़्सील येह है कि इस्लामी बहन का काफ़िरा औ़रत से उसी त़रह़ का पर्दा है जिस त़रह़ कि एक अजनबी मर्द से पर्दा होता है या'नी अस्ल मज़्हब के मुत़ाबिक़ औ़रत के लिये सिवाए चेहरे की टिकली, हथेली और टख़्ने के नीचे पाउं कि जिसे ज़ाहिरे ज़ीनत कहा जाता है तमाम जिस्म का अजनबी से छुपाना ज़रूरी है और **"मु-तअख़्ख़िरीन"** के नज़्दीक अजनबी मर्द से येह तीन आ'ज़ा भी छुपाए जाएंगे। औ़रत को अजनबी मर्द से पर्दे के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

अह़काम पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 31 में बयान किये गए हैं। इसी आयते मुबा-रका में मुसल्मान औ़रत का काफ़िरा से पर्दे का हुक्म भी बयान हुवा कि सिवाए مَاظَهَرَ مِنْهَا (या'नी जितना खु़द ही ज़ाहिर है) कि एक मुसल्मान औ़रत का तमाम जिस्म जिस त़रह़ अजनबी मर्द के लिये औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है इसी त़रह़ काफ़िरा के लिये भी सित्र (या'नी छुपाने की चीज़) है जैसा कि मक़ामे इस्तिस्ना में اَوْنِسَآئِهِنَّ (या'नी या अपने दीन की औ़रतें) से ज़ाहिर है। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِی الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ (پ ۱۸ النّور ۳۱)

मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे त़रीक़त, आ़लिमे शरीअ़त, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن अपने शोह्‌रए आफ़ाक़ तर-ज-मए कुरआन **कन्ज़ुल ईमान** में इस का तरजमा यूं फ़रमाते हैं **:** और मुसल्मान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की ह़िफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं मगर जितना खु़द ही ज़ाहिर है और दुपट्टे अपने गिरीबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शोहरों पर या अपने बाप या शोहरों के बाप या अपने बेटे या शोहरों के बेटे या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भान्जे या अपने दीन की औ़रतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों या नोकर बशर्ते़ कि शह्‌वत वाले मर्द न हों या वोह बच्चे जिन्हें औ़रतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसल्मानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस हि़स्सए आयत اَوْ نِسَآىٕهِنَّ (या'नी या अपने दीन की औ़रतें) के तह़्त फ़रमाते हैं : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को लिखा था कि कुफ़्फ़ार अहले किताब की औ़रतों को मुसल्मान औ़रतों के साथ ह़म्माम में दाख़िल होने से मन्अ़ करें । इस से मा'लूम हुवा कि मुस्लिमा औ़रत को काफ़िरा औ़रत के सामने अपना बदन खोलना जाइज़ नहीं ।

आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "शरीअ़त का तो येह हुक्म है कि **काफ़िरा औ़रत** से मुसल्मान औ़रत को ऐसा पर्दा वाजिब है जैसा उन्हें मर्द से । या'नी सर के बालों का कोई हि़स्सा या बाज़ू या कलाई या गले से पाउं के गिट्टों के नीचे तक जिस्म का कोई हि़स्सा मुसल्मान औ़रत का **काफ़िरा औ़रत** के सामने खुला होना जाइज़ नहीं ।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 692)

फ़ाजिरा औ़रत से पर्दा

सुवाल : क्या फ़ासिक़ा औ़रत से भी पर्दा करना ज़रूरी है ?

जवाब : नहीं। कबीरा गुनाह करने वाली या सग़ीरा गुनाह पर इस्रार करने वाली म-सलन नमाज़ न पढ़ने वाली, मां बाप को सताने वाली, ग़ीबत व चुग़ली करने वाली **फ़ासिक़ा** कहलाती है। जब कि ज़ानिया, फ़ाहिशा और बदकार औ़रत को फ़ासिक़ा के साथ साथ **फ़ाजिरा** भी कहते हैं। **फ़ासिक़ा** से पर्दा नहीं और **फ़ाजिरा** से भी पर्दा करने का एह़तियातन हुक्म है। उस की सोह़बत से बचना बेह़द ज़रूरी है कि बुरी सोह़बत बुरा फल लाती है। **फ़ाजिरा** से मिलने के बारे में हुक्मे शरीअ़त बयान करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं **:** हां येह (या'नी उस से पर्दा करने का) हुक्म एह़तियाती है, मगर येह एह़तियात ज़रूरी है जब देखे कि अब कुछ भी बुरा असर पड़ता मा'लूम होता है फ़ौरन **इन्क़िताए कुल्ली** (या'नी मुकम्मल दूरी इख़्तियार) करे और उस की सोह़बत को आग जाने। और इन्साफ़ येह है कि बुरा असर पड़ते मा'लूम नहीं होता और जब पड़ जाता है तो फिर एह़तियात की त़रफ़ ज़ेह्न जाना क़दरे दुश्वार है लिहाज़ा

अमान व सलामत (फ़ाजिरा से) जुदा रहने ही में है । وَبِاللّٰہِ التَّوفِیق (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की मदद से तौफ़ीक़ मुयस्सर आती है) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 204, मुलख़्ख़सन)

मौलाना जलालुद्दीन रूमी قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز **मस्नवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं :**

تا توانی دور شو از یارِ بد　　یارِ بد بدتر بود از مارِ بد

مارِ بد تنہا ہمیں بر جاں زند　　یارِ بد برجان و بر ایماں زند

(या'नी जब तक मुम्किन हो बुरे यार (साथी) से दूर रहो क्यूं कि बुरा साथी बुरे सांप से भी ज़ियादा ख़त़रनाक और नुक़्सान देह है, इस लिये कि ख़त़रनाक सांप तो सिर्फ़ जान या'नी जिस्म को तक्लीफ़ या नुक़्सान पहुंचाता है जब कि बुरा साथी जान और ईमान दोनों को बरबाद कर देता है) (گلدستہ مثنوی ص۹۴)

मेरी ज़िन्दगी का मक़्सद

इस्लामी बहनो ! बुरी सोह़बत में हलाकत ही हलाकत और अच्छी सोह़बत और अच्छों से **मह़ब्बत** व निस्बत में हर त़रह़ से आ़फ़िय्यत है । दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों के क्या कहने ! बरबादिये आख़िरत पर चलने वाली कितनी ही इस्लामी बहनों को राहे जन्नत पर सफ़र

नसीब हो गया, ऐसी ही एक म-दनी बहार सुनिये, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि मैं दुन्या की रंगीनियों में गुम और इम्तिह़ाने आख़िरत से बे फ़िक्र हो कर ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ार रही थी । एक दिन **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता किसी इस्लामी बहन ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** के तहख़ाने में होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी । उन की शफ़्क़त के नतीजे में मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई, वहां **म-दनी इन्आ़मात** से **मु-तअ़ल्लिक़** बयान जारी था, मैं ने हमातन गोश हो कर बयान सुनना शुरूअ़ कर दिया । बयान इन्तिहाई पुरसोज़ था मुझ पर एक दम रिक़्क़त त़ारी हो गई और मेरे बदन का रुवां रुवां **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की वजह से कांप उठा । बयान के इख़्तिताम पर मैं ने सच्चे दिल से **निय्यत** की, कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयिन्दा ज़िन्दगी **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए गुज़ारूंगी । फिर **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की ब-र-कत से **म-दनी बुरक़अ़**

पहनने की सआदत भी नसीब हो गई है। अब मैं ने अपनी ज़िन्दगी को इस म-दनी मक़्सद के तहत गुज़ारने का अ़ज़्म किया हुवा है कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना है और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये घर के मह़रम मर्दों को **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करवाना है।

दे जज़्बा "म-दनी इन्आ़मात" का तू करम बहरे शहे कर्बो बला हो
करम हो दा'वते इस्लामी पर येह शरीक इस में हर इक छोटा बड़ा हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

883 इज्तिमाआ़त

इस्लामी बहनो ! अभी आप ने उन दिनों की **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाई जब **दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़** ही में इस्लामी बहनों का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ होता था ! अब म-दनी मर्कज़ ने हर इतवार को दो पहर ढाई बजे होने वाले इस एक इज्तिमाअ़ को ता दमे तह़रीर तक़रीबन 37 मक़ामात पर तक़्सीम कर दिया है। जूं जूं म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़शिक़ाओं की

ता'दाद बढ़ती जाएगी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तूं तूं तक्सीम का सिल्सिला भी मज़ीद जारी रहेगा। इलावा अज़ीं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर बुध की दो पहर को बाबुल मदीना कराची में ज़ैली सत्ह पर भी ता दमे तह़रीर तक़रीबन 883 मक़ामात पर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त होते हैं।

म-दनी इन्आ़मात किस के लिये कितने ?

इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "**म-दनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया गया है। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़-ल-बए इल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि खुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "**फ़िक्रे मदीना करते हुए**" या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर **म-दनी इन्आ़मात** के जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए

ख़ाने पुर करते हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عزوجل के फ़ज़्लो करम से अक्सर दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है। सभी को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए इस में दिये गए ख़ाने पुर करें और हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के **म-दनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बनाएं।

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
म-दनी इन्आ़मात पर करता रहे जो भी अ़मल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा

म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से

लगाइये चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़-समिय्या) बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, और मीठे बोल के अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

''म-दनी इन्आ़मात'' की भी मरह़बा क्या बात है
क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या उस्ताद से भी पर्दा है ?

सुवाल : क्या ना मह़रम उस्ताद से भी पर्दा है ?

जवाब : जी हां। म-सलन बचपन में किसी ना मह़रम से क़ुरआने पाक पढ़ती थी और अब बालिग़ा हो गई तो उस **उस्ताद** से भी पर्दा फ़र्ज़ हो गया। **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **"रहा पर्दा उस में उस्ताज़ व ग़ैरे उस्ताज़, आ़लिम व ग़ैरे आ़लिम पीर सब बराबर हैं।"** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 639)

पीर और मुरी-दनी का पर्दा

सुवाल : क्या मुरी-दनी और पीर का भी पर्दा है ?

जवाब : जी हां, ना महरम पीर से भी औ़रत का पर्दा है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "पर्दे के बाब में पीर व ग़ैरे पीर हर अजनबी का हुक्म यक्सां है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 205)

औ़रत ना महरम पीर का हाथ नहीं चूम सकती

सुवाल : क्या इस्लामी बहन अपने मुर्शिद का हाथ चूम सकती है ?

जवाब : इस्लामी बहन को ना मह़रम पीर साह़िब का हाथ चूमना ह़राम है। न रोके तो पीर भी गुनहगार है। मीठे मीठे आक़ा मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े अ़मल मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

जिन औ़रतों को बैअ़त करते उन से फ़रमाते, "जाओ मैं ने तुम्हें बैअ़त किया।" ख़ुदा की क़सम ! बैअ़त करने में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ कभी किसी औ़रत के हाथ के साथ नहीं छुवा। (ابن ماجہ ج۳ص۳۹۸ حدیث ۲۸۷۵)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उमैमा बिन्ते रुक़ैक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं चन्द ख़वातीन के साथ सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त करने के लिये ह़ाज़िर हुई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اِنِّـی لَا اُصَـافِـحُ النِّسَاءَ" या'नी मैं औ़रतों से मुसा-फ़ह़ा नहीं करता।" या'नी हाथ नहीं मिलाता। (سُنَن ابن ماجہ ج۳ ص۳۹۸ حدیث ۲۸۷۴)

ग़ैर औ़रतों से हाथ मिलाने का अ़ज़ाब

पीर का औ़रतों से हाथ चुमवाना तो दूर रहा सिर्फ़ इन से हाथ मिलाए तो इस का अ़ज़ाब भी कम ख़ौफ़नाक नहीं। चुनान्चे ह़ज़रते **फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं **: दुन्या में अज्नबिय्या औ़रत से हाथ मिलाने वाला बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस के हाथ उस की गरदन में आग की ज़न्जीरों के साथ बंधे होंगे।** (قرۃ العیون مع روض الفائق ص ۳۸۹)

औरत का कुरआन सीखने के लिये घर से निकलना

सुवाल : कुरआने पाक दुरुस्त पढ़ना ज़रूरी है तो क्या इस्लामी बहन इसे सीखने के लिये घर से निकल सकती है ?

जवाब : बेहतर येही है कि घर के किसी महरम के ज़रीए सीखे वरना ब अम्रे मजबूरी किसी इस्लामी बहन से सीखने के लिये इस तरह बाहर निकले कि पर्दे के तमाम शर-ई तक़ाज़े पूरे हों।

इस्तिक़ामत का फल

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** और बिल खुसूस **म-दनी क़ाफ़िलों** में ख़ूब इल्मे दीन और सुन्नतें सीखने का मौक़अ मिलता है, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** के साथ वाबस्तगी से ज़िन्दगी में वोह वोह हैरत अंगेज़ तब्दीलियां आती हैं कि देखने वाले वर्तए हैरत में पड़ जाते हैं, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कतों से मालामाल एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी रंग में रंगने से पहले मैं बहुत **फ़ुज़ूल गो** थी, मज़ाक़ मस्ख़री और तन्ज़ बाज़ी कर के दूसरों को तंग करना मेरा महबूब मश्ग़ला था,

नमाज़ों की पाबन्दी का बिल्कुल भी ज़ेह्न न था। मंगल के रोज़ चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर **नेकी की दा'वत** देने आया करतीं मगर हम तीनों बहनें सुनी अनसुनी कर देतीं बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो मत्बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाने) में जा छुपतीं। अम्मीजान को पता चलता तो वोह आ कर हमें समझातीं कि बेचारियां ख़ुद चल कर हमारे घर आई हैं, कम अज़ कम उन की बात तो सुन लो कि वोह भी आख़िर तुम्हारी ही त़रह़ इन्सान हैं। उन इस्लामी बहनों की **इस्तिक़ामत** पर कुरबान कि हमारे ला उबाली पन के बा वुजूद हिम्मत हारे बिग़ैर उन्हों ने म-दनी कोशिशें जारी रखीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फिर वोह दिन भी आया कि मेरी बड़ी बहन ने उन की तरग़ीब पर दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** के मुअ़ल्लिमा कोर्स में दाख़िला ले लिया। वहां उन का **म-दनी ज़ेह्न** बनता चला गया, उन्हें देख कर हम दोनों बहनों को भी शौक़ पैदा हुवा चुनान्चे हम ने भी मुअ़ल्लिमा कोर्स में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वक़्त के साथ साथ हम तीनों बहनें **म-दनी रंग** में रंग गईं, **म-दनी बुरक़अ़** भी अपना लिया और **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करते करते आज मैं अ़लाक़ाई मुशा-वरत की ख़ादिमा के तौ़र पर इस्लामी बहनों में **नेकी**

की दा'वत की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का

क़रीब आ के देखो ज़रा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर बात पर एक साल की इबादत का सवाब

इस्लामी बहनो ! इस म-दनी बहार में उन इस्लामी बहनों और इस्लामी भाइयों के लिये **दर्स** पोशीदा है जो येह कहते सुनाई देते हैं कि हमारी तो कोई सुनता ही नहीं ! अ़र्सा हो गया फुलां पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मगर कोई **नतीजा** नहीं निकला ! ऐसों की ख़िदमत में अदब से दर-ख़्वास्त है कि "**हमारा काम नेकी की दा'वत पहुंचाना है, मनवाना हमारा मन्सब नहीं।**" अगर हिम्मत हारे बिग़ैर इस्तिक़ामत के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** जारी रखेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक दिन कोशिशें भी रंग लाएंगी ब सूरते दीगर नेकी की दा'वत देने का सवाब तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मिल ही जाएगा। चुनान्चे बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की **:** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और

बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है। **(مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص٤٨)**

औ़रत का पीर से इ़ल्म ह़ासिल करना

सुवाल : क्या इस्लामी बहन अपने पीर साहि़ब से इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर सकती है ?

जवाब : इस की बा'ज़ शराइत़ हैं। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अगर बदन मोटे और ढीले कपड़ों से ढका है, न ऐसे बारीक (कपड़े) कि बदन या बालों की रंगत चमके न ऐसे तंग (कपड़े) कि बदन की ह़ालत दिखाएं और जाना तन्हाई में न हो और पीर जवान न हो (या'नी ऐसा बूढ़ा व ज़ईफ़ जिस से त़-रफ़ैन या'नी पीर और मुरी-दनी में से किसी एक की जानिब से भी शह्वत का अन्देशा न हो) ग़रज़ कोई फ़ितना न फ़िलह़ाल हो न इस का अन्देशा (आयिन्दा के लिये) हो तो इ़ल्मे दीन (और) उमूरे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ सीखने के लिये जाने और बुलाने में ह़रज नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 240)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

औरत पीर से बातचीत करे या न ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन ना महरम पीर या दीगर लोगों से बात कर सकती है ?

जवाब : सिर्फ़ ज़रूरत के वक़्त कर सकती है। इस की सूरतें बयान करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "तमाम महारिम (से गुफ़्त-गू कर सकती है) और (अगर) हाजत हो और अन्देशए फ़ितना न हो, न ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) हो तो पर्दे के अन्दर से बा'ज़ ना महरम से भी (बात कर सकती है)।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 243) पीर साहिब से उन की इजाज़त के बिग़ैर बातचीत न की जाए नीज़ उन को गुफ़्त-गू के लिये मजबूर भी न किया जाए, हो सकता है कि उन के नज़्दीक गुफ़्त-गू न करने ही में बेहतरी हो।

पीर और मुरी-दनी की फ़ोन पर बातचीत

सुवाल : क्या इस्लामी बहन पीर से ब ज़रीअए फ़ोन अपनी परेशानी के हल के लिये दुआ की दर-ख़्वास्त कर सकती है ?

जवाब : कर तो सकती है। मगर ना महरम पीर साहिब (या किसी भी ग़ैर मर्द से ज़रूरतन भी बात करनी पड़ जाए तो उस) से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

लबो लहजा क़दरे रूखा सा हो। आवाज़ लोचदार व नर्म और अन्दाज़ बे तकल्लुफ़ाना न हो। (رَدُّالمُحتار ج٢ ص٩٧ مُلَخَّصاً) चूंकि इस की रिआ़यत बहुत मुश्किल है लिहाज़ा बेहतर येह है कि इन मसाइल को **अपने मह़ारिम** के ज़रीए **पीर साह़िब** तक पहुंचाए। नीज़ बिला ह़ाजत ना मह़रम पीर साह़िब से भी गुफ़्त-गू नहीं कर सकती। म-सलन मह़्ज़ सलाम दुआ़ और मिज़ाज पुर्सी वग़ैरा के लिये फ़ोन पर भी बात न करे कि येह ह़ाजत में दाख़िल नहीं।

औ़रत के लिये फ़ोन वुसूल करने का त़रीक़ा

सुवाल : इस्लामी बहन ग़ैर मर्दों के फ़ोन वुसूल कर सकती है या नहीं ?

जवाब : इसी एह़तियात़ के साथ कर सकती है। या'नी आवाज़ नर्म न हो। म-सलन नरमी के साथ "हेलो हेलो" कहने के बजाए रूखे अन्दाज़ में पूछे, "कौन ?" यहां मुआ़-मला ज़रा दुश्वार है क्यूं कि इम्कान है कि सामने वाला घर के किसी मर्द से बात करवाने का मुत़ा-लबा करे, अपना नाम व पैग़ाम बयान करे और बात करवाने का वक़्त वग़ैरा पूछे। नीज़ येह भी हो सकता है कि ख़ुदा न ख़्वास्ता बा ह़या और बा अ़मल इस्लामी बहन के भिंचे हुए रूखे अन्दाज़े गुफ़्त-गू का बुरा मनाए, और शर-ई मसाइल से ना वाक़िफ़ होने के सबब मुंहफट हो तो

"कुछ" बोल भी पड़े जैसा कि बा'ज़ इस्लामी भाइयों ने अपना तजरिबा बयान किया है कि ना मह़रम औ़रतों से ज़रूरतन फ़ोन पर बात करने की नौबत आने पर हमारे ग़ैर नर्म और रूखे लहजे पर औ़रतों ने مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ की बातें सुना दी हैं : (म–सलन) मौलाना ! आप को गुस्सा क्यूं आ रहा है ! बहर ह़ाल आ़फ़िय्यत इसी में मा'लूम होती है कि "आन्सरिंग मशीन" लगा दी जाए और उस में मर्द की आवाज़ में येह जुम्ला भर दिया जाए : "पैग़ाम रेकॉर्ड करवा दीजिये।" बा'द में मर्दों के रेकॉर्ड शुदा पैग़ामात घर के मर्द अपनी सहूलत से सुन लिया करें। **उम्महातुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ग़ैर मर्दों से गुफ़्त–गू के **मु–तअ़ल्लिक़** पारह 22 **सू–रतुल अह़ज़ाब** की आयत नम्बर 32 में इर्शाद होता है :

يٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَیْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَیَطْمَعَ الَّذِیْ فِیْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۳۲﴾

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नबी की बीबियो ! तुम और औ़रतों की त़रह़ नहीं हो अगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हां अच्छी बात कहो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है। (ابن عساکر)

बद नसीब आ़बिद और जवान लड़की

सुवाल : औ़रत को बुजु़र्ग से ख़त़रा होता है या बुजु़र्ग को औ़रत से ?

जवाब : दोनों को एक दूसरे से ख़त़रा होता है। किसी को भी अपने नफ़्स पर ए'तिमाद नहीं करना चाहिये। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 454 पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "जो अपने नफ़्स पर ए'तिमाद करे उस ने बड़े कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बड़े झूटे) पर ए'तिमाद किया।" (अल मल्फ़ूज़)

शैत़ान किस त़रह़ इन्सान को फांस कर बरबाद करता है इस को समझने के लिये एक इब्रतनाक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे मन्क़ूल है : बनी इस्राईल में एक बहुत बड़ा **आ़बिद** या'नी इबादत गुज़ार शख़्स था। उसी अ़लाक़े के तीन भाई एक बार उस **आ़बिद** की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि हमें सफ़र दरपेश है, वापसी तक हमारी **जवान बहन** को हम आप के पास छोड़ कर जाना चाहते हैं। **आ़बिद** ने ख़ौफ़े फ़ितना के सबब मा'ज़िरत चाही मगर उन के पैहम इस्रार पर वोह तय्यार हो गया और कहा कि मैं अपने साथ तो नहीं रखूंगा किसी क़रीबी घर में उस को ठहरा दीजिये।

चुनान्चे ऐसा ही किया गया। **आ़बिद** खाना अपने इ़बादत ख़ाने के दरवाज़े के बाहर रख देता और वोह उठा कर ले जाती। कुछ दिन के बा'द शैत़ान ने **आ़बिद** के दिल में हमदर्दी के अन्दाज़ में वस्वसा डाला कि खाने के अवक़ात में जवान लड़की अपने घर से निकल कर आती है कहीं किसी बदकार मर्द के हथ्थे न चढ़ जाए, बेहतर येह है कि अपने दरवाज़े के बजाए उस के दरवाज़े के बाहर खाना रख दिया जाए, इस अच्छी निय्यत का काफ़ी सवाब मिलेगा। चुनान्चे उस ने अब खाना उस के दरवाज़े पर पहुंचाना शुरूअ़ किया। चन्द रोज़ बा'द शैत़ान ने फिर वस्वसे के ज़रीए़ **आ़बिद** का जज़्बए हमदर्दी उभारा कि बेचारी चुपचाप अकेली पड़ी रहती है, आख़िर उस की वह्शत दूर करने की अच्छी निय्यत के साथ बातचीत करने में क्या गुनाह है! येह तो कारे सवाब है, यूं भी तुम बहुत परहेज़ गार आदमी हो, नफ़्स पर ह़ावी हो, निय्यत भी साफ़ है येह तुम्हारी बहन की जगह है। चुनान्चे बातचीत का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा। जवान लड़की की सुरीली आवाज़ ने **आ़बिद** के कानों में रस घोलना शुरूअ़ कर दिया, दिल में हैजान बरपा हुवा, शैत़ान ने मज़ीद उक्साया यहां तक कि "न होने का हो गया।" ह़त्ता कि लड़की ने

बच्चा भी जन दिया। शैतान ने दिल में वस्वसों के ज़रीए ख़ौफ़ दिलाया कि अगर लड़की के भाइयों ने बच्चा देख लिया तो बड़ी रुस्वाई होगी लिहाज़ा इ़ज़्ज़त प्यारी है तो नौ मौलूद का गला काट कर ज़मीन में गाड़ दे। वोह ज़ेह्नी त़ौर पर तय्यार हो गया फिर फ़ौरन वस्वसा डाला, कहीं ऐसा न हो कि लड़की ही अपने भाइयों को बता दे बस आ़फ़िय्यत इसी में है कि "न रहे बांस न बजे बांसरी" दोनों ही को ज़ब्ह़ कर डाल। अल ग़रज़ आ़बिद ने जवान लड़की और नन्हे बच्चे को बे दर्दी के साथ ज़ब्ह़ कर के उसी मकान में एक गढ़ा खोद कर दफ़्न कर के ज़मीन बराबर कर दी। जब तीनों भाई सफ़र से लौट कर **आ़बिद** के पास आए तो उस ने इज़्हारे अफ़्सोस करते हुए कहा **:** आप की बहन फ़ौत हो गई है, आइये उस की क़ब्र पर फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये। चुनान्चे आ़बिद उन्हें क़ब्रिस्तान ले गया और एक क़ब्र दिखा कर झूटमूट कहा **:** येह आप की मर्ह़ूमा बहन की क़ब्र है। चुनान्चे उन्हों ने फ़ातिह़ा पढ़ी और रन्जीदा रन्जीदा वापस आ गए। रात शैतान एक मुसाफ़िर की सूरत में तीनों भाइयों के ख़्वाबों में आया और उस ने **आ़बिद** के तमाम सियाह कारनामे बयान कर दिये और तदफ़ीन वाली जगह की निशान देही भी कर

दी कि यहां खोदो। चुनान्चे तीनों उठे और एक दूसरे को अपना ख़्वाब सुनाया। तीनों ने मिल कर ख़्वाब में की गई निशान देही के मुताबिक़ ज़मीन खोदी **तो वाक़ेई वहां बहन और बच्चे की ज़ब्ह़ शुदा लाशें मौजूद थीं।** वोह तीनों **आ़बिद** पर चढ़ दौड़े, उस ने इक़्बाले जुर्म कर लिया। उन्हों ने बादशाह के दरबार में नालिश कर दी। **आ़बिद** को उस के इ़बादत ख़ाने से घसीट कर निकाला गया और सूली देने का फ़ैसला हुवा। जब सूली पर चढ़ाने के लिये लाया गया तो शैत़ान उस पर ज़ाहिर हुवा और कहने लगा **:** मुझे पहचान! मैं तेरा वोही शैत़ान हूं जिस ने तुझे औ़रत के फ़ितने में डाल कर ज़िल्लत की आख़िरी मन्ज़िल तक पहुंचाया है, ख़ैर घबरा मत मैं बचा सकता हूं मगर शर्त़ येह है कि तुझे मेरी इत़ाअ़त करनी होगी। मरता क्या न करता! **आ़बिद** ने कहा **:** मैं तेरी हर बात मानने के लिये तय्यार हूं। उस ने कहा **:** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्कार कर दे और काफ़िर हो जा। **बद नसीब आ़बिद** ने कहा **: मैं ख़ुदा का इन्कार करता हूं और काफ़िर होता हूं।** शैत़ान एक दम ग़ाइब हो गया और सिपाहियों ने फ़ौरन उस **बद नसीब आ़बिद** को दार पर खींच लिया।

(مُلَخَّص از تلبیسِ ابلیس ص۳۸۔۴۰)

शह्वत परस्ती कुफ़्र तक ले गई

देखा आप ने ! शैत़ान के पास मर्दों को बरबाद करने के लिये सब से बड़ा और बुरा हथियार "औ़रत" है। **बद नसीब आ़बिद** अपने पास जवान लड़की को रखने के लिये तय्यार हो गया और फिर शैत़ान के दाव में आ कर खाना उस के दरवाज़े तक पहुंचाने लगा और बस यूं उस ने शैत़ान को सिर्फ़ उंगली पकड़ाई थी कि उस चालबाज़ ने हाथ ख़ुद ही पकड़ लिया और आख़िरे कार परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का इन्कार करवा कर उस को दार (या'नी सूली। वोह नोकदार लकड़ी जिसे ज़मीन पर मैख़ की त़रह़ गाड़ कर उस पर मुजरिम की जान लिया करते थे।) पर **खिंचवा** कर ज़िल्लत की मौत मरवा दिया। **शह्वत परस्ती कुफ़्र तक ले गई**। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिल्कुल बजा फ़रमाया है कि **घड़ी भर के लिये शह्वत की तस्कीन त़वील ग़म का बाइस होती है।** यक़ीनन कोई आ़म शख़्स हो या ना मह़रम रिश्तेदार बस पर्दे ही में दोनों जहां की भलाई है। वरना मर्द व औ़रत का आपस में बे तकल्लुफ़ होना बेह़द ख़त़रनाक नताइज ला सकता है। **बद नसीब आ़बिद** वाली ह़िकायत से येह दर्स भी मिलता है कि औ़रत के फ़ितने की वज्ह से क़त्लो ग़ारत गरी तक नौबत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

पहुंच सकती है, फ़रीक़ैन के दर्दनाक अन्जाम का सामान और बरबादिये ईमान का क़वी इम्कान रहता है।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

आ़लिम ज़ादी अगर बे पर्दा हो तो ?

सुवाल : आज कल तो बा'ज़ आ़लिम ज़ादियां भी पर्दे के तक़ाज़े पूरे नहीं करतीं !

जवाब : किसी आ़लिम ज़ादी या पीर ज़ादी को भी बिलफ़र्ज़ बे पर्दगी में मुलव्वस पाएं तो अपनी आख़िरत बरबाद करने के लिये खुदारा ! इसे दलील न बनाएं और न ही उस के वालिदे मोह़तरम या'नी उन आ़लिमे दीन और जामेए़ शराइत़ पीर के बारे में **बद गुमानी** फ़रमाएं। दौर बड़ा नाज़ुक है, फ़ी ज़माना औलाद कम ही फ़रमां बरदार व इत़ाअ़त गुज़ार होती है। आ़लिम व पीर अपनी औलाद को शरीअ़त के दाएरे में रह कर समझा सकते हैं, बा'ज़ सूरतों में सज़ा भी दे सकते हैं मगर जान से नहीं मार सकते। ऐ़न मुम्किन है कि वोह आ़लिम या पीर साह़िब तफ़्हीम (या'नी समझाने) के शर-ई तक़ाज़े पूरे कर चुके हों।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

आ़लिम बाप का दर्दनाक अन्जाम

सुवाल : अगर किसी आ़लिम या पीर के अहले ख़ाना ख़िलाफ़े शर-अ़ ह़-र-कतें करते हैं तो आज कल अक्सर लोग उ़-लमा और मशाइख़ को इस त़रह़ से बुरा भला बोलने लगते हैं कि येह लोग दुन्या को तो तब्लीग़ करते हैं मगर अपने घर वालों को नहीं सुधारते।

जवाब : उन लोगों की कम नसीबी है जो बिला वज्ह बद गुमानियां कर के उ़-लमा व मशाइख़ के ख़िलाफ़ हो जाते हैं। देखिये ! वा'ज़ो नसीह़त करना बि इज़्निही तआ़ला उ़-लमाए किराम का काम है जब कि लोगों को हिदायत देना, दिलों को फैरना और बिगड़े हुओं को सुधारना येह रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का काम है। अगर कोई आ़लिम या पीर बल्कि हर वोह मुसल्मान जो वाक़ेई अपनी औलाद की इस्लाह़ की कमा ह़क़्क़ुहू कोशिश नहीं करता बेशक ख़त़ाकार है मगर बिला इजाज़ते शर-ई उसे बुरा भला कहने का हमें कोई इख़्तियार नहीं। आ़लिम हो या ग़ैरे आ़लिम सभी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से लरज़ां व तरसां रहना चाहिये। इस ज़िम्न में एक **इब्रत आमोज़ ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि बनी इस्राईल में एक आ़लिम साह़िब अपने घर में इज्तिमाअ़ कर के उस में बयान किया करते थे। एक दिन

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

उन आ़लिम साह़िब के नौ जवान लड़के ने एक ख़ूब सूरत लड़की की त़रफ़ इशारा किया, उस आ़लिम साह़िब ने देख लिया और कहा : "ऐ बेटे ! सब्र कर।" येह कहते ही आ़लिम साह़िब अपने तख़्त से मुंह के बल गिर पड़े यहां तक कि उन का सर फट गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त के नबी عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़्य फ़रमाई कि फ़ुलां आ़लिम को ख़बर दो कि मैं उस की नस्ल से कभी सिद्दीक़ (सब से आ'ला द-रजे का वली) पैदा नहीं करूंगा, क्या मेरे लिये सिर्फ़ इतना ही नाराज़ होना काफ़ी था कि वोह बेटे को कह दे, "ऐ बेटे सब्र कर।" (मत़लब येह कि अपने बेटे पर सख़्ती क्यूं नहीं की और इस बुरी ह़-र-कत से उसे अच्छी त़रह़ बाज़ क्यूं न रखा)

(حِلیۃُ الاولیاء ج۲ص۴۲۲رقم۲۸۲۳مُلَخَّصاً)

औ़रत उ़म्रह करे या न करे ?

सुवाल : क्या औ़रत र-मज़ानुल मुबारक में अपने शोहर या क़ाबिले इत़्मीनान मह़रम के साथ उ़म्रे के लिये सफ़र कर सकती है ?

जवाब : कर सकती है। उ़म्रह चूंकि फ़र्ज़ या वाजिब नहीं अगर औ़रत इस के लिये न निकले तो किसी क़िस्म का गुनाह भी नहीं। क़ाबिले तवज्जोह अम्र येह है कि फ़ी ज़माना और वोह भी र-मज़ानुल मुबारक में औ़रत उ़म्रे के लिये जाए और बे पर्दगी और ग़ैर मर्दों के इख़्तिलात़ से भी बची रहे येह क़रीब

ब ना मुम्किन है। लिहाज़ा मश्वरतन अ़र्ज़ है कि उ़म्रे या नफ़्ली ह़ज से औ़रत इज्तिनाब करे। हां जो शर-ई पर्दे की मुकम्मल मा'लूमात रखती है और इस के तमाम तक़ाज़े भी पूरे कर सकती है, ग़ैर मर्दों के इख़्तिलात़ से भी बच सकती है। फ़्लेट या कमरा भी अलग किराए पर ले सकती है तो बेशक वोह अगर उ़म्रे या नफ़्ली ह़ज के लिये जाए तो ह़रज नहीं। **अफ़्सोस !** आज कल ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में किराए के मकानात में अक्सर अजनबी और अज्नबिय्या एक ही कमरे के अन्दर इकठ्ठे रहते हैं। येही ह़ाल **मिना शरीफ़** और **अ़-रफ़ात शरीफ़** के ख़ैमों में होता है। ह़क़ीक़ी मा'नों में बा ह़या और शर-ई पर्दे का **म-दनी ज़ेह्न** रखने वाली इस्लामी बहनों और इस्लामी भाइयों के लिये सख़्त इम्तिह़ान होता है। अगर उ़म्रे या नफ़्ली ह़ज से मक़्सूद सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ है तो इस नेक काम में सर्फ़ होने वाली रक़म किसी ग़ुरबत के मारे इलाज के लिये मजबूर **गम्भीर** बीमार या बे रोज़गार या क़र्ज़दार या सख़्त लाचार को ब निय्यते सवाब पेश कर के अज्र का अनमोल ख़ज़ाना और दुखी दिल की दुआ़एं ली जा सकती हैं।

पए "नेकी की दा'वत" तू जहां रख्खे मगर ऐ काश !
मैं ख़्वाबों में पहुंचता ही रहूं अक्सर मदीने में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

उम्मुल मुअमिनीन उम्र भर घर से बाहर न निकलीं

सुवाल : क्या बुज़ुर्ग ख़वातीन में कोई ऐसी मिसाल मिलती है कि वोह नफ़्ली ह़ज के लिये न निकली हों ?

जवाब : जी हां मिसाल मौजूद है। ह़ालां कि आज के मुक़ाबले में वोह दौर बेह़द पुर अम्न था। चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना **सौदह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا **फ़र्ज़ ह़ज** अदा कर चुकी थीं। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से दोबारा **नफ़्ली ह़ज व उम्रह** के लिये अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया कि : मैं **फ़र्ज़ ह़ज कर चुकी हूं।** मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे घर में रहने का हुक्म फ़रमाया है। **ख़ुदा की क़सम !** अब मेरे बजाए मेरा जनाज़ा ही घर से निकलेगा। रावी फ़रमाते हैं, **ख़ुदा की क़सम !** इस के बा'द ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا घर से बाहर नहीं निकलीं। (تفسیرِ درّمنثور ج ٦ ص ٥٩٩) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** जब उस पाकीज़ा दौर में भी उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की **पर्दे** के मुआ-मले में इस क़दर एह़तियात़ थी तो आज इस गए गुज़रे दौर में जिस में पर्दे का तसव्वुर ही मिटता जा रहा है, मर्द व औ़रत की आपसी बे तकल्लुफ़ी और बद निगाही को مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ऐब ही नहीं समझा जा रहा

ऐसे ना मुसाइद ह़ालात में हर ह़यादार व पर्दादार इस्लामी बहन समझ सकती है कि उस को कितनी मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये।

औ़रत को मस्जिद की ह़ाज़िरी मन्अ़ होने की वज्ह

सुवाल : औ़रत को मस्जिद में नमाज़े बा जमाअ़त से क्यूं रोका गया है ?

जवाब : शरीअ़त को पर्दे की हुरमत का बेह़द लिह़ाज़ है। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में औ़रत मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ें अदा करती थी फिर **तग़य्युरे** ज़मान (या'नी तब्दीलिये ह़ालात) के सबब उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने औ़रतों को मस्जिद की ह़ाज़िरी से मन्अ़ फ़रमा दिया। ह़ालां कि औ़रतों को मस्जिद की सफ़ों में सब से आख़िर में खड़ा होना होता था। चुनान्चे फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मर्द और बच्चे और **ख़ुन्सा** और औ़रतें (नमाज़ के लिये) जम्अ़ हों तो सफ़ों की तरतीब येह है कि पहले मर्दों की सफ़ हो फिर बच्चों की फिर ख़ुन्सा की फिर औ़रतों की। (دُرِّمُختار ج ۲ ص ۳۷۷, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 133) औ़रतों और मर्दों का जहां इख़्तिलात़ हो (या'नी दोनों ही मिक्स हों) ऐसी आम मह़फ़िलों वग़ैरा में बा पर्दा जाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

से भी इस्लामी बहनों को बाज़ रहने के तअ़ल्लुक़ से समझाते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मसाजिद से बेहतर आ़म मह़फ़िल कहां होगी ! और (मस्जिद की नमाज़ में) सित्र भी कैसा (या'नी पर्दे के लिये तरकीब भी कैसी ज़बर दस्त) कि (नमाज़ के दौरान) मर्दों की उधर ऐसी पीठ कि (वोह औ़रतों की त़रफ़) मुंह नहीं कर सकते और उन्हें (या'नी मर्दों को येह भी) हुक्म कि बा'दे सलाम जब तक औ़रतें (मस्जिद से बाहर) न निकल जाएं न उठो । मगर उ़-लमा ने अव्वलन (या'नी शुरूअ़ शुरूअ़ में) कुछ तख़्सीसें कीं (या'नी एह़तियाती शराइत़ मुक़र्रर फ़रमाईं) जब ज़माना फ़ितन का (या'नी फ़ितनों का दौर) आया (और बे पर्दगी के गुनाहों ने ज़ोर पकड़ा तो मस्जिद में नमाज़ के लिये औ़रतों की ह़ाज़िरी को) मुत़्लक़न (या'नी मुकम्मल तौ़र पर) ना जाइज़ फ़रमाया ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 229) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : **उम्मुल मुअमिनीन** सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का इर्शाद अपने ज़माने में था : अगर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाते जो बातें औ़रतों ने अब पैदा की हैं तो ज़रूर इन्हें मस्जिद से मन्अ़ फ़रमा देते जैसे बनी इस्राईल की औ़रतें मन्अ़ कर दी

गई। फिर ताबिईन ही के ज़माने से **अइम्मा** (या'नी इमामों) ने (मसाजिद में आने की ब तदरीज) मुमा-न-अ़त शुरूअ़ फ़रमा दी, पहले **जवान** औ़रतों को फिर **बूढ़ियों** को भी, पहले दिन में फिर रात को भी, यहां तक कि हुक्मे मुमा-न-अ़त आ़म हो गया। क्या उस ज़माने की औ़रतें गरबे वालियों की त़रह़ गाने नाचने वालियां या फ़ाहि़शा दल्लाला थीं (और) अब (या'नी मौजूदा दौर में) सालिह़ात (या'नी नेक परहेज़ गार) हैं या जब (या'नी गुज़श्ता दौर में) फ़ाहि़शात (बे ह़या औ़रात) ज़ाइद थीं अब सालिह़ात (नेक औ़रात) ज़ियादा हैं या जब (या'नी गुज़श्ता दौर में) फ़ुयूज़ो ब-रकात न थे अब हैं या जब (या'नी गुज़श्ता दौर में) कम थे अब ज़ाइद हैं, ह़ाशा (या'नी हरगिज़ नहीं) बल्कि क़त़्अ़न यक़ीनन अब मुआ़-मला बिल अ़क्स (या'नी गुज़श्ता से उलट) है। अब अगर एक सालिह़ा (नेक ख़ातून) है तो जब (या'नी गुज़श्ता दौर में) हज़ार थीं, जब (या'नी गुज़श्ता दौर में) अगर एक फ़ासिक़ा थी अब हज़ार हैं, अब (या'नी मौजूदा दौर में) अगर एक हि़स्सा फ़ैज़ है जब (या'नी गुज़श्ता दौर में) हज़ार हि़स्से था। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **:** لَا يَاْتِىْ عَامٌ اِلَّا وَالَّذِىْ بَعْدَهٗ شَرٌّ مِّنْهُ या'नी "जो साल भी आए उस के बा'द वाला उस से बुरा ही होगा।" बल्कि इनायए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

इमाम अक्मलुद्दीन बाबरती में है कि **अमीरुल मुअमिनीन** फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने औ़रतों को मस्जिद से मन्अ़ फ़रमाया, वोह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास शिकायत ले गईं, (तो फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ताईद में) फ़रमाया : अगर ज़मानए अक़्दस में भी ह़ालत येह (या'नी बिगाड़ वाली) होती (तो) हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) औ़रतों को मस्जिद में आने की इजाज़त न देते । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 549)

मस्जिदों वग़ैरा में बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने की ख़्वाहिश रखने वालियों या **उ़म्रह** और **नफ़्ली ह़ज** के लिये जाने वालियों को मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़्कूरा फ़तवे पर ग़ौर कर लेना चाहिये । कि ह़ालात बदलने के सबब मस्जिद जैसी पुर अम्न जगह पर फ़र्ज़ नमाज़ जैसी अ़ज़ीम तरीन इ़बादत में सख़्त पर्दे के साथ भी औ़रतों को ग़ैर मर्दों के साथ शामिल होने से रोक दिया गया और येह भी सदियों पुरानी बात हो गई, अब तो ह़ालात दिन ब दिन बिगड़ते जा रहे हैं, शर-ई पर्दे का तसव्वुर ही ख़त्म होता जा रहा है सच पूछो तो ह़ालत ऐसी है कि मुबा-लग़े के साथ अ़र्ज़ करूं तो इस नाज़ुक तरीन दौर में औ़रत को हज़ार पर्दों में छुपा दिया जाए तब भी कम है !

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

15 दिन के बा'द जब क़ब्र खुली......

इस्लामी बहनो ! मेरा म-दनी मश्वरा है कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा। दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों के क्या कहने ! यक़ीनन अच्छी सोह़बत रंग ला कर रहती है। ज़िन्दगी अपनी जगह पर मगर बा'ज़ अम्वात भी क़ाबिले रश्क हुवा करती हैं, ऐसी ही एक क़ाबिले रश्क मौत का तज़्किरा सुनिये और रश्क कीजिये, चुनान्चे **अ़त्तारआबाद** (जेकबआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मेरी अम्मीजान ग़ालिबन 2004 सि.ई. में क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या सिल्सिले में बैअ़त हो कर अ़त्तारिय्या बनीं। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पन्ज वक़्ता **नमाज़** की पाबन्दी के साथ साथ **नवाफ़िल** की अदाएगी का भी मा'मूल बन गया। 17 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1430 सि.हि. 13 फ़रवरी 2009 सि.ई. की सुब्ह़ अम्मीजान ने मुझे नमाज़े फ़ज्र के लिये **बेदार** किया और खुद नमाज़े फ़ज्र पढ़ने में मश्ग़ूल हो गईं। मैं नमाज़ पढ़ कर लौटा तो वोह अभी मुसल्ले ही पर थीं। कुछ देर

बा'द उन्हों ने दोबारा वुज़ू किया और **नमाज़े इशराक़** की निय्यत बांध ली । जब पहली रक्अ़त में **सज्दा किया तो सर न उठाया ।** घर वाले समझे कि शायद अम्मीजान को दौराने नमाज़ **नींद** आ गई है, जब बेदार करने की ग़रज़ से उन्हें हिलाया जुलाया तो वोह एक त़रफ़ लुढ़क गई, घबरा कर देखा तो उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से **परवाज़** कर चुकी थी ! اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ । यूं लगता है कि मेरी अम्मीजान को शहन्शाहे बग़दाद **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की निस्बत और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी काम आ गई । ख़ुश क़िस्मती कि ऐ़न **सज्दे** की ह़ालत में उन्हों ने दाइये अजल को लब्बैक कहा । मज़ीद करम बालाए करम येह हुवा कि इन्तिक़ाल के बा'द उन का चेहरा भी बहुत **नूरानी** हो गया था । इन्तिक़ाल के तक़रीबन 15 रोज़ के बा'द या'नी **2** रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1430 सि.हि., (28 फ़रवरी 2009 सि.ई.) बरोज़ हफ़्ता उन की **क़ब्र** की सिल गिर गई और **क़ब्र** में मिट्टी भर गई । दुरुस्ती के लिये जूं ही क़ब्र खोली गई तो हर त़रफ़ गुलाब के फूलों की **ख़ुश्बू** फैल गई ! नीज़ येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर हम ख़ुशी के मारे झूम उठे कि **अम्मीजान का कफ़न व बदन सलामत**

था । जब क़ब्र से मिट्टी निकाल ली गई तो मेरे भाई ने अम्मीजान के क़दमों को छुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन का जिस्म ज़िन्दा इन्सानों की त़रह़ नर्म था, मेरे अब्बूजान का बयान है कि जब मैं ने चेहरे की त़रफ़ से कपड़ा हटा कर देखा तो चेहरा मज़ीद **नूरानी** हो चुका था। **इस्लामी** भाई का मज़ीद बयान है **:** ह़ैरत अंगेज़ बात येह थी कि जो सिलें क़ब्र में गिरी थीं, अम्मीजान का जिस्म उन की चोट से **मह़फ़ूज़** रहा था वोह यूं कि उन का मुबारक व तरो ताज़ा लाशा क़ब्र की दीवार की सम्त खिसका हुवा था जैसे वोह खुद उस **त़रफ़** हुई हों या किसी ने कर दिया हो ह़ालां कि तदफ़ीन के वक़्त उन को क़ब्र के **बीच** में लिटाया गया था !

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के पाक बन्दों का कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है

इस्लामी बहनो ! ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दीजिये तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाएगा। इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने वाला बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जग-मगाता और बसा अवक़ात ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। इस आ़शिक़ाए रसूल की दुन्या से **ईमान अफ़्रोज़ रुख़्सती** और बा'दे दफ़्न जब मजबूरन क़ब्र खोली गई तो क़ब्र से गुलाब के फूलों की **ख़ुश्बू** का आना कफ़न व बदन का **सलामत** मिलना मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत की सदाक़त की ग़ैबी ताईद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुश नसीब इस्लामी बहन को पुल सिरात़, ह़श्र और मीज़ान हर जगह सुर्ख़-रू फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे **ह़बीब**, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **पड़ोस** अ़ता फ़रमाए और येह तमाम दुआ़एं अ़त्त़ारे ख़त़ाकार गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में भी क़बूल फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

ज़ात आप की तो रह़मतो शफ़्क़त है सर बसर
मैं गर्चे हूं तुम्हारा ख़त़ावार या रसूल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

दुन्या बहुत आगे निकल चुकी है !

सुवाल : बा'ज़ लोगों का कहना है : दुन्या बहुत आगे निकल चुकी है, पर्दे के मुआ़-मले में इस क़दर सख़्ती नहीं करनी चाहिये।

जवाब : अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई भी हुक्म ऐसा नहीं जो मुसल्मान पर उस की त़ाक़त से ज़ाइद हो। जैसा कि पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 286 में रब्बुल इबाद का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ (پ٣ البقرہ ٢٨٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर।

अलबत्ता **शर-ई पर्दा** बे पर्दगी करने वालियों के नफ़्स पर ज़रूर गिरां या'नी सख़्त गुज़रता है।

शोहर बाहर न निकलने दे तो......?

सुवाल : शोहर अगर देवर, जेठ के सामने आने वग़ैरा से मन्अ़ करता हो तो बीवी को क्या करना चाहिये ? ख़ानदान के बा'ज़ अफ़राद बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ उक्साते हैं कि येह बहुत सख़्ती करते हैं इन से त़लाक़ ले लो वग़ैरा तो ऐसों के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : बीवी को अपने शोहर की इत़ाअ़त करनी होगी। मेरे आक़ा

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कोई औ़रत ऐसी हो भी कि इन (या'नी पर्दे के) उमूर की पूरी एह़तियात़ रखे, कपड़े मोटे सर से पाउं तक पहने रहे कि मुंह की टिकली और हथेलियों (और पाउं के) तल्वों के सिवा जिस्म का कोई बाल कभी न ज़ाहिर हो तो इस सूरत में देवर, जेठ के सामने आना जाइज़ तो हो गया मगर जब कि शोहर इन लोगों के सामने आने को मन्अ़ करता और नाराज़ होता है तो अब (शोहर के हुक्म की वजह से) यूं (ग़ैर मर्दों के) सामने (बा पर्दा) आना भी ह़राम हो गया, **औ़रत अगर (शोहर का हुक्म) न मानेगी अल्लाहु क़ह्हार** عَزَّوَجَلَّ **के ग़ज़ब में गिरिफ़्तार होगी । जब तक शोहर नाराज़ रहेगा औ़रत की कोई नमाज़ क़बूल न होगी, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के फ़िरिश्ते औ़रत पर ला'नत करेंगे, अगर त़लाक़ मांगेगी मुनाफ़िक़ा होगी, जो लोग औ़रत को भड़काते शोहर से बिगाड़ पर उभारते हैं वोह शैत़ान के प्यारे हैं ।"** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 217)

बात बात पर शोहर के सर हो जाने वालियां सात रिवायात सुनें, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ें और अपने शोहर से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर के अपनी आख़िरत की बेहतरी की ख़ात़िर उस की इत़ाअ़त व ख़िदमत में मश्ग़ूल हों ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

"तौबा करो" के सात हुरूफ़ की निस्बत से 7 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **तीन³** शख़्सों की नमाज़ उन के कानों से ऊपर नहीं उठती, आक़ा से भागा हुवा गु़लाम जब तक पलट कर आए, और अ़ौरत कि सोए और उस का शोहर उस से नाराज़ हो और जो किसी क़ौम की इमामत करे और वोह उस के ऐ़ब के बाइस उस की इमामत पर राज़ी न हों।(1) ﴾2﴿ **तीन³** आदमियों की नमाज़ उन के सरों से बालिश्त भर ऊपर बुलन्द नहीं होती, एक वोही इमाम, और अ़ौरत कि सोए और शोहर नाराज़ है, और दो² (मुसल्मान) भाई कि आपस में इलाक़ए महब्बत क़त्अ़ किये हों(2) (या'नी बिला इजाज़ते शर-ई तअ़ल्लुक़ात तोड़ डाले हों) ﴾3﴿ **तीन³** शख़्सों की कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती, न कोई नेकी आस्मान को चढ़े। नशे वाला जब तक होश में आए और अ़ौरत जिस से उस का ख़ावन्द नाराज़ हो यहां तक कि राज़ी हो जाए, और भागा हुवा गु़लाम जब तक अपने आक़ाओं की त़रफ़ पलट कर

---

(1) ترمذی ج ۱ ص ۳۷۵ حدیث ۳۶۰ (2) ابن ماجہ ج ۱ ص ۵۱۶ حدیث ۹۷۱

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

अपने आप को उन के क़ाबू में दे।(1) ﴾4﴿ **जब** शोहर औ़रत को अपने बिस्तर की त़रफ़ बुलाए और वोह (बिग़ैर उ़ज़्र के) इन्कार कर दे और ख़ावन्द नाराज़ हो कर रात गुज़ारे तो फ़िरिश्ते सुब्ह़ तक उस औ़रत पर ला'नत भेजते हैं।(2) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : यहां रात को बुलाने का ख़ुसूसिय्यत से ज़िक्र इस लिये हुवा कि उ़मूमन बीवियों के पास रहना सोना रात ही को होता है दिन में कम वरना अगर दिन में ख़ावन्द बुलाए औ़रत न आए तो शाम तक फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते हैं रात की ला'नत सुब्ह़ को इस लिये ख़त्म हो जाती है कि सुब्ह़ होने पर ख़ावन्द काम व काज में लग जाता है रात का गुस्सा ख़त्म या कम हो जाता है। (मिरआत, जि. 5, स. 91) ﴾5﴿ **जो** औ़रत (बिला ह़ाजते शर-ई) अपने घर से बाहर जाए और उस के शोहर को ना गवार हो जब तक पलट कर न आए आस्मान में हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करे और जिन्न व आदमी के सिवा जिस जिस चीज़ पर गुज़रे सब उस पर

---

(1) المُعجَمُ الاوسط ج٦ ص ٤٠٨ حديث ٩٢٣١، الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج٧ ص ٣٧٠ حديث ٥٣٣١ (2) صَحِيحُ البُخارِىّ ج ٢ ص ٣٨٨ حديث ٣٢٣٧

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ला'नत करें।[1] ﴾6﴿ **जो** औ़रत बे ज़रूरते शर-ई (या'नी बिग़ैर सख़्त तक्लीफ़ के) ख़ावन्द से **त़लाक़** मांगे उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है।[2] ﴾7﴿ **अगर** शोहर अपनी औ़रत को येह हुक्म दे कि वोह ज़र्द रंग के पहाड़ से पथ्थर उठा कर सियाह पहाड़ पर ले जाए और सियाह पहाड़ से पथ्थर उठा कर सफ़ेद पहाड़ पर ले जाए तो औ़रत को अपने शोहर का येह हुक्म भी बजा लाना चाहिये।[3] मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह फ़रमाने मुबारक मुबा-लग़े के त़ौर पर है, सियाह व सफ़ेद पहाड़ क़रीब क़रीब नहीं होते बल्कि दूर दूर होते हैं मक़्सद येह है कि अगर ख़ावन्द (शरीअ़त के दाएरे में रह कर) मुश्किल से मुश्किल काम का भी हुक्म दे तब भी बीवी उसे करे, काले पहाड़ का पथ्थर सफ़ेद पहाड़ पर पहुंचाना सख़्त मुश्किल है कि भारी बोझ ले कर सफ़र करना है। (मिरआत, जि. 5, स. 106)

(1) المعجم الاوسط ج۱ ص ۱۵۸ حدیث ۵۱۳ (2) سنن الترمذی ج۲ ص ۴۰۲ حدیث ۱۱۹۱ (3) مسند امام احمد ج۹ ص ۳۵۳ حدیث ۲۴۵۲۵

मियां का ह़क़ ज़ियादा या मां बाप का ?

सुवाल : इस्लामी बहन पर शोहर के हुक़ूक़ की क्या तफ़्सील है ? क्या शोहर का ह़क़ मां बाप से भी बढ़ कर है ?

जवाब : शोहर के हुक़ूक़ का बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "औ़रत पर मर्द का ह़क़ ख़ास उमूरे **मु-तअ़ल्लिक़ा** ज़ौजिय्यत में **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के बा'द तमाम हुक़ूक़ ह़त्ता कि मां बाप के ह़क़ से ज़ाइद है। इन उमूर में उस के अह़काम की इत़ाअ़त और उस के नामूस की निगह दाश्त (या'नी उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त) औ़रत पर फ़र्ज़े **अहम** है, बे उस के इज़्न के मह़ारिम के सिवा कहीं नहीं जा सकती और मह़ारिम के यहां भी (अगर बिग़ैर इजाज़त जाना पड़ जाए तो) मां बाप के यहां हर आठवें दिन वोह भी सुब्ह़ से शाम तक के लिये और बहन भाई, चचा, मामूं, ख़ाला, फूफी के यहां साल भर बा'द (जा सकती है) और (बिला इजाज़त) शब को कहीं (या'नी मां बाप के यहां भी) नहीं जा सकती। (हां इजाज़त से जहां जाना हो वहां रोज़ाना भी और रात के वक़्त भी जा सकती है) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : अगर मैं किसी को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ग़ैरे ख़ुदा के सज्दे का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे। और एक ह़दीस में है : अगर शोहर के नथनों से ख़ून और पीप बह कर उस की एड़ियों तक जिस्म भर गया हो और औ़रत अपनी ज़बान से चाट कर उसे साफ़ करे तो भी उस का ह़क़ अदा न होगा।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 380)

शोहर पर बीवी के हुक़ूक़

सुवाल : हमारे यहां उ़मूमन शोहर के हुक़ूक़ तो बयान किये जाते हैं मगर बीवी के हुक़ूक़ बयान नहीं होते ! आया शोहर पर भी बीवी के कुछ हुक़ूक़ हैं या नहीं ?

जवाब : बेशक जिस त़रह़ शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने बीवी पर मर्द के हुक़ूक़ लाज़िम किये हैं इसी त़रह़ शोहर पर भी बीवी के हुक़ूक़ लागू फ़रमाए हैं म-सलन इस के नान व न-फ़क़ा (या'नी खाने पीने रहने वग़ैरा) की ख़बर गीरी, मह्र की अदाएगी, हुस्ने मुआ़-शरत (या'नी अच्छी त़रह़ रहना सहना, हुस्ने सुलूक) नेक बातों की ता'लीम, पर्दे और शर्मो ह़या की ताकीद और हर जाइज़ बात में उस की दिलजूई वग़ैरा करना येह तमाम बातें मर्द पर औ़रत का ह़क़ हैं। जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान**

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से सुवाल किया गया कि बीबी के हुक़ूक़ शोहर पर क्या हैं ? फ़रमाया : "न-फ़क़ा सकिनी (या'नी खाना, लिबास व मकान), मह्र, हुस्ने मुआ़-शरत, नेक बातों और ह़या व ह़िजाब की ता'लीम व ताकीद और इस के ख़िलाफ़ से मन्अ़ व तह्दीद, हर जाइज़ बात में उस की दिलजूई और मर्दाने ख़ुदा की सुन्नत पर अ़मल की तौफ़ीक़ हो तो मा वराए मनाहिये शरइय्या में उस की ईज़ा का **तहम्मुल** कमाले ख़ैर है अगर्चे येह ह़क़्क़े ज़न नहीं।" (या'नी जिन बातों को शरीअ़त ने मन्अ़ किया है उन में कोई रिआ़यत न दे, इन के इलावा जो मुआ़-मलात हैं उन में अगर बीवी की त़रफ़ से किसी ख़िलाफ़े मिज़ाज बात के सबब तक्लीफ़ पहुंचे तो सब्र करना बहुत बड़ी भलाई है। अलबत्ता येह औ़रत के हुक़ूक़ में से नहीं)

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 371)

घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?

सुवाल : इस्लामी नुक़्तए नज़र से मियां बीवी को घर में किस त़रह़ रहना चाहिये कि लड़ाई झगड़ा वग़ैरा न हो ?

जवाब : मियां बीवी को चाहिये कि आपस में रवादारी व मह़ब्बत से रहें, दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ पर नज़र रखें और इन को अदा भी करते रहें येह न हो कि औ़रत को मर्द मह़्ज़ "लौंडी"

बना कर रखे क्यूं कि जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मर्दों को ह़ाकिमिय्यत दी है इसी त़रह़ येह भी फ़रमाया है कि **وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ** **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और उन (या'नी औ़रतों) से अच्छा बरताव करो (پ٤النساء آیت ١٩)

हु़ज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **फ़रमाया :** तुम में अच्छे लोग वोह हैं जो औ़रतों से अच्छी त़रह़ पेश आएं। (سُنَنِ ابن ماجہ ج٢ ص٤٧٨ حدیث١٩٧٨)

मर्द अपनी औ़रत को नेकी की दा'वत देता, इस को ज़रूरी मसाइल सिखाता रहे, इस के खाने पीने का लिह़ाज़ रखे और अगर कभी कोई ख़िलाफ़े मिज़ाज बात हो जाए तो दर गुज़र से काम ले येह न हो कि मार पिटाई पर उतर आए कि इस त़रह़ ज़िद पैदा हो जाती है और सुलझी हुई बात उलझ जाती है। **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ औ़रत पसली से पैदा की गई वोह तेरे लिये कभी सीधी नहीं हो सकती अगर तू इसे बरत्ना चाहे तो इसी ह़ालत में बरत सकता है और सीधा करना चाहेगा तो तोड़ देगा और तोड़ना त़लाक़ देना है। (صَحیح مُسلِم ص٧٧٥ حدیث١٤٦٨)

﴾2﴿ मुसल्मान मर्द (अपनी) औ़रते मोमिना को **मबग़ूज़** न रखे (या'नी इस से नफ़रत व बुग़्ज़ न रखे) अगर इस की एक आ़दत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

बुरी मा'लूम होती है, दूसरी पसन्द होगी। (ایضاً حدیث١٤٦٩) मत़लब येह है कि अगर बीवी की कोई एकआध आ़दत ख़राब मह़सूस होती है तो बा'ज़ ख़स्लतें अच्छी भी लगती होंगी लिहाज़ा उस की अच्छाइयों पर नज़र करे और ख़ामियों की मुनासिब त़रीक़े से इस्लाह़ की कोशिश जारी रखे।

नमक ज़ियादा डाल दिया

अपनी ज़ौजा के ख़िलाफ़े मिज़ाज ह़-र-कत पर सब्र करने वाले एक ख़ुश नसीब शख़्स की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत पढ़िये और झूमिये, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बयानाते अ़त्तारिय्या**" ह़िस्सए दुवुम के सफ़ह़ा 164 पर है : एक आदमी की बीवी ने खाने में नमक ज़ियादा डाल दिया। उसे **ग़ुस्सा** तो बहुत आया मगर येह सोचते हुए वोह **ग़ुस्से** को पी गया कि मैं भी तो ख़त़ाएं करता रहता हूं अगर आज मैं ने बीवी की ख़त़ा पर सख़्ती से गिरिफ़्त की तो कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मेरी ख़त़ाओं पर गिरिफ़्त फ़रमा ले। चुनान्चे उस ने दिल ही दिल में अपनी ज़ौजा की ख़त़ा मुआ़फ़ कर दी। इन्तिक़ाल के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़–मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया कि गुनाहों की कसरत के सबब अ़ज़ाब होने ही वाला था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मेरी बन्दी ने सालन में **नमक** ज़ियादा डाल दिया था और तुम ने उस की ख़त़ा **मुआ़फ़** कर दी थी, जाओ मैं भी उस के सिले में तुम को आज **मुआ़फ़** करता हूं।

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

बीवी के लिये जन्नत की बिशारत

बीवी को भी चाहिये कि वोह भी अपने शोहर की फ़रमां बरदारी कर के उसे राज़ी रखे। ह़ज़रते सय्यि–दतुना उम्मे स–लमह رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो औ़रत इस ह़ाल में मरे कि उस का शोहर उस से राज़ी हो वोह जन्नत में दाख़िल होगी। (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۲ ص۳۸٦ حدیث ۱۱٦٤)

बीवी शोहर को अपना "गुलाम" न बना ले कि जो मैं चाहूं वोही हो, चाहे कुछ हो जाए मगर मेरी बात में फ़र्क़ न आए बल्कि इस के लिये भी येही हुक्म है कि अपने शोहर के हुक़ूक़

का ख़याल रखे, उस की जाइज़ ख़्वाहिशात को पूरा करती रहे और उस की ना फ़रमानी से बचती रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सुल्ताने अम्बियाए किराम, **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : "अगर मैं किसी को हुक्म करता कि ग़ैरे ख़ुदा के लिये सज्दा करे तो हुक्म देता कि औ़रत अपने शोहर को सज्दा करे।" (سُنَنِ اِبن ماجہ ج۲ ص۴۱۱ حدیث ۱۸۵۳)

इस ह़दीसे पाक से शोहरों की अहम्मिय्यत ख़ूब वाज़ेह़ होती है लिहाज़ा इस्लामी बहनों को चाहिये कि उन के हुक़ूक़ में किसी क़िस्म की कोताही न करें। मियां बीवी दोनों एक दूसरे के वालिदैन को अपने वालिदैन समझ कर उन के आदाब बजा लाते रहें और साथ ही दुआ़ भी करते रहें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे माबैन प्यार व मह़ब्बत क़ाइम व दाइम फ़रमाए और हमारे घर को अम्न का गहवारा बनाए।

रुख़्सती नामा

(म-दनी माह़ोल की बे शुमार दुल्हनों को पेश किया जाने वाला म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से महकता रुख़्सती नामा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये इस रुख़्सती नामे में सजे हुए **म-दनी फूल** अगर कोई इस्लामी बहन अपने दिल के **म-दनी गुलदस्ते** में सजा ले तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह अपने इज़्दिवाजी मुआ़-मलात में कभी भी दुखी न होगी)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

फ़ज़्ले रब से बिन्ते......... दुल्हन बनी
फूल ख़ुशियों के खिले चादर ह़या की है तनी

तुझ को हो शादी मुबारक हो रही है रुख़्सती
रुख़्सती में तेरी पिन्हां[1] क़ब्र की है रुख़्सती

घर तेरा हो मुश्कबार और ज़िन्दगी भी पुर बहार
रब हो राज़ी ख़ुश हों तुझ से दो जहां के ताजदार

म-दनी बेटी का ख़ुदाया घर सदा आबाद रख
फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ा दो जहां में शाद[2] रख

येह मियां बीवी इलाही मक्रे शैत़ां से बचें
येह नमाज़ें भी पढ़ें और सुन्नतों पर भी चलें

येह मियां बीवी चलें ह़ज को इलाही ! बार बार
बार बार इन को मदीना भी दिखा परवर्द गार

तेरा सुसराल अपने रब के फ़ज़्ल से ख़ुशह़ाल हो
तेरा मयका भी करम से रब के मालामाल हो

तू न ग़फ़्लत करना शोहर की इत़ाअ़त से कभी
वरना तू ऐ प्यारी बेटी ह़श्र में पछताएगी

म-दनी बेटी या ख़ुदा ! गुस्से की हो हरगिज़ न तेज़
येह करे सुसराल में हर दम लड़ाई से गुरेज़

याद रख ! तू आज से बस तेरा घर सुसराल है
सास नन्दों पर बिगड़ना आफ़तों का जाल है

मां समझ कर जो बहू करती है ख़िदमत सास की
राज करती है सदा सारे घराने पर वोही

सास नन्दों की तू ख़िदमत कर के हो जा काम्याब
इन की ग़ीबत कर के मत कर बैठना ख़ाना ख़राब

सास और नन्दें अगर सख़्ती करें तो सब्र कर
सब्र कर बस सब्र कर चलता रहेगा तेरा घर

सास और नन्दों का शिक्वा अपने मयके में न कर
इस त़रह़ बरबाद हो सकता है बेटी तेरा घर

मयके के मत कर फ़ज़ाइल तू बयां सुसराल में
अब समझ सुसराल ही को अपना घर हर ह़ाल में

(1) पोशीदा (2) ख़ुशी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोजे़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

याद रख तूने ज़बां खोली अगर सुसराल में
फंस के तू झगड़ों के सुन रह जाएगी जन्जाल में

सास चीख़ी तू भी बिफरी और लड़ाई ठन गई
है कहां भूल एक की दो हाथ से ताली बजी

दर्स दे "फै़ज़ाने सुन्नत" से सदा सुसराल में
म-दनी माहोल इस त़रह़ बन जाएगा सुसराल में

गर नसीह़त पर अ़मल **अ़त्तार** की होगा तेरा
اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ अपने घर में तू सुखी होगी सदा

सच्ची निय्यत की ब-र-कत से गुमशुदा हार मिल गया

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी पर नाज़ है। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में दुआ़एं मांगने से बे शुमार इस्लामी बहनों की मुश्किलात ह़ल होने के वाक़िआ़त हैं, ऐसी ही एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि एक दिन अचानक मेरा **क़ीमती हार** गुम हो गया जो कि तलाशे बिस्यार के बा वुजूद न मिल सका। जिन दिनों मैं बहुत **परेशान** थी उन्हीं दिनों मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई। इज्तिमाअ़ में तिलावत व ना'त के बा'द एक मुबल्लिग़ए दा'वते इस्लामी ने **मक-त-बतुल मदीना** के एक मत़्बूआ़ रिसाले से देख कर बयान फ़रमाया। बयान के इख़्तिताम पर उन्हों ने मौजूद इस्लामी बहनों को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी के साथ शिर्कत करने की निय्यत करवाई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने भी सच्चे दिल से निय्यत कर ली। मेरा हुस्ने ज़न है कि येह उस निय्यत ही की ब-र-कत थी कि जब मैं इज्तिमाअ़ से वापस घर पहुंची और बिस्तर दुरुस्त करने के लिये अपने तकिये को उठाया तो मारे ख़ुशी के उछल पड़ी क्यूं कि मेरा **गुमशुदा हार** तकिये के नीचे मौजूद था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मैं **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शरीक होती हूं और नेक बनने की कोशिशों में मसरूफ़ हूं।

बुलन्दी पे अपना नसीब आ गया है दियारे मदीना क़रीब आ गया है
करम या ह़बीबी करम या ह़बीबी कि दर पर तुम्हारे ग़रीब आ गया है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

अच्छी निय्यत के फ़ज़ाइल

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे **इज्तिमाआत** में रहमतों की ख़ूब बरसात होती और ब-रकात का नुज़ूल होता है। **अच्छी निय्यत** की अ-ज़मत के भी क्या कहने ! उस इस्लामी बहन का हुस्ने ज़न है कि उन्हें इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की निय्यत की ब-र-कत से गुमशुदा हार मिल गया ! दुन्या का हार क्या चीज़ है, अच्छी निय्यत तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जन्नत में पहुंचा देगी। चुनान्चे महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबीन है : "**अच्छी निय्यत** इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी।"(1) अच्छी निय्यत के मज़ीद फ़ज़ाइल मुला-हज़ा फ़रमाइये :

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सच्ची निय्यत अफ़्ज़ल अ़मल है।"(2) मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा ब-र-कत है : "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"(3)

مدینہ

(1) اَلجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطِی ، ص۵۵۷ حدیث ۹۳۲۶ (2) اَلجامِعُ الصَّغِیر ص ۸۱ حدیث ۱۲۸۴ (3) اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

गुमशुदा चीज़ मिलने के लिये चार अवराद

﴾1﴿ **یَا رَقِیْبُ :** कोई चीज़ गुम हो गई हो तो ब कसरत पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मिल जाएगी।

﴾2﴿ **یَا جَامِعُ :** कोई चीज़ गुम जाए तो ब कसरत पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मिल जाएगी।

﴾3﴿ कोई चीज़ अगर इधर उधर रह गई हो तो اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पढ़ कर तलाश की जाए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मिल जाएगी वरना ग़ैब से कोई उ़म्दा चीज़ अ़ता होगी।

﴾4﴿ **सू-रतुद्दुहा** सात बार पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ गुमा हुवा आदमी या चीज़ मिल जाएगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब औ़रत का निकाह़ से बाज़ रहना कैसा ?

सुवाल : "शोहर के हुकूक़ में कोताही के सबब कहीं गुनहगार न हो जाऊं," येह कहते हुए मह़ज़ **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब कोई इस्लामी बहन निकाह़ न करना चाहे तो क्या इस की गुन्जाइश है ?

जवाब : निकाह़ करने या न करने को तरजीह़ देने के तअ़ल्लुक़ से मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ अह़काम हैं। निकाह़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابو یعلٰی)

करना कभी फ़र्ज़ कभी वाजिब कभी मक्रूह और कभी ह़राम भी होता है । (तफ़्सील के लिये फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 12 सफ़ह़ा 291 नीज़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 112 सफ़ह़ात की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 7 सफ़ह़ा 4 ता 5 मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये) निकाह़ में शर-ई रुकावट न होने की सूरत में मह़्ज़ शोहर के हुक़ूक़ में कोताही सरज़द हो जाने का ख़ौफ़ रखने वाली इस्लामी बहन को चाहिये कि ऐसे मौक़अ़ पर बजाए निकाह़ न करने का ज़ेह्न रखने के हुक़ूक़ पूरे करने का ज़ेह्न बनाए और इस के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते हुए शोहर के हुक़ूक़ की मा'लूमात ह़ासिल करे । और यूं भी हर निकाह़ करने वाली के लिये इन चीज़ों का इ़ल्म ह़ासिल करना **फ़र्ज़** है । सिर्फ़ **शोहर के हुक़ूक़** ही नहीं बल्कि **सब्र** और **शुक्र** क्या होता है, इस की सूरतें क्या क्या हैं, इस बारे में कौन कौन सी बातें क़ाबिले तवज्जोह हैं इन से भी आगाही ह़ासिल करे । इस के लिये **एह़याउल उ़लूम** वग़ैरा का मुत़ा-लआ़ इन्तिहाई मुफ़ीद है आज के मुआ़-शरे में बे निकाह़ औ़रत का गुज़ारा बहुत मुश्किल है, इस से घरेलू मसाइल खड़े होने के साथ साथ कई गुनाहों में जा पड़ने का भी अन्देशा है । लिहाज़ा जहां

कमी है उसे पूरा किया जाए बजाए इस के कि भलाई को ही छोड़ दिया जाए ।

क्या निकाह़ न कर के औ़रत गुनहगार होगी

अलबत्ता जिसे हुक़ूक़ पूरा करने में कोताही का अन्देशा हो वोह अगर शादी न करे तो इस बिना पर गुनाहगार नहीं कहलाएगी जब तक कि वोह अह़वाल न पाए जाएं जिस में निकाह़ करना शरअ़न वाजिब या फ़र्ज़ हो चुका हो । तारीख़े इस्लाम ने अपने दामन में ऐसे वाक़िआ़त को मह़फ़ूज़ कर रखा है जिसे पढ़ कर दीने इस्लाम की ता'लीमात पर अ़मल करने का जज़्बा मज़ीद बेदार हो जाता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी नेक बन्दियां भी हुई हैं जिन को अपने ऊपर लाज़िम होने वाले हुक़ूक़ की अदाएगी की फ़िक्र लाह़िक़ रहती और वोह अपनी पसन्द व ना पसन्द का फ़ैसला **अल्लाह** रब्बुल अनाम और उस के मह़बूब सुल्त़ाने अम्बियाए किराम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़काम को सामने रख कर करतीं । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द 12 सफ़ह़ा 297 पर फ़रमाते हैं : अह़ादीस में वारिद कि हुक़ूक़े शोहर और इन की शिद्दत सुन कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

मु-तअ़द्दिद बीबियों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने उ़म्र भर निकाह़ न करने का अ़ह्द किया और **हुज़ूरे पुरनूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्कार न फ़रमाया । इस ज़िम्न में जिल्द 12 सफ़ह़ा 297 ता 305 पर पेश कर्दा रिवायात में से तीन पेश की जाती हैं, चुनान्चे नक़्ल करते हैं :

(1) बे इज़्ने शोहर घर से निकलने का वबाल

एक ज़न (या'नी ख़ातून) ख़श्अ़मिय्या ने ख़िदमते अक़्दसे हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** हुज़ूर मुझे सुनाएं कि शोहर का ह़क़ औ़रत पर क्या है कि मैं ज़ने बे शोहर हूं उस के अदा की अपने में त़ाक़त देखूं तो निकाह़ करूं वरना यूं ही बैठी रहूं । **फ़रमाया :** तो बेशक शोहर का ह़क़ ज़ौजा पर येह है कि औ़रत कजावे[1] पर बैठी हो और मर्द उसी सुवारी पर उस से नज़्दीकी चाहे तो इन्कार न करे, और मर्द का ह़क़ औ़रत पर येह है कि उस के बे इजाज़त के नफ़्ल रोज़ा न रखे अगर रखेगी तो अ़बस (बेकार) भूकी प्यासी रही रोज़ा क़बूल न होगा और **घर से बे इज़्ने (या'नी बे इजाज़ते) शोहर कहीं न जाए अगर जाएगी**

1. कजावा या'नी ऊंट की काठी जिस पर दो अफ़्राद आमने सामने बैठते हैं ।

तो आस्मान के फ़िरिश्ते, रह़मत के फ़िरिश्ते, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते सब उस पर ला'नत करेंगे जब तक पलट कर आए। येह इर्शाद सुन कर उन बीबी ने अ़र्ज़ की : ठीक ठीक येह है कि मैं कभी **निकाह़ न करूंगी।**

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج ٤ ص٥٦٣حديث٧٦٣٨)

(2) नथनों का ख़ून पीप चाटे तब भी......

एक बीबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दरबारे दुरबार सय्यिदुल अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर **अ़र्ज़** की : मैं फ़ुलां दुख़्तरे फ़ुलां हूं। **फ़रमाया :** मैं ने तुझे पहचाना अपना काम बता। अ़र्ज़ की : मुझे अपने चचा के बेटे फ़ुलां आ़बिद से काम है। फ़रमाया : मैं ने उसे भी पहचाना या'नी मत़लब कह। **अ़र्ज़** की : उस ने मुझे पयाम दिया है। तो हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) इर्शाद फ़रमाएं कि शोहर का ह़क़ औ़रत पर क्या है, अगर वोह (ह़क़) कोई चीज़ मेरे क़ाबू की हो तो मैं उस से निकाह़ कर लूं। **फ़रमाया :** मर्द के ह़क़ का एक टुकड़ा येह है कि अगर उस के दोनों नथने ख़ून या पीप से बहते हों और औ़रत उसे अपनी ज़बान से चाटे तो शोहर के ह़क़ से अदा न हुई, अगर आदमी का आदमी को सज्दा रवा होता तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि मर्द जब बाहर से उस के सामने आए,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

उसे सज्दा करे कि ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) ने मर्द को फ़ज़ीलत ही ऐसी दी है। येह इर्शाद सुन कर वोह **बीबी** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) बोलीं : क़सम उस की जिस ने **हुज़ूर** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को ह़क़ के साथ भेजा मैं रहती दुन्या तक **निकाह़** का नाम न लूंगी। (इस को बज़्ज़ाज़ और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत फ़रमाया) (اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحاکِم ج۲ ص ٤٧ حدیث۲۸۲۲)

(3) मैं कभी शादी न करूंगी

एक साह़िब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) अपनी साह़िब ज़ादी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) को ले कर दरगाहे आ़लम पनाह हुज़ूर सय्यिदुल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : मेरी येह बेटी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) निकाह़ करने से इन्कार रखती है। **हुज़ूर** صَلَوَاتُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : **اَطِیْعِی اَبَاکِ** (या'नी) अपने बाप का हुक्म मान। उस लड़की رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **अ़र्ज़** की : क़सम उस की जिस ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा, मैं (उस वक़्त तक) निकाह़ न करूंगी जब तक **हुज़ूर** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) येह न बताएं कि ख़ावन्द का ह़क़ औ़रत पर क्या है। फ़रमाया : **शोहर का ह़क़ औ़रत पर येह है अगर उस के कोई फोड़ा हो औ़रत उसे चाट कर**

साफ़ करे या उस के नथनों से पीप या ख़ून निकले औ़रत उसे निगल ले तो मर्द के ह़क़ से अदा न हुई। उस लड़की (رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने **अ़र्ज़** की : क़सम उस की जिस ने **हुज़ूर** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ह़क़ के साथ भेजा मैं कभी **शादी** न करूंगी। **हुज़ूरे पुरनूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औ़रतों का निकाह़ न करो जब तक उन की मरज़ी न हो।

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج ٤ ص٥٦٤ حديث٧٦٣٩)

इस्लामी बहनो ! इन अह़ादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि सह़ाबिय्यात رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِنَّ اَجْمَعِیْن की सीरते त़य्यिबा जहां हमें येह सिखाती है कि उन्हें पेश आ-मदा मसाइल के बारे में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की जुस्त-जू रहती थी वहीं येह वाक़िआ़त शोहर के हुक़ूक़ के बारे में सह़ाबिय्यात رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِنَّ की **म-दनी सोच** का पता देते हैं कि वोह अपने आप फ़ैसले करने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी से बचने को सामने रखती थीं। और अन्देशए गुनाह से भी मोह़तात़ रहा करती थीं। इन अह़ादीसे मुक़द्दसा में शोहर वालियों के लिये भी येह दर्स है कि वोह अपने शोहर के हुक़ूक़ में हरगिज़ कमी न करें।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मैके वाले मोह़तात़ रहें

सुवाल : आज कल अक्सर मैके वाले शोहर के ख़िलाफ़ कान भरते रहते हैं इस के बारे में कुछ म-दनी फूल दे दीजिये।

जवाब : अव्वल तो इस्लामी बहन को चाहिये कि अगर सुसराल में कोई परेशानी है भी तो उस पर सब्र कर के अज्र कमाए। क्यूं कि वोह जब मैके में आ कर भड़ास निकालती है तो अक्सर ग़ीबतों, तोह्मतों, बद गुमानियों और पर्दा दरियों वग़ैरा कबीरा गुनाहों का सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है और फिर मैके वाले शोहर या सुसराल के ख़िलाफ़ कान भरने का काम संभाल लेते और यूं मज़ीद गुनाहों और फ़ितनों के रास्ते खुलते हैं। मैके वालों को चाहिये कि जब कान भरने या'नी शोहर या सुसराल के ख़िलाफ़ बोलने का ज़ेह्न बने तो कम अज़ कम इन दो रिवायात को पेशे नज़र रख लिया करें : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो किसी शख़्स की बीवी को उस के ख़िलाफ़ भड़काए वोह हम में से नहीं।" (مُسندِ امام احمد ج۹ ص ۱٦ حدیث ۲۳۰٤۱) ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ‘‘शैत़ान अपना तख़्त पानी पर बिछाता है, फिर अपने लश्कर भेजता है, उन लश्करों में इब्लीस के ज़ियादा क़रीब उस का द-रजा होता है जो सब से ज़ियादा फ़ितने बाज़ होता है। उस के लश्कर में से एक आ कर कहता है : मैं ने ऐसा ऐसा किया है तो शैत़ान कहता है : ‘‘तूने कुछ भी नहीं किया।’’ फिर एक और लश्कर आता है और कहता है : ‘‘मैं ने एक आदमी को उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई नहीं डाल दी।’’ येह सुन कर इब्लीस उसे अपने क़रीब कर लेता है और कहता है : ‘‘तू कितना अच्छा है।’’ और अपने साथ चिमटा लेता है।’’ (صَحِیح مُسلِم ص ۱۵۱۱ حدیث ۶۷-(۲۸۱۳))

शोहर बे पर्दगी का हुक्म दे तो......?

सुवाल : अगर शोहर या सुसराल वाले या मां बाप पर्दे के बारे में कोई ख़िलाफ़े शर-अ़ हुक्म दें तो क्या करे ?

जवाब : इस बात में उन की इत़ाअ़त नहीं की जाएगी कि गुनाहों के मुआ़-मलात में शोहर या वालिदैन वग़ैरा का हुक्म मानना

सवाब के बजाए गुनाह है। **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है :

" لَاطَاعَةَ فِيْ مَعصِيَةِ اللّٰهِ اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعرُوْفِ. "

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इताअ़त जाइज़ नहीं इताअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है। (مُسلِم ص ۱۰۲۳ حدیث ۱۸۴۰) इस ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमूदा लफ़्ज़ "मा'रूफ़" की ता'रीफ़ बयान करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "मा'रूफ़ वोह काम है जिसे शरीअ़त मन्अ़ न करे, मा'सियत वोह काम है जिसे शरीअ़त मन्अ़ फ़रमा दे।" (मिरआत, जि. 5, स. 340)

बच्चों का पहला मक्तब मां की गोद है

सुवाल : एक इस्लामी बहन के लिये इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल का बुन्यादी ज़रीआ़ कौन सा है ?

जवाब : ज़रूरत की क़दर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना यक़ीनन हर मुसल्मान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है जैसा कि ह़दीसे पाक में

फ़रमाया गया : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इ़ल्म त़लब करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। (سُنَنِ اِبنِ ماجه ج١ ص١٤٦ حديث ٢٢٤) लिहाज़ा इस के लिये सअ़्य (या'नी कोशिश) करना लाज़िमी है। हुसूले इ़ल्म के मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ में से एक ज़रीआ़ वालिदैन भी हैं, बच्चे का पहला मक्तब "मां की गोद" है।

मां बाप के लिये ज़रूरी है कि अपनी औलाद की सह़ीह़ इस्लामी तरबिय्यत करें। इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा कीजिये : ﴾1﴿ "अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ (1) अपने नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत (2) अहले बैत (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) की मह़ब्बत और (3) क़िराअते क़ुरआन।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطِىّ ص٢٥ حديث ٣١١) ﴾2﴿ "अपनी औलाद के साथ नेक सुलूक करो और उन्हें आदाबे ज़िन्दगी सिखाओ।"

(سُنَنِ اِبنِ ماجه ج٤ ص١٨٩ حديث ٣٦٧١)

औ़रत शोहर से इ़ल्म ह़ासिल करे

सुवाल : शादी शुदा औ़रत किस त़रह़ इ़ल्म ह़ासिल करे ?

जवाब : जितना मुम्किन हो अपने शोहर से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करे।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

शोहर पर इस सिल्सिले में बड़ी भारी ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयत : (قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ) के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा **जलालुद्दीन सुयूत़िश्शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर बयान करते हुए फ़रमाते हैं : इस आयत का तक़ाज़ा है कि अपने आप को और अपने अहले ख़ाना को ख़ैर (या'नी भलाई) की ता'लीम दीजिये और उन्हें आदाबे ज़िन्दगी सिखाइये। (تفسیر درمنثور ج۸ ص۲۲۵)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** में शोहर पर बीवी के हुक़ूक़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''न-फ़क़ा सकिनी (या'नी गुज़ारे के अख़राजात व रिहाइश के लिये मुनासिब जगह), महर, हुस्ने मुआ़-शरत (या'नी अच्छी त़रह़ रहने सहने का ढंग), नेक बातों और **ह़या व ह़िजाब** (या'नी शर्म व पर्दे) की ता'लीम व

ताकीद और इस के ख़िलाफ़ (अ़मल करने) से मन्उ़त्तह्दीद (या'नी समझाए धमकाए नीज़) हर जाइज़ बात में इस की दिलजूई (करे) ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 371)

शर-ई मस्अला दरपेश हो तो इस की मा'लूमात की तरकीब **बहारे शरीअ़त** में येह बयान की गई है : "औ़रत को मस्अला पूछने की ज़रूरत हो तो अगर शोहर आ़लिम हो तो उस से पूछ ले और आ़लिम नहीं तो उस से कहे वोह पूछ आए और इन सूरतों में उसे ख़ुद आ़लिम के यहां जाने की इजाज़त नहीं और येह सूरतें न हों तो जा सकती है।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 7, स. 99, عالمگیری ج ۱ ص ۳٤۱)

औ़रत का आ़लिमा के पास जा कर पढ़ना

सुवाल : क्या औ़रत इ़ल्मे दीन सीखने आ़लिमा के पास जा सकती है ?

जवाब : मां बाप और शोहर के ज़रीए़ फ़र्ज़ उ़लूम सीखना मुम्किन न हो तो सह़ीह़ुल अ़क़ीदा **सुन्नी आ़लिमा** से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये जा सकती है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दौर में **उम्महातुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के पास ख़वातीन ह़ाज़िर होतीं और उन से दीन की ता'लीम ह़ासिल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

कर के अपनी प्यास बुझाती थीं। मौजूदा दौर में भी इस्लामी बहनें दीनी ता'लीम के लिये नेक सीरत आ़लिमात से इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर सकती हैं और वोह सुन्नी इदारे जहां पर्दे के शर-ई तक़ाज़े पूरे किये जाते हों वहां जा कर भी **फ़र्ज़** उ़लूम सीखे जा सकते हैं। **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे एहतिमाम **जामिअ़तुल मदीना लिल बनात** भी इस्लामी बहनों के लिये **फ़र्ज़ उ़लूम** सीखने का बेहतरीन ज़रीआ़ है जहां मुकम्मल पर्दे के साथ इस्लामी बहनें ही तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम देती हैं।

इ़ल्म सीखने का ज़रीआ़ सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी हैं

सुवाल : क्या दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी **फ़र्ज़ उ़लूम** सीखने का ज़रीआ़ हैं ?

जवाब : क्यूं नहीं मगर येह ज़रूरी है कि इन में ह़ाज़िरी के लिये आते जाते हुए और उस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के अन्दर भी इस्लामी बहनों के शर-ई पर्दे के तमाम शराइत़ पूरे होते हों। **मुबल्लिग़ा** के लिये लाज़िमी है कि सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़लिमा हो और जो कुछ बयान करे वोह भी दुरुस्त हो या अगर आ़लिमा न हो तो किसी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़लिम की किताब से देख कर मिन व अ़न (या'नी जूं का तूं) बयान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و آلہٖ وسلّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

करती हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल में इस्लामी बहनों के **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में इन शराइत़ की पाबन्दी की बहुत सख़्त ताकीद है। दा'वते इस्लामी के **मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात** को ज़बानी बयान करने की इजाज़त नहीं। इन्हें उ़-लमाए अहले सुन्नत की किताबों से ह़स्बे ज़रूरत फ़ोटो कॉपियां करवा कर अपनी डायरी में चस्पां कर के देख कर बयान करना होता है।

ज़ियारते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इस्लामी बहनो ! काश ! हर मुसल्मान तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्ता हो कर सुन्नतें सीखने सिखाने वाले आ़शिक़ाने रसूल में शामिल हो जाए, हर दर्स और हर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल करे और इस के लिये सिदक़े दिल से जिद्दो जुहद करे, एक इस्लामी बहन पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लुत़्फ़ो करम का ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और झूमिये, चुनान्चे **भिम्बर** (कश्मीर) की एक इस्लामी बहन का तह़रीरी बयान कुछ इस त़रह़ है कि हमारे घर से कुछ फ़ासिले पर इस्लामी बहनों का हफ़्तावार सुन्नतों भरा **इज्तिमाअ़** होता

है। एक दिन चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर भी आईं और हमें सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की **दा'वत** पेश की। उन की **मिलन-सारी** और आ़जिज़ी भरे लहजे का असर था कि मेरी दो बहनें पाबन्दी के साथ **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक होने लगीं मगर मैं अक्सर **ग़ैर ह़ाज़िर** हो जाया करती थी। एक रोज़ ज़रा आराम करने के लिये लैटी तो आंख लग गई, मैं सो तो क्या गई मेरा सोया हुवा भाग या'नी (नसीबा) जाग उठा सच कहती हूं मुझे ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो गई। मैं ने अपने चन्द **मसाइल** अपने ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ किये तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक होंटों को जुम्बिश हुई, रह़मत भरे मीठे बोल मेरे कानों में रस घोलने लगे जिन के अल्फ़ाज़ कुछ यूं थे **: "दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ में शिर्कत किया करो।"** फिर मेरी आंख खुल गई। उसी वक़्त मैं ने **निय्यत** की, कि आयिन्दा पाबन्दी से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **शिर्कत** करूंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अब मुझे पाबन्दी से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हो रही है। मैं ने येह भी निय्यत की है कि अगर **म-दनी मर्कज़** ने इजाज़त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

बख़्शी तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जल्द ही अपने घर में **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** शुरूअ़ कर दूंगी ।

आ़लिम न मुत्तक़ी हूं न ज़ाहिद न पारसा
हूं उम्मती तुम्हारा गुनहगार, या रसूल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा उम्मत की ह़ालत से बा ख़बर रहते हैं

سُبْحٰنَ اللہ ! आज भी हमारे ग़ैबदान आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के ह़ाल से बा ख़बर हैं और ख़्वाबों में जा कर ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते हैं । चुनान्चे एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं **:** मैं ह़म्माम में गिर गया, मेरे हाथ पर सख़्त चोट आई जिस से सूजन आ गई, बहुत सख़्त दर्द हो रहा था, दरीं अस्ना मेरी आंख लग गई, ख़्वाब में मह़बूबे रब्बुल अरबाब, नुबुव्वत के माहताब, रिसालत के आफ़्ताब, राह़ते क़ल्बे बेताब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जल्वए आ़लम ताब नज़र आया, लबहाए मुबारक को जुम्बिश हुई रह़मत के फूल झड़ने लगे मीठे बोल कुछ यूं तरतीब पाए **: "बेटा ! तुम्हारे दर्द ने मुझे मु-तवज्जेह किया ।" सुब्ह़ उठा तो मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की ब-र-कत से न दर्द था न वरम** (या'नी सूजन) । (سعادۃُ الدّارین ص ۱۴۰)

इजाज़त के बिग़ैर इज्तिमाअ़ के लिये घर से निकलना

सुवाल : अगर औ़रत को उस के मां बाप या शोहर इ़ल्मे दीन की मजलिस (सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़) से रोकते हों तो क्या करे ?

जवाब : उन की इत़ाअ़त करे। हां **फ़र्ज़ उ़लूम** म-सलन त़हारत, नमाज़, रोज़ा वग़ैरा से **मु-तअ़ल्लिक़** ज़रूरी मा'लूमात अगर घर से निकले बिग़ैर ह़ासिल न हो सकती हों तो अब इन फ़र्ज़ उ़लूम को सीखने के लिये जाने में इजाज़त की ह़ाजत नहीं।

सुवाल : आज कल इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में माइक के ज़रीए इस्लामी भाइयों के बयान सुनाए जाते हैं क्या ऐसा करना शरअ़न दुरुस्त है ?

जवाब : शर-ई तक़ाज़े पूरे होते हों तो दुरुस्त है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "औ़रतें नमाज़े मस्जिद से मम्नूअ़ हैं और वाइज़ (या'नी वा'ज़ कहने वाला) या मीलाद ख़्वां अगर आ़लिमे सुन्नी **सह़ीहुल अ़क़ीदा** हो और उस का वा'ज़ व बयान सह़ीह़ व मुत़ाबिक़े शर-अ़ हो और (औ़रत के आने) जाने में पूरी एह़तियात़ और **कामिल** पर्दा हो और कोई एह़तिमाले फ़ितना (या'नी फ़ितने

का ख़ौफ़) न हो और मजलिसे रिजाल (या'नी मर्दों की बैठक) से दूर (जहां एक दूसरे पर नज़र न पड़ती हो ऐसी जगह) उन की निशस्त हो तो ह़रज नहीं।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 239)

मर्द के पास औ़रत का पढ़ना

सुवाल : पर्दे के पीछे रह कर औ़रत का मर्द से पढ़ना कैसा ?

जवाब : अगर पर्दे में रह कर पढ़ाने वाला **मर्द जवान** है तो इस्लामी बहनों को उस के पास जाने की शरअ़न इजाज़त नहीं और न ही पढ़ाने के इस अन्दाज़ को "मजलिसे वा'ज़" की रुख़्सत पर क़ियास करना दुरुस्त। मजलिसे वा'ज़ या सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पर्दे की पाबन्दी के साथ एकआध **इज्तिमाई बयान** होता है जब कि पढ़ने पढ़ाने का मुआ़-मला जुदा है, इस में पर्दे के बा वुजूद पढ़ने वालियां लगी बंधी और जानी पहचानी होती हैं लिहाज़ा ख़त़रात बहुत ज़ियादा होते हैं। मेरे आक़ा, **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इसी बिना पर पर्दे की तमाम तर पाबन्दी के बा वुजूद औ़रत को इ़ल्मे दीन सीखने के लिये **जवान पीर** के पास जाने की इजाज़त नहीं दी। चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

शरीफ़ में फ़रमाते हैं **:** "अगर बदन मोटे और ढीले कपड़ों से ढका है, न ऐसे बारीक (कपड़े) कि बदन या बालों की रंगत चमके न ऐसे तंग (कपड़े) कि बदन की ह़ालत (या'नी किसी उ़ज़्व की गोलाई या उभार वग़ैरा) दिखाएं और जाना तन्हाई में न हो और **पीर जवान** न हो (या'नी ऐसा करीहुल मन्ज़र ज़ईफ़ म-सलन चेहरे पर झुर्री वाला और शह्वत के तअ़ल्लुक़ से बिल्कुल बे कशिश होना चाहिये कि जिस से त़-रफ़ैन या'नी पीर और मुरी-दनी में से किसी एक की जानिब से भी शह्वत का अन्देशा न हो) ग़रज़ कोई फ़ितना न फ़िलह़ाल हो न इस का अन्देशा (आयिन्दा के लिये) हो तो इ़ल्मे दीन (और) उमूरे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ सीखने के लिये जाने और बुलाने में कोई ह़रज नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 240)

औ़रत आ़लिम का बयान सुनने के लिये निकल सकती है या नहीं ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन आ़लिम का बयान सुनने के लिये **पर्दे** में रहते हुए घर से बाहर निकल सकती है ?

जवाब : बा'ज़ क़ुयूदात के साथ ह़ुसूले इ़ल्मे दीन की निय्यत से घर से निकल सकती है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,**

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "औ़रतें नमाज़े मस्जिद से मम्नूअ़ हैं और वाइज़ (या'नी वा'ज़ कहने वाला) या मीलाद ख़्वां अगर आ़लिमे सुन्नी **सह़ीहुल अ़क़ीदा** हो और उस का वा'ज़ व बयान सह़ीह़ व मुत़ाबिक़े शर-अ़ हो और (औ़रत के आने) जाने में पूरी एह़तियात़ और **कामिल पर्दा** हो और कोई एह़तिमाले फ़ितना (या'नी फ़ितने का ख़ौफ़) न हो और मजलिसे रिजाल (या'नी मर्दों की बैठक) से दूर (जहां एक दूसरे पर नज़र न पड़ती हो) उन की निशस्त हो तो ह़रज नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 239)

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** के साथ वाबस्तगी से ज़िन्दगी में वोह वोह ह़ैरत अंगेज़ तब्दीलियां आती हैं कि कई इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने अपने जज़्बात का इज़्हार करते हुए कहा : काश ! हमें बहुत पहले दा'वते इस्लामी का **म-दनी माह़ोल** मुयस्सर आ गया होता ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों से मालामाल एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **बाबुल**

इस्लाम (सिन्ध) की एक इस्लामी बहन **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता होने का सबब कुछ यूं बयान करती हैं : मैं नमाज़ें क़ज़ा करने, बे पर्दगी और फ़िल्म बीनी जैसे कसीर **गुनाहों** में गिरिफ़्तार हो कर वक़्त के अनमोल हीरों को बरबादिये आख़िरत का सामान ख़रीदने में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) करने और **जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल** की बजा आ-वरी में मसरूफ़ थी। अफ़्सोस ! गुनाहों की दलदल में गले गले तक धंस जाने के बा वुजूद मुझे एह़सास तक न था कि येह तमाम अफ़्आ़ल **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم को नाराज़ करने वाले हैं। मेरी **इस्लाह़** का सबब वोह क़ीमती लम्ह़ात बने जो मैं ने **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में गुज़ारे। उस इज्तिमाअ़ में शरीक होने का वसीला एक मुबल्लिग़ए दा'वते इस्लामी की **इन्फ़िरादी कोशिश** बनी। इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत तो क्या मिली मेरा दिल चोट खा कर रह गया ! बे वफ़ा दुन्या से मेरा दिल टूट गया, वोह दिल जो कभी दुन्या की रंगीनियों में गुम रहता था, अब उस से उचाट हो चुका था। मुझे येह एह़सास हो चला था कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

एक झोंके में है इधर से उधर चार दिन की बहार है दुन्या

ज़िन्दगी नाम है इस का मगर मौत का इन्तिज़ार है दुन्या

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों से तौबा कर के **जन्नत में ले जाने आ'माल** में लग गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने दा'वते इस्लामी का **म-दनी काम** करना शुरूअ़ कर दिया, ता दमे तह़रीर एक ह़ल्क़ा मुशा-वरत की ज़िम्मादार की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं।

गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा करम मुझ पर ह़बीबे किब्रिया हो

मेरी बद आ़दतें सारी छुटेंगी अगर लुत्फ़ आप का या मुस्तफ़ा हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का 99% काम इन्फ़िरादी कोशिश से है

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! **इन्फ़िरादी कोशिश** की कैसी **ब-र-कतें** नसीब हुई ! बरबादिये आख़िरत के संगलाख़ रास्ते पर गामज़न इस्लामी बहन को اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **जन्नत** में ले जाने वाली शाहराह चलने की तौफ़ीक़ मिल गई। यक़ीनन **नेकी की दा'वत** के म-दनी काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** को बड़ा अ़मल दख़्ल है ह़त्ता कि हमारे मीठे मीठे **आक़ा,** मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नीज़ सब के सब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **नेकी की दा'वत** के काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई है। "बेशक दा'वते इस्लामी का तक़रीबन **99%** (निनानवे फ़ीसद) म-दनी काम **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ही मुम्किन है।" इज्तिमाई कोशिश के मुक़ाबले में **इन्फ़िरादी कोशिश** बेहद आसान है क्यूं कि इज्तिमाअ़ में बहुत सारी इस्लामी बहनों के सामने "बयान" करने की सलाहिय्यत हर एक में नहीं होती जब कि **इन्फ़िरादी कोशिश** हर वोह इस्लामी बहन भी कर सकती है जिसे बयान करना कुजा बोलना भी न आता हो। हर इस्लामी बहन को चाहिये कि **म-दनी मर्कज़** के दिये हुए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ इस्लामी बहनों (ख़्वाह उन का तअ़ल्लुक़ ज़िन्दगी के किसी भी शो'बे से हो) को बे धड़क **नेकी की दा'वत** पेश करे। क्या अ़जब कि आप के चन्द कलिमात किसी की **दुन्या व आख़िरत संवारने** और आप के लिये कसीर **सवाबे जारिया** पाने का ज़रीआ़ बन जाएं।

इन्फ़िरादी कोशिशें करती रहें

नेकियों से झोलियां भरती रहें

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

ख़त़रनाक ज़हरीला सांप

सुवाल : बीवी के घर से बाहर निकलने पर शोहर के बुरा मनाने के तअ़ल्लुक़ से सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का कोई वाक़िआ़ बता दीजिये ।

जवाब : एक ग़ैरत मन्द सहाबी की ह़िकायत सुनिये और इ़ब्रत से सर धुनिये । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सईद ख़ुदरी** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं **:** एक नौ जवान सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **नई नई शादी** हुई थी । एक बार जब वोह अपने घर तशरीफ़ लाए तो देखा कि उन की दुल्हन घर के दरवाज़े पर खड़ी है, मारे जलाल के नेज़ा तान कर अपनी दुल्हन की त़रफ़ लपके । वोह घबरा कर पीछे हट गई और रो कर पुकारी **: मेरे सरताज !** मुझे मत मारिये, मैं बे क़ुसूर हूं, ज़रा घर के अन्दर चल कर देखिये कि किस चीज़ ने मुझे बाहर निकाला है ! चुनान्चे वोह सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्दर तशरीफ़ ले गए, **क्या देखते हैं कि एक ख़त़रनाक ज़हरीला सांप कुंडली मारे बिछोने पर बैठा है ।** बे क़रार हो कर सांप पर वार कर के उस को नेज़े में पिरो लिया । सांप ने तड़प कर उन को डस लिया । **ज़ख़्मी सांप** तड़प तड़प कर मर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

गया और वोह ग़ैरत मन्द सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ भी सांप के ज़ह्र के असर से जामे शहादत नोश कर गए। (صحیح مُسلِم ص۲۲۸ حدیث۲۳٦) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क्या पर्दा तरक़्क़ी में रुकावट है ?

सुवाल : बा'ज़ लोग कहते हैं, कुफ़्फ़ार बहुत आगे निकल चुके हैं, पर्दे पर सख़्ती मुसल्मानों की **तरक़्क़ी में रुकावट है !**

जवाब : मुसल्मानों की **तरक़्क़ी** में **पर्दा** नहीं दर ह़क़ीक़त **बे पर्दगी** रुकावट बनी हुई है ! जी हां, जब तक मुसल्मानों में शर्मो ह़या और **पर्दे** का दौर दौरा रहा तब तक वोह फ़ुतूह़ात पर फ़ुतूह़ात करते चले गए यहां तक कि दुन्या के बे शुमार मुमालिक पर परचमे इस्लाम लहराने लगा। **पर्दा नशीन माओं** ने बड़े बड़े बहादुर जरनेल व सिपह सालार, अ़ज़ीम हुक्मरान, उ़-लमाए रब्बानिय्यीन और औलियाए कामिलीन को जनम दिया, तमाम उम्महातुल मुअमिनीन व जुम्ला सह़ाबिय्याते सय्यिदुल मुर-सलीन رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُنَّ बा पर्दा थीं, **ह़-सनैने करीमैन** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا की वालिदए माजिदा ख़ातूने जन्नत **सय्यिदह**

फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बा पर्दा थीं, सरकारे बग़दाद हु़ज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की वालिदए मोह़-त-रमा सय्यि-दतुना **उम्मुल ख़ैर फ़ाति़मा** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا बा पर्दा थीं । **अल ग़रज़** जब तक **पर्दा** क़ाइम था और इफ़्फ़त मआब ख़वातीन **चादर और चार दीवारी** के अन्दर थीं, मुसल्मान ख़ूब तरक़्क़ी की मनाज़िल तै़ करता रहा और काफ़िरों पर ग़ालिब रहा । जब से कुफ़्फ़ारे मक्कार के ज़ेरे असर आ कर मुसल्मानों ने बे पर्दगी का सिल्सिला शुरूअ़ किया है, मुसल्सल तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं, कल तक जो कुफ़्फ़ारे बद अन्जाम मुसल्मान के नाम से लरज़ा बर अन्दाम थे आज वोह मुसल्मानों की बे पर्दगियों और बद अ़-मलियों के बाइ़स ग़ालिब आ चुके हैं, **इस्लामी मुमालिक** पर बा क़ाइ़दा जारिह़ाना ह़म्ले हो रहे हैं और ज़ालिमाना क़ब्ज़े किये जा रहे हैं मगर मुसल्मान है कि होश के नाख़ुन नहीं लेता । **आह ! आज का नादान मुसल्मान T.V., V.C.R, और INTER NET पर फ़िल्में डिरामे चला कर, बेहूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाचरंग की मह़फ़िलें जमा कर, काफ़िरों की नक़्क़ाली में दाढ़ी मुंडा कर,**

कुफ़्फ़ार जैसा बे शर्माना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्दा बेगम को बिठा कर, बे ह़या बीवी को मेकअप करवा कर मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाह में ले जा कर, अपनी औलाद को दुन्यवी ता'लीम की ख़ातिर कुफ़्फ़ार के मुमालिक में काफ़िरों के सिपुर्द करवा कर न जाने किस क़िस्म की तरक़्क़ी का मु-तलाशी है !

वोह क़ौम जो कल तक खेलती थी शमशीरों के साथ
सिनेमा देखती है आज वोह हमशीरों के साथ

ह़क़ीक़त में काम्याब कौन ?

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कसीर मुसल्मान झूट, ग़ीबत, तोहमत, ख़ियानत, ज़िना, शराब, जूआ, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे वग़ैरा सुनने के गुनाह बे बाकाना किये जा रहे हैं, अक्सर मुसल्मान औ़रतों ने **मर्दों के शाना ब शाना** चलने की नापाक धुन में ह़या की चादर उतार फेंकी है और अब दीदा ज़ैब साढ़ियों, नीम उ़र्यां ग़रारों, मर्दाना वज़्अ़ के लिबासों, मर्द जैसे बालों के साथ शादी होलों, होटलों, तफ़रीह़ गाहों और सिनेमा घरों में अपनी आख़िरत बरबाद करने में मशग़ूल हैं। **ख़ुदा की क़सम !** मौजूदा रविश में न

तरक़्क़ी है न काम्याबी। तरक़्क़ी और काम्याबी सिर्फ़ व सिर्फ़ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की फ़रमां बरदारी करते हुए इस मुख़्तसर तरीन ज़िन्दगी को सुन्नतों के मुताबिक़ गुज़ार कर ईमान सलामत लिये क़ब्र में जाने और जहन्नम के होलनाक अ़ज़ाब से बच कर जन्नतुल फ़िरदौस पाने में है। चुनान्चे पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 185 में इर्शादे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ (پ٤ اٰل عمران ١٨٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा।

जहन्नम में औ़रतों की कसरत

आह ! आह ! आह ! औ़रतों में बे पर्दगी और गुनाहों की कसरत होना इन्तिहाई तश्वीश नाक है, ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। सह़ीह़ मुस्लिम में है : **हुज़ूर** नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : मैं ने जहन्नम में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि **औ़रतें जहन्नम में ज़ियादा हैं।** (صَحِیح مُسلِم ص٢٢٨ حدیث٢٧٣٧)

दिलो नज़र की तबाही है क़ुर्बे ना महरम
येह शर्हे आयए इस्मत है जो है बेश न कम

बहुत दिनों से निज़ामे ह़यात है बरहम
ह़या है आंख में बाक़ी न दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा

येह मा'सियत के मनाज़िर हैं ज़ीनते आ़लम
येह सैर गाहें कि मक़्तल हैं शर्मो गै़रत के

झलक रहा है झलाझल क़मीस का रेशम
येह नीम बाज़ सा बुरक़अ़ येह दीदा ज़ैब निक़ाब

कि सारे फूल येह काग़ज़ के हैं ख़ुदा की क़सम
न देख रश्क से तहज़ीब की नुमाइश को

जहां हैं आ़इशा व फ़ाति़मा के नक़्शे क़दम
वोही है राह तेरे अ़ज़्मो शौक़ की मन्ज़िल

तेरी ह़यात है किरदारे राबिआ़ बसरी
तेरे फ़साने का मौज़ूअ़ इस्मते मरयम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे गै़रती की इन्तिहा

काफ़िरों की उलटी तरक़्क़ी की रेस करते हुए बे पर्दगी और बे ह़याई का बाज़ार गर्म करने वाले ज़रा ग़ौर तो फ़रमाएं। **यूरोप, अमरीका** और इन से **मु-तअस्सिर** होने वाले मुल्कों में क्या हो रहा है ! रक़्स गाहों में लोग अपनी आंखों से अपनी बहू बेटियों को दूसरों की आग़ोश में देखते हैं और टस से मस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

नहीं होते बल्कि वोह **दय्यूस** फ़ख्ऱ से इतराते हुए दाद दे रहे होते हैं ! बे पर्दा और फ़ेशन एबल औ़रतों के ''मुंह काले'' होने की ह़या सोज़ ख़बरें आए दिन अख़्बारात में छपती हैं। वोह औ़रत जो मर्द की शह्वत-रानी का शिकार होती है उसे अगर ह़म्ल ठहर गया तो वोह कहां सर छुपाएगी ? ह़म्ल गिराने की सूरत में वोह अपनी जान भी खो सकती है। चलिये माना कि **यूरोप** के तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक में ऐसे अस्पताल मौजूद हैं जो इस्क़ाते ह़म्ल (या'नी ह़म्ल गिराने) की ''ख़िदमत'' अन्जाम देते हैं और ऐसी पनाह गाहें भी मौजूद हैं जहां ग़ैर शादी शुदा माओं को ''पनाह'' मिल जाती है लेकिन क्या मुआ़-शरे में उन्हें कोई क़ाबिले एह़तिराम मक़ाम भी नसीब हो सकता है ! माना कि रुस्वा हो कर उन दोनों (या'नी ग़ैर शादी शुदा जोड़े) ने अपने किये की दुन्या में हाथो हाथ सज़ा पाई लेकिन वोह बच्चा जो इस त़रह़ पैदा हुवा है अगर ज़िन्दा बच भी गया तो उस का क्या बनेगा ? उस के हवस कार बाप ने भी उस से आंखें फैर लीं, बदकार मां भी उसे कचरा कूंडी या किसी मोह़ताज ख़ाने में छोड़ कर चली गई !

सत्तर70 हज़ार ह़रामी बच्चे

दूसरी जंगे अ़ज़ीम में **अमरीका** के सिपाही अपने दोस्त मुल्क बरत़ानिया की मदद के लिये "तशरीफ़" लाए थे। वोह चन्द साल बरत़ानिया में ठहरे और जब गए तो सरकारी आ'दाद व शुमार के मुत़ाबिक़ **सत्तर70 हज़ार ह़रामी बच्चे** छोड़ कर गए! **यूरोप के बा'ज़ मुल्कों में ह़रामी बच्चों की शर्ह़े पैदाइश साठ फ़ीसद से भी मु-तजाविज़ हो गई है और कुंवारी माओं की ता'दाद में होशरुबा इज़ाफ़ा हो रहा है।** त़लाक़ों की कसरत है, घरों में सुकून की दौलत नहीं मिलती, मियां बीवी में ए'तिमाद मफ़्क़ूद (या'नी ग़ाइब) है ज़ौजा और ख़ाविन्द में सच्ची मह़ब्बत का **फ़ुक़्दान** है। बरदाश्त और ईसार का जज़्बा **ख़त्म** हो चुका है, कोई बात किसी की मरज़ी के ख़िलाफ़ हो गई झट **त़लाक़** ह़ासिल कर ली। ग़ौर फ़रमाइये! मियां बीवी की ज़ेह्नी हम आहंगी जो कि मुआ़-शरे की ख़िश्ते अव्वल (या'नी पहली ईंट) है और मोह़कम असास (या'नी मज़्बूत़ बुन्याद) भी येही है कि जिस पर मुआ़-शरे का मह़ल ता'मीर किया जा सकता है, अगर येह बुन्याद ही कमज़ोर होगी तो सिह़्ह़त मन्द मुआ़-शरा कैसे ता'मीर होगा? اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लाम ने जिन चीज़ों के बजा लाने का हुक्म

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

दिया है उन में हमारा भला है और जिन चीज़ों से रोका है उन्हें करने में हमारा नुक़्सान है। येह दीन अबद तक के लिये है इस लिये कोई ऐसा वक़्त नहीं आ सकता कि इस की ह़राम की हुई चीज़ें ह़लाल हो जाएं या इन पर मुरत्तब होने वाले नुक़्सानात ख़त्म हो जाएं।

उठा कर फेंक दे अल्लाह के बन्दे
नई तहज़ीब के अन्डे हैं गन्दे

चादर और चार दीवारी की ता'लीम किस ने दी ?

सुवाल : बा'ज़ आज़ाद मन्श मर्द व औ़रत कहते हैं कि उ़-लमाए किराम औ़रतों को **चार दीवारी** में बिठा देना चाहते हैं !

जवाब : इस में उ़-लमाए किराम का अपना कोई ज़ाती मफ़ाद नहीं। येह दुन्या के किसी आ़लिमे दीन का नही, रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى (پ۲۲ الاحزاب ۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

देखा आप ने ! औ़रत के लिये **चादर और चार दीवारी** का

हुक्म किसी आ़म शख़्स का नहीं, हम सब के पालने वाले रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़ली है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى الله ! أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औ़रत की मुला-ज़मत के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : क्या औ़रत मुला-ज़मत कर सकती है ?

जवाब : पांच शर्तों के साथ इजाज़त है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "यहां पांच शर्तें हैं ﴾1﴿ कपड़े बारीक न हों जिन से सर के बाल या कलाई वग़ैरा सित्र का कोई ह़िस्सा चमके ﴾2﴿ कपड़े तंग व चुस्त न हों जो बदन की हैआत (या'नी सीने का उभार या पिंडली वग़ैरा की गोलाई वग़ैरा) ज़ाहिर करें ﴾3﴿ बालों या गले या पेट या कलाई या पिंडली का कोई ह़िस्सा ज़ाहिर न होता हो ﴾4﴿ कभी ना **मह़रम** के साथ ख़फ़ीफ़ (या'नी मा'मूली सी) देर के लिये भी तन्हाई न होती हो ﴾5﴿ उस के वहां रहने या बाहर आने जाने में कोई **मज़िन्नए फ़ितना** (फ़ितने का गुमान) न हो। येह **पांचों शर्तें** अगर जम्अ़ हैं तो

ह़रज नहीं और इन में एक भी कम है तो (मुला-ज़मत वग़ैरा) ह़राम।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 248) जहालत व बेबाकी का दौर है मज़्कूरा पांच शराइत़ पर अ़मल फ़ी ज़माना मुश्किल तरीन है, आज कल दफ़ातिर वग़ैरा में मर्द व औ़रत مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ इकठ्ठे काम करते हैं और यूं इन दोनों के लिये बे पर्दगी, बे तकल्लुफ़ी और बद निगाही से बचना क़रीब ब ना मुम्किन है लिहाज़ा औ़रत को चाहिये कि घर और दफ़्तर वग़ैरा में नोकरी के बजाए कोई **घरेलू कस्ब** इख़्तियार करे।

घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : घर में "काम वाली" रख सकते हैं ?

जवाब : रख तो सकते हैं मगर अभी जो **5** शराइत़ बयान हुईं उन को पेशे नज़र रखना चाहिये। अगर बे पर्दगी करने वाली हुई तो घर के मर्दों का बद निगाहियों और जहन्नम में ले जाने वाली ह़-र-कतों से बचना सख़्त दुश्वार होगा। बल्कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ घर की पर्दा नशीन ख़्वातीन के अख़्लाक़ भी तबाह कर देगी। ग़ैर औ़रत के साथ मर्द की ख़फ़ीफ़ या'नी मा'मूली सी तन्हाई भी **ह़राम** है और घर में रहने वाले मर्द का आज कल इस से बचना तक़रीबन ना मुम्किन होता है। लिहाज़ा घर में काम वाली न रखने ही में आ़फ़िय्यत है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

एयर होस्टेस की नोकरी करना कैसा ?

सुवाल : क्या एयर होस्टेस की नोकरी जाइज़ है ?

जवाब : फ़ी ज़माना **एयर होस्टेस** की नोकरी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है क्यूं कि इस में **बे पर्दगी** शर्त़ होती है। नीज़ उस को बिग़ैर शोहर या मह़रम के ग़ैर **मर्दों** के साथ **सफ़र** भी करना पड़ता है।

मर्द का एयर होस्टेस से ख़िदमत लेना कैसा ?

सुवाल : हवाई जहाज़ का मर्द मुसाफ़िर एयर होस्टेस की ख़िदमात ले सकता है या नहीं ?

जवाब : हर बा ह़या और ग़ैरत मन्द मुसल्मान इस सुवाल का जवाब अपने ज़मीर से ले सकता है। ज़ाहिर है एक बे पर्दा औ़रत जिस की तरबिय्यत में ग़ैर मर्दों के साथ भी लोचदार और मुलायम अन्दाज़ में गुफ़्त-गू करना शामिल हो उस से बिला ह़ाजते शदीदा पानी, कोल्ड ड्रिंक, चाय और कोफ़ी या खाना वग़ैरा त़लब करना ख़त़रात में डाल सकता है हां ख़ुद आ कर खाना वग़ैरा रख दे तो खा ले। या ख़ुद आ कर कुछ पूछे तो नज़रें एक दम नीची किये या आंखें बन्द कर के एक दो अल्फ़ाज़ में जवाब दे कर जान छुड़ा ले। हरगिज़ उस से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

सुवाल जवाब न करे नीज़ उस से कुछ मंगवाए भी नहीं वरना वोह देने के लिये आएगी जिस के सबब मज़ीद बातचीत करने या निगाह पड़ने के मसाइल खड़े हो सकते हैं । ऐसे मौक़अ़ पर जब नफ़्स त़रह़ त़रह़ के ह़ीले सिखा कर बे पर्दा औ़रत को देखने और उस से बातचीत करने की तरग़ीब दे तो इस रिवायत को याद कर लेना बहुत मुफ़ीद है चुनान्चे मन्क़ूल है : **"जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा ।"** (ھِدایہ ج۲ ص۳۶۸)

औ़रत का तन्हा सफ़र करना कैसा ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन का बिग़ैर मह़रम के सफ़र करना गुनाह है ?

जवाब : जी हां । बिग़ैर शोहर या मह़रम के औ़रत का तीन दिन की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ किसी जगह जाना ह़राम है येही ज़ाहिरुर्रिवायह है यहां तक कि अगर औ़रत के पास **सफ़रे ह़ज** के अस्बाब हैं मगर शोहर या कोई क़ाबिले इत़्मीनान मह़रम साथ नहीं तो ह़ज के लिये भी नहीं जा सकती अगर गई तो गुनाहगार होगी अगर्चे **फ़र्ज़ ह़ज** अदा हो जाएगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

अलबत्ता फु-क़हाए मु-तअख़्ख़िरीन ने एक दिन की मसाफ़त पर औ़रत के बे मह़रम जाने को भी मम्नूअ़ क़रार दिया है । (ماخوذ از رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۵۳۳ وغیرہ)

मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 752 पर है कि औ़रत को बिग़ैर मह़रम के तीन दिन या ज़ियादा की राह जाना, ना जाइज़ है बल्कि एक दिन की राह जाना भी । ना बालिग़ बच्चा या मा'तूह के साथ भी सफ़र नहीं कर सकती, हमराही में बालिग़ मह़रम या शोहर का होना ज़रूरी है । (عالمگیری ج ۱ ص ۱۴۲, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 657) मह़रम के लिये ज़रूरी है कि सख़्त फ़ासिक़ बेबाक ग़ैर मामून न हो ।

सुवाल : तीन दिन की मसाफ़त से क्या मुराद है ?

जवाब : बर्री या'नी ख़ुश्की में सफ़र पर तीन दिन की मसाफ़त से मुराद साढ़े सत्तावन मील का फ़ासिला है (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 270) किलो मीटर के ह़िसाब से येह मिक़्दार तक़रीबन 92 किलो मीटर बनती है ।

सुवाल : मुन्दरिजए बाला जवाब में जो "ज़ाहिरुर्रिवायह" की इस्तिलाह़ बयान की गई है इस की वज़ाह़त कर दीजिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

जवाब : फ़िक़्हे ह़-नफ़ी में ज़ाहिरुर्रिवायह उन मसाइल को कहा जाता है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की छ[6] किताबों (1) जामेअ़ सग़ीर (2) जामेअ़ कबीर (3) सियर कबीर (4) सियर सग़ीर (5) ज़ियादात (6) मब्सूत़ में मज़्कूर हों।

सुवाल : बहारे शरीअ़त के जुज़्इय्ये में जो "मा'तूह" बयान किया गया है येह कौन होता है ?

जवाब : जो शख़्स कम समझ हो, तदबीर ठीक न हो, कभी आ़क़िलों की सी बातें करे, कभी मदहोशों की सी अगर जुनून की ह़द तक न पहुंचा हो, लोगों को बे सबब मारता गालियां देता न हो, वोह मा'तूह कहलाता है। शरअ़न इस का हुक्म समझ वाल (समझदार) बच्चे की मिस्ल है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 636)

औ़रत का हवाई जहाज़ में तन्हा सफ़र करना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी दूसरे शह्‌र या दूसरे मुल्क में औ़रत का मह़रम या शोहर है और वोह उसे बुला रहा है तो क्या औ़रत, बस, कार, रेलगाड़ी, किश्ती या हवाई जहाज़ वग़ैरा ज़राएअ़ से भी तन्हा **नहीं** जा सकती ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

जवाब : नहीं जा सकती।

सुवाल : तो क्या येह शोहर की ना फ़रमानी नहीं कहलाएगी ?

जवाब : जी नहीं। **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है **:** **"لَا طَاعَةَ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوْفِ."** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं इत़ाअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है। (صَحِيح مُسلِم ص ١٠٢٣ حديث ١٨٤٠) इस ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमूदा लफ़्ज़ "मा'रूफ़" की ता'रीफ़ बयान करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं **:** "**मा'रूफ़**" वोह काम है जिसे शरीअ़त मन्अ़ न करे, "**मा'सियत**" वोह काम है जिसे शरीअ़त मन्अ़ फ़रमाए।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 340)

औ़रत का ब ग़-रज़े इलाज गली में टहलना कैसा ?

सुवाल : त़बीब ने रोज़ाना मख़्सूस वक़्त के लिये पैदल चलने की ताकीद की हो और घर में ऐसा मुम्किन न हो तो क्या करे ?

जवाब : पर्दे की तमाम तर कुयूदात के साथ बाहर पैदल चलने में ह़रज नहीं जब कि कोई और मानेए़ शर-ई़ मौजूद न हो।

हम अब सिर्फ़ म-दनी चेनल देखते हैं

इस्लामी बहनो ! सुन्नतों भरी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ब-र-कतें और सआ़दतें ही सआ़दतें पाएंगी। मुआ़-शरे के कई बिगड़े हुए घराने दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ राहे रास्त पर आ चुके हैं, चुनान्चे **शहदाद पूर** (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन (उ़म्र तक़रीबन 45 साल) के बयान का खु़लासा है कि हमारे घर में नमाज़ों की अदाएगी की कोई तरकीब नहीं थी, केबल के ज़रीए़ T.V. पर ख़ूब फ़िल्में और डिरामे देखे जाते। इ़ल्मे दीन से मह़रूमी और नेक सोह़बत से दूरी की बिना पर आवे का आवा ही बिगड़ा हुवा था। हमारी खु़श नसीबी कि एप्रिल 2009 ई. में हमारे अ़लाके़ के अन्दर **दा'वते इस्लामी** की

इस्लामी बहनों का **म-दनी क़ाफ़िला** तशरीफ़ लाया। "अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत" के दौरान **म-दनी क़ाफ़िले** की इस्लामी बहनें हमारे घर भी आईं। उन की दा'वत पर मैं **म-दनी क़ाफ़िले** की जाए क़ियाम पर होने वाले बयान में शरीक हुई। इस बयान ने मेरे दिल की दुन्या बदल डाली, मैं दरियाए ग़म में डूब गई कि अफ़्सोस! मेरी सारी उ़म्र गुनाहों में गुज़र गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से मुझे **तौबा** की सआ़दत मिली, न सिर्फ़ मैं ने बल्कि मेरी बेटियों ने भी **पांचों वक़्त की नमाज़** पढ़ना शुरूअ़ कर दी और अब हमारे घर कोई और नहीं सिर्फ़ दा'वते इस्लामी का **म-दनी चेनल** देखा जाता है।

दिल की कालक धुले सुख से जीना मिले आओ आओ चलें क़ाफ़िले में चलो
छूटें बद आ़दतें सब नमाज़ी बनें पाओगे रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़ बुराइयों से बचाती है

इस्लामी बहनो ! देखी आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत ! रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से दूर रहने वाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

घराने में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **नमाज़ों की बहार आ गई !** हर मुसल्मान को नमाज़ पढ़नी चाहिये ! اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ की ब-र-कत से बुराइयां भी छूट जाएंगी चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 21 **सू-रतुल अ़न्क़बूत** आयत नम्बर 45 में इर्शाद फ़रमाता है **:**

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से।

इत्तिबाए़ न-बवी में ख़ुश्क टहनी हिलाई

नमाज़ की फ़ज़ीलत के क्या कहने ! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा 76 पर है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ा और उसे हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया **:** ऐ अबू उ़स्मान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे

कि मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने पूछा कि आप ने ऐसा क्यूं किया ? तो फ़रमाया : एक मर्तबा मैं रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया और उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ कर हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया : ऐ सलमान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने येह अ़मल क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : आप ने ऐसा क्यूं किया ? इर्शाद फ़रमाया : बेशक जब मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करता है और पांच नमाज़ें अदा करता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ येह पत्ते झड़ जाते हैं। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ۚ(۱۱۴)

(پ ۱۲ ھود ۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को।

(مسند احمد ج ۹ ص ۱۷۸ حدیث ۲۳۷۶۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है। (ابن عساکر)

क्या औ़रत डॉक्टर के पास जा सकती है ?

सुवाल : औ़रत क्या मर्द डॉक्टर को नब्ज़ दिखा सकती है ?

जवाब : अगर लेडी डॉक्टर से इ़लाज मुम्किन न रहे तो अब मर्द डॉक्टर से रुजूअ़ करने की इजाज़त है। ज़रूरतन वोह मर्द डॉक्टर मरीज़ा को देख भी सकता है और मरज़ की जगह को छू भी सकता है, मगर मर्द डॉक्टर के सामने औ़रत सिर्फ़ **ज़रूरत का ह़िस्सए जिस्म खोले। डॉक्टर भी अगर ग़ैर ज़रूरी ह़िस्से पर क़स्दन नज़र करेगा या छूएगा तो गुनहगार होगा।** इन्जेक्शन वग़ैरा औ़रत के ज़रीए़ लगवाए कि यहां उ़मूमन मर्द की ह़ाजत नहीं होती।

औ़रत का मर्द से इन्जेक्शन लगवाना

सुवाल : अगर नर्स न हो और इन्जेक्शन लगवाना ज़रूरी हो तो औ़रत क्या करे ?

जवाब : सह़ीह़ मजबूरी की सूरत में ग़ैर मर्द से लगवा ले।

मर्द का नर्स से इन्जेक्शन लगवाना

सुवाल : क्या मर्द **नर्स** से इन्जेक्शन लगवा सकता है ?

जवाब : न इन्जेक्शन लगवा सकता है, न पट्टी बंधवा सकता है, न ब्लड प्रेशर नपवा सकता है, न टेस्ट करवाने के लिये ख़ून

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

निकलवा सकता है। **अल ग़रज़ बिला इजाज़ते शर-ई मर्द व औ़रत को एक दूसरे का बदन छूना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।**

सर में लोहे की कील

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "तुम में से किसी के **सर में लोहे की कील** का ठोंक दिया जाना इस से बेहतर है कि वोह किसी ऐसी औ़रत को छूए जो उस के लिये ह़लाल नहीं।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر ج ٢٠ ص ٢١١ حديث ٤٨٦)

नर्स की नोकरी करना कैसा ?

सुवाल : तो क्या औ़रत **नर्स** की नोकरी भी नहीं कर सकती ?

जवाब : इसी किताब के **सफ़ह़ा 160** पर औ़रत की मुला-ज़मत की जो पांच शराइत़ बयान की गईं अगर उन की रिआ़यत होती हो तो "नर्स" की नोकरी जाइज़ है। फ़ी ज़माना नर्स के लिये इन कुयूदात का निभाना बेह़द दुश्वार नज़र आता है। शर-ई तक़ाज़ों का लिह़ाज़ किये बिग़ैर नर्स की मुला-ज़मत इख़्तियार करना गुनहगार होना और अपने ऊपर बे शुमार फ़ित्नों का दरवाज़ा खोलना है।

ज़ख़्मियों की ख़िदमात और सह़ाबिय्यात

सुवाल : क्या जिहाद में सह़ाबिय्यात رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِنَّ اَجْمَعِيْن की ज़ख़्मियों

की ख़िदमात साबित नहीं ? अगर साबित हैं तो नर्सों को मरीज़ों की ख़िदमतों की आज़ादी क्यूं नहीं दी जा रही ?

जवाब : सह़ाबिय्यात رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِنَّ اَجْمَعِیْن का मक़्सद ह़ुसूले जन्नत और नर्सों का मक़्सूद तह़सीले दौलत, वहां पर्दा निहायत सख़्त, यहां आ़म तौ़र पर बे पर्दगी शर्त़ । फिर जिहाद और अस्पताल में ज़मीन व आस्मान का फ़र्क़ भी है । अगर आज भी जिहाद फ़र्ज़े ऐ़न हो जाए तो बालिग़ मर्दों को वालिदैन और शोहर वालियों को शोहर रोकें तब भी जिहाद में जाना ज़रूरी हो जाएगा जब कि अस्पताल में येह सूरत नहीं । फिर भी तमाम शर-ई तक़ाज़े पूरे हो सकते हों तो **नर्स** बनने के लिये इजाज़त की सूरत आगे बयान कर दी गई है ।

नर्स की नोकरी के जवाज़ की एक सूरत

सुवाल : नर्स की नोकरी के जवाज़ की आया कोई सूरत भी है या नहीं ?

जवाब : बिलफ़र्ज़ कोई ऐसा अस्पताल हो जहां बिल्कुल बे पर्दगी न होती हो, ग़ैर मर्द को छूने, इन्जेक्शन लगाने, पट्टी वग़ैरा बांधने की भी नौबत न आती हो, इस के इ़लावा भी अगर कोई मानेए़ शर-ई न हो तो वहां नर्स की नोकरी जाइज़ है ।

अब्बू को बैरूने मुल्क नोकरी मिल गई

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की ब-र-कत से हर त़रफ़ सुन्नतों की धूमधाम है। आइये दा'वते इस्लामी की एक ईमान अफ़्रोज़ "बहार" से अपने क़ल्बो जिगर को गुले गुलज़ार कीजिये। चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि कुछ अ़र्से पहले हम अपने अब्बूजान की बे रोज़गारी की वज्ह से काफ़ी **आज़माइश** में मुब्तला थे। घर के कसीर **अख़राजात** पूरे करने की ख़ात़िर अब्बूजान एक मुद्दत से बैरूने मुल्क नोकरी के लिये हाथ पाउं मार रहे थे मगर बात बनती नज़र न आती थी। एक दिन किसी इस्लामी बहन ने अम्मीजान को बताया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शरीक होने वालियों की दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के कई वाक़िआ़त हैं, लिहाज़ा आप भी इज्तिमाअ़ में शरीक हो कर अपने मस्अले के लिये **दुआ़** कीजिये। इस पर अम्मीजान ने इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी दी और वहां पर हमारे अब्बूजान की नोकरी के लिये भी दुआ़ की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से कुछ ही दिनों में बैरूने मुल्क अब्बूजान की **नोकरी** की तरकीब बन गई। अब तो

तमाम घर वालों के दिलों में **दा'वते इस्लामी** की मह़ब्बत घर कर गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह दा'वते इस्लामी का सदक़ा है कि आज हमारे घर में **म-दनी माह़ोल** है और मैं भी दा'वते इस्लामी की एक अदना मुबल्लिग़ा की ह़ैसिय्यत से म-दनी काम करने के लिये कोशां हूं।

ग़ैबी इमदाद हो घर भी आबाद हो, लुत्फ़े ह़क़ देख लें इज्तिमाआ़त में
चल के ख़ुद देख लें, रिज़्क़ के दर खुलें, ब-र-कतें भी मिलें इज्तिमाआ़त में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! सुन्नतों भरे इज्तिमाओं में दोनों जहानों की ब-र-कतों की बारिशों के भी क्या कहने ! म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़शिक़ाओं के क़ुर्ब में मांगी जाने वाली दुआ़एं क्यूं रंग न लाएं। अच्छी सोह़बत फिर अच्छी सोह़बत होती है। अच्छों की नज़्दीकी मरह़बा सद करोड़ मरह़बा ! इस ज़िम्न में अच्छे पड़ोसियों के **मु-तअ़ल्लिक़** एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत पढ़िये और ईमान ताज़ा कीजिये **:** हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक मुसल्मान की वजह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला दूर फ़रमा देता है।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِیّ ج۳ ص۱۲۹ حدیث ۴۰۸۰)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

मख़्लूत़ ता'लीम का शर-ई हुक्म

सुवाल : मख़्लूत़ ता'लीम **(CO-EDUCATION)** के बारे में क्या हुक्म है?

जवाब : बालिग़ान की **मख़्लूत़ ता'लीम** का मुरव्वजा सिल्सिला सरासर ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

औ़रत और कॉलेज

सुवाल : फ़ी ज़माना औ़रत को स्कूल कॉलेज की ता'लीम में किन किन ख़त़रात का सामना है?

जवाब : औ़रत जब से स्कूल, कॉलेज और यूनीवर्सिटी में पहुंची है, फ़ित्नों का वोह दरवाज़ा खुला है कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ अव्वल तो ता'लीमी इदारों की वर्दी बे पर्दगी वाली और अगर कहीं बुरक़अ़ वग़ैरा है भी तो वोह जाज़िबे नज़र होने के सबब ना मुनासिब। फिर जवान औ़रत का आज़ादी के साथ घर के बाहर आना जाना हज़ार फ़ितने खड़े करता है, कॉलेज की वोह त़ालिबात जो वहां के लड़कों से बे तकल्लुफ़ हो जाती हैं उन में से शायद ही किसी की "आबरू" सलामत रहती हो! उन के इ़श्क़ व फ़िस्क़ के क़िस्से रोज़ ही अख़्बारात में छपते हैं, मरज़ी की शादी में अगर मां बाप रुकावट बनते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

हैं तो जज़्बात में आ कर कई लड़के और लड़कियां ख़ुदकुशी की राह लेते हैं। लड़की पढ़ लिख कर अगर दफ़्तरी नोकरी इख़्तियार करे तो फिर उस में गुनाहों के सिल्सिले का मज़ीद अन्देशा है, दफ़ातिर में बे पर्दगी और गै़र मर्दों के साथ बे तकल्लुफ़ी से बचना क़रीब ब ना मुम्किन होता है। हर गै़रत मन्द मुसल्मान इस के दुन्यवी और उख़रवी नुक़्सानात को समझ सकता है। अक्बर इलाहआबादी ने भी क्या ख़ूब कान मरोड़े हैं :

ता'लीमे दुख़्तरां से येह उम्मीद है ज़रूर
नाचे दुल्हन ख़ुशी से ख़ुद अपनी बरात में

पर्दा नशीन लड़की की शादी नहीं होती

सुवाल : घर वाले पर्दा करने से येह कह कर रोकते हैं कि कॉलेज की ता'लीम से बे बहरा, फ़ेशन परस्ती से दूर, सादा और शर-ई पर्दा करने वाली लड़की का रिश्ता नहीं होता ! क्या येह दुरुस्त सोच है ?

जवाब : येह सोच ग़लत् है, लौहे महफ़ूज़ पर जहां जोड़ा लिखा हुवा है हर हाल में उस जगह शादी हो कर रहेगी और अगर नहीं लिखा तो लाख पढ़ी लिखी और फ़ेशन की पुतली हो दुन्या

की कोई ताक़त शादी नहीं करवा सकती, और अगर मुक़द्दर में ताख़ीर है तो ताख़ीर ही से शादी होगी। रोज़ाना न जाने कितनी ही पढ़ी लिखी फ़ेशन की मतवालियां और कुंवारियां ह़ादिसों या बीमारियों के ज़रीए मौत के घाट उतर जातीं और कई जवान लड़कियां साह़िले समुन्दर पर तैराकी के शौक़ में डूब मरती हैं। या बे पर्दगी और फ़ेशन परस्ती के बाइ़स "इ़श्क़े मजाज़ी" के चक्कर में खु़द को फंसा कर और फिर मरज़ी की शादी की राहें मस्दूद (या'नी बन्द) पा कर खु़दकुशी की राह लेती हैं! हरगिज़ येह बात़िल सोच नहीं रखनी चाहिये कि बे पर्दगी और फ़ेशन परस्ती वग़ैरा गुनाहों के ज़राएअ़ इस्ति'माल करेंगे जभी काम होगा। मेरी बात को इस **इ़ब्रत आमोज़ ह़िकायत** से समझने की कोशिश कीजिये। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं,

हुक्काम की मुला-ज़मत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **सुफ़्यान सौरी** رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक शख़्स को नोकरिये हुक्काम से मन्अ़ फ़रमाया क्यूं कि हुक्काम का दरबारी बनने में ज़ुल्म व गुनाह से बचना दुश्वार होता है। येह सुन कर उस ने कहा : बाल बच्चों को क्या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

करूं ! फ़रमाया : ज़रा सुनियो ! येह शख़्स कहता है कि मैं ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानी करूं जब तो (वोह) मेरे अहलो इयाल को रिज़्क़ पहुंचाएगा (और अगर) इताअ़त करूं तो बे रोज़गार ही छोड़ देगा। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 528)

आज़माइश में न डरें

चाहे कितनी ही सख़्त आज़माइश आन पड़े इस्लामी बहनों को चाहिये शर-ई पर्दा तर्क न करें, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ शहज़ादिये कौनैन, **बीबी फ़ातिमा** और उम्मुल मुअमिनीन **बीबी आ़इशा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के सदक़े आसानी फ़रमा देगा। पारह 30 **सूरए अलम नशरह़** में इर्शाद होता है :

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ؕ﴿۶﴾

(پ ۳۰ الم نشرح ۵،۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है, बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है।

नाविलें पढ़ना कैसा ?

सुवाल : औ़रतें आज कल डाइजेस्ट और नाविलें वग़ैरा पढ़ती हैं इन के बारे में कुछ बताइये।

जवाब : अख़्बारी मज़्मूनों, डाइजेस्टों और नाविलों में बारहा **कुफ़्रिय्यात** देखे जाते हैं। इन में बद मज़्हबों के मज़ामीन भी

होते हैं जिन्हें पढ़ने से दीनो ईमान की बरबादी का ख़त़रा रहता है। शरीअ़त की रू से बद मज़्हबों की मज़्हबी किताब और उन का लिखा हुवा नाम निहाद इस्लामी मज़्मून पढ़ना मर्द व औ़रत दोनों के लिये **ह़राम** है, हां मु-तसल्लिब सुन्नी आ़लिम इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ब वक़्ते ज़रूरत) ब क़दरे ज़रूरत देख सकता है। बहर ह़ाल औ़रत का मुआ़-मला बहुत ही नाजुक है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : सह़ीह़ ह़दीस से साबित है कि लड़कियों को **सूरए यूसुफ़** का तरजमा (व तफ़्सीर) न पढ़ाएं कि इस में मक्रे ज़नां (या'नी औ़रतों के धोका देने) का ज़िक्र फ़रमाया है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 455) **मक़ामे ग़ौर** है, लड़कियों को कुरआने मजीद की एक सूरत सूरए यूसुफ़ का तरजमा और तफ़्सीर पढ़ने से इस लिये मन्अ़ कर दिया गया है कि कहीं येह मन्फ़ी (या'नी उलट) असर न ले लें। अब आप ही अन्दाज़ा लगा लीजिये कि इन्हें बे ढंगी तस्वीरों और ह़या सोज़ फ़िल्मी इश्तिहारों वग़ैरा हज़ारों तबाह कारियों से भरपूर अख़्बारों, बाज़ारी माहनामों, नाविलों और डाइजेस्टों की इजाज़त कैसे दी जा सकती है ! याद रहे ! इन जराइद का मुत़ा-लआ़ मर्दों की आख़िरत के लिये भी कम तबाह कुन नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

सुवाल : बच्चियों को किस सूरत की ता'लीम दी जाए ?

जवाब : बच्चियों को **सू-रतुन्नूर** की ता'लीम दी जाए और इस सूरत का तरजमा व तफ़्सीर पढ़ाया जाए चुनान्चे हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है : अपनी औ़रतों को कातना सिखाओ (पुराने ज़माने में कपड़ा घरों में बुना जाता था उसे कातना कहते हैं इस ह़दीस का मक़्सूद येह है कि इन्हें सीना, पिरोना, वग़ैरा ख़ानगी उमूर सिखाओ) और इन्हें "**सू-रतुन्नूर**" की ता'लीम दो। (اَلْمُسْتَدْرَك ج ٣ ص ١٥٨ حديث ٣٥٤٦) मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने **सू-रतुन्नूर** को मौसिमे ह़ज में मिम्बर पर तिलावत फ़रमाया और इस की ऐसे नफ़ीस पैराए में तशरीह़ फ़रमाई कि अगर रूमी उसे सुन लेते तो मुसल्मान हो जाते। (تفسيرِ مدارك ص٧٩٣)

सूरए नूर अठारवें पारे में है, इस में **9 रुकूअ़** और **64 आयाते** मुबा-रका हैं। लड़कियों को इस की ज़रूर ता'लीम दी जाए बल्कि तमाम ही इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को इस का तरजमा व तफ़्सीर पढ़ना चाहिये।

सुवाल : सूरए नूर की तफ़्सीर कौन सी पढ़ें ?

जवाब : ख़ज़ाइनुल इरफ़ान या नूरुल इरफ़ान से पढ़ लीजिये।

मज़ीद मुफ़स्सल तफ़्सीर पढ़ना चाहें तो ख़लीलुल उ़-लमा हज़रते ख़लीले मिल्लत **मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान** क़ादिरी ब-रकाती मारहरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की "**सू-रतुन्नूर**" की तफ़्सीर "**चादर और चार दीवारी**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये। इस तफ़्सीर की ख़ास ख़ूबी येह है कि इस में तरजमा **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ से लिया गया है।

मैं फ़ेशन एबल थी

इस्लामी बहनो ! सुन्नतों भरी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, एक मुबल्लिग़ए दा'वते इस्लामी ने **दा'वते इस्लामी** में अपनी शुमूलिय्यत के जो अस्बाब बयान किये वोह सुनने से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, चुनान्चे **एक** इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं नित नए **फ़ेशन** के कपड़े पहना करती और **बे पर्दा** ही घर से निकल जाया करती थी। एक मर्तबा चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर आईं और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतें बताते हुए हमारे घर में सुन्नतों भरा **इज्तिमाअ़** करने की इजाज़त मांगी। हम ने ब ख़ुशी इजाज़त दी, आख़िर इज्तिमाअ़ का दिन भी आ गया, मैं ख़ुद भी उस इज्तिमाअ़ में

शरीक हुई, मुझे इस्लामी बहनों की **सादगी, हुस्ने अख़्लाक़** और म-दनी काम करने का अन्दाज़ बहुत पसन्द आया बिल खु़सूस रिक़्क़त अंगेज़ **दुआ़** से मैं बहुत **मु-तअस्सिर** हुई, ऐसी दुआ़ मैं ने पहली मर्तबा सुनी थी । यूं उस इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से मुझे गुनाहों से **तौबा** नसीब हुई और मैं **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गई । **फ़ेशन** तर्क कर के मैं ने भी सादगी अपना ली और अब ज़ैली सत़्ह़ की ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी का **म-दनी काम** कर के अपनी आखि़रत बनाने के लिये कोशां हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक-त-बतुल मदीना का जारी कर्दा एक **केसिट बयान** रोज़ाना सुनने का भी मा'मूल है । मैं **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करती हूं कि उस ने मुझे इतना प्यारा **म-दनी माह़ोल** अ़ता किया, ऐ काश ! हर इस्लामी बहन **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाए ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुस्कुरा कर बात करना सुन्नत है

इस्लामी बहनो ! मसल मश्हूर है कि ''प्यासे को कूंएं पर जाना पड़ता है'' मगर इस **म-दनी बहार** में येह कमाल

मौजूद है कि कूंआं खु़द चल कर प्यासी के घर आ पहुंचा ! या'नी इस्लामी बहनों ने खु़द आ कर उस मोडर्न इस्लामी बहन के घर में सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ किया जो कि उस की तक़्दीर संवरने और उस पर म-दनी रंग चढ़ने का सबब बन गया ! वाक़ेई घर जा जा कर, खु़श खु़ल्क़ी के साथ **मुस्कुरा** कर म-दनी फूल लुटाना बहुत सों की बिगड़ियां बना देता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुस्कुरा** कर गुफ़्त-गू करना **सुन्नत** है। अगर कोई यूं ही बतौ़रे आ़दत मुस्कुरा कर बात करे तो उसे अदाए सुन्नत का सवाब नहीं मिलेगा, बात करते वक़्त दिल में **येह निय्यत करनी होगी कि मैं अदाए सुन्नत के लिये मुस्कुरा कर बात करूंगा** (या करूंगी)। काश ! हमें अदाए सुन्नत की निय्यत से मुस्कुरा कर बात करने की आ़दत नसीब हो जाए। इस ज़िम्न में एक **म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **मु-तअ़ल्लिक़** फ़रमाती हैं कि वोह हर बात **मुस्कुरा** कर किया करते, जब मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया, **"मैं ने नबिय्ये अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **को देखा कि आप दौराने गुफ़्त-गू मुस्कुराते रहते थे।"** (مکارم الاخلاق للطبرانی رقم۲۱)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

क्या आज कल पर्दा ज़रूरी नहीं ?

सुवाल : "आज कल पर्दा ज़रूरी नहीं" ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब : इस त़रह़ कहना इन्तिहाई ह़माक़त व जहालत और निहायत ही सख़्त बात है। इस क़िस्म के कलिमात से मुत़्लक़न पर्दे की फ़र्ज़िय्यत के इन्कार का इज़्हार होता है और **सिरे से पर्दे की फ़र्ज़िय्यत ही का इन्कार कुफ़्र है**, अलबत्ता अगर कोई पर्दे की फ़र्ज़िय्यत का क़ाइल है मगर पर्दे की किसी ख़ास नोइय्यत (या'नी मख़्सूस त़र्ज़) का इन्कार करता है जिस का तअ़ल्लुक़ ज़रूरिय्याते दीन से नहीं तो फिर हुक्मे कुफ़्र नहीं।

आप तो घर के आदमी हैं !

सुवाल : इस त़रह़ कहना कैसा, कि "पीर से क्या पर्दा ! पीर साहि़ब से भी भला कोई पर्दा होता है !" या ना मह़रम रिश्तेदारों, पड़ोसियों या घर में आने जाने वाले मख़्सूस लोगों के **मु-तअ़ल्लिक़** इस त़रह़ कह देना कि, "आप तो घर के आदमी हैं आप से क्या पर्दा करना !"

जवाब : येह भी सरासर ह़माक़त व जहालत है इस त़रह़ की बातें कहने वाले तौबा करें। ना मह़रम पीर साहि़ब से और हर अजनबी रिश्तेदार, दोस्तदार और अहले जवार (या'नी पड़ोसियों) से पर्दा है।

मर्द के हाथ से चूड़ियां पहनना

सुवाल : औ़रत अजनबी मनिहार (या'नी चूड़ियां बेचने वाले) के हाथों में अपना हाथ दे कर उस से चूड़ियां पहन सकती है या नहीं ?

जवाब : ऐसा करने वाली औ़रत गुनहगार और जहन्नम की सज़ावार है। अगर शोहर व मह़ारिम ग़ैरत न खाएं और बा वुजूदे कुदरत न रोकें तो वोह भी "दय्यूस" और जहन्नम के ह़क़दार हैं। अगर शोहर अपनी ज़ौजा को इस ह़ाल में देख ले कि किसी ग़ैर मर्द ने उस का हाथ पकड़ा हुवा है तो मरने मारने के लिये तय्यार हो जाए मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! येही बीवी जब **चूड़ियां** पहनने के लिये ग़ैर मर्द के हाथों में हाथ दे देती है तो शोहर का ख़ून बिल्कुल भी जोश नहीं मारता ! मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से जब मनिहार के हाथों **चूड़ियां** पहनने के बारे में हुक्मे शर-ई दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया **: ह़राम ह़राम ह़राम** है, हाथ दिखाना ग़ैर **मर्द को ह़राम** है, उस के हाथ में हाथ देना **ह़राम** है जो मर्द अपनी औ़रतों के साथ इसे रवा रखते हैं वोह **दय्यूस** हैं।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 247)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

पर्दा करने में मुआ़-शरे से डर लगता है

सुवाल : लोग कहते हैं : जवान बेटी को पर्दा करवाते हुए इस मुआ़-शरे से डर लगता है, रिश्तेदार त़रह़ त़रह़ की बातें बनाते हैं !

जवाब : मुसल्मान को मुआ़-शरे से नहीं **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला से डरना चाहिये। कुरआने पाक के पहले पारे **सू-रतुल ब-क़रह** की चालीसवीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ख़ास मेरा ही डर रखो।

जो कोई ह़क़ीक़ी मा'नों में **अल्लाह** तआ़ला से डरता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ग़ैब से मदद फ़रमाता और लोगों के दिलों में उस की हैबत डाल देता है।

ह़िकायत : एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को **काफ़िरों** ने घेर लिया और तलवारें सौंत कर **शहीद** करने लपके मगर सब का तलवार वाला हाथ शल (या'नी सुन) हो गया और वार न कर सके। येह देख कर वोह बुज़ुर्ग अश्कबार हो गए। कुफ़्फ़ार ने **मु-तअ़ज्जिब** हो कर कहा : येह रोना कैसा ! आप को तो ख़ुश होना चाहिये कि जान बच गई। फ़रमाया : मुझे इस बात ने रुला दिया कि मैं **शहादत** की सआ़दत से मह़रूम हो गया !

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अगर तुम लोग मुझे क़त्ल कर देते तो मेरी ईद हो जाती कि रह़मते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का ह़क़दार बन जाता। येह ईमान अफ़रोज़ जवाब सुन कर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सारे कुफ़्फ़ार मुसल्मान हो गए। **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी से न डरने वाले उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन के मफ़्लूज बाज़ूओं पर अपना मुबारक हाथ फैरा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब के हाथ दुरुस्त फ़रमा दिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

निकल जाए दिल से मेरे ख़ौफ़े दुन्या तुझी से डरूं मैं सदा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही

क्या घर में मय्यित हो जाए तब भी पर्दा ज़रूरी है ?

सुवाल : अगर घर में मय्यित हो जाए और ता'ज़ियत के लिये लोगों की आ-मदो रफ़्त हो, क्या ऐसी इमरजन्सी में भी पर्दे का ख़याल रखना ज़रूरी है ?

जवाब : ऐसे मौक़अ़ पर तो अपनी मौत ज़ियादा याद आनी चाहिये। जब मौत ज़ियादा याद आए तो गुनाहों से बचने का ज़ेह्न भी ज़ियादा बनता है। चूंकि बे पर्दगी भी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है इस लिये ऐसे मौक़अ़ पर

ग़ैरत मन्द और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वालियों का पर्दा ज़ियादा सख़्त हो जाता है। चुनान्चे

बेटा खोया है ह़या नहीं खोई

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बेटा जंग में शहीद हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये चेहरे पर निक़ाब डाले बा पर्दा बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुई, इस पर किसी ने ह़ैरत से कहा **:** इस वक़्त भी आप ने मुंह पर निक़ाब डाल रखा है ! कहने लगीं **: "मैं ने बेटा ज़रूर खोया है, ह़या नहीं खोई।"** (سُنَنُ اَبی دَاوٗد ج۳ ص۹ حدیث ۲۴۸۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

देखा आप ने ! बेटा शहीद हो जाने के बा वुजूद सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने "पर्दा" बर क़रार रखा। ह़क़ बात येह है कि दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल करने का जज़्बा हो तो मुश्किल से मुश्किल काम भी आसान हो जाता है और जो नफ़्स की ह़ीला साज़ियों में आ जाए उस के लिये आसान से आसान काम भी मुश्किल हो कर रह जाता है। यक़ीनन **अल्लाहु** तव्वाब عَزَّوَجَلَّ के

अ़ज़ाब से डर कर थोड़ी बहुत तक्लीफ़ उठा कर पर्दे की पाबन्दी कर ली जाए तो येह कोई बहुत ज़ियादा मुश्किल काम नहीं। वरना अ़ज़ाबे जहन्नम की तक्लीफ़ हरगिज़ सही नहीं जाएगी। अगर कोई हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर अ़मल करने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर ले तो बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये आसानी फ़राहम कर देता है।

बेटी के गले का दर्द दूर हो गया

इस्लामी बहनो ! अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल करने का जज़्बा पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़शिक़ाओं के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है। अगर सफ़र की सच्ची निय्यत कर ली जाए और किसी वजह से सफ़र नसीब न हो तब भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार है। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत करने वाली एक ख़ुश नसीब की ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत सुनिये और झूमिये, चुनान्चे बाबुल इस्लाम (सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मेरी बेटी **गले के दर्द** में मुब्तला थी, काफ़ी इलाज करवाया मगर आराम नहीं आया। मैं ने इस्लामी बहनों

के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर ली। मेरा हुस्ने ज़न है कि उस निय्यत की ब-र-कत से मेरी बेटी को **सिह़्ह़त** मिल गई। फिर मैं ने अपनी निय्यत के मुत़ाबिक़ इस्लामी बहनों के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र भी किया।

फ़ज़्ल की बारिशें रह़मतें ने'मतें गर तुम्हें चाहिएं क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां होंगी बस चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैर मह़रमा से ता'ज़ियत कर सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : अगर किसी ग़ैर मह़रमा का अ़ज़ीज़ फ़ौत हो जाए तो ग़ैर मह़रम ता'ज़ियत करे या नहीं ?

जवाब : नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : औ़रत को उस के मह़ारिम ही ता'ज़ियत करें।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 201, मक-त-बतुल मदीना)

ग़ैर मह़रम की इयादत करना कैसा ?

सुवाल : क्या ग़ैर मह़रम और ग़ैर मह़रमा बीमारी में एक दूसरे की इयादत भी न करें ?

जवाब : जी नहीं। इस त़रह़ एक दूसरे की त़रफ़ रग़बत बढ़ने का सख़्त अन्देशा है जो कि तबाह कुन है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

ज़चगी के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल व जवाब

सुवाल : क्या मर्द से ज़चगी करवाई जा सकती है ?

जवाब : शोहर के इलावा कोई भी मर्द ज़चगी न करवाए क्यूं कि इस काम में सख़्त बे पर्दगी होती है। अगर मुम्किन हो तो घर ही पर मुसल्मान दाई **(MIDWIFE)** की ख़िदमात ह़ासिल की जाएं। वरना ऐसे अस्पताल में तरकीब बनाई जाए जहां सिर्फ़ मुसल्मान ख़्वातीन ही येह ख़िदमात अन्जाम देती हों। अस्पताल में नाम का इन्दिराज करवाने से पहले मा'लूमात कर लेनी ज़रूरी हैं वरना अक्सर मर्द डॉक्टर और बिल खुसूस गवर्नमेन्ट के अस्पतालों में मेडीकल स्टूडन्ट्स भी वज़्ए ह़म्ल **(DELIVERY)** के काम में ह़िस्सा लेते हैं। याद रहे ! काफ़िरा औ़रत से मुसल्मान औ़रत का ऐसा ही पर्दा है जैसा ग़ैर मर्द से।

काफ़िरा दाई से ज़चगी करवाने का मस्अला

सुवाल : कुफ़्फ़ार के अक्सरिय्यती मुल्क में अक्सर दाइयां काफ़िरा होती हैं, ऐसी सूरत में ज़चगी के मुआ़-मलात में सख़्त ह़रज का सामना है। रहनुमाई फ़रमा कर इन्दल्लाह माजूर और इन्दन्नास मश्कूर हों।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

जवाब : मुसल्मान औ़रत के लिये ह़लाल नहीं कि **काफ़िरा औ़रत** के सामने सित्र खोले। इस से इज्तिनाब (बचना) लाज़िम है। जब तक **मुसल्मान दाई** मिल सकती हो और वोह दुरुस्त काम सर अन्जाम दे सकती हो तो काफ़िरा से हरगिज़ येह काम न करवाया जाए। हां अगर मजबूरी हो और मुसल्मान दाई न मिल सके जैसा कि सुवाल में ज़िक्र है तो ऐसी सख़्त मजबूरी में **काफ़िरा दाई** से ज़चगी करवाने में मुज़ा-यक़ा नहीं।

सुवाल : भाभी की ज़चगी के मौक़अ़ पर देवर या जेठ देखने, बच्चे की मुबारक बाद देने जाए या नहीं।

जवाब : भाभी और किसी भी ग़ैर मह़रमा को देखने और मुबारक बाद देने के लिये जाना सख़्त फ़ितनों का दरवाज़ा खोलना है।

क्या दिल का पर्दा काफ़ी है ?

सुवाल : बा'ज़ बे पर्दा औ़रतें कहती हैं, "फ़क़त़ दिल का पर्दा होना चाहिये" इस की क्या ह़क़ीक़त है ?

जवाब : येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है और इस **क़ौले** बदतर अज़ **बौल** में उन कुरआनी आयाते मुबा-रका के इन्कार का पहलू है जिन में ज़ाहिरी जिस्म को पर्दे में छुपाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

का हुक्म दिया गया है, म-सलन पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** आयत नम्बर 33 में फ़रमाया गया, **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी । इसी सूरत की आयत नम्बर 59 में है **: तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ नबी ! अपनी बीबियों और साहि़ब ज़ादियों और मुसल्मानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हि़स्सा अपने मुंह पर डाले रहें اِلٰخ । **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 31 में है **: तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपना बनाव न दिखाएं اِلٰخ । **जो जिस्म के पर्दे का मुत़्लक़न इन्कार करे और कहे कि ''सिर्फ़ दिल का पर्दा होना चाहिये'' उस का ईमान जाता रहा ।** मगर ऐसा कहने के बा वुजूद येह औ़रत (मुरतद्दा हो जाने के बा वुजूद) निकाह़ से न निकली, और न उसे रवा (या'नी जाइज़) है कि बा'दे इस्लाम किसी दूसरे से निकाह़ कर ले, हां (चूंकि वोह अपने इरतिदाद के सबब अपने शोहर पर ह़राम हो चुकी है लिहाज़ा) बा'दे (क़बूले) इस्लाम, साबिक़ा शोहर ही से तज्दीदे निकाह़ पर मजबूर की जाएगी । और मुरीद होना चाहे तो किसी भी जामेए़ शराइत़ पीर से बैअ़त हो जाए ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

अलबत्ता अगर कोई पर्दे की फ़र्ज़िय्यत का क़ाइल है मगर पर्दे की किसी ख़ास नौइय्यत (या'नी मख़्सूस त़र्ज़) का इन्कार करता है जिस का तअ़ल्लुक़ ज़रूरिय्याते दीन से नहीं तो फिर हुक्मे कुफ़्र नहीं।

कुफ़्र से तौबा नीज़ तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का त़रीक़ा मक-त-बतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा 16 सफ़ह़ात के मुख़्तसर रिसाले **"28 कलिमाते कुफ़्र"** से देख लीजिये। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़क़ीक़त तो येह है कि "ज़ाहिर" दिल का नुमायन्दा है, दिल अच्छा होगा तो इस का असर ख़ारिज में भी ज़ाहिर होगा लिहाज़ा पर्दा वोही करेगी जिस का दिल अच्छा और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इताअ़त की त़रफ़ माइल होगा चुनान्चे **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** येह ख़याल कि बातिन (या'नी दिल) साफ़ होना चाहिये ज़ाहिर कैसा ही हो, मह़ज़ बात़िल है। ह़दीस में फ़रमाया कि **इस का दिल ठीक होता तो ज़ाहिर आप (या'नी ख़ुद ही) ठीक हो जाता।**

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 605)

ज़ेह्नी मरीज़ तन्दुरुस्त हो गया

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कतों के क्या कहने ! इन ब-र-कतों को लूटने की आ़दत बनाने के लिये आप भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप के मसाइल ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर ह़ल होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ग़ैबी इमदादें होंगी, चुनान्चे **कहरोड़ पक्का** (पंजाब, पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि मेरे छोटे भाई घरेलू ना चाक़ियों, तंगदस्तियों वग़ैरा परेशानियों के सबब मुसल्सल टेन्शन (या'नी ज़ेह्नी दबाव) में मुब्तला रहने की वज्ह से रफ़्ता रफ़्ता ज़ेह्नी मरीज़ बन गए थे और ऊल फ़ूल बकते रहते थे, यहां तक कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपने हाथों अपनी जान लेने या'नी **ख़ुदकुशी** के बारे में सोचने लगे थे। मुझे उन की ह़ालत पर बड़ा तर्स आता मगर मैं एक बेबस औ़रत क्या कर सकती थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं पहले ही दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत करती थी, वहां मैं ने भाईजान की सिह़्ह़त याबी के लिये गिड़गिड़ा कर **दुआ़** मांगनी शुरूअ़ कर दी। कुछ ही अ़र्सा गुज़रा था कि मेरे भाई को

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाहु** शाफ़ी عَزَّوَجَلَّ ने शिफ़ा अ़ता फ़रमा दी। अब वोह अम्मी और अब्बू की इ़ज़्ज़त और उन का एह़तिराम करने के बाइ़स उन की आंखों के **तारे** बन चुके हैं।

ऐ रज़ा हर काम का इक वक़्त है

दिल को भी आराम हो ही जाएगा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की कैसी **ब-र-कत** है। येह बात हमेशा याद रखिये कि इज्तिमाअ़ की ह़ाज़िरी में सिर्फ़ दुन्यावी मसाइल के ह़ल ही की निय्यत न की जाए। त़-लबे इ़ल्म और सवाबे आख़िरत कमाने की भी **निय्यतें** ज़रूर करनी चाहिएं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के शर-ई पर्दे के साथ पाकिस्तान के बे शुमार शहरों और दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में **मु-तअ़द्दिद** मक़ामात पर हफ़्तावार **सुन्नतों** भरे इज्तिमाआ़त होते हैं, हर इस्लामी बहन को चाहिये कि **दा 'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में न सिर्फ़ ख़ुद शिर्कत करे बल्कि दीगर इस्लामी बहनों से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात कर के ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** करे और उन को इज्तिमाअ़ की शिर्कत की दा'वत देती रहे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

म-दनी फूल : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर नेकी स-दक़ा है और तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से मिलना भी नेकी है और अपने डोल से अपने भाई के बरतन में पानी डालना भी नेकी है।"

(مسند احمد بن حنبل ج۵ ص ۱۱۱ حدیث ۱۴۷۱۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पर्दा करने में झिजक होती हो तो......

सुवाल : माह़ोल बहुत एडवान्स और फ़ेशन परस्ती आ़म है, शर-ई पर्दा करते हुए झिजक मह़सूस होती है क्या किया जाए ?

जवाब : शर-ई पर्दा तर्क न किया जाए कि येह अ़ज़ीम नेकी है और बे पर्दगी सख़्त गुनाह। पर्दा करने में जितनी तक्लीफ़ ज़ियादा होगी उतना ही सवाब भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा मिलेगा। मन्क़ूल है : اَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ اَحْمَزُھا या'नी "अफ़्ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत ज़ियादा हो।" (کَشْفُ الْخِفاء ج ۱ص ۱۴۱) इमाम श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इबादत में मशक़्क़त और ख़र्च

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

ज़ियादा होने से सवाब और फ़ज़ीलत भी ज़ियादा हो जाती है। (شرح صحیح مسلم للنووی ج۱ص ۳۹۰) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : अफ़्ज़ल तरीन अ़मल वोह है जिस के लिये नफ़्सों को मजबूर होना पड़े। (اِتحاف السّادۃ للزّبیدی ج ۱۱ ص ۱۰) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "जो अ़मल दुन्या में जिस क़दर दुश्वार होगा बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में उसी क़दर वज़्न दार होगा।" (تذکرۃ الاولیاء ص ۹۵ ملخصاً) हां अगर किसी के अपने ही दिल में खोट हो तो क्या कह सकते हैं! **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان **नूरुल इरफ़ान सफ़ह़ा** 318 पर फ़रमाते हैं : "जिस को गुनाह आसान मा'लूम हों और नेक काम भारी, समझो उस के दिल में निफ़ाक़ है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मह़फ़ूज़ रखे।"

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बीबी फ़ातिमा के कफ़न का भी पर्दा !

सुवाल : कहते हैं, बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को उन के **कफ़न** पर किसी ग़ैर मर्द की नज़र पड़ना भी पसन्द नहीं था !

जवाब : बेशक। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, हज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا पर **ग़मे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم **का इस क़दर ग़-लबा हुवा कि आप के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई !** अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक ही बार मुस्कुराती देखी गई। इस का वाक़िआ कुछ यूं है : हज़रते सय्यि-दतुना **ख़ातूने जन्नत** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا को येह तश्वीश थी कि उम्र भर तो ग़ैर मर्दों की नज़रों से ख़ुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी **कफ़न पोश लाश** ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़ पर हज़रते सय्यि-दतुना **अस्मा बिन्ते उमैस** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا ने कहा : मैं ने हब्शा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़्त की शाख़ें बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं। फिर उन्हों ने खजूर की शाख़ें मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर **सय्यिदह ख़ातूने जन्नत** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہَا को दिखाया। आप बहुत ख़ुश हुई और लबों पर मुस्कुराहट आ गई। बस येही एक मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द देखी गई। (जज़्बुल क़ुलूब मुतर्जम, स. 231)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सय्यिदह ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पर्दे की भी क्या बात है ! किसी ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

چو زہرا باش از مخلوق رو پوش

کہ در آغوش شبیرے بہ بینی

(या'नी ह़ज़रत फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रह़ परहेज़ गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में ह़ज़रते सय्यिदुना शब्बीरे नामदार इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसी औलाद देखो)

बीबी फ़ात़िमा का पुल सिरात़ पर भी पर्दा

सुवाल : क्या अहले मह़शर भी **सय्यिदह ख़ातूने जन्नत** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पुल सिरात़ से गुज़रते नहीं देख सकेंगे ?

जवाब : ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत की है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम, नबिय्ये मोह़्तरम, मह़बूबे रब्बे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा। ऐ अहले मज्मअ़ ! अपने सर झुकाओ आंखें बन्द कर लो, ताकि ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **सिरात़ से गुज़रें।**

(اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص۵۷ حدیث ۸۲۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

मिलन-सारी की ब-र-कतें

हमारी इस्लामी बहनों को भी ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरते मुबा-रका से दर्स ह़ासिल करना चाहिये । इस्लामी बहनें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएंगी और अपने यहां होने वाले हफ़्तावार **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती रहेंगी और **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कर के फ़िक्रे मदीना करते हुए रोज़ाना रिसाला पुर कर के अपनी ज़िम्मादार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाती रहेंगी तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार होगा । आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक बहार गोश गुज़ार है, चुनान्चे **एक** इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं नमाज़ों के मुआ़-मले में ग़फ़्लत का शिकार और अग़्यार के फ़ेशन पर निसार थी । फ़िल्में डिरामे बड़े शौक़ से देखा करती थी । एक मर्तबा मैं किसी की दा'वत पर **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** की आख़िरी निशस्त में अपनी एक सहेली के साथ शरीक हुई । वहां दो इस्लामी बहनों ने बिग़ैर किसी जान पहचान के हमारा काफ़ी **ख़याल** रखा, हमें बड़ी **अपनाइय्यत**

से अपने ह़ल्क़े में बिठाया । हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से वोह हमारे अ़लाक़े ही की निकलीं उन्हों ने हमें बुध के रोज़ होने वाले इस्लामी बहनों के अ़लाक़ाई **इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत भी दी मगर हम ने कोई ख़ास तवज्जोह नहीं दी । इस के बा वुजूद भी वोह हमारे घर इज्तिमाअ़ की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ ले आईं । अब मेरा दिल कुछ पसीजा और मुरव्वत में उन का मान रखते हुए हामी भर ली और सोचा चलो एक अ़लाक़ाई इज्तिमाअ़ में तो शिर्कत कर ही लूं बा'द में नहीं जाऊंगी । मगर दा'वते इस्लामी वाली दीवानियां मरह़बा ! उन्हों ने अपना दिल न तोड़ा, मेरी आख़िरत की भलाई की ख़ातिर मेरा पीछा न छोड़ा, शफ़्क़त व मह़ब्बत का सिल्सिला बराबर जारी रखा और ख़ूब **मिलन-सारी** के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करती रहीं । बिल आख़िर उन के हुस्ने अख़्लाक़ ने मेरे पथ्थर से भी सख़्त दिल को मोम बना ही दिया और मैं रफ़्ता रफ़्ता **म-दनी माह़ोल** में रच बस गई ।

अ़ली के वासित़े सूरज को फैरने वाले
इशारा कर दो कि मेरा भी काम हो जाए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

औ़रात की मज़ारात पर ह़ाज़िरी

सुवाल : इस्लामी बहनें क़ब्रिस्तान या मज़ाराते औलिया पर जा सकती हैं या नहीं ?

जवाब : औ़रतों के लिये बा'ज़ उ़-लमा ने ज़ियारते क़ुबूर को जाइज़ बताया, "दुर्रे मुख़्तार" में येही क़ौल इख़्तियार किया, मगर अ़ज़ीज़ों की क़ुबूर पर जाएंगी तो जज़अ़ व फ़ज़अ़ (या'नी रोना पीटना) करेंगी लिहाज़ा मम्नूअ़ है और सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين) की क़ुबूर पर ब-र-कत के लिये जाएं तो बूढ़ियों के लिये ह़रज नहीं और जवानों के लिये मम्नूअ़ । (رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۱۷۸) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : और अस्लम (या'नी सलामती का रास्ता) येह है कि औ़रतें मुत़्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़अ़ व फ़ज़अ़ (या'नी रोना पीटना) है और सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين) की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अ-दबी करेंगी तो औ़रतों में येह दोनों बातें कसरत से पाई जाती हैं ।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 849, मक-त-बतुल मदीना)

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने औ़रतों को मज़ारात पर जाने की जा ब जा मुमा-न-अ़त फ़रमाई । चुनान्चे एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : इमाम क़ाज़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस्तिफ़्ता (सुवाल) हुवा कि औ़रतों का मक़ाबिर को जाना जाइज़ है या नहीं ? फ़रमाया : ऐसी जगह जवाज़ व अ़-दमे जवाज़ (या'नी जाइज़ व ना जाइज़ का) नहीं पूछते, येह पूछो कि इस में औ़रत पर कितनी ला'नत पड़ती है ? जब घर से क़ुबूर की त़रफ़ चलने का इरादा करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों की ला'नत होती है जब घर से बाहर निकलती है सब त़रफ़ों से शैत़ान उसे घेर लेते हैं, जब क़ब्र तक पहुंचती है मय्यित की रूह़ उस पर ला'नत करती है जब तक वापस आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत में होती है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 557)

औ़रत जन्नतुल बक़ीअ़ में ह़ाज़िरी दे या नहीं ?

सुवाल : ह़ाज़िरिये मदीना के मौक़अ़ पर इस्लामी बहन जन्नतुल बक़ीअ़ और शु-हदाए उहुद رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दे सकती है या नहीं ?

जवाब : नहीं दे सकती ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

सुवाल : क्या इन मज़ारात पर बाहर से भी सलाम नहीं अ़र्ज़ कर सकती ?

जवाब : इस्लामी बहन पैदल या सुवारी पर किसी काम से निकली हो ह़ाज़िरी की निय्यत ही न हो और अब इत्तिफ़ाक़न जन्नतुल बक़ीअ़, जन्नतुल मअ़ला या मुसल्मानों के किसी भी क़ब्रिस्तान या किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ के क़रीब से गुज़र हुवा और बिग़ैर रुके दूर ही से सलाम अ़र्ज़ कर दिया तो ह़रज नहीं।

औ़रत की रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी

सुवाल : इस्लामी बहन मह़बूबे रब्बे अक्बर, मदीने के ताजवर, शहन्शाहे बह़रो बर, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **रौज़ए मुनव्वर** पर ह़ाज़िरी के लिये जा सकती है या नहीं ?

जवाब : सिवाए रौज़ए अन्वर के किसी और मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं। वहां की ह़ाज़िरी अलबत्ता सुन्नते जलीला अ़ज़ीमा क़रीब ब वाजिब (या'नी वाजिब के क़रीब) है और क़ुरआने अ़ज़ीम ने इसे गुनाहों की मुआ़फ़ी का अ़ज़ीम ज़रीआ़ बताया। पारह 5 **सू-रतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 64 में इर्शाद होता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾

(پ ٥ النساء ٦٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

ख़ुद ह़दीसे पाक में इर्शाद हुवा : "जो मेरी क़ब्र की ज़ियारत करे उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब।" (دارقطنی ج۲ص۳۵۱حدیث۲۶۶۹) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने **ह़ज** किया और **मेरी ज़ियारत** न की उस ने मुझ पर जफ़ा की। (الکامل فی ضعفاء الرجال ج۸ص۲۴۸)

बेशक ह़ाज़िरिये बारगाहे अक़्दस वाजिब के क़रीब है, इस में क़बूले तौबा, और दौलते शफ़ाअत ह़ासिल होना भी है नीज़ इस में सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ مَعَاذَاللہ जफ़ा (या'नी ज़ुल्म) से बचना भी है। येह अ़ज़ीम अहम उमूर ऐसे हैं जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सारे गुलामों और सारी कनीज़ों पर **ख़ाक बोसिये आस्ताने अ़र्श**

निशान लाज़िम कर दी ब ख़िलाफ़ दीगर क़ुबूर व मज़ारात, कि वहां ऐसी ताकीदें नहीं और फ़साद के एह़तिमालात (इम्कानात) मौजूद कि अगर अ़ज़ीज़ों की क़ब्रें हैं तो औ़रतें बे सब्री करेंगी और औलिया के मज़ार पर या तो बे तमीज़ी या बे अ-दबी करेंगी या जहालत से ता'ज़ीम में ज़ियादती जैसा कि मा'लूम व मुशाहद (या'नी देखीभाली बात) है, लिहाज़ा उन के लिये सलामती वाला त़रीक़ा येही है कि वोह मज़ाराते औलिया व क़ुबूर की ज़ियारत से बचें। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "क़ुबूरे अक़्रिबा पर ख़ुसूसन बह़ाले क़ुर्बे अ़हदे ममात (या'नी ख़ुसूसन इस सूरत में कि जब उस अ़ज़ीज़ के इन्तिक़ाल को ज़ियादा अ़र्सा न गुज़रा हो) तजदीदे ह़ुज़्न लाज़िमे निसा (या'नी औ़रतों का अज़ सरे नौ ग़म ताज़ा होना लाज़िम) है और मज़ाराते औलियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) पर ह़ाज़िरी में **इह़दश्शना-अ़तैन** (या'नी दो में से एक बुराई) का अन्देशा या तर्के अदब या अदब में इफ़राते़ ना जाइज़ (या'नी अदब में ना जाइज़ ह़द तक बढ़ जाना) तो सबीले इत़्लाक़ मन्अ़ है लिहाज़ा "**ग़ुन्या**" में कराहत पर जज़्म फ़रमाया, अलबत्ता ह़ाज़िरी व ख़ाक बोसिये आस्ताने अ़र्श निशाने सरकारे आ'ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आ'ज़मुल मन्दूबात (अ़ज़ीम तरीन मुस्तह़ब) बल्कि क़रीबे वाजिबात है इस से न रोकेंगे और ता'दीले अदब (या'नी आदाब की दुरुस्ती) सिखाएंगे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 538)

औ़रत मदीने में ज़ियारतें कर सकती हैं या नहीं

सुवाल : ह़ाज़िरिये ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के दौरान इस्लामी बहन विलादत गाह शरीफ़, ग़ारे ह़िरा, ग़ारे सौर, ज-बले उहुद शरीफ़ वग़ैरा की ज़ियारतों के लिये जा सकती है या नहीं ?

जवाब : मर्दों के इख़्तिलात़ से बचते हुए पर्दे की तमाम तर कुयूदात के साथ ज़ियारतें कर सकती है। बेहतर येही है कि घर पर रह कर इ़बादत बजा लाए क्यूं कि बिल खुसूस ह़ज के मौसिमे बहार में मर्दों के इख़्तिलात़ से बचना काफ़ी दुश्वार होता है। अगर जाए भी तो गाड़ी में बैठे बैठे दूर ही से ज़ियारत कर लेना अन्सब (या'नी मुनासिब तर) है।

औ़रत मस्जिदे न-बवी में ए'तिकाफ़ करे या न करे ?

सुवाल : ह़-रमैने त़य्यिबैन की मस्जिदैने करीमैन में ख़्वातीन के लिये मख़्सूस कर्दा ह़िस्से में इस्लामी बहन आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर सकती है या नहीं ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

जवाब : नहीं कर सकती।

सुवाल : तो क्या किराए पर ली हुई क़ियाम गाह में इस्लामी बहन ए'तिकाफ़ कर ले ?

जवाब : किराए के मकान में नमाज़ के लिये किसी ह़िस्से को मख़्सूस करने की निय्यत कर ले। येह जगह अब उस के लिये "मस्जिदे बैत" हो गई, वहां ए'तिकाफ़ कर सकती है।

सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के पर्दे की कैफ़िय्यात

सुवाल : सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के पर्दे की कैफ़िय्यात पर चन्द अह़ादीसे त़य्यिबात भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के ह़वाले से पर्दे के **मु-तअ़ल्लिक़** 9 रिवायात मुला-ह़ज़ा हों :

﴾1﴿ ह़ालते एह़राम में भी चेहरे का पर्दा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रिवायत फ़रमाती हैं : हम रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़रे ह़ज में ह़ालते एह़राम में थीं, जब हमारे पास से कोई सुवार गुज़रता तो हम अपनी चादरों को अपने सरों से लटका कर चेहरे के सामने कर लेतीं और जब लोग गुज़र जाते तो हम चेहरे खोल लेतीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

(اَبُو دَاوٗد ج۲ ص۲٤۱ حدیث ۱۸۳۳) देखा आप ने ! एह़राम की ह़ालत कि जिस में चेहरे से कपड़ा मस (TOUCH) करना मन्अ़ है, इस ह़ालत में भी सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ अपने चेहरे को ग़ैर मर्दों से छुपाने का एहतिमाम फ़रमाती थीं । याद रखिये ! एह़राम में चेहरे पर कपड़ा मस करना ह़राम है लिहाज़ा वोह इस एह़तियात़ के साथ चेहरा छुपाती थीं कि कपड़ा चेहरे से मस न हो । इस मक़ाम पर येह बात भी याद रखने की है कि सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ आ़म ह़ालात में भी अपने चेहरे को छुपातीं और सख़्त पर्दा करती थीं जभी तो ह़दीसे पाक में ह़ालते एह़राम में चेहरा न छुपाने का हुक्म दिया गया चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''وَلَا تَنْتَقِبِ الْمَرْأَۃُ الْمُحْرِمَۃُ وَلَا تَلْبَسِ الْقُفَّازَیْنِ'' ह़ालते एह़राम में कोई औ़रत न चेहरे पर निक़ाब ले और न ही दस्ताने पहने । (بُخارِی ج ۱ ص۶۰۷ حدیث۱۸۳۸)

﴾2﴿ अन्सारिय्यात की सियाह चादरें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रिवायत फ़रमाती हैं : जब कु़रआने मजीद की येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें) तो अन्सार की ख़वातीन अपने घरों से निकलते वक़्त सियाह चादर से खुद को छुपा कर निकलतीं, उन को देख कर दूर से लगता था कि गोया उन के सरों पर कव्वे बैठे हैं।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٨٤ حدیث ٤١٠١)

﴾3﴿ तहबन्द फाड़ कर दुपट्टे बना लिये

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : जब येह आयते करीमा وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह दुपट्टे अपने गिरीबानों पर डाले रहें) नाज़िल हुई तो औ़रतों ने अपनी तहबन्द की चादरों को किनारों से पारा पारा किया और उन से अपने चेहरे ढांपे। (بُخارِی ج ٣ ص ٢٩٠ حدیث ٤٧٥٩)

﴾4﴿ पर्दे की एह़तियात़ ! سُبْحٰنَ الله !!

अबुल क़ुऐ़स की ज़ौजा ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا को बचपन में दूध पिलाया था लिहाज़ा **अबुल क़ुऐ़स** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के रज़ा-ई वालिद और **अबुल क़ुऐ़स** के भाई अफ़्लह़ ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا के रज़ा-ई चचा हुए। जब पर्दे से **मु-तअ़ल्लिक़** आयाते मुक़द्दसा नाज़िल हुईं तो अफ़्लह़ ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا के पास आना चाहा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا ने पर्दे की एह़तियात़ के पेशे नज़र मन्अ़ फ़रमा दिया चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि पहले मैं सरकारे **मदीनए मुनव्वरह**, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त कर लूं कि दूध के रिश्ते की वजह से अफ़्लह़ का मुझ से पर्दा है या नहीं क्यूं कि मैं येह समझती हूं कि दूध तो मैं ने **अबुल क़ुऐ़स** की ज़ौजा का पिया है, अफ़्लह़ से क्या रिश्तेदारी ? इस पर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! अफ़्लह़ को इजाज़त दे दो वोह तुम्हारे रज़ा-ई चचा हैं।

(ایضا ص۳۰٦ حدیث٤٧٩٦)

﴾5﴿ दुपट्टे बारीक न हों

ह़ज़रते सय्यिदुना दिह़या बिन ख़लीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में एक मर्तबा मिस्र के सफ़ेद रंग के बारीक कपड़े

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

लाए गए सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन में से एक कपड़ा मुझे अ़त़ा किया और इर्शाद फ़रमाया : इस के दो टुकड़े कर के एक से अपना कुरता और दूसरा अपनी बीवी को दे देना जिस से वोह अपना दुपट्टा बना ले। रावी कहते हैं जब मैं चलने लगा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस बात की ताकीद की, कि अपनी बीवी को कहना कि इस के नीचे दूसरा कपड़ा लगा ले ताकि दुपट्टे के नीचे कुछ नज़र न आए। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٨٨ حدیث ٤١١٦)

﴾6﴿ बारीक दुपट्टा फाड़ दिया

एक मर्तबा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते सरापा ग़ैरत में उन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ाज़िर हुई उन्हों ने बारीक दुपट्टा ओढ़ रखा था, ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस दुपट्टे को फाड़ दिया और उन्हें मोटा दुपट्टा उढ़ा दिया। (مؤطا امام مالك ج٢ ص ٤١٠ حدیث١٧٣٩)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी उस दुपट्टे को फाड़ कर दो रुमाल बना दिये ताकि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ओढ़ने के क़ाबिल न रहे, रुमाल के काम आवे लिहाज़ा इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि आप ने येह माल ज़ाएअ़ क्यूं फ़रमा दिया। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह है अ़-मली तब्लीग़ और बच्चियों की सह़ीह़ तरबिय्यत व ता'लीम उस दुपट्टे से सर के बाल चमक रहे थे, सित्र ह़ासिल न था इस लिये येह अ़मल फ़रमाया। (मिरआत, जि. 6, स. 124)

﴾7﴿ अ़हदे रिसालत में ह़िजाब आज़ाद मुसल्मान औरत की अ़लामत था

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर और मदीनए मुनव्वरह (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا) के दरमियान तीन दिन क़ियाम फ़रमाया, उसी दौरान ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को अपने ह़रम में दाख़िल फ़रमाया फिर दौराने सफ़र आप ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की **दा'वते वलीमा** की उस में रोटी और गोश्त का एहतिमाम न था बल्कि आप ने दस्तर ख़्वान बिछाने का हुक्म दिया और उस पर खजूरें, पनीर और घी रखा गया। येही सब कुछ वलीमा था लेकिन ता ह़ाल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर येह वाज़ेह़ न हुवा था कि

हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ौजिय्यत में लिया है या कि बांदी बनाया है (क्यूं कि येह ख़ैबर की जंगी क़ैदियों में शामिल थीं) उन्हों ने अपनी इस उलझन को हल करने के लिये तै किया कि अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को पर्दा कराते हैं तो समझो कि ज़ौजिय्यत में लिया है और अगर हिजाब (या'नी पर्दा) न कराया तो समझो बांदी बनाया है। जब क़ाफ़िले ने कूच किया तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने पीछे हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की जगह बनाई और उन के और लोगों के दरमियान पर्दा तान दिया। (بُخارِی ج ۳ ص ۴۵۰ حدیث ۵۱۵۹)

﴾8﴿ हर ह़ाल में पर्दा

हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का बेटा जंग में शहीद हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये निक़ाब डाले बा पर्दा बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुई, इस पर किसी ने हैरत से कहा : इस वक़्त भी आप ने निक़ाब डाल रखा है ! कहने लगीं : **मैं ने बेटा ज़रूर खोया है, हया नहीं खोई।** (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۳ ص۹ حدیث ۲۴۸۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

9 बीवी घर से बाहर निकली ही क्यूं !

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सईद ख़ुदरी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक नौ जवान सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **की नई नई शादी** हुई थी। एक बार जब वोह अपने घर तशरीफ़ लाए तो देखा कि उन की दुल्हन घर के दरवाज़े पर खड़ी है, मारे जलाल के नेज़ा तान कर अपनी दुल्हन की त़रफ़ लपके। वोह घबरा कर पीछे हट गई और रो कर पुकारी : **मेरे सरताज !** मुझे मत मारिये, मैं बे क़ुसूर हूं, ज़रा घर के अन्दर चल कर देखिये कि किस चीज़ ने मुझे बाहर निकाला है! चुनान्चे वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्दर तशरीफ़ ले गए, **क्या देखते हैं कि एक ख़त़रनाक ज़हरीला सांप कुंडली मारे बिछोने पर बैठा है।** बे क़रार हो कर सांप पर वार कर के उस को नेज़े में पिरो लिया। सांप ने तड़प कर उन को डस लिया। **ज़ख़्मी सांप** तड़प तड़प कर मर गया और वोह ग़ैरत मन्द सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी सांप के ज़ह्र के असर से जामे शहादत नोश कर गए। (صَحیح مُسلِم ص۱۲۲۸ حدیث۲۳۶)

औ़रत को छेड़ा तो जंग छिड़ गई

उस पाकीज़ा दौर के मुसल्मानों की ग़ैरते ईमानी का अन्दाज़ा इस वाक़िए से भी लगाया जा सकता है जिस को अ़ल्लामा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

इब्ने हिश्शाम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **"अस्सी-रतुन-बविय्यह"** में दर्ज किया आप लिखते हैं कि अ़हदे रिसालत में मुसल्मानों की एक औ़रत चेहरे पर निक़ाब डाले हुए अपनी कुछ चीजे़ं फ़रोख़्त करने के लिये **बनी क़ैनुक़ाअ़** के बाज़ार में आई उस ने अपना सामान बेचा और एक यहूदी सुनार की दुकान पर आ कर बैठ गई यहूदी ने बातों बातों में बड़ी कोशिश की, कि वोह अपने चेहरे से निक़ाब खोल दे लेकिन उस ने इन्कार कर दिया फिर उस ने उस ख़ातून के साथ शरारत की। येह देख कर यहूदी क़ह्क़हे लगाने लगे, उस ख़ातून ने बुलन्द आवाज़ से फ़रियाद की, एक मुसल्मान उस यहूदी ज़रगर (सुनार) पर झपटा और उसे मौत के घाट उतार दिया, उस बाज़ार के यहूदी जम्अ़ हो गए और उस मुसल्मान को शहीद कर दिया और इस के नतीजे में मुसल्मानों और यहूदियों के दरमियान एक ज़बर दस्त जंग हुई जिसे तारीख़ में ग़ज़्वए **बनू क़ैनूक़ाअ़** के नाम से याद किया जाता है।

(اَلسِّيْرَةُ النَّبَوِيَّة لابن هشام ج٣ ص٤٤)

यहूदो नसारा को मग़्लूब कर दे
हो ख़त्म इन का जोरो सितम या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

औ़रत और शोपिंग सेन्टर

सुवाल : इस्लामी बहन ख़रीदारी के लिये शोपिंग सेन्टर में जा सकती है या नहीं ?

जवाब : शोपिंग सेन्टरों में आज कल अक्सर बे ह़याई से लबरेज़ गुनाहों भरा माह़ोल होता है और औ़रत सिन्फ़े नाज़ुक है इसे वहां से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं **:** "औ़रत मोम की नाक बल्कि राल की पुड़िया बल्कि बारूद की डिबिया है आग के एक अदना से लगाव में भक़ से हो जाने वाली है अ़क़्ल भी नाक़िस और त़ीनत (या'नी बुन्याद) में कजी (टेढ़ापन) और शह्वत में मर्द से सो ह़िस्सा बेशी (ज़ाइद)।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 212)

औ़रत को घर में क़ैद रखो !

इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 748 हि.) लिखते हैं मन्क़ूल है **: औ़रत पर्दे** की चीज़ है, पस इसे घर में **क़ैद** रखो। क्यूं कि औ़रत जब किसी रास्ते की त़रफ़ निकलती है तो उस के घर वाले पूछते हैं **:** कहां का इरादा है ? वोह कहती है कि मैं मरीज़ की बीमार पुर्सी के लिये जा रही हूं तो शैत़ान मुसल्सल उस के साथ

रहता है यहां तक कि वोह घर से बाहर निकल जाती है। और औ़रत को (इ़यादत वग़ैरा किसी नेक काम में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी रिज़ा ह़ासिल नहीं हो सकती जैसी वोह घर बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत (और जाइज़ काम में) **ख़ावन्द** की इत़ाअ़त कर के ह़ासिल कर सकती है। (کتاب الکبائر ص۲۰۳)

सौदा सलफ़ मर्द ही लाएं

सुवाल : आज कल उ़मूमन शोहर या मह़ारिम सौदा सलफ़ लाने में सुस्ती करते हैं लिहाज़ा अक्सर औ़रतें ही गोश्त, मछली, सब्ज़ी, कपड़े वग़ैरा ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी की अश्या ख़रीदने जाती हैं क्या येह जाइज़ है ? शोहर या मह़ारिम भी इस त़रह़ गुनहगार हो रहे हैं या नहीं ?

जवाब : अगर मर्द मह़ज़ अपनी सुस्ती की वज्ह से घर का सौदा सलफ़ नहीं लाते तो येह बहुत सख़्त बे एह़तियात़ी है कि अब इस की ज़ौजा या मह़रमा या'नी मां या बहन या बेटी ग़ैर मर्दों से ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदने के लिये घर से बाहर निकलेगी अगर्चे औ़रत के लिये फ़ी नफ़्सिही ख़रीदो फ़रोख़्त की मुमा-न-अ़त नहीं ताहम बेबाकी का दौर है और आज कल के बाज़ार का ह़ाल कौन नहीं जानता ! बा पर्दा औ़रत भी फ़ी ज़माना बाज़ार जाए और गुनाहों के बिग़ैर लौट कर आए येह

बे इन्तिहा मुश्किल अम्र है। अगर औ़रत बे पर्दगी के साथ या'नी सर के बाल, कान, गला वग़ैरा सित्र का कोई ह़िस्सा खोले बाज़ार जाती है या औ़रत जवान और मह़ल्ले फ़ितना है और उस के बाहर फिरने से फ़ितना उठता है और बा वुजूदे कुदरत मर्द मन्अ़ नहीं करता तो दोनों सूरतों में ऐसा मर्द **दय्यूस** और वोह औ़रत **फ़ासिक़ा** है। अगर हर त़रह़ की कोशिश के बा वुजूद मर्द नहीं जाते और ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी की अश्या के हुसूल की कोई और सूरत नहीं म-सलन किसी बद सूरत बुढ़िया या फ़ोन के ज़रीए़ भी येह काम नहीं हो सकता तो अब औ़रत इन कामों के लिये **शर-ई पर्दे** की रिआ़यत के साथ निकले। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 6 **सफ़ह़ा** 487 ता 488 पर फ़रमाते हैं : जिस की औ़रत बे सित्र बाहर फिरती है कि बाज़ू या गला या पेट या सर के बाल या पिंडली का ह़िस्सा ग़रज़ जिस जिस्म का छुपाना फ़र्ज़ है खुला हुवा है या उस पर एक बारीक कपड़ा हो कि बदन चमक्ता हो और वोह इस ह़ालत पर मुत्त़लअ़ हो कर औ़रत को अपनी ह़द्दे मक्दूर (या'नी मुम्किना ह़द) तक न रोकता हो बन्दो बस्त न करता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

हो वोह भी फ़ासिक़ व दय्यूस है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तीन शख़्स जन्नत में न जाएंगे मां बाप को ईज़ा देने वाला और दय्यूस और मर्दों की सूरत बनाने वाली औ़रत। (اَلْمُسْتَدْرَك ج١ ص ٢٥٣ حديث ٢٥٢) दुर्रे मुख़्तार में है : "जो अपनी औ़रत या अपनी किसी मह़रम पर ग़ैरत न रखे वोह दय्यूस है।" (دُرِّمُختار ج٦ص١١٣) आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت मजीद फ़रमाते हैं : इसी त़रह़ अगर औ़रत जवान और मह़ल्ले फ़ितना है और उस के बाहर फिरने से फ़ितना उठता है और येह मुत्तलअ़ (या'नी बा ख़बर) हो कर बाज़ नहीं रखता जब भी खुला दय्यूस है अगर्चे पूरे सित्र के साथ बाहर निकलती हो, इन सब लोगों को इमाम बनाना गुनाह है और इन के पीछे नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी क़रीब ब ह़राम है न पढ़ी जाए और पढ़ ली तो इआ़दा (या'नी लौटाना) ज़रूर है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 487, 488)

औ़रत के टेक्सी में बैठने के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : इस्लामी बहन का ग़ैर मह़रम ड्राइवर के साथ रिक्शा, कार या टेक्सी में बिग़ैर शोहर या बिग़ैर क़ाबिले इत़्मीनान मर्द मह़रम के अकेली बैठ कर आना जाना कैसा ?

जवाब : यहां दो बातें जानना बहुत अहम हैं, पहली बात येह है कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

औ़रत का अजनबी मर्द के साथ ख़ल्वत में जम्अ़ होना ह़राम है । **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "ख़बरदार कोई शख़्स किसी औ़रत (अज्नबिय्या) के साथ तन्हाई में नहीं होता मगर उन के साथ तीसरा शैत़ान होता है ।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص٦٧ حدیث ٢١٧٢) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत जिल्द 5 **सफ़ह़ा** 21 पर फ़रमाते हैं : या'नी जब कोई शख़्स अजनबी औ़रत के साथ तन्हाई में होता है ख़्वाह वोह दोनों कैसे ही पाकबाज़ हों और किसी (नेक) मक़्सद के लिये (ही) जम्अ़ हुए हों (मगर) शैत़ान दोनों को बुराई पर ज़रूर उभारता है और दोनों के दिलों में ज़रूर हैजान पैदा करता है, ख़त़रा है कि ज़िना वाके़अ़ करा दे ! इस लिये ऐसी ख़ल्वत (या'नी तन्हाई में जम्अ़ होने) से बहुत ही एह़तियात़ चाहिये । गुनाह के अस्बाब से भी बचना लाज़िम है, बुख़ार रोकने के लिये नज़्ला व ज़ुकाम (को) रोको । (मिरआत)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "जब कोई औ़रत किसी अजनबी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

मर्द के साथ तन्हाई में इकठ्ठी होती है तो शैत़ान के लिये येह एक नफ़ीस मौक़अ़ होता है, वोह उन दोनों के दिलों में गन्दे वस्वसे डालता है, उन की शह्वत को भड़काता है, ह़या तर्क करने और गुनाहों में मुलव्वस हो जाने की तरग़ीब देता है।"

(فیض القدیر شرح الجامع الصغیر ج۳ ص۱۰۲ تحتَ الحدیث ۲۷۹۵)

मा'लूम हुवा कि अजनबी मर्द व औ़रत को हरगिज़ हरगिज़ तन्हाई में इकठ्ठा होना जाइज़ नहीं इस सूरत में गुनाहों के वस्वसे ही नहीं तोहमत लग जाने बल्कि न होने का हो जाने का भी अन्देशा रहता है। दूसरी बात येह है कि अपने आप को ख़त़रों और फ़ितनों से बचाना हर इस्लामी बहन पर लाज़िम है। अलबत्ता ख़त़रों और फ़ितनों के अन्देशों की कोई ह़द बन्दी नहीं ना मह़रम तो दूर की बात मह़ारिम से भी ख़त़रात मुम्किन हैं। सिर्फ़ तन्हाई में ही नहीं, हुजूम में भी ख़त़रात दरपेश आते रहते हैं। इस्लामी बहन के अजनबी ड्राइवर के साथ टेक्सी में अकेली बैठने पर अगर्चे ख़ल्वत (या'नी मर्द के साथ मकान में तन्हाई) का हुक्म तो नहीं लेकिन येह सूरत ख़ल्वत (या'नी मर्द के साथ मकान में तन्हा होना) से मुशाबेह (या'नी मिलती जुलती) ज़रूर है और टेक्सी वग़ैरा बन्द गाड़ियों में ख़त़रात का कुछ ज़ियादा ही एह़तिमाल

(या'नी इम्कान) है । ड्राइवर के ज़रीए टेक्सी के मुसाफ़िरों के इग़्वा के वाक़िआत भी होते रहते हैं । ख़ास तौर पर उस वक़्त ख़तरा कुछ ज़ियादा ही होता है जब कि ड्राइवर के बारे में कोई मा'लूमात ही न हों कि कौन है ? कहां रहता है ? और कैसा आदमी है ? उमूमन बड़े शहरों में ड्राइवरों से जान पहचान कम ही होती है दर अस्ल औरत सिन्फ़े नाज़ुक है और उमूमन मर्दों की तवज्जोह का मर्कज़ होती है और आज कल हालात भी इतने ख़राब हो चुके हैं कि बहुत सारे लोग सिर्फ़ इस लिये गुनाह नहीं करते कि उन के बस में नहीं वरना जब कभी उन्हें मौक़अ़ हाथ आता है गुनाह की तरफ़ फ़ौरन लपक पड़ते हैं । ऐसे ना मुसाइद हालात में इस्लामी बहनों की ज़िम्मेदारी है कि वोह ख़ुद ही मोहतात तर्ज़े अमल अपनाएं । लिहाज़ा एहतियात येही है कि जवान औरत हरगिज़ हरगिज़ अन्दरूने शह्र भी रिक्शा टेक्सी में बिग़ैर महरम या सिक़ह व क़ाबिले ए'तिमाद ख़ातून के सफ़र न करे नीज़ फ़ितने का अन्देशा जितना बढ़ता जाएगा एहतियात की हाजत भी उतनी ही बढ़ती चली जाएगी ।

सुवाल : अगर गाड़ी चलाने वाला कोई क़ाबिले भरोसा ना महरम क़रीबी रिश्तेदार हो तो क्या कोई इस्लामी बहन अन्दरूने शह्र

टेक्सी या कार में उस के साथ ज़रूरतन कहीं जा सकती है ?

जवाब : इस्लामी बहन का ज़रूरतन किसी क़ाबिले भरोसा ना मह़रम क़रीबी रिश्तेदार के साथ अन्दरूने शह्‌र टेक्सी या कार में तन्हा सफ़र करना जाइज़ है लेकिन ऐसी सूरत में औ़रत जवान हो तो सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है। कोशिश करे कि क़रीबी अ़ज़ीज़ जो ना मह़रम हो उस के साथ भी मह़रम या सिक़ह व क़ाबिले ए'तिमाद औ़रत के बिग़ैर न जाए लेकिन क़रीबी अ़ज़ीज़ क़ाबिले भरोसा हो और अन्दरूने शह्‌र वक़्ते ज़रूरत जाना भी पड़ जाए तो मुकम्मल पर्दे के साथ जाए और हरगिज़ हरगिज़ बे तकल्लुफ़ी इख़्तियार न करे। और अगर कोई रिश्तेदार ऐसा है जो बेबाक क़िस्म का है बे तकल्लुफ़ी की आ़दत रखता है तो उस के साथ हरगिज़ न जाए।

सुवाल : एक से ज़ाइद बा पर्दा इस्लामी बहनें मिल कर ना मह़रम ड्राइवर के साथ टेक्सी वग़ैरा में आ-मदो रफ़्त कर सकती हैं या नहीं ?

जवाब : एक से ज़ाइद इस्लामी बहनों के मिल कर और वोह भी अन्दरूने शह्‌र सफ़र करने में बेशक ख़त़रे का अन्देशा कम है लेकिन हुजूम और सन्नाटे नीज़ अ़लाक़े की नौइय्यत के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

ए'तिबार से ख़त़रात की कमी और ज़ियादती का फ़र्क़ ज़ाहिर है। बा'ज़ अ़लाक़े ऐसे होते हैं जिस में इस्लामी बहन तो दूर की बात ख़ुद इस्लामी भाई गुज़रते हुए डरते हैं लिहाज़ा इस्लामी बहनों को मिलजुल कर सफ़र करने में भी ख़ूब सोच बिचार कर लेना चाहिये ।

सुवाल : टेक्सी में एक इस्लामी बहन के साथ उस का शोहर हो या एक या चन्द मह़ारिम हों अब मज़ीद एक या दो इस्लामी बहनें साथ चली जाएं तो ?

जवाब : साथ जाने वाली इस्लामी बहनें अगर पर्दे के तमाम तक़ाज़ों के साथ निकली हैं और जिस इस्लामी बहन के साथ जाना है वोह और उस का शोहर या मह़रम, क़ाबिले ए'तिमाद हैं उन को वोह इस्लामी बहन और उस के घर वाले अच्छी त़रह़ जानते हैं और क़ाबिले भरोसा समझते हैं तो अन्दरूने शह्र उन के साथ कार या टेक्सी वग़ैरा में सफ़र किया जा सकता है लेकिन बैठते वक़्त येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि इस्लामी बहन किसी ना मह़रम के साथ हरगिज़ न बैठे ऐसे में या तो अजनबी इस्लामी भाई की निशस्त अलग हो या फिर दरमियान में अजनबी इस्लामी भाई की ज़ौजा या मह़रमा बैठे ।

घर के नोकर से औ़रत की बे तकल्लुफ़ी का हुक्म

सुवाल : क्या घर के नोकर या चोकीदार से इस्लामी बहन हंस हंस कर बे तकल्लुफ़ी से बात कर सकती है ? क्या घर के नोकर या ड्राइवर से औ़रत का पर्दा नहीं ?

जवाब : घर का चोकीदार, नोकर, ड्राइवर या बाग़ का माली अगर ग़ैर मह़रम है तो उस से भी पर्दा है, उन से बे तकल्लुफ़ी के साथ हंस हंस कर बातें करना, उन से **शर-ई पर्दा** न करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । शोहर को मा'लूम है फिर भी नहीं रोकता तो वोह भी **दय्यूस** और अ़ज़ाबे नार का सज़ावार है । अगर घर का नोकर 12 साल का लड़का हो तब भी इस्लामी बहन को उस से पर्दा करना चाहिये । क्यूं कि अब वोह मुराहिक़ (या'नी क़रीबुल बुलूग़) के हुक्म में है ।

इस्लामी बहन और राहे ख़ुदा में सफ़र

सुवाल : क्या इस्लामी बहन सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर सकती है ?

जवाब : इस्लामी बहन अपने मह़रम या शोहर के साथ सफ़र पर जा तो सकती है मगर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते वक़्त बहुत ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत है, औ़रत को साथ लिये फिरने से **मु-तअ़ल्लिक़** एक सुवाल का जवाब देते हुए मेरे

आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक औ़रत को साथ लिये फिरना निहायत गोल लफ़्ज़ है। कैसी औ़रत क्यूंकर साथ लिये फिरना ख़ादिमा बना कर या ज़ौजा बना कर या مَعَاذَاللّٰه फ़ासिद त़रीक़े पर और ख़ादिमा है तो जवान है या ह़द्दे शह्वत से गुज़री हुई बुढ़िया और उस से फ़क़त़ पकाने वग़ैरा की मा'मूली ख़िदमत लेता है या तन्हाई में यक्जाई का भी इत्तिफ़ाक़ होता है और ज़ौजा है तो पर्दे में रखता है या बे पर्दा लिये फिरता है अगर ह़द्दे शह्वत से गुज़री हुई बुढ़िया है या जवान है और उस से मा'मूली ख़िदमत लेता है और साथ और लोग भी हैं कि इत्तिफ़ाक़े ख़ल्वत (या'नी तन्हाई का इत्तिफ़ाक़) नहीं होता या ज़ौजा है और उसे पर्दे में साथ रखता है तो ह़रज नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 95) लिहाज़ा अगर कोई इस्लामी बहन अपने मह़रम या शोहर के साथ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करे तो चन्द बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है, एक तो पर्दे का, दूसरा ना मह़रमों के साथ तन्हाई न होने पाए, तीसरा सफ़र के दौरान इस्लामी बहन ऐसी जगह रहे जो किसी ना मह़रम का मकान न हो या'नी उन में ना मह़रम लोग मौजूद न हों या वोह मकान ख़ाली हो या वहां सिर्फ़ क़ाबिले ए'तिमाद मुसल्मान औ़रतें हों तो फिर वहां रह सकती है।

"या अल्लाह" के छ⁶ हुरूफ़ की निस्बत से म-दनी क़ाफ़िलों की 6 बहारें

इस्लामी बहनो ! शर-ई पर्दे की पाबन्दी पर इस्तिक़ामत पाने के लिये सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़शिक़ाओं और मदीने की दीवानियों के सुन्नतों की त-रबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों की ख़ूब ख़ूब बहारें हैं, म-सलन फ़ेशन परस्ती और फ़ह़्ह़ाशी व उ़रयानी से सरशार मुआ़-शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मुअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की दीवानियां बन गईं, जो बे नमाज़ी थीं नमाज़ी बन गईं, गले में दुपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में भटक्ने वालियों, नाइट क्लबों और सिनेमा घरों की ज़ीनत बनने वालियों को करबला वाली इ़फ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की शर्मो ह़या की वोह ब-र-कतें नसीब हुईं कि **म-दनी बुरक़अ़** उन के लिबास का जुज़्वे ला युन्फ़क बन गया, और उन्हों ने इस म-दनी मक़्सद को अपना लिया कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या**

के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ"

बा 'ज़ अवक़ात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से ईमान अफ़्रोज़ करिश्मात का भी ज़ुहूर होता है म-सलन मरीज़ों को शिफ़ा मिली, बे औलादों को औलाद नसीब हुई, आसेब ज़दा को ख़लासी मिली, वग़ैरहा । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये 6 म-दनी बहारें पेशे ख़िदमत हैं, चुनान्चे

﴾1﴿ गुर्दे का दर्द दूर हो गया

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मुझे गुर्दे में इतना शदीद दर्द उठता कि जब तक 2 इन्जेक्शन न लगते, आराम न आता । खुश क़िस्मती से हमारे अ़लाक़े में इस्लामी बहनों का **म-दनी क़ाफ़िला** तशरीफ़ लाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तौफ़ीक़ बख़्शी और मैं भी उन के साथ सुन्नतें सीखने सिखाने के ह़ल्क़े में शरीक हुई । वहां मेरे **गुर्दे** में दर्द शुरूअ़ हो गया यहां तक कि रात हो गई । जब खाना सामने आया तो चावल थे, मैं घबराई कि अगर चावल खाए तो दर्द मज़ीद बढ़ जाएगा फिर मैं ने सोचा कि **ब-र-कत** के लिये खा लेती हूं । اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कुछ नहीं होगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ खाने के बा'द मेरा दर्द बढ़ा नहीं बल्कि ख़त्म हो गया ।

दर्द गुर्दे में है या मसाने में है इस का ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
मन्फ़अ़त आख़िरत के बनाने में है याद इस को रखें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी

इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' सफ़हा 533 पर है **:** اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सलातो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरे में मसाजिद के अन्दर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** का सिल्सिला होता है जिस में **मो'तकिफ़ीन** की सुन्नतों भरी तरबिय्यत की जाती है। मुआ़-शरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद दौराने ए'तिकाफ़ गुनाहों से ताइब हो कर ज़िन्दगी के नए दौर का आग़ाज़ करते हैं। बा'ज़ अवक़ात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से ईमान अफ़रोज़ करिश्मात का भी ज़ुहूर होता है चुनान्चे र-मज़ानुल मुबारक 1425 सि.हि. के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में **दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची** में जहां कमोबेश

2000 मो'तकिफ़ीन थे, उन में ज़िलअ़ चक्वाल (पंजाब, पाकिस्तान) के **77** सालह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अशरफ़ साहिब भी **मो'तकिफ़** हो गए। **क़िब्ला ह़ाफ़िज़ साह़िब का हाथ और ज़बान मफ़्लूज थे और क़ुव्वते समाअ़त भी जवाब दे चुकी थी।** वोह बड़े ख़ुश अ़क़ीदा थे। उन्हों ने एक बार इफ़्त़ार के खाने में बसद हुस्ने ज़न **एक मुबल्लिग़ से जूठा खाना ले कर खाया**, उसी से दम भी करवाया, बस उन के **हुस्ने ज़न** ने काम कर दिखाया, रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ को जोश आया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को शिफ़ायाब फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन का फ़ालिज का मरज़ जाता रहा। उन्हों ने हज़ारों इस्लामी भाइयों की मौजू-दगी में **फ़ैज़ाने मदीना** के मन्च पर चढ़ कर बसद अ़क़ीदत अपने रू ब सिह़ह़त होने की **बिशारत** सुनाई, येह नवीदे जां फ़िज़ा सुन कर फ़ज़ा "**अल्लाह अल्लाह, अल्लाह अल्लाह**" की पुरकैफ़ सदाओं से गूंज उठी। उन दिनों कई मक़ामी अख़्बारात ने इस ख़बरे फ़रह़त असर को शाएअ़ किया।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

﴾2﴿ ब्लड प्रेशर की मरीज़ा तन्दुरुस्त हो गई

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मेरा ब्लड प्रेशर लो (LOW) रहा करता था। लेकिन जब से मैं ने इस्लामी बहनों के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया है, मुझे इस मरज़ से नजात मिल गई है।

हाई B.P. हो गर या कि LOW हो मगर फ़िक्र ही मत करें क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्तिजाएं करें बाबे रह़मत खुलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

100 घरों से बलाएं दूर

इस्लामी बहनो ! म-दनी क़ाफ़िला फिर **म-दनी क़ाफ़िला** है, इस में पाकीज़ा सोह़बतें और फिर इस की ब-र-कतें ही ब-र-कतें हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेक बन्दियों और मक्की म-दनी **मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़शिक़ाओं और मदीने की दीवानियों की क़ुरबतों के क्या कहने ! अच्छों का क़ुर्ब और पड़ोस यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत है इस की ब-र-कत से दुन्यवी आफ़तों और बलाओं से भी नजात मिलती है और आख़िरत की मन्फ़अ़त भी हाथ आती है चुनान्चे हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रूह़ परवर है :

"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक मुसल्मान की वज्ह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला दूर फ़रमा देता है।"

(المعجم الاوسط ج٣ ص ١٢٩ حديث ٤٠٨٠)

﴾3﴿ सुकून की नींद

एक इस्लामी बहन (उ़म्र तक़रीबन 55 साल) का बयान कुछ यूं है कि मेरे **पाउं** में दर्द रहता था जिस की वजह से मैं रात भर सुकून से सो नहीं सकती थी, ज़रा आंख लगती भी तो **डरावने ख़्वाब** दिखाई देते जिस की वज्ह से मैं घबरा कर उठ बैठती। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने मार्च 2009 ई. में **इस्लामी बहनों** के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। जब रात को आराम का वक़्फ़ा हुवा तो मुझे ऐसी **सुकून की नींद** आई कि शायद बरसों में कभी न आई थी। येह सब **म-दनी क़ाफ़िले** की बहारें हैं।

उस की क़िस्मत पे फ़िदा तख़्ते शही की राहत
ख़ाके त़यबा पे जिसे चैन की नींद आई हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! अल्लाहु रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ की याद में दिलों का चैन है जैसा कि पारह 13 **सू-रतुर्रा'द** आयत नम्बर 28 में इर्शाद होता है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُؕ ﴿۲۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में नेक बन्दों का ब कसरत ज़िक्रे ख़ैर किया जाता है और जहां सालिह़ीन व सालिह़ात या'नी बुज़ुर्गों और पारसा बीबियों का ज़िक्रे ख़ैर होता है, वहां **रह़मते इलाही** عَزَّوَجَلَّ झूम झूम कर बरसती है जैसा कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम **सुफ्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मते इलाही उतरती है। (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء، ج۷ ص۳۳۵رقم ۱۰۷۵۰) तो जहां रह़मत उतरती है वहां राह़त क्यूं नहीं मिलेगी ! अगर रह़मतों की बरसात में चैन व सुकून न मिलेगा तो कहां मिलेगा ? मज़्कूरा "म-दनी बहार" में **डरावने ख़्वाब** का भी तज़्किरा है, तो इस का एक **म-दनी इलाज** पेशे ख़िदमत है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 419 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, "**म-दनी पंज सूरह**" के सफ़ह़ा

247 पर है : یَا مُتَکَبِّرُ 21 बार रोज़ाना पढ़ लीजिये, डरावने ख़्वाब आते होंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में नहीं डरेंगे। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

पाउं में दर्द हो ज़न हो या मर्द हो क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो
लूट लें रह़मतें ख़ूब लें ब-र-कतें ख़्वाब अच्छे दिखें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ गरदन का दर्द काफ़ूर हो गया

घोटकी (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की इस्लामी बहन का बयान है कि मुझे डेढ़ माह से गरदन में शदीद दर्द था, बहुत इ़लाज करवाया मगर मुस्तक़िल आराम न आया। जब मैं ने तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़शिक़ाओं और मदीने की दीवानियों के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया तो दीगर ब-र-कतें मिलने के साथ साथ **मेरी गरदन का दर्द भी काफ़ूर** (या'नी ग़ाइब) **हो गया।**

दर्द गरदन में हो या कहीं तन में हो दर्द सारे मिटें क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आएंगी तो सुधर जाएंगी अब न सुस्ती करें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

नाबीना बच्चे की ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायत

इस्लामी बहनो ! म-दनी क़ाफ़िले की ब-रकात मरह़बा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जहां **म-दनी क़ाफ़िले** की मुसाफ़िरा की **गरदन का दर्द काफ़ूर** (या'नी ग़ाइब) हो गया ! वहां येह "**म-दनी फूल**" भी संभाल कर रखने वाला है और वोह येह कि ऐ़न मुम्किन है कि म-दनी क़ाफ़िले में किसी का दर्द दूर होने के बजाए मज़ीद बढ़ जाए बिलफ़र्ज़ किसी के साथ ऐसा हो भी जाए तो वोह शैत़ान के वस्वसों में आ कर हरगिज़ "म-दनी क़ाफ़िले" से नाराज़ न हो ! मोमिन को हर ह़ाल में **अल्लाह** रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ का शुक्र ही अदा करना चाहिये। यक़ीनन उस की मशिय्यत व ह़िक्मत को हम में से कोई भी नहीं समझ सकता। सिह़्ह़त देने में भी उस की ह़िक्मत, मरज़ की ज़ियादत में भी उस की मस्लह़त। किसी को आंखों का नूर इनायत करने में ह़िक्मत तो किसी को अन्धा रखने ही में मस्लह़त ! इस ज़िम्न में एक **नाबीना बच्चे की ह़ैरत** अंगेज़ ह़िकायत पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 300 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**आंसूओं का दरिया**" **सफ़ह़ा** 252 पर मन्क़ूल है**:** ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी नह्‌र के क़रीब से गुज़रे तो कुछ बच्चों को उस में खेलते देखा, उन के साथ एक नाबीना **बच्चा** भी था जिसे वोह पानी में ग़ोत़ा दे कर दाएं बाएं भाग जाते और वोह उन्हें तलाश करता रहता मगर काम्याब न होता। ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उस के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस बच्चे की बसारत (या'नी नज़र) लौट आने की दुआ़ की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस बच्चे की बीनाई लौटा दी। जब उस ने आंखें खोलीं और बच्चों को देखा तो एक बच्चे को पकड़ा और उस से एक दम चिमट गया फिर उसे पानी में इस क़दर ग़ोते़ दिये कि वोह मर गया फिर झपट कर दूसरे को पकड़ा और उसे भी ग़ोते़ पर ग़ोते़ खिला कर मौत के घाट उतार दिया ! येह सूरते ह़ाल देख कर बाक़ी बच्चे ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग खड़े हुए। ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह मुआ़–मला देखा तो बहुत हैरान हुए और अ़र्ज़ की : "**या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरे मालिको मौला ! तू इन की तख़्लीक़ (या'नी पैदाइश) को ज़ि़यादा जानने वाला है इस बच्चे को पिछली ह़ालत पर लौटा दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा**

रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्‌य फ़रमाई : "मैं तुझ से ज़ियादा जानता हूं....." तो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सज्दे में गिर गए।

(आंसूओं का दरिया, स. 252)

﴾5﴿ मुझे क़ै हो जाती थी

घोटकी (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की इस्लामी बहन का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मुझे टाइफ़ोइड हुवा था जिस की वज्ह से मेरा हाज़िमा तबाह हो गया था। मैं जब भी खाना खाती फ़ौरन क़ै हो जाती। जब मैं ने इस्लामी बहनों के साथ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाया तो मुझे क़ै हुई न पेट में दर्द। मैं ने येह **ब-र-कतें** देखते हुए निय्यत की है कि आयिन्दा ख़ुद भी **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करूंगी और दीगर इस्लामी बहनों पर भी **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दूंगी।

गर है दर्दे शिकम मत करें उस का ग़म — साथ मह़रम को लें क़ाफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे दूर आफ़त हटे — लेने को ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

इस्लामी बहनो ! सुन्नत फिर सुन्नत है इस में ब-र-कत क्यूं न हो ! और सुन्नत भी जब सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आशिक़ाओं, मदीने की दीवानियों की सोहबत में रह कर अदा की जाए उस की तो क्या ही बात है ! काश ! हमें हर काम में **सुन्नत** पर अमल का जज़्बा मिल जाए।

मुहम्मद की सुन्नत की उल्फ़त अ़ता कर — मैं हो जाऊं इन पर फ़िदा या इलाही
मैं सुन्नत की धूमें मचाती रहूं काश ! — तू दीवानी ऐसी बना या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ सोने का गुमशुदा बुन्दा मिल गया

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरा **सोने का बुन्दा** गुम हो गया था। तीन दिन तक तलाश किया मगर न मिल सका, फिर जब हमारे अ़लाक़े में इस्लामी बहनों के **म-दनी क़ाफ़िले** की आमद हुई तो मैं ने दुआ की **:** "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से मुझे मेरा गुमशुदा बुन्दा मिला दे।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस दुआ के तुफ़ैल मुझे **मेरा सोने का बुन्दा** ब आसानी मिल गया और हैरत बालाए हैरत येह है कि

उस जगह से मिला जहां मैं पहले बीसियों बार देख चुकी थी ! येह **ब-र-कत** देख कर मैं ने भी **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत की है।

खो गए ज़ेवरात आएं फैला के हाथ अ़र्ज़ ह़क़ से करें क़ाफ़िले में चलो
ग़म के बादल छटें दिल की कलियां खिलें दर करम के खुलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत की भी क्या शान है !

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से सोने का **गुमशुदा** बुन्दा मिल गया ! ख़ैर येह तो दुन्या की एक ह़क़ीर शै है اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने वालों और वालियों को **जन्नत** भी मिलेगी और سُبْحٰنَ الله ! **जन्नत** की भी क्या शान है ! चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 176 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बिहिश्त की कुन्जियां"** सफ़ह़ा 15 ता 16 पर है **: जन्नत** में शीरीं (या'नी मीठे) पानी, शह्द, दूध और शराब की नहरें बहती हैं। (ترمذی ج ٤ ص٢٥٧ حدیث ٢٥٨٠) जब **जन्नती, पानी की नह्र** में से पियेंगे तो उन्हें ऐसी ह़यात मिलेगी कि कभी मौत

न आएगी और जब **दूध की नह्‌र** में से नोश करेंगे तो उन के बदन में ऐसी फ़रबिही पैदा होगी कि फिर कभी लाग़िर (या'नी कमज़ोर) न होंगे और जब **शह्‌द की नह्‌र** में से पी लेंगे तो उन्हें ऐसी सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती मिल जाएगी कि फिर कभी वोह बीमार न होंगे और जब **शराब की नह्‌र** में से पियेंगे तो उन्हें ऐसा नशात़ और ख़ुशी का सुरूर ह़ासिल होगा कि फिर कभी वोह ग़मगीन न होंगे। येह चारों नहरें एक ह़ौज़ में गिर रही हैं जिस का नाम **ह़ौज़े कौसर** है, येही ह़ौज़, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह ह़ौज़े कौसर है जो अभी **जन्नत** के अन्दर है लेकिन क़ियामत के दिन मैदाने मह़शर में लाया जाएगा। जहां हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस ह़ौज़ से अपनी उम्मत को सैराब फ़रमाएंगे। (روح البیان ج۱ ص۸۲،۸۳)

इस्लामी बहन और नेकी की दा'वत

सुवाल : क्या इस्लामी बहन नेकी की दा'वत के लिये अपने पड़ोस की इस्लामी बहनों के घर के दरवाज़े पर जा सकती है ?

जवाब : सख़्त पर्दे के साथ जा सकती है। मगर इस मुआ़-मले में इस्लामी बहन को बहुत ज़ियादा मोह़तात़ रहना होगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

आवाज़ कैसे खुली !

इस्लामी बहनो ! दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां इकट्ठी करने के लिये हफ़्ते में कम अज़ कम एक दिन तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की ब-र-कतों के क्या कहने ! आप का ईमान ताज़ा करने के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक खुश गवार व मुश्कबार **म-दनी बहार** पेश है, चुनान्चे **पंजाब** (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का खुलासा है कि हमारे अ़लाक़े में एक इस्लामी बहन **गले के मरज़** का शिकार थीं, साफ़ आवाज़ न निकलती थी ह़त्ता कि बिल्कुल क़रीब बैठने वाले को भी उन की **आवाज़** ठीक से सुनाई न देती थी। डॉक्टरों ने ऑपरेशन का कह रखा था और येह भी बता दिया था कि या तो आवाज़ **ठीक** हो जाएगी या बिल्कुल बन्द हो जाएगी। दरीं अस्ना **दा'वते इस्लामी** की एक इस्लामी बहन ने उन्हें **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में शिर्कत की रग़्बत दिलाई तो वोह मुख़्तलिफ़ घरों में पर्दे के साथ दी जानी वाली "नेकी की दा'वत" में शिर्कत के लिये उन के साथ हो लीं। जब वोह

इस्लामी बहन **अ़लाक़ाई दौरे** से वापस लौटीं तो ह़ैरत बालाए ह़ैरत कि उन की आवाज़ पहले से **बेहतर** हो चुकी थी, फिर अगले ही रोज़ जब उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों** भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत की तो उन की आवाज़ ऐसी **साफ़** हो चुकी थी गोया कभी बन्द ही न हुई थी ! यूं **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की **ब-र-कत** से उन्हें इस मरज़ से रिहाई नसीब हुई।

आमिना के लाल ! सदक़ा फ़ात़िमा के लाल का
दूर अब तो शामतें कर बे कसो मजबूर की
बहरे शाहे करबला हों दूर आफ़ातो बला
ऐ ह़बीबे रब्बे दावर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की ख़ूब ब-र-कतें हैं नेकी की दा'वत देने और भलाई की बात बताने के सवाब का कौन अन्दाज़ा कर सकता है। इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى "हि़ल्यतुल औलिया" में नक़्ल करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्‌य फ़रमाई : **“भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह्‌शत न हो।”** **(حلیۃ الاولیاء ج٦ص٥رقم ٧٦٢٢)**

इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा’लूम हुवा। नेकी की दा’वत देने, सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों और वालियों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ मह़सूस नहीं होगा। **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नेकी की दा’वत के ज़रीए़ भलाई की बातें सीखने सिखाने वालों और वालियों, **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र और फ़िक्रे मदीना कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और वालियों और **सुन्नतों** भरे इज्तिमाअ़ की दा’वत पेश करने वालों और वालियों नीज़ **मुबल्लिग़ीन** की नेकी की दा’वत को सुनने वालों और मुबल्लिग़ात की नेकी की दा’वत सुनने वालियों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के

जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनों का म-दनी मश्वरा

सुवाल : क्या इस्लामी बहनें नेकी की दा'वत के म-दनी कामों में तरक़्क़ी के लिये आपस में मिल बैठ कर **म-दनी मश्वरा** करने के लिये कहीं जम्अ़ भी हो सकती हैं ?

जवाब : जी हां। शर-ई पर्दा और दीगर क़ुयूदात के साथ म-दनी मश्वरा के लिये जम्अ़ हो सकती हैं।

दौराने इ़द्दत सुन्नतें सीखने के लिये निकलना कैसा ?

सुवाल : मौत या त़लाक़ की इ़द्दत के दौरान इस्लामी बहन सुन्नतें सीखने या सिखाने के लिये घर से बाहर निकल सकती है या नहीं ?

जवाब : नहीं।

इस्लामी बहनों का इज्तिमाअ़ करना कैसा ?

सुवाल : इस्लामी बहनों का पर्दे में रह कर ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ, ना'त ख़्वानी, सुन्नतों भरे बयान और दुआ़ वग़ैरा पर मुश्तमिल **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** करना कैसा ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

जवाब : इस्लामी बहनों को कुरआनो सुन्नत की बातें बताना ज़रूरी है ताकि इन्हें इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का ढंग आ जाए। इस की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं म-सलन इन्हें सुन्नतों भरे बयानात की **केसिटें** सुनने और मुस्तनद उ़-लमाए अहले सुन्नत की किताबें पढ़ने को दी जाएं, नीज़ **पर्दे** की रिआ़यत करते हुए किसी जगह जम्अ़ हो कर वोह फ़राइज़ व सुन्नतें सीखें, चुनान्चे **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "अब फ़ी ज़माना औ़रतों को बा पर्दा मस्जिदों में आने और अ़ला-ह़दा बैठने से न रोका जाए क्यूं कि अब औ़रतें सिनेमाओं बाज़ारों में जाने से तो रुकती नहीं, मस्जिदों में आ कर कुछ (न कुछ) दीन के अह़काम सुन लेंगी।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 170) एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : "इन (औ़रतों) में तब्लीग़ या तो ब ज़रीअ़ए कुतुब व रसाइल की जाए या ज़ी इल्म औ़रतें ग़ैरे ज़ी इल्म औ़रतों को अह़काम सिखा दें या निहायत पर्दे के साथ वाइज़ (या'नी बयान करने वाले आ़लिम) से बिल्कुल अ़ला-ह़दा एक इमारत या बड़े पर्दे की आड़ ले कर वा'ज़ व अह़काम सुनें मगर इस तीसरी सूरत में बहुत एह़तियात की ज़रूरत है।" (फ़तावा नईमिय्या, स. 48)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلیٰ)

ग़ैरे आ़लिम को बयान करना ह़राम है

सुवाल : जो इस्लामी बहन आ़लिमा न हो क्या वोह इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में बयान कर सकती है ?

जवाब : जो काफ़ी इ़ल्म न रखती हो वोह मज़्हबी बयान न करे। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 378 पर फ़रमाते हैं : वा'ज़ में और हर बात में सब से मुक़द्दम इजाज़ते **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى الله تعالىٰ عليه واٰلہٖ وسلَّم है। जो काफ़ी इ़ल्म न रखता हो, उसे वा'ज़ कहना **ह़राम** है और उस का वा'ज़ सुनना जाइज़ नहीं, और अगर कोई مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ **बद मज़्हब** है तो वोह तो **नाइबे शैत़ान** है उस की बात सुननी सख़्त **ह़राम है** (उस को मस्जिद में बयान से रोका जाए) और अगर किसी के (अ़क़ीदे में ख़राबी न हो मगर उस के) बयान से फ़ितना उठता हो तो उसे भी रोकने का इमाम और अहले मस्जिद को ह़क़ है और अगर पूरा आ़लिम सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा वा'ज़ फ़रमाए तो उसे रोकने का किसी को ह़क़ नहीं। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 1 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 114 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ
(پ۱ البقرہ ۱۱٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मस्जिदों को रोके उन में नामे खुदा लिये जाने से।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 378)

आ़लिम की ता'रीफ़

सुवाल : तो क्या मुबल्लिग़ बनने के लिये दर्से **निज़ामी** (या'नी आ़लिम कोर्स) करना शर्त़ है ?

जवाब : आ़लिम होने के लिये न दर्से **निज़ामी** शर्त़ है न इस की मह्ज़ सनद काफ़ी बल्कि **इल्म** चाहिये। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **आ़लिम की ता'रीफ़** येह है कि अ़क़ाइद से पूरे तौ़र पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरिय्यात को किताब से निकाल सके बिग़ैर किसी की मदद के। **इल्म** किताबों के मुत़ा-लआ़ से और उ़-लमा से सुन सुन कर भी ह़ासिल होता है। (तल्ख़ीस अज़ अह़कामे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 231) मा'लूम हुवा **आ़लिम** होने के लिये दर्से निज़ामी की तक्मील की सनद ज़रूरी है न ही काफ़ी न ही अ़-रबी फ़ारसी वग़ैरा का जानना शर्त़, बल्कि इल्म दरकार है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सनद कोई चीज़ नहीं बहुतेरे सनद याफ़्ता महूज़ बे बहरा (या'नी इल्मे दीन से ख़ाली) होते हैं और जिन्हों ने सनद न ली इन की शागिर्दी की लियाक़त भी उन सनद याफ़्तों में नहीं होती, इल्म होना चाहिये। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 683) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, बहारे शरीअ़त, क़ानूने शरीअ़त, निसाबे शरीअ़त, मिरआतुल मनाजीह़, इल्मुल कुरआन, तफ़्सीरे नईमी, एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम) और इस त़रह़ की कई उर्दू किताबें हैं जिन को पढ़ कर समझ कर और उ़-लमाए किराम से पूछ पूछ कर भी ह़स्बे ज़रूरत अ़क़ाइद व मसाइल से आगाही ह़ासिल कर के "आ़लिम" बनने का शरफ़ ह़ासिल किया जा सकता है। और अगर साथ ही साथ "दर्से निज़ामी" करने की सआ़दत भी ह़ासिल हो जाए तो सोने पर सुहागा।

ग़ैरे आ़लिम के बयान का त़रीक़ा

सुवाल : जो आ़लिम न हो क्या उस के बयान करने की भी कोई सूरत है?

जवाब : ग़ैरे आ़लिम के बयान की आसान सूरत येह है कि **उ़-लमाए अहले सुन्नत** की किताबों से ह़स्बे ज़रूरत फ़ोटो कॉपियां करवा कर उन के तराशे अपनी डायरी में चस्पां कर ले और

उस में से पढ़ कर सुनाए। मुंह ज़बानी कुछ न कहे नीज़ अपनी राय से हरगिज़ किसी आयते करीमा की तफ़्सीर या ह़दीसे पाक की शर्ह़ वग़ैरा बयान न करे। क्यूं कि तफ़्सीर बिर्राय[1] **ह़राम है और अपनी अटकल के मुत़ाबिक़ आयत से इस्तिद्लाल या'नी दलील पकड़ना और ह़दीसे मुबारक की शर्ह़ करना अगर्चे दुरुस्त हो तब भी शरअ़न इस की इजाज़त नहीं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने बिग़ैर इ़ल्म कुरआन की तफ़्सीर की वोह अपना ठिकाना जहन्नम बनाए। **(ترمذی ج ٤ ص ٤٣٩ حدیث ٢٩٥٩)** ग़ैरे आ़लिम के बयान के बारे में रहनुमाई करते हुए मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जाहिल उर्दू ख़्वां अगर अपनी त़रफ़ से कुछ न कहे बल्कि आ़लिम की तस्नीफ़ पढ़ कर सुनाए तो इस में ह़रज नहीं।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 409)

मुबल्लिग़ीन के लिये अहम हिदायत

सुवाल : दा'वते इस्लामी के बा'ज़ मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात मुंह

مدینہ

1. तफ़्सीर बिर्राय करने वाला वोह कहलाता है जिस ने कुरआन की तफ़्सीर अ़क़्ल और क़ियास (अन्दाज़ा) से की, जिस की नक़्ली (या'नी शर-ई) दलील व सनद न हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

ज़बानी भी बयानात करते हैं उन के लिये आप की त़रफ़ से क्या हिदायात हैं ?

जवाब : अगर येह उ़-लमा या आ़लिमात हैं जब तो ह़रज नहीं। वरना ग़ैरे आ़लिम मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात के लिये मा'रूज़ात पेश कर दी गईं कि वोह सिर्फ़ उ़-लमा की तह़रीरात से पढ़ कर ही बयानात करें। अगर किसी जाहिल को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में मुंह ज़बानी करता पाएं तो **दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादारान उस को रोक दें।** ग़ैरे आ़लिम मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात और तमाम ग़ैरे आ़लिम मुक़र्रिरीन को चाहिये कि वोह मुंह ज़बानी मज़्हबी बयान या ख़ित़ाब न करें। मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जाहिल उर्दू ख़्वां अगर अपनी त़रफ़ से कुछ न कहे बल्कि आ़लिम की तस्नीफ़ पढ़ कर सुनाए तो इस में ह़रज नहीं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : जाहिल ख़ुद बयान करने बैठे तो उसे वा'ज़ कहना **ह़राम** है और उस का वा'ज़ सुनना **ह़राम** है और मुसल्मानों को ह़क़ है बल्कि मुसल्मानों पर ह़क़ है कि उसे मिम्बर से उतार दें कि इस में **नह्ये मुन्कर** (या'नी बुराई से मन्अ़ करना) है और **नह्ये मुन्कर** वाजिब। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

इस्लामी बहनें ना'तें पढ़ें या नहीं ?

सुवाल : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में ना'तें पढ़ सकती हैं या नहीं ?

जवाब : इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों में बिग़ैर माईक के इस त़रह़ ना'त शरीफ़ पढ़ें कि उन की आवाज़ किसी ग़ैर मर्द तक न पहुंचे। माईक का इस लिये मन्अ़ किया कि इस पर पढ़ने या बयान करने से ग़ैर मर्दों से आवाज़ को बचाना क़रीब क़रीब ना मुम्किन है। कोई लाख दिल को मना ले कि आवाज़ शामियाने या मकान से बाहर नहीं जाती मगर तजरिबा येही है कि लाउड स्पीकर के ज़रीए औ़रत की आवाज़ उ़मूमन ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाती है बल्कि बड़ी महाफ़िल में माईक का निज़ाम भी तो अक्सर मर्द ही चलाते हैं ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को एक बार किसी ने बताया कि फ़ुलां जगह मह़फ़िल में एक **साहि़बा** माईक पर बयान फ़रमा रही थीं, बा'ज़ मर्दों के कानों में जब उस निस्वानी आवाज़ ने रस घोला तो उन में से एक बे ह़या बोला, आहा ! कितनी प्यारी आवाज़ है !! जब आवाज़ इतनी पुर कशिश है तो ख़ुद कैसी होगी !!! وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه ।

इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें

याद रहे ! दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में **इस्लामी बहनों के लिये लाउड स्पीकर के इस्ति'माल पर पाबन्दी है।** लिहाज़ा इस्लामी बहनें ज़ेह्न बना लें कि कुछ भी हो जाए न लाउड स्पीकर में बयान करना है और न ही उस में ना'त शरीफ़ पढ़नी है। **याद रखिये ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचती हो इस के बा वुजूद बेबाकी के साथ बयान फ़रमाने और ना'तें सुनाने वाली गुनहगार और सवाब के बजाए अ़ज़ाबे नार की ह़क़दार है।** मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : चन्द औ़रतें एक साथ मिल कर घर में **मीलाद शरीफ़** पढ़ती हैं और आवाज़ बाहर तक सुनाई देती है, यूंही मुह़र्रम के महीने में किताबे शहादत वग़ैरा भी एक साथ आवाज़ मिला कर (या'नी कोरस में) पढ़ती हैं, येह जाइज़ है या नहीं ? मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ना जाइज़ है कि औ़रत की अवाज़ भी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है और औ़रत की ख़ुश इल्ह़ानी, कि अजनबी सुने मह़ल्ले फ़ितना है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 240)

औ़रत के राग की आवाज़

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक और सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : **औ़रत का (ना'तें वग़ैरा) ख़ुश इल्ह़ानी से बा आवाज़ ऐसा पढ़ना कि ना मह़रमों को उस के नग़्मे (या'नी राग व तरन्नुम) की आवाज़ जाए ह़राम है ।** ''नवाज़िले फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी'' (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) में है, औ़रत का ख़ुश आवाज़ कर के कुछ पढ़ना ''औ़रत'' या'नी **मह़ल्ले सित्र** (छुपाने की चीज़) है । ''काफ़ी इमाम अबुल ब-रकात नस्फ़ी'' में है, औ़रत बुलन्द आवाज़ से तल्बिया (या'नी لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْك) न पढ़े इस लिये कि इस की आवाज़ **क़ाबिले सित्र** (छुपाने के क़ाबिल चीज़) है । अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى फ़रमाते हैं, औ़रतों को अपनी आवाज़ बुलन्द करना, इन्हें लम्बा और दराज़ (या'नी इन में उतार चढ़ाव) करना, इन में नर्म लहजा इख़्तियार करना और इन में तक़्ती़अ़ करना (काट काट कर तह़लीली अ़रूज़ या'नी नज़्म के क़वाइ़द के मुत़ाबिक़) अश्आ़र की त़रह़ आवाज़ें निकालना, हम इन सब कामों की औ़रतों को इजाज़त नहीं देते इस लिये कि इन सब बातों में मर्दों का उन की त़रफ़ माइल होना पाया जाएगा और उन मर्दों में जज़्बाते शहवानी की तह़रीक पैदा होगी इसी वज्ह से औ़रत को येह इजाज़त नहीं कि वोह अज़ान दे । وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

(رَدُّالْمُحتَار ج٢ ص٩٧, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 242)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

मेरी आवाज़ कांपती थी

इस्लामी बहनो ! मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुलामी तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का तुर्रए इम्तियाज़ है, इस से वाबस्तगान पर भी रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ के ऐसे ऐसे इन्आमात होते हैं कि अ़क्लें ह़ैरान रह जाती हैं चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि दा'वते इस्लामी के महके महके **म-दनी माह़ोल** से मुन्सलिक होने से पहले मैं मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला हो कर अपनी अनमोल ह़यात (या'नी ज़िन्दगी) के क़ीमती लम्ह़ात ज़ाएअ़ कर रही थी। तक़रीबन 12 साल पहले अचानक हार्ट अटेक हुवा (या'नी दिल का दौरा पड़ा) और मैं बेहोश हो गई। जब होश आया तो आवाज़ बन्द हो चुकी थी, अब मैं सिर्फ़ इशारों से बात कर सकती थी। डोक्टरी इ़लाज से कुछ इफ़ाक़ा तो हो गया मगर अब भी बात करते वक़्त आवाज़ कांपती थी, धूएं वाली जगह पर खांसी शुरूअ़ हो जाती, दम घुटने लगता और आवाज़ बन्द हो जाती। इसी ह़ालत में कमो बेश एक माह गुज़र गया। एक दिन मैं अपने मरज़ से दिल बरदाश्ता हो कर ख़ूब रोई, इसी दौरान मेरी

आंख लग गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग की **ज़ियारत** हुई, उन्हों ने कुछ यूं फ़रमाया : "फ़िक्र न करो, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द **ठीक** हो जाओगी और जब ठीक हो जाओ तो **फ़ैज़ाने मदीना** ज़रूर आना।" इस मुबारक ख़्वाब को देखने के बा'द दिन ब दिन सिह़्ह़त बेहतर होने लगी। जैसे ही मैं बाहर निकलने के क़ाबिल हुई, एक इस्लामी बहन के साथ दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में ह़ाज़िर हो गई। उस इज्तिमाअ़ ने मेरी ज़िन्दगी बदल कर रख दी, मैं ने दिल ही दिल में पक्की निय्यत की, कि अब मेरी ज़िन्दगी **दा'वते इस्लामी** के लिये वक़्फ़ है। मैं ने दा'वते इस्लामी के **म-दनी काम** को अपना ओढ़ना बिछोना बना लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कतें हैं कि एक वक़्त वोह था जब बात करते हुए **मेरी आवाज़ कांपती थी** और एक वक़्त येह है कि मैं अ़लाक़ाई सत़्ह़ पर होने वाले इस्लामी बहनों के **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** में अपने मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ना'तें** पढ़ती हूं, अब आवाज़ कांपती है न गला बैठता है और न ही खांसी उठती है।

रह़मत न किस त़रह़ हो गुनहगार की त़रफ़ रह़मान ख़ुद है मेरे त़रफ़दार की त़रफ़

देखी जो बे कसी तो उन्हें रह़्म आ गया घबरा के हो गए वोह गुनहगार की त़रफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहाने ढूंडती है। बा'ज़ अवक़ात यूं भी तरकीब बन जाती है या'नी "जो रोता है उस का काम होता है" इस्लामी बहन जब टूट कर रोई, रह़मत को जोश आया और काम हो गया !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बरआ-मदे से एक दूसरी को पुकारना कैसा ?

सुवाल : बरआ-मदे में से इस्लामी बहन का पड़ोसनों के साथ बुलन्द आवाज़ से बातें करना, कैसा है ? इसी त़रह़ इमारत में ऊपर नीचे रहने वालियां एक दूसरे को पुकारें, आपस में ज़ोर ज़ोर से गुफ़्त-गू करें क्या येह मुनासिब है ?

जवाब : येह इन्तिहाई ग़ैर मुनासिब है क्यूं कि इस त़रह़ गुफ़्त-गू करने से ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचने का क़वी इम्कान है। अगर आस पास की इस्लामी बहनों से कोई ज़रूरी काम है तो इस के लिये एक दूसरे के घर टेलीफ़ोन या इन्टर कोम के ज़रीए बातचीत कर ले।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

बच्चों को डांटने की आवाज़

सुवाल : अच्छा येह बताइये कि बच्चों को डांटते वक़्त इस्लामी बहन का आवाज़ बुलन्द करना कैसा ?

जवाब : इस्लामी बहन का इस त़रह़ डांटना कि आवाज़ घर से बाहर निकले, इन्तिहाई ना मुनासिब और मुज़्ह़का ख़ेज़ है। बच्चों पर बात बात पर चिल्लाते रहना ह़माक़त भी है कि इस त़रह़ बच्चे मज़ीद "आज़ाद" हो जाते हैं। लिहाज़ा बार बार डांटने के बजाए ज़ियादा तर प्यार से काम लिया जाए। सब के सामने बच्चों को रुस्वा करते रहने से रफ़्ता रफ़्ता उस का नन्हा सा दिल "बाग़ी" हो जाता है। बच्चे की मौजू-दगी में किसी मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स से उसी बच्चे के बारे में इस त़रह़ की शिकायात करना म-सलन "इस को समझाओ, येह तंग बहुत करता है बहुत शरारती है, मां बाप का कहना नहीं मानता" वग़ैरा अ़क़्ल मन्दी नहीं क्यूं कि इस से बच्चे की इस्लाह़ होना दर कनार उलटा ज़ेह्न येह बनता होगा कि मुझे मां बाप ने फ़ुलां के सामने ज़लील कर दिया ! आज कल औलाद की ना फ़रमानियों की शिकायात आ़म हैं। इस की वुजूहात में बचपन में मां बाप का बात बात पर बे जा चीख़ो पुकार करना और बच्चे को दूसरों के सामने वक़्तन फ़ वक़्तन ज़लीलो ख़्वार करना भी शामिल हो तो बईद अज़ क़ियास नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

औ़रत ना'तों की विडियो केसेट देखे या नहीं ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन ना'त ख़्वानों की विडियो केसेट देख सकती है ?

जवाब : मेरा मश्वरा है कि हरगिज़ न देखे। एक तो ख़ुश इल्ह़ानी का जादू, दूसरे नौ जवान ना'त ख़्वां की (स्टूडियो में बनाई हुई ख़ुश लिबासी, पफ़िंग और लाइटिंग के ज़रीए "नक़्ली नूर" बरसाती ज़बर दस्ती की पुर कशिश) तस्वीर और तीसरे उस के हाथ वग़ैरा लहराने की अदाओं के सबब क़वी इम्कान है कि औ़रत के क़ल्ब में हैजान पैदा हो और सवाब के बजाए अ़ज़ाब का सामान हो।

औ़रत ना'तों की केसेट सुने या नहीं ?

सुवाल : तो क्या इस्लामी बहन ना महरम ना'त ख़्वां की आवाज़ में ना'तें भी नहीं सुन सकती ?

जवाब : ना'त शरीफ़ सुनना सुनाना वाक़ेई सवाब का काम है, अलबत्ता ना महरम ना'त ख़्वान की आवाज़ में औ़रत ना'त शरीफ़ न सुने कि उस की सुरीली आवाज़ के बाइस वोह फ़ितने में मुब्तला हो सकती है। सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक हु़दी ख़्वां (या'नी ऊंटों को तेज़ चलाने के लिये मस्त करने वाले अश्आ़र पढ़ने वाले) थे जिन का नाम **अन्जशा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ था जो कि इन्तिहाई ख़ुश आवाज़ थे (एक सफ़र के दौरान जिस में औ़रतें भी हमराह थीं और सय्यिदुना **अन्जशा** अश्आ़र पढ़ रहे थे इस पर) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इर्शाद फ़रमाया : **"ऐ अन्जशा ! आहिस्ता, नाज़ुक शीशियां न तोड़ देना ।"** (بخاری ج٤ ص١٥٨ حدیث٦٢١١) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी मेरे साथ सफ़र में औ़रतें भी हैं जिन के दिल कच्ची शीशी की त़रह़ कमज़ोर हैं ख़ुश आवाज़ी इन में बहुत जल्द असर करती है और वोह लोगों के गाने से गुनाह की त़रफ़ माइल हो सकती हैं इस लिये अपना गाना बन्द कर दो ।" (मिरआत, जि. 6, स. 443)

इस्लामी बहनें ना'त ख़्वानों की केसिटें न सुनें

मा'लूम हुवा, औ़रतों के दिल नाज़ुक शीशियों की मानिन्द हैं। इन्हें ख़ुश इल्ह़ान ग़ैर मर्दों से तरन्नुम के साथ अश्आ़र नहीं

सुनने चाहिएं। तरन्नुम में एक त़रह़ का जादू होता है और मर्द व औ़रत एक दूसरे का तरन्नुम सुन कर जल्द फ़ितने में पड़ सकते हैं। इसी लिये सगे मदीना عُفِیَ عَنۂ ने मर्दों की आवाज़ में ना'तें सुनने का इस्लामी बहनों को मश्वरतन मन्अ़ किया है। लिहाज़ा इस्लामी बहनों को चाहिये कि वोह मर्द ना'त ख़्वानों से ना'तें बल्कि इन की ऑडियो केसिटें भी न सुनें नीज़ मर्द ना'त ख़्वान की ना'त पढ़ने की त़र्ज़ को भी न अपनाएं क्यूं कि इस त़रह़ दिल में उस ना'त ख़्वान की त़रफ़ मैलान पैदा हो सकता है, शैत़ान को फ़ितने में मुब्तला करते देर नहीं लगती। मर्द व औ़रत (या'नी ग़ैर मह़ारिम) को हर उस फ़े'ल से बचना चाहिये जिस से एक दूसरे का तसव्वुर क़ाइम हो और शैत़ान बहकाए।

क्या इस्लामी बहनें मर्हूम ना'त ख़्वान की ना'तें सुन सकती हैं ?

सुवाल : इस्लामी बहनें फ़ौत शुदा ना'त ख़्वान की केसिटें सुन सकती हैं या नहीं ?

जवाब : फ़ौत शुदा ना'त ख़्वानों की केसिटें सुनने या उन की त़र्ज़ें अपनाने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं कि ब ज़ाहिर अब ''फ़ितने'' का अन्देशा नहीं। म-सलन **दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम निगरान ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वान,**

बुलबुले रौज़ए रसूल ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی **की ना'तों की केसिटें सुनने और इन की त़र्ज़ें अपनाने में ह़रज नहीं ।** हां मर्ह़ूम ना'त ख़्वान की आवाज़ सुनने पर भी अगर किसी इस्लामी बहन के दिल में शैत़ान गन्दे वस्वसे डालता हो तो वोह न सुने।

मुझे म-दनी चेनल ने म-दनी बुरक़अ़ पहना दिया !

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी चेनल की भी क्या बात है ! इस के ज़रीए़ भी मुसल्मानों की इस्लाह़ का सामान हो रहा है, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) की एक इस्लामी बहन का कुछ इस त़रह़ बयान है कि पहले पहल मैं **पर्दा** नहीं करती थी। फिर हमें दा'वते इस्लामी ने **''म-दनी चेनल''** का अ़ज़ीम तोह़फ़ा अ़त़ा किया जिसे देखने की ब-र-कत से मैं और मेरे बच्चों के अब्बू नमाज़ के पाबन्द हो गए। एक दिन म-दनी चेनल पर **''पर्दे की अहम्मिय्यत''** के मौज़ूअ़ पर सुन्नतों भरा बयान जारी था। मेरे बच्चों के अब्बू ने जब वोह बयान सुना तो इतने **मु-तअस्सिर** हुए कि **मुझे म-दनी बुरक़अ़** पहनने की तरग़ीब दिलाई और बिला ज़रूरत बाज़ार वग़ैरा जाने से भी मन्अ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **म-दनी चेनल** की ब-र-कत से मुझे बे पर्दगी से तौबा नसीब हुई और अब मैं कोई दीदा ज़ेब, ग़ैर

मर्दों को **मु-तवज्जेह** करने वाला या مَعَاذَاللّٰہ नंगा सर रखने वाला रस्मी बुरक़अ़ नहीं बल्कि शर-ई पर्दे के मुत़ाबिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ म-दनी बुरक़अ़ पहनती हूं।

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार
म-दनी चेनल देखने वाले बनें परहेज़ गार

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

इस्लामी बहनों के म-दनी चेनल देखने का शर-ई मस्अला

इस्लामी बहनो ! म-दनी चेनल की बहारों के क्या कहने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** देख कर बा'ज़ कुफ़्फ़ार को तो ईमान की दौलत ही नसीब हो गई ! नीज़ न जाने कितने ही बे नमाज़ी, नमाज़ी बन गए, मु-तअ़द्दिद अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** सो फ़ी सदी इस्लामी चेनल है, न इस में मूसीक़ी है न ही औ़रत की नुमाइश। **म-दनी चेनल** में क्या है ? इस में फ़ैज़ाने कुरआन, फ़ैज़ाने ह़दीस, फ़ैज़ाने अम्बिया, फ़ैज़ाने सह़ाबा और फ़ैज़ाने औलिया है। इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें हैं, दुआ़ व मुनाजात में इल्ह़ाह़ो ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इ़श्क़े रसूल में रोने, रुलाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

और तड़पाने वाले रिक्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, रूहानी तिब्बी इलाज, सुन्नतों भरे **म-दनी फूल** और आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब म-दनी बहारें हैं। अल ग़रज़ **म-दनी चेनल** एक ऐसा चेनल है कि इस के ज़रीए इन्सान घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीख सकता है ! हां इस्लामी बहनों को **म-दनी चेनल** देखने से पहले 112 बार ग़ौर कर लेना चाहिये क्यूं कि म-दनी चेनल में अक्सर नौ जवानों ही के मनाज़िर होते हैं और औरत नाज़ुक शीशी है और इसे मा'मूली सी ठेस ही काफ़ी। कहीं مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह बद निगाही के गुनाह में न जा पड़े। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 **सफ़ह़ा** 86 पर फ़रमाते हैं **:** औ़रत का मर्दे अजनबी की त़रफ़ नज़र करने का वोही हुक्म हैं जो मर्द का मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है और येह उस वक़्त है कि औ़रत को यक़ीन के साथ मा'लूम हो कि उस की त़रफ़ नज़र करने से शह्वत नहीं पैदा होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे। (عالمگیری ج۵ ص۳۲۷)

आक़ा की ह़या से झुकी रहती नज़र अक्सर
आंखों पे मेरी बहन लगा क़ुफ़्ले मदीना

औ़रत आ़मिल के पास जाए या नहीं ?

सुवाल : इस्लामी बहन आ़मिलों के पास ता'वीज़ धागे के लिये जाए या नहीं ?

जवाब : अगर घर बैठे इलाज मुम्किन नहीं, तो किसी मह़रम के ज़रीए़ तरकीब बना ले। अगर कोई ऐसा मर्द भी नहीं तो अब **शर-ई पर्दे** की तमाम शराइत़ के साथ किसी **आ़मिला** (औ़रत) के पास ता'वीज़ लेने जाए अगर आ़मिला भी मुयस्सर नहीं या उस से शिफ़ा न हो तो किसी बूढ़े और **नेक आ़मिल** के पास जाए। येह भी न हो सके तो किसी भी मुसल्मान आ़मिल के पास जाए मगर जब भी ब इजाज़ते शर-ई बाहर निकले तो बयान कर्दा **शर-ई पर्दा** और उस की कु़यूदात का लिह़ाज़ ज़रूरी है। **आ़मिल** के साथ लोचदार नर्म **गुफ़्त-गू,** बे तकल्लुफ़ी या तन्हाई हरगिज़ न हो। जो **आ़मिल** औ़रतों के साथ बे तकल्लुफ़ बनता, बात बात पर क़ह्क़हे लगाता, ख़ूब डींगें मारता और अपने कारनामे सुनाता हो ऐसों के पास जाना सख़्त तश्वीशनाक है। और आ़मिल को अगर औ़रत पर ख़ुसूसी तवज्जोह देता, फ़ोन वग़ैरा पर ख़ुद ही राबित़ा करता और इस त़रह़ का पैग़ाम वग़ैरा देता पाएं कि अकेली आओ ताकि अच्छी त़रह़ इलाज किया जा सके, तो ऐसे आ़मिल की छाउं से भी दूर भागें वरना शायद उ़म्र भर पछताना पड़े।

औ़रत का मेकअप करना कैसा ?

सुवाल : औ़रत का बनाव सिंघार करना, चुस्त या बारीक लिबास पहनना कैसा ?

जवाब : घर की चार दीवारी में सिर्फ़ अपने शोहर की ख़ाति़र जाइज़ त़रीक़े पर मेकअप कर सकती है। ब इजाज़ते शर-ई म-सलन मह़ारिम रिश्तेदारों के यहां जाने के मौक़अ़ पर घर से बाहर निकलने के लिये लाली **पावडर** और ख़ुश्बू वग़ैरा लगाना और फ़ेशन के कपड़े पहन कर مَعَاذَاللّٰه ग़ैर मर्दों के लिये जाज़िबे नज़र बनना जैसा कि आज कल आ़म रवाज है येह सख़्त ना जाइज़ व गुनाह है। बारीक दुपट्टा जिस से बालों की रंगत झलके या बारीक कपड़े की जुराबें जिस से पाउं की पिंडलियां चमकें या ऐसे चुस्त लिबास में मल्बूस जिस में जिस्म के किसी उ़ज़्व म-सलन सीने वग़ैरा का उभार नुमायां हो ग़ैर मह़रमों के सामने आना जाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

लिबास के बा वुजूद नंगी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक ह़दीसे पाक में येह भी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोजे़ क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

फ़रमाया : दोज़ख़ियों में दो जमाअ़तें ऐसी होंगी जिन्हें मैं ने (अपने इस अ़हदे मुबारक में) नहीं देखा (या'नी आयिन्दा पैदा होने वाली हैं) इन में एक जमाअ़त उन औ़रतों की है जो पहन कर नंगी होंगी, दूसरों को (अपनी ह़-र-कतों के ज़रीए़) बहकाने वालियां और ख़ुद भी बहकी हुई, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की एक त़रफ़ झुकी हुई कोहानों की त़रह़ होंगे, वोह जन्नत में दाख़िल न होंगी और न उस की ख़ुश्बू पाएंगी और उस की ख़ुश्बू इतनी इतनी दूरी से पाई जाती है। **(صحیح مسلم ص۱۱۷۷ حدیث ۲۱۲۸ مُلَخَّصاً)**

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان मज़्कूरा ह़दीसे पाक के इन अल्फ़ाज़ "जो पहन कर नंगी होंगी" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जिस्म का कुछ ह़िस्सा लिबास से ढकेंगी और कुछ ह़िस्सा नंगा रखेंगी या इतना बारीक कपड़ा पहनेंगी जिस से जिस्म वैसे ही नज़र आएगा येह दोनों उ़यूब आज देखे जा रहे हैं। या, **अल्लाह** की ने'मतों से ढकी होंगी शुक्र से नंगी या'नी ख़ाली होंगी या ज़ेवरों से आरास्ता तक़्वा से नंगी होंगी। और "कोहानों की त़रह़ होंगे" के तह़त फ़रमाते हैं : इस जुम्लए मुबा-रका की बहुत तफ़्सीरें हैं, बेहतर तफ़्सीर येह है कि वोह औ़रतें राह चलते शर्म से सर नीचा न करेंगी बल्कि बे ह़याई

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

से ऊंची गरदन किये सर उठाए हर त़रफ़ देखती, लोगों को घूरती चलेंगी जैसे ऊंट के तमाम जिस्म में कोहान ऊंची होती है ऐसे ही उन के सर ऊंचे रहा करेंगे।

(मिरआत, जि. 5, स. 255, 256)

दिखावे के लिये ज़ेवरात पहनना

सुवाल : औ़रत का दिखावे के लिये ज़ेवर पहनना कैसा ?

जवाब : औ़रत को बत़ौरे फ़ख़्र व तकब्बुर दिखावा करने के लिये ज़ेवर पहनना बाइ़से अ़ज़ाब है। हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम, दाफ़ेए़ रन्जो अलम, साह़िबे जूदो करम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तुम में से जो औ़रत सोने के ज़ेवर पहने जिसे ज़ाहिर करे उसे इस के सबब अ़ज़ाब दिया जाएगा।

(سننُ ابی داوٗد ج٤ ص١٢٦ حدیث ٤٢٣٧)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "ज़ाहिर करे" के तह़्त फ़रमाते हैं : अजनबी मर्दों पर ज़ाहिर करे कि अपना हुस्न और ज़ेवर दूसरों को दिखाए। या फ़ख़्र व गुरूर के लिये दिखलावा करे या ग़रीब औ़रतों को फ़ख़्रिया दिखा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

कर उन्हें दुख पहुंचाए **आख़िरी दो मा'ना ज़ियादा मुनासिब हैं।** क्यूं कि अजनबी मर्दों को चांदी का ज़ेवर दिखाना भी ह़राम है। औ़रतें सोने का ज़ेवर अपनी सहेलियों को फ़ख़्रिया दिखाया करती हैं, उन्हें ह़क़ीर व ज़लील करने के लिये वोह यहां मुराद है। और "अ़ज़ाब दी जाएगी" के तह़्त फ़रमाते हैं : इस फ़ख्र व इज़्हार पर अ़ज़ाब पाएगी न कि सिर्फ़ ज़ेवर पहनने पर। (मिरआत, जि. 6, स. 138)

औ़रत ख़ुश्बू लगाए या न ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन ख़ुश्बू लगा सकती है ?

जवाब : लगा सकती है मगर ग़ैर मह़ारिम तक ख़ुश्बू नहीं पहुंचनी चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि प्यारे प्यारे मीठे मीठे और मुअ़त़्त़र मुअ़त़्त़र सरवर, मदीने के ताजवर, रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रूह़ परवर है : "मर्दाना ख़ुश्बू वोह है कि उस की ख़ुश्बू तो ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर न हो और ज़नाना ख़ुश्बू वोह है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो।" (شمائل محمدیه ص ۱۳۱ حدیث ۲۱۰) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "ज़नाना ख़ुश्बू वोह है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो" के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि औ़रत महक वाली चीज़ इस्ति'माल कर के बाहर न जाए अपने ख़ावन्द के पास ख़ुश्बू मल सकती है यहां कोई पाबन्दी नहीं। (मिरआत, जि. 6, स. 160)

औ़रत ख़ुश्बू लगा कर बाहर न निकले

सुवाल : अगर कोई इस्लामी बहन ख़ुश्बू लगा कर घर से निकले तो उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : इस्लामी बहन अपने घर की चार दीवारी में जहां फ़क़त़ शोहर या मह़ारिम हों वहां हर त़रह़ की ख़ुश्बू इस्ति'माल कर सकती है हां येह एह़तियात़ लाज़िमी है कि देवर व जेठ और दीगर गैर मह़ारिम तक ख़ुश्बू न पहुंचे। बाहर निकलने पर जो औ़रत ऐसी ख़ुश्बू लगाती है कि ग़ैर मर्दों की तवज्जोह का बाइ़स बने उस को तो डर जाना चाहिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : "जब कोई औ़रत ख़ुश्बू लगा कर लोगों में निकलती है ताकि इस की ख़ुश्बू पाई जाए तो येह औ़रत ज़ानिया है।" (سُنَنُ النَّسائی ج۸ص ۱۵۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

ख़ुश्बू लगाने वाली औ़रत की ह़िकायत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़हदे मुबारक में एक औ़रत गुज़र रही थी जिस की खुश्बू आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मह़सूस हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को मारने के लिये दुर्रा उठाया और फ़रमाया : "तुम ऐसी खुश्बू लगा कर निकलती हो जिस की महक मर्दों को मह़सूस होती है। (अगर ब ज़रूरत निकलना भी हो तो) खुश्बू लगा कर न निकला करो।"

(مُصَنَّف عبدالرزاق، ج٤ص٢٨٤حدیث٨١٣٧)

पुर कशिश बुरक़अ़

सुवाल : इस्लामी बहन जदीद डीज़ाइन वाला मोती पिरोया हुवा पुर कशिश बुरक़अ़ पहन कर बाहर निकले या न निकले ?

जवाब : इस में सरासर फ़ितना है कि दिल का रोगी **ख़ूब सूरत** बुरक़ए़ को ताड़ेगा। याद रखिये ! औ़रत का बुरक़अ़ जितना पुर कशिश और डीज़ाइन दार होगा उतना ही फ़ितने का इम्कान भी बढ़ता चला जाएगा। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : औ़रत को लाज़िम है कि लिबासे फ़ाख़िरा (या'नी आ'ला द-रजे के कपड़े पहन कर और) उ़म्दा बुरक़अ़ ओढ़ कर बाहर न जाए कि **भड़क दार बुरक़अ़ पर्दा नहीं बल्कि ज़ीनत है।** (मिरआत, जि. 5, स. 15)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

सुवाल : औ़रत सफे़द या ख़ूब सूरत फ़्लावर चादर के ज़रीए़ अगर मुकम्मल जिस्म छुपा कर निकले तो ?

जवाब : चादर में किसी त़रह़ की कशिश नहीं होनी चाहिये। चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के फ़रमाने आ़ली का ख़ुलासा है कि आ़म औ़रतें जो जाज़िबे नज़र चादर व निक़ाब ओढ़ती हैं येह ना काफ़ी है बल्कि जब वोह सफे़द चादर ओढ़ती या ख़ूब सूरत निक़ाब डालती हैं तो इस से शह्वत को मज़ीद तह़रीक होती है कि शायद मुंह खोलने पर वोह और ज़ियादा ह़सीन नज़र आए! पस सफे़द चादर और ख़ूब सूरत निक़ाब व बुरक़अ़ पहने हुए बाहर जाना औ़रत के ह़क़ में **ह़राम** है। जो औ़रत ऐसा करेगी गुनहगार होगी और उस का बाप भाई, शोहर जो उसे इस की इजाज़त देगा वोह भी उस के साथ गुनाह में शरीक होगा। (کیمیائے سعادت ج۲ص ۵۱۰)

म-दनी बुरक़अ़

सुवाल : तो फिर बुरक़अ़ कैसा हो ?

जवाब : मोटे कपड़े का ढीला ढाला और भद्दे रंग का ख़ैमा नुमा सादा सा बुरक़अ़ हो, "जिस को पहनने वाली के बारे में अन्दाज़ा लगाना दुश्वार हो जाए कि येह जवान है या बूढ़ी।"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابو یعلٰی)

इस्लामी बहनों को तम्बीह

मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को) मोडर्न घरों के मुआ़-मलात, फ़िरंगी तहज़ीब के दिलदादा रिश्तेदारों के ख़यालात और आज कल के ना मुसाइद ह़ालात के मुकम्मल एह़सासात हैं मगर मैं ने इस्लामी अह़कामात अ़र्ज़ किये हैं ताकि शर-ई पर्दे का सह़ीह़ इस्लामी नज़रिया सामने आ जाए। बेशक हर मुसल्मान येह जानता है कि **हमें शरीअ़त के पीछे चलना है, शरीअ़त हमारे पीछे नहीं चलेगी।** इस्लामी बहनों से **म-दनी इल्तिजा** है कि किसी को भी ढीला ढाला भद्दे रंग का बिल्कुल बे कशिश ख़ैमा नुमा **ह़क़ीक़ी म-दनी बुरक़अ़** पहनने पर मजबूर न करें कि कई घरों में सख़्तियां बहुत ज़ियादा हैं, शरीअ़त व सुन्नत के अह़कामात पर अ़मल करने वालों और वालियों के साथ आज कल मुआ़-शरे में अक्सर बेह़द ना रवा सुलूक किया जाता है, जिस के सबब अक्सर इस्लामी बहनें हिम्मत हार जाती हैं। आप की तन्क़ीद से हो सकता है कोई इस्लामी बहन मौजूदा मुआ़-शरे के हाथों मजबूर हो कर **म-दनी माह़ोल** ही से मह़रूम हो जाए। बेशक कितनी ही पुरानी इस्लामी बहन हो और वोह कैसा ही ख़ूब सूरत बुरक़अ़ पहने या मेकअप करे उस पर त़न्ज़ कर के

उस की दिल आज़ारी न करें कि बिला मस्लहते शर-ई मुसल्मान का दिल दुखाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

मह़ल्ले में बुरक़अ़ खोल देना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ इस्लामी बहनें अपनी बिल्डिंग या गली वग़ैरा में पहुंचते ही घर में दाख़िल होने से क़ब्ल बुरक़अ़ उतार देती हैं। क्या येह मुनासिब है ?

जवाब : जब तक घर के अन्दर दाख़िल न हो जाएं उस वक़्त तक बुरक़अ़ तो बुरक़अ़ चेहरे से निक़ाब भी न हटाएं कि गली और बिल्डिंग की सीढ़ियों वग़ैरा पर भी ना मह़रम अफ़राद हो सकते हैं और उन से पर्दा करना ज़रूरी है।

म-दनी बुरक़ए़ में गरमी लगती हो तो......?

सुवाल : गर्मियों के मौसिम में म-दनी बुरक़अ़ पहन कर या मोटी चादर में बदन छुपा कर बाहर निकलने से गरमी लगती हो, शैत़ान वस्वसे डालता हो तो क्या करे ?

जवाब : शैत़ानी वस्वसों की त़रफ़ तवज्जोह न देना भी दाफ़ेए़ वस्वसा है। ऐसे मवाक़ेअ़ पर मौत, क़ब्र व ह़श्र और जहन्नम की सख़्त गरमी को याद कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शर-ई पर्दे की वजह से लगने वाली गरमी फूल मा'लूम होगी। हो सके

तो इस वाक़िए को याद फ़रमा लिया करें : **ग़ज़्वए तबूक** में मौसिम सख़्त गर्म था, इस मौक़अ़ पर **मुनाफ़िक़ीन** बोले : لَا تَنْفِرُوْا فِی الْحَرِّ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इस गरमी में न निकलो । इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا (ऐ महबूब !) तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सब से सख़्त गर्म है । (پارہ ۱۰ التوبہ ۸۱) ख़ुदा की क़सम ! **म-दनी बुरक़अ़** की गरमी बल्कि दुन्या की बड़ी से बड़ी आग भी नारे जहन्नम के मुक़ाबले में कुछ नहीं ।

आक़ा तपते हुए सह़रा में

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ख़ैसमा** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जज़्बा तो देखिये ! **ग़ज़्वए तबूक** के मौक़अ़ पर (आप किसी और मक़ाम से जब) सफ़र से दो पहर के वक़्त अपने बाग़ में तशरीफ़ लाए वहां देखा कि ठन्डा पानी, गर्मा गर्म रोटियां और ख़ूब सूरत बीवियां ह़ाज़िर हैं । फ़रमाया : इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है कि **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **तबूक के तपते हुए सह़रा में हों और मैं बाग़ के अन्दर गर्म रोटियां और ठन्डा पानी इस्ति'माल करूं !** (दूर दराज़ के सफ़र और थकन और सख़्त गरमी के बा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عزّوجلّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

वुजूद) अपने घर में दाख़िल हुए बिग़ैर ही तलवार ले कर चल पड़े और सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों में ह़ाज़िर हो गए। येही वोह ह़ज़रात हैं जिन के सदक़े हम जैसे लाखों गुनहगार बख़्शे जाएंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (नूरुल इरफ़ान, स. 318, रूहुल बयान, जि. 3, स. 475) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

बालों के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : इस्लामी बहन के जो बाल कंघी वग़ैरा के ज़रीए़ जुदा हों उन का क्या करे ?

जवाब : उन बालों को छुपा दे या दफ़्न कर दे। जिन के घरों में नर्म ज़मीन या बाग़ीचा होता है उन के लिये येह काम बहुत आसान है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस उ़ज़्व की त़रफ़ नज़र करना **ना जाइज़** है अगर वोह बदन से जुदा हो जाए तो अब भी उस की त़रफ़ नज़र करना **ना जाइज़** ही रहेगा। (دُرِّمُختار ج۹ ص۶۱۲) ग़ुस्ल ख़ाने या पाख़ाने में मूए ज़ेरे नाफ़ मूंड कर बा'ज़ लोग छोड़ देते हैं ऐसा करना दुरुस्त नहीं बल्कि इन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

को ऐसी जगह डाल दें कि किसी की नज़र न पड़े या ज़मीन में दफ़्न कर दें । औ़रतों को भी लाज़िम है कि कंघा करने में या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ग़ैर मर्द) की नज़र न पड़े ।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 91, 92, मुलख़्ख़सन)

बालों के बारे में एह़तियातें

आज कल शायद नाक़िस ग़िज़ाओं और त़रह़ त़रह़ के कीमियावी साबुनों और शेम्पूओं वग़ैरा के सबब बाल झड़ने की शिकायत आ़म है, जिस के घर में ना मह़रम साथ रहते हों या मेहमानों की आ-मदो रफ़्त हो उन इस्लामी बहनों को ह़म्माम वग़ैरा से अपने बाल चुन लेने में ज़ियादा एह़तियात़ करनी चाहिये । नीज़ जब भी ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हों साबुन पर चिपके हुए बाल भी निकाल लिया करें । ग़ुस्ल के बा'द इस्लामी भाइयों को भी अपने बाल निकाल लेने चाहिएं क्यूं कि हो सकता है पर्दे के हि़स्से या'नी रानों वग़ैरा के बाल भी साबुन पर चिपके हुए हों ।

औ़रत का सर मुंडवाना

सुवाल : औ़रत का सर मुंडवाना कैसा ?

जवाब : ह़राम है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 664, मुलख़्ख़सन)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

औ़रत का मर्दाना बाल कटवाना

सुवाल : औ़रत का मर्दों की त़रह़ बाल कटवाना कैसा ?

जवाब : ना जाइज़ व गुनाह है।

वोह कफ़न फाड़ कर उठ बैठी

ग़ालिबन शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1414 सि.हि. का आख़िरी जुमुआ़ था। रात को कोरंगी (बाबुल मदीना कराची) में मुन्अ़क़िद होने वाले एक अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में एक नौ जवान से सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की मुलाक़ात हुई, उस ने कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर) बयान दिया कि मेरे एक अ़ज़ीज़ की जवान बेटी अचानक फ़ौत हो गई। जब हम तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर पलटे तो मर्ह़ूमा के वालिद को याद आया कि उस का एक हेंड बेग जिस में अहम काग़ज़ात थे वोह ग़-लत़ी से मय्यित के साथ क़ब्र में दफ़्न हो गया है। चुनान्चे ब अम्रे मजबूरी दोबारा क़ब्र खोदनी पड़ी, जूं ही क़ब्र से सिल हटाई ख़ौफ़ के मारे हमारी चीख़ें निकल गईं क्यूं कि **जिस जवान लड़की की कफ़न पोश लाश को अभी अभी हम ने ज़मीन पर लिटाया था वोह कफ़न फाड़ कर उठ बैठी थी और वोह भी कमान की**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

त़रह़ टेढ़ी ! आह ! उस के सर के बालों से उस की टांगें बंधी हुई थीं और कई ना मा'लूम छोटे छोटे ख़ौफ़नाक जानवर उस से चिमटे हुए थे । येह दहशत नाक मन्ज़र देख कर ख़ौफ़ के मारे हमारी घिग्गी बंध गई । और हेंड बेग निकाले बिग़ैर जूं तूं मिट्टी फेंक कर हम भाग खड़े हुए। घर आ कर मैं ने अ़ज़ीज़ों से उस लड़की का जुर्म दरयाफ़्त किया तो बताया कि उस में फ़ी ज़माना मा'यूब समझा जाने वाला कोई जुर्म तो नहीं था, अलबत्ता आज कल की आ़म लड़कियों की त़रह़ येह भी फ़ेशन एबल थी और पर्दा नहीं करती थी, अभी इन्तिक़ाल से चन्द रोज़ पहले रिश्तेदारों में शादी थी तो उस ने फ़ेन्सी बाल कटवा कर बन संवर कर आ़म औ़रतों की त़रह़ शादी की तक़रीब में बे पर्दा शिर्कत की थी ।

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
वरना सुन लो क़ब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

कमज़ोर बहाने

क्या उस **बद नसीब फ़ेशन परस्त लड़की** की दास्ताने वह़्शत निशान पढ़ कर हमारी वोह इस्लामी बहनें दर्से इब्रत ह़ासिल नहीं करेंगी जो शैत़ान के उक्साने पर इस त़रह़ के ह़ीले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

बहाने करती रहती हैं कि मेरी तो मजबूरी है, हमारे घर में कोई पर्दा नहीं करता, ख़ानदान के रवाज को भी देखना पड़ता है, हमारा सारा ख़ानदान पढ़ा लिखा है, सादा और बा पर्दा लड़की के लिये हमारे यहां कोई रिश्ता भी नहीं भेजता वग़ैरा वग़ैरा। **क्या ख़ानदानी रस्मो रवाज और नफ़्स की मजबूरियां आप को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से नजात दिला देंगी ?** क्या आप बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ की "खोखली मजबूरियां" बयान कर के छुटकारा ह़ासिल करने में काम्याब हो जाएंगी ? अगर नहीं और यक़ीनन नहीं तो फिर आप को हर ह़ाल में बे पर्दगी से तौबा करनी होगी। **याद रखिये !** लौह़े मह़फ़ूज़ पर जिस का जोड़ा जहां लिखा होता है वहीं शादी होती है। और नहीं लिखा होता तो शादी नहीं होती जैसा कि आए दिन कई पढ़ी लिखी मॉडर्न कुंवारी लड़कियां पलक झपक्ते में मौत का शिकार हो कर रह जाती हैं बल्कि बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि **दुल्हन** अपनी "रुख़्सती" से क़ब्ल ही मौत के घाट उतर जाती है और उसे रोशनियों से जग-मगाते, ख़ुश्बूएं महकाते

हुज्रए अ़रूसी में पहुंचाने के बजाए कीड़े मकोड़ों से लबरेज़ तंगो तारीक क़ब्र में उतार दिया जाता है।

तू ख़ुशी के फूल लेगी कब तलक

तू यहां ज़िन्दा रहेगी कब तलक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औ़रत का दरज़ी को नाप देना कैसा ?

सुवाल : इस्लामी बहन का अपने कपड़े की सिलाई के लिये ना महरम दरज़ी को अपने बदन के ज़रीए़ नाप देना कैसा है ?

जवाब : ह़राम और **जहन्नम** में ले जाने वाला काम है। **दरज़ी** भी सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। क्यूं कि बिग़ैर निगाहें जमाए और बदन पर हाथ लगाए बिग़ैर नाप नहीं लिया जा सकता। मुम्किन हो तो इस्लामी बहन ही से कपड़े सिलवाए, येह न हो सके तो फिर घर की ख़ातून नाप ले और कोई महरम जा कर **दरज़ी** को सिलवाने के लिये दे आए। इस्लामी बहन बात बात पर घर से बाहर न दौड़ती फिरे। सिर्फ़ शर-ई मस्लहत की सूरत में पर्दे की तमाम कुयूदात के साथ बाहर निकले।

भाई और भाभी की इन्फ़िरादी कोशिश

इस्लामी बहनो ! शर-ई पर्दे पर इस्तिक़ामत पाने और घर में सुन्नतों भरा म-दनी माहोल बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, एक समझदार भाई ने अपनी बहन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की जिस के नतीजे में उस की इस्लाह़ का सामान हुवा । येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये, चुनान्चे **बाबुल** इस्लाम (सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि मैं मुख़्तलिफ़ बुराइयों और बे पर्दगियों में मुब्तला थी, **नीज़** मेरी **ज़बान** के क़ैंची की त़रह़ चलने की वजह से घर वाले वग़ैरा मुझ से बेज़ार रहते । ख़ुश क़िस्मती से मेरे भाई और भाभी दोनों **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार महके महके म-दनी माहोल से वाबस्ता थे । वोह मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते मगर मैं सुनी अनसुनी कर देती । आख़िर एक दिन उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** रंग ले आई और **मुझे रबीउ़न्नूर शरीफ़** के पुर बहार मौसिम में होने वाले इस्लामी बहनों के **इज्तिमाए़ मीलाद** में शिर्कत की सआ़दत मिल गई । वहां होने वाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

सुन्नतों भरे बयान ने मुझे हिला कर रख दिया, **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के बाइस मेरी आंखों से बे इख़्तियार आंसू बह निकले, मैं ने ख़ूब गिड़गिड़ा कर **रब्बे काफ़ी व शाफ़ी** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगी। उस **इज्तिमाए मीलाद** में मुझे जो रूहानी सुकून मिला वोह पहले कभी नसीब नहीं हुवा था। इस के बा'द मैं ने इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत शुरूअ़ कर दी, जिस पर शुरूअ़ शुरूअ़ में मेरे बच्चों के अब्बू ने मुख़ा-लफ़त की मगर ख़ुश क़िस्मती से जब उन्हों ने ख़ुद इस्लामी भाइयों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की, उन्हें भी म-दनी सोच नसीब हो गई और अब वोह राज़ी ख़ुशी मुझे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी काम की इजाज़त दे देते हैं। यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई और भाभी की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से हमारे घर में भी **म-दनी माहोल** क़ाइम हो गया।

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का
क़रीब आ के देखो ज़रा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

घर वालों की इस्लाह़ कीजिये

इस्लामी बहनो ! हम सभी को चाहिये कि अपने घर वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहें बल्कि अ़वाम के मुक़ाबले में घर वालों पर ज़ियादा तवज्जोह दें। खु़सूसन वालिद को चाहिये कि खु़द भी आ'माले सालिह़ा बजा लाए और अपने बच्चों और उन की अम्मी को भी इस्लाह़ के म-दनी फूल फ़राहम करता रहे। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की आयत 6 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं

इस के तह़्त **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में है, **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर, घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमा-न-अ़त कर के और उन्हें इ़ल्मो अदब सिखा कर (अपनी जानों और अपने घर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

हिजड़े से भी पर्दा

सुवाल : क्या इस्लामी बहन का हिजड़े (खुसरे) से भी पर्दा है ?

जवाब : जी हां। हिजड़ा या'नी मुख़न्नस भी मर्द ही के हुक्म में है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** हिजड़ा मर्द है जमाअ़त में येह मर्दों ही की सफ़ में खड़ा होगा। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 1, स. 170, मुलख़्ख़सन)

मुख़न्नस किसे कहते हैं ?

सुवाल : मुख़न्नस हिजड़ा (खुसरा) किसे कहते हैं ?

जवाब : मुख़न्नस अ़-रबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिस का मा'ना है वोह मर्द जिस की चाल, ढाल और अन्दाज़ में औ़रतों जैसी नरमी और लचक हो। (مستفاد از اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ۹ ص ۳۲٤) शारेह़े मुस्लिम अ़ल्लामा न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** "**मुख़न्नस** वोह होता है जो आ़दात व अत़्वार, कलाम व गुफ़्तार (या'नी बोलने) और ह़-रकात व स-कनात में औ़रतों के मुशाबेह (या'नी मिस्ल) हो बसा अवक़ात तो किसी का येह अन्दाज़ फ़ित़री त़ौर पर होता है और बा'ज़ लोग अज़ ख़ुद येह अन्दाज़ इख़्तियार करते हैं।" (شرح مسلم للنووی ج ۲ ص ۲۱۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

हिजड़ा पन से बचने की ताकीद

सुवाल : क्या हिजड़े को "हिजड़ा पन" से बचना होगा ?

जवाब : जी हां । अगर फ़ित्री तौर पर किसी की चाल ढाल या आवाज़ वग़ैरा औ़रतों जैसी हो तो उस को चाहिये कि वोह मर्दाना अन्दाज़ इख़्तियार करने के लिये इस की मश्क़ करे जिस की आवाज़ और ह़-रकात व स-कनात वग़ैरा क़ुदरती तौ़र पर ही औ़रतों जैसी हो उस का अपना कोई क़ुसूर नहीं और बदलने की कोशिश के बा वुजूद अन्दाज़ बर क़रार रहे तो शरअ़न उस की गिरिफ़्त नहीं ।

(**فیض القدیر ج ٥ ص٣٤٦**, नुज़्हतुल क़ारी, जि. 5, स. 537)

नक़्ली हिजड़ा

सुवाल : क्या नक़्ली हिजड़ा बनना गुनाह है ?

जवाब : क्यूं नहीं ! अगर कोई अज़ ख़ुद ज़नाना अन्दाज़ अपनाता या'नी हिजड़ा बनता है तो गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُما से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई मर्दों में से **मुख़न्नसों** (या'नी औ़रतों की वज़्अ़ क़त़्अ़ इख़्तियार करने वालों) पर और उन औ़रतों पर जो मर्दों की वज़्अ़ क़त़्अ़ इख़्तियार

करती हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इन को अपने घरों से निकाल दो। اِلخ (بخاری ج۴ ص۳۴۷ حدیث ۶۸۳۴)

देखा आप ने! हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **मुख़न्नसों** पर ला'नत फ़रमाई और इन को घरों से निकाल देने का हुक्म फ़रमाया।

जो मुख़न्नस न हो उस को हिजड़ा कह कर पुकारना कैसा ?

सुवाल : जो हिजड़ा न हो उसे हिजड़ा कह कर पुकारना कैसा है ?

जवाब : इस में मुसल्मान की दिल आज़ारी, गुनहगारी और अ़ज़ाबे नार की ह़क़दारी है। बल्कि इस्लामी अ़दालत में नालिश (केस) करने की सूरत में 20 कोड़े की सज़ा दी जा सकती है। चुनान्चे एक ह़दीसे पाक में सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह भी इर्शाद है : अगर कोई किसी को कहे : **"ओ हिजड़े !"** तो उसे बीस कोड़े मारो। (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۳ ص۱۴۱ حدیث۱۴۶۷)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "**मुख़न्नस** वोह है जिस के आ'ज़ा में नरमी, आवाज़ औ़रतों की सी हो और औ़रतों की त़रह़ रहता हो, किसी को **मुख़न्नस**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

(हिजड़ा, खुसरा) कहने में उस की इहानत (तौहीन) है जिस पर हत्के इ़ज़्ज़त का दा'वा हो सकता है और येह सज़ा (जो ह़दीसे पाक में बयान हुई) जारी हो सकती है यूंही अगर किसी से कहा ओ शराबी ! ओ ज़िन्दीक़ ! ओ लूत़ी ! ओ सूदख़ोर ! ओ दय्यूस ! ओ ख़ाइन ! ओ चोरों की मां ! इन सब में येही सज़ा हो सकती है।" (मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 5, स. 326)

मुख़न्नस को हिजड़ा कह कर बुलाना

सुवाल : जो फ़ित़री त़ौर पर हो ही हिजड़ा, उस को "हिजड़ा" कह कर बुलाया जाए या नहीं ?

जवाब : बिला इजाज़ते शर-ई ऐसा न किया जाए क्यूं कि वोह शरमिन्दा होगा, दिल भी दुख सकता है, जिस त़रह़ बिला ज़रूरत नाबीना को अन्धा, पस्ता क़द को ठिगना और दराज़ क़द को लम्बा कह कर पुकारने की शरअ़न मुमा-न-अ़त है यहां भी इसी त़रह़ बल्कि यहां दिल आज़ारी का पहलू बहुत ज़ियादा है।

हिजड़ों का किरदार

सुवाल : हिजड़े के किरदार के बारे में आप क्या कहते हैं ?

जवाब : हमारे यहां पाए जाने वाले हिजड़ों में बा'ज़ मुख़न्नस होते हैं और बा'ज़ **तीसरी जिन्स** से तअ़ल्लुक़ रखते हैं जिन्हें खुन्सा

या **ख़ुन्सा मुश्किल** कहा जाता है। इन में बा'ज़ शरीफ़ और ख़ुदा तर्स होते हैं जब कि बा'ज़ गदा-गरी का पेशा अपनाते, नाच दिखाते, बदकारी करवाते और इन नापाक ज़राएअ़ से ह़राम रोज़ी कमाते, खाते और ख़ुद को जहन्नम का ह़क़दार बनाते हैं। लिहाज़ा ख़बरदार! ऐसे अफ़राद को हरगिज़ अपने घरों में दाख़िल न होने दिया जाए और न ही उन्हें भीक दे कर गुनाहों भरी रविश पर इन की मुआ़-वनत (या'नी इमदाद) की जाए कि पेशावर गदागर को ख़ैरात देना भी गुनाह है।

सुवाल : बसा अवक़ात तो हिजड़े जान को आ जाते हैं और कुछ लिये बिग़ैर जाने का नाम नहीं लेते ख़ुसूसन शादी बियाह या बच्चे की पैदाइश के मवाक़ेअ़ पर बहुत ज़िद करते हैं और उन्हें कुछ न दें तो येह हत्क आमेज़ रविय्या अपनाते हैं ऐसे मौक़अ़ पर क्या किया जाए ?

जवाब : ह़त्तल इम्कान इन से जान छुड़ाई जाए और अगर वाक़ेई उन के त़र्ज़े अ़मल से रुस्वाई का सामना हो तो उन को ख़ामोश कराने की निय्यत से कुछ देना देने वाले के लिये जाइज़ होगा कि ह़दीसों से साबित है कि अगर कोई शाइ़र किसी की हजू में अश्आ़र लिख कर उस की इ़ज़्ज़त उछालता हो तो उसे ख़ामोश करवाने के लिये कुछ देना जाइज़ है गोया कि येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

देना **रिश्वत** है लेकिन ऐसे मौक़अ़ पर रिश्वत देना जाइज़ है। मगर लेने वाले के लिये बहर ह़ाल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

तीसरी जिन्स या'नी ख़ुन्सा के बारे में अहम मा'लूमात

सुवाल : मुख़न्नस का तो समझ में आ गया कि येह जिस्मानी ए'तिबार से मर्द ही होता है। मगर अभी आप ने ''तीसरी जिन्स'' या'नी **ख़ुन्सा** और **ख़ुन्सा मुश्किल** का तज़्किरा किया तो येह भी बता दीजिये कि इन की ता'रीफ़ और अ़लामात क्या हैं ?

जवाब : मर्द व औ़रत के साथ साथ एक तीसरी जिन्स भी है कुतुबे फ़िक़्ह में इस जिन्स की ता'रीफ़ कुछ यूं बयान की गई है : जिस में मर्द व औ़रत दोनों की शर्मगाहें हों वोह ख़ुन्सा कहलाता है। (**محیط برھانی ج۲۳ص ۴۰۴**) फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने **ख़ुन्सा** की ता'रीफ़ में येह भी शामिल किया, या'नी वोह भी ख़ुन्सा कहलाता है कि जो दोनों शर्मगाहों में से कोई सी भी अ़लामत न रखता हो बल्कि सिर्फ़ आगे की जानिब एक सूराख़ हो जिस से क़ज़ाए ह़ाजत करता हो। (تبیین الحقائق ج۷ص ۴۴۰، البحر الرائق ج۹ص ۳۳۴) ''**बदाइउ़स्सनाएअ़**'' में **ख़ुन्सा** के मु-तअ़ल्लिक़ इ़बारत का ख़ुलासा है : अगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

बच्चे में मर्द व औरत दोनों की शर्मगाहें हों तो अगर वोह मर्द वाली शर्मगाह से पेशाब करता हो तो उसे मर्द और अगर औरत वाली से करे तो औरत क़रार दिया जाएगा और बक़िय्या उ़ज़्व को ज़ाइद क़रार दिया जाएगा। अगर दोनों जगहों से पेशाब आता हो तो जिस से पहले पेशाब करे वोही उस का अस्ल मक़ाम है म-सलन पहले औरत वाले मक़ाम से पेशाब करे तो उस को औरत ठहराएंगे। अगर दोनों जगहों से ब-यक वक़्त पेशाब करे तो उस की जिन्स की **ता'यीन** (या'नी येह तै़ करना कि मर्द है या औरत) काफ़ी दुश्वार है और ऐसे फ़र्द को **ख़ुन्सा मुश्किल** कहते हैं। अलबत्ता बालिग़ होने के बा'द अगर अ़लामते मर्द से कोई अ़लामाते ज़ाहिर हो म-सलन दाढ़ी निकल आए तो शरीअ़त के अह़काम पर अ़मल करने के तअ़ल्लुक़ से उसे मर्द क़रार दिया जाएगा और अगर औरतों वाली कोई अ़लामत ज़ाहिर हो म-सलन पिस्तान (छातियां) निकल आएं तो उसे औरत क़रार दे कर उस पर औरतों वाले मसाइल लागू किये जाएंगे। (مُلَخَّص از بَدائعُ الصَّنائع ج٦ ص٤١٨) और अगर बालिग़ होने के बा'द सिर्फ़ मर्द वाली या सिर्फ़ औरत वाली अ़लामात ज़ाहिर होने के बजाए दोनों त़रह़ की अ़लामात ज़ाहिर हों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

म-सलन दाढ़ी भी निकल आए और पिस्तान भी तो ऐसी सूरत में भी उसे **खुन्सा मुश्किल** क़रार देंगे। (فتاوی شامی ج۱۰ص۴۷۸)

एक हीजड़े की मग़्फ़िरत की ह़िकायत

हीजड़े (मुख़न्नस, ज़न्खे़, खुन्सा) से उ़मूमन लोग नफ़रत करते और उसे ह़क़ीर जानते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिये कि येह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा है और उसी ने इसे पैदा फ़रमाया है और **हीजड़े** को भी चाहिये कि गुनाहों और **नाच गानों** जैसे ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम से परहेज़ करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहते हुए सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारे। आइये एक **खुश नसीब हीजड़े की ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, शायद हर हीजड़े को उस पर रश्क आएगा कि काश ! मेरे साथ भी ऐसा ही हो। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद स-क़फ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने एक जनाज़ा देखा जिसे तीन मर्द और एक ख़ातून ने उठा रखा था, ख़ातून की जगह मैं ने उठा लिया, नमाज़े जनाज़ा की अदाएगी और तदफ़ीन के बा'द मैं ने उस ख़ातून से मा'लूम किया : मर्हूम से आप का क्या रिश्ता था ? बोली : मेरा बेटा था। पूछा : पड़ोसी वग़ैरा जनाज़े में क्यूं नहीं आए ? कहा : दर अस्ल मेरा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर जियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

फ़रज़न्द **मुख़न्नस** (या'नी ख़ुन्सा, हीजड़ा) था। इस लिये लोगों ने इस के जनाज़े में शिर्कत को **अहम्मिय्यत** नहीं दी। सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَمِیْد फ़रमाते हैं : मुझे उस ग़मज़दा मां पर बड़ा रह़्म आया, मैं ने उसे कुछ रक़म और ग़ल्ला वग़ैरा पेश किया। उसी रात सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आदमी चौदहवीं के चांद की त़रह़ चेहरा चमकाता हुवा मेरे ख़्वाब में आया और शुक्रिया अदा करने लगा, मैं ने पूछा : مَن اَنتَ؟ या'नी आप कौन हैं ? बोला : मैं वोही **मुख़न्नस** हूं जिसे आज आप ने दफ़्न किया है, लोगों के मुझे ह़क़ीर समझने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझ पर रह़्म फ़रमाया। (الرِّسالۃُ القُشَیرِیّہ ص۱۷۳ مُلَخَّصاً)

दुल्हन के क़दमों का धोवन छिड़कना कैसा ?

सुवाल : दुल्हन के पाउं धो कर उस का पानी घर के चारों कोनों में छिड़कना कैसा है ?

जवाब : मुस्तह़ब है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : दुल्हन को बियाह कर लाएं तो मुस्तह़ब है कि उस के पाउं धो कर मकान के चारों गोशों में छिड़कें इस से ब-र-कत होती है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 2, स. 595, مفاتیح الجنان شرح شرعۃ الاسلام ص۴۴۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

नज़र के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : सुना है औ़रत पर जो पहली नज़र पड़ी वोह मुआ़फ़ है येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : वोह पहली नज़र मुआ़फ़ है जो औ़रत पर बे इख़्तियार पड़ गई और फ़ौरन हटा ली। क़स्दन डाली जाने वाली पहली नज़र भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्दों को निगाहों की ह़िफ़ाज़त की ताकीद करते हुए पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 30 में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ (پ ۱۸ النور ۳۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें।

औ़रतों के लिये इर्शादे कुरआनी है :

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ (پ ۱۸ النور ۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुसल्मान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

"ज़ैनब" के चार हुरूफ़ की निस्बत से नज़र के बारे में 4 अहादीसे मुबा-रका

नज़र फैर लो

﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अचानक नज़र पड़ जाने के **मु-तअ़ल्लिक़** दरयाफ़्त किया : तो इर्शाद फ़रमाया : अपनी निगाह फैर लो।

(صَحِیح مُسلِم ص ۱۱۹۰ حدیث ۲۱۵۹)

जान बूझ कर नज़र मत डालो

﴿2﴾ सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से फ़रमाया : एक **नज़र** के बा'द दूसरी **नज़र** न करो (या'नी अगर अचानक बिला क़स्द किसी औ़रत पर नज़र पड़ी तो फ़ौरन नज़र हटा ले और दोबारा नज़र न करे) कि पहली **नज़र** जाइज़ है और दूसरी **नज़र** जाइज़ नहीं।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج ۲ ص ۳۵۸ حدیث ۲۱۴۹)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

नज़र की ह़िफ़ाज़त की फ़ज़ीलत

﴾3﴿ ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : जो मुसल्मान किसी औ़रत की ख़ूबियों की त़रफ़ पहली बार नज़र करे (या'नी बिला क़स्द) फिर अपनी आंख नीची कर ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी इ़बादत अ़त़ा फ़रमाएगा, जिस की वोह लज़्ज़त पाएगा।

(مُسنَد اِمام احمد بن حَنبل ج۸ص۲۹۹حدیث۲۲۳٤۱)

इब्लीस का ज़हरीला तीर

﴾4﴿ **अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़लावत निशान है कि ह़दीसे क़ुदसी है : **नज़र** इब्लीस के तीरों में से एक ज़ह्र में बुझा हुवा तीर है पस जो शख़्स मेरे ख़ौफ़ से इसे तर्क कर दे तो मैं उसे ऐसा ईमान अ़त़ा करूंगा जिस की मिठास वोह अपने दिल में पाएगा। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانی ج۱۰ص۱۷۳حدیث۱۰۳٦۲)

आंखों में आग भर दी जाएगी

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी। (مُکاشَفَۃُ القُلوب ص۱۰)

आग की सलाई

हज़रते अ़ल्लामा **अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान** बिन जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : औरत के मह़ासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़ह्‌र में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की ह़िफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत **आग की सलाई** फैरी जाएगी । (بحرُالدُّموع ص۱۷۱)

नज़र दिल में शह्‌वत का बीज बोती है

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "जो आदमी अपनी आंख को बन्द करने पर क़ादिर नहीं होता वोह अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त भी नहीं कर सकता" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "अपनी **नज़र** की ह़िफ़ाज़त करो येह दिल में शह्‌वत का बीज बोती है, फ़ितने के लिये येह काफ़ी है" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पूछा गया कि ज़िना की इब्तिदा कैसे होती है ? आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "**देखने** और ख़्वाहिश करने से" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शैत़ान कहता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاخبار)

है **नज़र** मेरा पुराना तीर और कमान है जो ख़ता नहीं होता ।" (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص ۱۲۵) ۞ मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं **:** "पहले **नज़र** बहक्ती है फिर दिल बहक्ता है फिर सित्र बहक्ता है ।" (अन्वारे रज़ा, स. 391, मुलख़्ख़सन) ۞ यक़ीनन **आंखों का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने ही में दोनों जहां की भलाई है ।

आंख उठती तो मैं झुंझुला के पलक सी लेता
दिल बिगड़ता तो मैं घबरा के संभाला करता

औ़रत की चादर भी मत देखो

हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ज़ियाद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं **:** अपनी **नज़र** को औ़रत की चादर पर भी न डालो क्यूं कि **नज़र** दिल में **शह्वत** पैदा करती है ।

(حلیۃ الاولیاء ج۲ ص ۲۷۷)

बद निगाही कर बैठे तो क्या करे ?

सुवाल : अगर किसी की आंख बहक जाए और (मर्द) औ़रत से (या औ़रत मर्द से) **बद निगाही** कर बैठे तो क्या करे ?

जवाब : फ़ौरन आंखों को बन्द कर ले या नज़र वहां से हटा ले और मुम्किन हो तो वहां से हट जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

बारगाह में बसद नदामत गिड़गिड़ा कर तौबा करे और अगर मर्द के साथ ऐसा हुवा हो तो वोह अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ येह दुआ भी पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ النِّسَاءِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं औ़रत के फ़ितने और अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूं ।

गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा

जब भी गुनाह सरज़द हो जाए तो कोई नेकी कर लेनी चाहिये म-सलन दुरूद शरीफ़, कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा पढ़ ले । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मुझे नसीह़त करते हुए **सुल्त़ाने दो जहान,** मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी तुझ से कोई बुरा अ़मल सरज़द हो जाए, फिर तू इस के बा'द कोई नेक काम कर ले, तो येह नेकी उस बुराई को मिटा देगी । मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहना नेकियों में से है ? फ़रमाया : "येह तो अफ़्ज़ल तरीन नेकी है ।" (مُسند اِمام احمد ج۸ص۱۱۳حدیث۲۱۵۴۳)

तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है

येह ह़दीसे पाक पढ़ कर مَعَاذَاللّٰہ कोई येह न समझे कि बहुत ज़बर दस्त नुस्ख़ा हाथ आ गया ! अब तो ख़ूब गुनाह करते रहेंगे और لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह लिया करेंगे तो मिट जाएंगे। खुदा की क़सम ! येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है। इस इरादे से गुनाह करना कि बा'द में तौबा कर लूंगा येह अशद कबीरा या'नी सख़्त तरीन कबीरा गुनाह है। बल्कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان **नूरुल इरफ़ान सफ़ह़ा** 376 पर **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 9 के तह़्त फ़रमाते हैं **: "तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है।"** यहां वोह लोग भी इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बा'द में मुआ़फ़ी मांग लेने के इरादे से बिग़ैर इजाज़त दूसरों की चीज़ें इस्ति'माल कर डालते हैं। तौबा के लिये नदामत बहुत ज़रूरी है, नदामत के भी क्या ख़ूब अन्दाज़ होते हैं चुनान्चे

एक आंख वाला आदमी

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में एक मर्तबा क़ह़त़ पड़ा,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

लोगों ने आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में दर-ख़्वास्त की, **या कलीमल्लाह !** दुआ फ़रमाइये ताकि बारिश हो । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे साथ पहाड़ पर चलो । सब लोग साथ चल पड़े तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ए'लान फ़रमाया : "मेरे साथ कोई ऐसा शख़्स न आए जिस ने कोई गुनाह किया हो ।" येह सुन कर सारे लोग वापस चले गए सिर्फ़ **एक आंख वाला** एक आदमी साथ चलता रहा । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने मेरी बात नहीं सुनी ? अ़र्ज़ की : सुनी है । फ़रमाया : क्या तुम बिल्कुल बे गुनाह हो ? अ़र्ज़ की : **या कलीमल्लाह !** मुझे अपना और कोई जुर्म तो याद नहीं, अलबत्ता एक बात का तज़्किरा करता हूं, फ़रमाया : वोह क्या ? अ़र्ज़ की : एक दिन मैं ने गुज़र गाह पर किसी की क़ियाम गाह में **एक आंख** से झांका तो कोई खड़ा था । किसी के घर में इस त़रह़ झांकने का मुझे बहुत क़लक़ (या'नी सदमा) हुवा, मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठा, **मुझ पर नदामत ग़ालिब आई और जिस आंख ने झांका था उस को निकाल कर फेंक दिया !** इर्शाद फ़रमाइये ! अगर मेरा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

वोह अ़मल गुनाह है तो मैं भी चला जाता हूं । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को साथ ले लिया । फिर पहाड़ पर पहुंच कर आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** से बारिश की दुआ़ करो ! उस ने यूं दुआ़ मांगी : "या कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ ! या कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ ! तेरा ख़ज़ाना कभी ख़त्म नहीं होता और बुख़्ल तेरी सिफ़त नहीं, अपने फ़ज़्लो करम से हम पर पानी बरसा दे ।" फ़ौरन बारिश हो गई और दोनों ह़ज़रात भीगते हुए पहाड़ से वापस तशरीफ़ ले आए । (روض الرّياحين ص٢٩٥) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मा'लूम हुवा कि गुनाह पर नदामत बहुत **अहम्मिय्यत** रखती है । ह़दीसे पाक में है : اَلنَّدَمُ تَوبَةٌ या'नी शरमिन्दगी तौबा है । (اِبن ماجه ج ٤ ص ٤٩٢ حديث ٤٢٥٢) आह ! हम दिन में बीसियों, सेंकड़ों, हज़ारों गुनाह करते हैं मगर नदामत तो कुजा हमें इस का एह़सास तक नहीं होता ।

कोई हफ़्ता, कोई दिन या कोई घन्टा मेरा बल्कि
कोई लम्ह़ा गुनाहों से नहीं ख़ाली गया होगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए ! नदामत से

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने से कम मर्तबा फ़र्द से दुआ़ करवाना अम्बिया व मुर-सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का त़रीक़ा रहा है, यक़ीनन नबी का द-रजा उम्मती से बड़ा होता है, फिर भी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने उम्मती से दुआ़ करवाई, अफ़्ज़लुल अम्बिया होने के बा वुजूद हमारे मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़म्रे की इजाज़त देते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया : ऐ मेरे भाई ! हमें भी अपनी दुआ़ में शरीक करना। (ابن ماجه ج٣ ص٤١١ حديث ٢٨٩٤) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मदीने की गलियों में म-दनी मुन्नों से फ़रमाते : "बच्चो ! दुआ़ मांगो उ़मर बख़्शा जाए।" ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सय्यिदी व मुर्शिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यहां मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا وَّتَكْرِيْمًا में रोज़ाना मीलाद शरीफ़ की मह़फ़िल होती थी मैं ने बीसियों मर्तबा देखा कि इख़्तिताम पर किसी न किसी को दुआ़ करवाने का हुक्म फ़रमा देते, ख़ुद दुआ़ न

करवाते। यहां मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ वाले लोगों और ज़िम्मेदार मुबल्लिग़ाओं के लिये कितना प्यारा दर्स है कि कभी किसी महफ़िल में इन्हें दुआ़ करवाने की सआ़दत न मिले तो रन्जीदा न हों न ही सरे मह़फ़िल दुआ़ करवाना अपना ह़क़ तसव्वुर करें। कोई भी दुआ़ करवाए, आमीन कह कर खु़शदिली के साथ शरीके दुआ़ हों और दुआ़ की ब-र-कतें ह़ासिल करें, बारगाहे इलाही में लच्छेदार अल्फ़ाज़ और तुम-तुराक़ से मांगी हुई दुआ़ ही क़बूल होती है ऐसा नहीं वहां तो टूटे हुए दिल देखे जाते हैं।

यूं तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो
येह टूटे हुए दिल ही ख़ास उन की कमाई है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मैं गुनाहों की दलदल से निकल आई

इस्लामी बहनो ! सिदक़े दिल से मांगी जाने वाली दुआ़एं **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की मेह्रबानी से क़बूल होतीं, इल्तिजाएं सुनी जातीं और मुरादें बर आती हैं चुनान्चे **पंजाब** (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है कि **दा 'वते इस्लामी** के

महके महके **म-दनी माहोल** में आने से पहले मैं **गुनाहों की दलदल** में बुरी त़रह़ फंसी हुई थी, दिल अगर्चे गुनाहों से बेज़ार हो चुका था मगर **ख़लासी** की कोई राह दिखाई न देती थी, मैं इ़ल्मे दीन से बिल्कुल कोरी थी, अक्सर कुछ इस त़रह़ दुआ़ मांगा करती : **"ऐ मेरे परवर्द गार** عَزَّوَجَلَّ **! मैं सुधरना चाहती हूं मेरे सुधरने के अस्बाब पैदा फ़रमा दे।"** आख़िर दुआ़एं रंग लाईं और एक दिन येह ख़ुश ख़बरी सुनने को मिली कि "दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम इस्लामी बहनों का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** 12 अगस्त 2001 ई. बरोज़ इतवार फ़ुलां मक़ाम पर होगा।" मैं तो पहले ही प्यासी थी चुनान्चे शिद्दत से इज्तिमाअ़ के दिन का **इन्तिज़ार** करने लगी। आख़िरे कार वोह दिन भी आ गया और मैं बड़े शौक़ से इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **शरीक** हुई। **तिलावत** और इस के बा'द **ना'त** शरीफ़ सुन कर मैं ने अपने दिल में सोज़ो गुदाज़ मह़सूस किया। जब **मुबल्लिग़ए** दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा **बयान** शुरूअ़ किया तो मैं हमा तन गोश हो गई, जब बयान ख़त्म हुवा तो मेरा चेहरा **आंसूओं** से तर था। फिर इस्लामी बहनों के

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ का ए'लान हुवा तो उस में शिर्कत की पक्की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की बदौलत मुझे गुनाहों की दलदल से निकलना नसीब हुवा। आज मैं अ़लाक़ाई ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से इस्लामी बहनों में **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

मेरे आ'माल का बदला तो जहन्नम ही था
मैं तो जाता मुझे सरकार ने जाने न दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़ के फ़ज़ाइल

इस्लामी बहनो ! वाक़ेई येह दुरुस्त है कि "निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान" उन इस्लामी बहन को सुधरने की तड़प थी और इस के लिये दुआ़एं करती थीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की इस्लाह़ के अस्बाब मुहय्या फ़रमा दिये। हमें भी चाहिये कि नफ़्सो शैत़ान के शर से ख़लासी के लिये दुआ़एं मांगने में कोताही न करें कि **दुआ़** मोमिन का हथियार है, **दुआ़** से तक़्दीर बदल जाती है। **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों :

﴾1﴿ क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारा रिज़्क़ वसीअ़ कर दे, रात दिन **अल्लाह** तआ़ला से **दुआ़** मांगते रहो कि **दुआ़** मोमिन का हथियार है। (مُسْنَد اَبِی یَعْلٰی ج۲ ص۲۰۱ حدیث۱۸۰۶) ﴾2﴿ **दुआ़** तक़्दीर को टाल देती है और बिर (या'नी एह़सान करने) से उ़म्र में ज़ियादती होती है और बन्दा **गुनाह** करने की वजह से रिज़्क़ से मह़रूम हो जाता है। (اِبن ماجه ج٤ ص٣٧٩ حديث ٤٠٢٢) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 **सफ़ह़ा** 199 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** इस ह़दीस का मत़लब येह है कि दुआ़ से बलाएं दफ़्अ़ होती हैं यहां तक़्दीर से मुराद तक़्दीरे मुअ़ल्लक़ है और ज़ियादतिये उ़म्र का भी येही मत़लब है कि एह़सान करना दराज़िये उ़म्र का सबब है और रिज़्क़ से सवाबे उख़्रवी मुराद है कि गुनाह इस की मह़रूमी का सबब है और हो सकता है कि बा'ज़ सूरतों में दुन्यवी रिज़्क़ से भी मह़रूम हो जाए।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

किसी के घर में मत झांकिये

सुवाल : क्या जान बूझ कर किसी के घर में झांकना शरीअ़त में मन्अ़ है ?

जवाब : जी हां। अलबत्ता दरवाज़ा पहले ही से खुला हो और बे इख़्तियार किसी की नज़र पड़ गई तो ह़रज नहीं। अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अब इस अम्र की त़रफ़ अक्सर मुसल्मानों की तवज्जोह ही नहीं। लोग घरों के दरवाज़ों में बिला झिजक **झांकते** हैं, ह़त्ता कि दरवाज़ा खुला न हो तो उचक उचक कर **झांकते** हैं, दराड़ में से **झांकते** हैं, खिड़की में से **झांकते** हैं, पर्दा हटा कर **झांकते** हैं और इस बात की मुत़्लक़न परवाह नहीं करते कि किसी के घर में झांकने की शरीअ़त में मुमा-न-अ़त है।

आंख फोड़ डालने का इख़्तियार

सुवाल : अगर दस्तक देने के बा वुजूद जवाब न मिले तो क्या अब भी घर में नहीं झांक सकते ?

जवाब : नहीं झांक सकते। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर ताजदारे **मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने इजाज़त मिलने से

पहले ही पर्दा हटा कर मकान के अन्दर नज़र की और घर वालों के सित्र को देखा उस ने ऐसा काम किया जो उस के लिये हलाल न था जब उस ने देखा अगर कोई बढ़ कर उस की आंख फोड़ दे तो इस पर मैं उसे (या'नी आंख फोड़ने वाले को) शर्म न दिलाऊंगा। अगर कोई ऐसे दरवाज़े के पास से गुज़रा जिस पर न कोई पर्दा है और न दरवाज़ा बन्द है, लिहाज़ा उस ने (बिला क़स्द) देखा तो उस पर गुनाह नहीं बल्कि ख़ता घर वालों की है।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج ٤ ص ٣٢٤ حديث ٢٧١٦)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ "उसे शर्म न दिलाऊंगा" के तहत फ़रमाते हैं : या'नी आंख फोड़ देने वाले को न तो कोई सज़ा दूंगा न मलामत करूंगा, क्यूं कि यहां क़ुसूर उस झांकने वाले का है (याद रहे !) अहनाफ़ के नज़्दीक येह फ़रमाने आली डराने धमकाने के लिये है वरना उस आंख फोड़ने वाले से आंख का क़िसास ज़रूर लिया जाएगा, रब तआला ने फ़रमाया : اَلْعَيْنَ بِالْعَيْنِ, आंख तो आंख के बदले में फोड़ी जा सकती है न कि ताक झांक के इवज़। (मिरआत, जि. 5, स. 257)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है । (ابویعلی)

गुफ़्त-गू में निगाह कहां हो ?

सुवाल : क्या गुफ़्त-गू करते हुए नज़र नीची रखनी ज़रूरी है ?

जवाब : इस की सूरतें हैं म-सलन मर्द का मुख़ातब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह) **अम्रद** हो और उस को देखने से शह्वत आती हो (या इजाज़ते शर-ई से मर्द अज्नबिय्या से या औ़रत अजनबी मर्द से बात कर रही हो) तो नज़र इस त़रह़ नीची रख कर गुफ़्त-गू करे कि उस के चेहरे बल्कि बदन के किसी उ़ज़्व ह़त्ता कि लिबास पर भी नज़र न पड़े । अगर कोई मानेए़ शर-ई (या'नी शर-ई रुकावट) न हो तो मुख़ात़ब के चेहरे की त़रफ़ देख कर भी गुफ़्त-गू करने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं । अगर निगाहों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने की निय्यत से हर एक से नीची नज़र किये बात करने का मा'मूल बनाए तो बहुत ही अच्छी बात है क्यूं कि मुशा-हदा येही है कि फ़ी ज़माना जिस की नीची निगाहें रख कर गुफ़्त-गू करने की आ़दत नहीं होती उसे जब अम्रद या अज्नबिय्या से बात करने की नौबत आती है उस वक़्त नीची निगाहें रखना उस के लिये सख़्त दुश्वार होता है ।

निगाहे मुस्त़फ़ा की अदाएं

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़र फ़रमाने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ बता दीजिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ईसा तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : जब सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे मु-तवज्जेह होते, मुबारक नज़रें नीची रहती थीं, नज़र शरीफ़ आस्मान के बजाए ज़ियादा तर ज़मीन की त़रफ़ होती थी, अक्सर आंख मुबारक के कनारे से देखा करते थे।(1) मज़्कूरा ह़दीसे पाक में येह अल्फ़ाज़ ''पूरे मु-तवज्जेह होते'' इस का मत़लब येह है कि नज़र चुराते नहीं थे। और येह बात कि ''मुबारक नज़रें नीची रहती थीं'' या'नी जब किसी चीज़ की त़रफ़ देखते तो अपनी निगाह पस्त (या'नी नीची) फ़रमा लिया करते थे। बिला ज़रूरत इधर उधर न देखा करते थे, बस हमेशा आ़लिमुल ग़ैब جَلَّ جَلَالُهٗ की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** रहते, उसी की याद में मश्ग़ूल और आख़िरत के मुआ़-मलात में ग़ौरो तफ़क्कुर फ़रमाते रहते।(2) और येह अल्फ़ाज़ ''आप की नज़रें आस्मान की निस्बत ज़मीन की त़रफ़ ज़ियादा रहती थीं'' या'नी येह ह़द द-रजा शर्मो ह़या की दलील है,

---

(1) الشمائل للترمذی ص۲۳ رقم۷ (2) اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة و شَرْحُ الزُّرقانی عَلٰی الْمَواهِبِ اللَّدُنِّيَّة ج۵ ص۲۷۲

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ह़दीस में जो येह आया है कि : **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब गुफ़्त-गू करने बैठते तो अपनी निगाह शरीफ़ आस्मान की त़रफ़ ज़ियादा उठाते थे।(1) या'नी येह नज़र का उठाना इन्तिज़ारे वह़्य में होता था वरना नज़रे मुबारक का ज़मीन की त़रफ़ रखना रोज़ मर्रा के मा'मूलात में था।(2)

जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इ़नायत पे लाखों सलाम

जश्ने विलादत की ब-र-कत से मेरी ज़िन्दगी बदल गई

इस्लामी बहनो ! हम मुसल्मानों के लिये **सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यौमे विलादत से बढ़ कर कौन सा दिन "यौमे इन्आ़म" होगा ? तमाम ने'मतें उन्हीं के तुफ़ैल तो हैं और येह दिन **ई़द** से भी बेहतर कि उन्हीं के **सदक़े में ई़द भी ई़द हुई।** इसी वज्ह से **पीर शरीफ़** के दिन रोज़ा रखने का सबब इर्शाद फ़रमाया : **فِيْهِ وُلِدْتُّ** या'नी इस दिन मेरी विलादत हुई। (صَحِيح مُسلِم ص۵۹۱ حديث۱۱۶۲) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो

मदीनه

(1) ابوداوٗد ج۴ ص۳۴۲ حديث ۴۸۳۷ (2) اشعه ج۴ ص۵۲۶، مدارجُ النّبوّت ج۱ ص۶

सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से दुन्या के बे शुमार मुमालिक के ला ता'दाद मक़ामात पर हर साल **ईदे मीलादुन्नबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शानदार त़रीक़े पर मनाई जाती है। रबीउ़न्नूर शरीफ़ की 12वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान **इज्तिमाए़ मीलाद** का इन्इ़क़ाद होता है और ईद के रोज़ मरह़बा या मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की धूमें मचाते हुए बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिल्यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

जश्ने विलादत की भी ख़ूब बहारें है, ऐसी ही एक बहार सुनिये, चुनान्चे **एक** इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि आ़म लड़कियों की त़रह़ मैं भी **फ़िल्में** डिरामे देखने की आ़दी, **गाने** सुनने की शौक़ीन और शादी बियाह में बन संवर कर **बे पर्दा** शरीक होने की दिलदादा थी। "मरने के बा'द मेरा क्या बनेगा" इस का मुझे बिल्कुल भी एह़सास तक न था ! 2 साल पहले मुझे बाबुल मदीना कराची अपने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

रिश्तेदारों के हां जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा। उन के घर के बिल्कुल क़रीब इस्लामी बहनों का सुन्नतों भरा **इज्तिमाअ़** होता था, एक इस्लामी बहन की दा'वत पर मैं भी इज्तिमाअ़ में चली गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस इज्तिमाअ़ ने मेरी सोचों का रुख़ तब्दील कर के रख दिया ! फिर मैं ने बाबुल मदीना कराची में ही **रबीउ़न्नूर शरीफ़ की बहारें** देखीं तो दिल नेकियों की त़रफ़ मज़ीद माइल हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और शर-ई पर्दा करना नसीब हो गया। **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करते करते ता दमे तह़रीर मैं अ़लाक़ाई सत़्ह़ पर **म-दनी इन्आ़मात** की ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत करने की सआ़दत पा रही हूं।

आई नई हुकूमत सिक्का नया चलेगा
आ़लम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत देख कर क़बूले इस्लाम

इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हिदायत देने वाला है, जब वोह किसी को नवाज़ना चाहता है तो ख़ुद ही अस्बाब भी

मुहय्या कर देता है, जैसा कि एक मोडर्न ख़ातून के लिये अस्बाब हो जाने पर उस ने म-दनी माहोल में शुमूलिय्यत की सआ़दत पाई। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! जश्ने विलादत की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं। इस के ज़रीए़ तो न जाने कितनों के बिगड़े मुक़द्दर संवर जाते हैं। एक इस्लामी भाई ने बताया कि जश्ने विलादत में मस्जिद की सजावट से **मु-तअस्सिर** हो कर एक काफ़िर ने इस्लाम क़बूल कर लिया कि वाह वाह ! मुसल्मान अपने **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **विलादत** पर किस क़दर एहतिमाम के साथ ख़ुशियां मनाते हैं, मुसल्मानों को अपने **नबी** से किस क़दर वालिहाना प्यार है।

जश्ने विलादत मनाने वालों से आक़ा ख़ुश होते हैं

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ख़ुद शहन्शाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपना जश्ने विलादत मनाने वालों से प्यार करते हैं चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के फ़रमान का ख़ुलासा है : बा'ज़ आ़शिक़ाने रसूल ने ख़्वाब में जश्ने विलादत के अ़मल से मह़बूबे रब्बे लम यज़ल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश देखा और फ़रमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

सुना : **مَنْ فَرِحَ بِنَا فَرِحْنَا بِہٖ** या'नी जो हमारी खुशी करता है हम उस से खुश होते हैं।

(खुलासा अज़् फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 15, स. 522, 523)

ख़ुशियां मनाओ भाइयो ! सरकार आ गए सरकार आ गए शहे अबरार आ गए
ईदे मीलादुन्नबी से हम को बेहद प्यार है اِنْ شَآءَ اللہ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

इश्क़े मजाज़ी के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब

सुवाल : जो न चाहते हुए भी बिग़ैर किसी ग़ैर शर-ई ह़-र-कत के इत्तिफ़ाक़िया **इश्क़े मजाज़ी** में मुब्तला हो जाए क्या वोह गुनहगार है ?

जवाब : नहीं। क्यूं कि इस में उस का इख़्तियार नहीं।

सुवाल : तो अब मरीज़े इश्क़ को क्या करना चाहिये ?

जवाब : सब्र कर के अज्र कमाना चाहिये।

सुवाल : वाह ! इश्क़े मजाज़ी के ज़रीए सवाब भी कमाया जा सकता है ?

जवाब : क्यूं नहीं। येह बात याद रखिये कि बे इख़्तियार **इश्क़** हो जाने की सूरत में भी सवाब पाने के लिये शरीअ़त की पासदारी ज़रूरी है। म-सलन अगर मर्द की किसी ग़ैर औरत पर अचानक नज़र पड़ गई और फ़ौरन नज़र हटा लेने के बा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

वुजूद अगर वोह दिल में गड़ गई और इस के बा'द न क़स्दन उस का तसव्वुर जमाया न ही इरादतन उस को देखा, न कभी उस से मुलाक़ात की, न ही फ़ोन पर बात की, न उस को इश्क़िया ख़त़ लिखा और न ही कभी कोई तोह़फ़ा भिजवाया **अल ग़रज़** उस हो जाने वाले ग़ैर इख़्तियारी **इश्क़े मजाज़ी** को ऐसा छुपाया कि किसी दूसरे पर कुजा ख़ुद उस लड़की को भी पता न चलने दिया तो ऐसा "आ़शिक़े सादिक़" अगर इश्क़ में घुल घुल कर मर जाए तो **शहीद** है। चुनान्चे **राह़तुल आ़शिक़ीन, मुरादुल मुश्ताक़ीन, शम्सुल आ़रिफ़ीन, सिराजुस्सालिकीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : **"जो किसी पर आ़शिक़ हुवा और उस ने पाक दामनी इख़्तियार की और इश्क़ को छुपाया फिर इसी ह़ाल में मर गया तो वोह शहादत की मौत मरा।"** (تاریخ بغداد ج ۱۳ ص ۱۸۵ رقم ۷۱۶۰) देखा आप ने ! **आ़शिक़े सादिक़** के लिये येह शराइत़ हैं कि पाक दामनी इख़्तियार करे और अपने इश्क़ को छुपाए रखे तब वोह इश्क़ में मरा तो शहीद है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं) गा। (ابن بشکوال)

"बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 859 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने शहादत की 36 अक़्साम बयान की हैं उन में 16 नम्बर येह है **:** (वोह भी शहीद है जो) **इश्क़ में मरा बशर्ते कि पाक दामन हो और छुपाया हो ।**

आ़शिक़ व मा'शूक़ शादी कर सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : तो क्या आ़शिक़ व मा'शूक़ को आपस में शादी की शरअ़न मुमा-न-अ़त है ?

जवाब : अगर कोई मानेए़ शर-ई न हो तो शादी कर सकते हैं। याद रखिये ! शादी से क़ब्ल मुलाक़ात, ख़त़ व किताबत, फ़ोन पर गुफ़्त-गू और तह़ाइफ़ का लैन दैन वग़ैरा **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। बा'ज़ आ़शिक़ व मा'शूक़ वालिदैन से छुप कर "कोर्ट मेरेज" करते हैं इस त़रह़ करने में लाज़िमी त़ौर पर वालिदैन की दिल आज़ारी और ख़ास त़ौर पर लड़की के वालिदैन की ज़िल्लतो रुस्वाई होती है और **लड़का अगर लड़की का कुफ़ू न हो तो लड़की का वालिद या वली की इजाज़त के बिग़ैर किया जाने वाला निकाह़ अस्लन होता ही नहीं ।** (कुफ़ू के बारे में मज़ीद सुवाल जवाब

चन्द सफ़हात के बा'द आ रहे हैं) अपने मजाज़ी इश्क़ के लिये مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और **ज़ुलैख़ा** के क़िस्से को दलील बनाना सख़्त जहालत व ह़राम है। याद रहे ! **इश्क़** सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** ही की त़रफ़ से था, ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दामन इस से पाक था हर नबी मा'सूम है।

ग़ैर शर-ई इश्क़े मजाज़ी की तबाह कारियां

सुवाल : आज कल **इश्क़े मजाज़ी** में शरीअ़त की काफ़ी ख़िलाफ़ वरज़ी की जाती है। इस की वज्ह ?

जवाब : इस की सब से बड़ी वज्ह आज कल के अक्सर मुसल्मानों में इस्लामी मा'लूमात की कमी और सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से दूरी है। इसी सबब से हर त़रफ़ गुनाहों का सैलाब उमन्ड आया है ! T.V., V.C.R. और इन्टरनेट वग़ैरा में इश्क़िया फ़िल्मों और फ़िस्क़िया डिरामों को देख कर या इश्क़ बाज़ियों की मुबा-लग़ा आमेज़ अख़्बारी ख़बरों नीज़ नाविलों, बाज़ारी माहनामों डाइजेस्टों में फ़र्ज़ी इश्क़िया अफ़्सानों को पढ़ कर या कोलेजों और यूनीवर्सिटियों की मख़्लूत़ क्लासों में बैठ कर या ना मह़रम रिश्तेदारों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ हो कर आपसी बे तकल्लुफ़ी के दलदल के अन्दर उतर

कर अक्सर किसी न किसी को किसी से **इश्क़** हो जाता है। पहले यक त़रफ़ा होता है फिर जब फ़रीके़ अव्वल फ़रीके़ सानी को मुत्त़लअ़ करता है तो बा'ज़ अवक़ात दो त़रफ़ा हो जाता है। और फिर उ़मूमन गुनाह व इस्यान का तूफ़ान खड़ा हो जाता है। फ़ोन पर जी भर कर बे शर्माना बात बल्कि बे ह़िजाबाना मुलाक़ात के सिल्सिले होते हैं, मक्तूबात व सौग़ात के तबा-दले होते हैं, शादी के ख़ुफ़्या क़ौल व क़रार हो जाते हैं, अगर घर वाले दीवार बनें तो बसा अवक़ात दोनों फ़िरार हो जाते हैं, बा'दहू अख़्बार में उन के इश्तिहार छपते हैं, ख़ानदान की आबरू का सरे बाज़ार नीलाम होता है, कभी "कोर्ट मेरेज" की तरकीब बनती है तो مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी यूं ही बिग़ैर निकाह़ के...... नीज़ ऐसा भी होता रहता है कि भागते नहीं बनती तो ख़ुदकुशी की राह ली जाती है जिस की ख़बरें आए दिन अख़्बारात में छपती रहती हैं। आप की इ़ब्रत के लिये बरोज़ पीर शरीफ़ 9 जुमादिल ऊला 1427 सि.हि. (5-6-2006) को अख़्बार **जंग** की त़रफ़ से "इन्टरनेट" पर लगने वाली एक ख़बर मरने वालियों के नाम निकाल कर मा'मूली तसर्रुफ़ के साथ पेश करता हूं :

तीन जवान बहनों की इज्तिमाई ख़ुदकुशी

पाकिस्तान के सूबए पंजाब के एक शहर में **तीन नौ जवान बहनों ने ज़हरीली गोलियां खा कर इज्तिमाई ख़ुदकुशी कर ली।** 17 सालह बहन फ़र्स्ट इयर, 19 सालह बहन थर्ड इयर और 26 सालह बहन एम ए की त़ालिबा थी। रात गए उन का अपनी वालिदा के साथ **पसन्द की शादी** और मआ़शी मसाइल पर झगड़ा हुवा था और वु-रसा के बयान के मुत़ाबिक़ तीनों बहनों के माबैन तल्ख़ कलामी होती रहती थी। **वालिदा उन के रिश्ते अपनी पसन्द के मुत़ाबिक़ करना चाहती थी।** गुज़श्ता शब भी मआ़शी मसाइल और उन के **रिश्तों** की वज्ह से उन की अपनी वालिदा के साथ तल्ख़ी हुई। रात को तीनों ने एक कमरे में बन्द हो कर ज़हरीली गोलियां खा लीं। उन्हें तिब्बी इमदाद के लिये अस्पताल पहुंचाया गया। जहां वोह तक़रीबन निस्फ़ घन्टा मौत व ह़यात की कश्मकश में मुब्तला रहने के बा'द दम तोड़ गईं। तीनों बेवा मां के साथ रिहाइश पज़ीर थीं। उन की ना'शों का पोस्ट मार्टम 8 घन्टे बा'द हुवा। तीनों बहनों को हज़ारों अफ़राद की मौजू-दगी में आहों सिस्कियों में सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया। अख़्बार में दिये हुए नामों से अन्दाज़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

हुवा कि येह मुसल्मान थीं इस लिये दुआ़ है, या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमारी, उन तीनों मर्हूमा बहनों की और म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ना कामाने इ़श्क़ की ख़ुद-कुशियां

"रोज़नामा नवाए वक़्त" (कराची **4** अगस्त 2004 सि.ई.) की दो मज़ीद ख़बरें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ पसन्द की शादी न होने पर एक नौ जवान ने ज़ह्‌र पी लिया। ﴾2﴿ **मह़ब्बत** में नाकामी पर दादू (सिन्ध) के नौ जवान ने ख़ुदकुशी कर ली। इस त़रह़ की अम्वात भी बड़ी ह़सरत नाक होती हैं।

इ़श्क़े मजाज़ी से बचने का त़रीक़ा

सुवाल : इ़श्क़े मजाज़ी के अस्बाब और इस से बचने का त़रीक़ा बयान कर दीजिये।

जवाब : उ़रयानी व फ़ह़्ह़ाशी, मख़्लूत़ ता'लीम, बे पर्दगी, फ़िल्मी बीनी, नाविलों और अख़्बारात के इ़श्क़िया व फ़िस्क़िया मज़ामीन का मुत़ा-लआ़ वग़ैरा **इ़श्क़े मजाज़ी** के अस्बाब हैं। ला शुऊ़री की उ़म्र में एक साथ खेलने वाले बच्चे और बच्चियां भी बचपन की दोस्ती की वजह से इस में मुब्तला

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

हो सकते हैं। वालिदैन अगर शुरूअ़ ही से अपने बच्चों को ग़ैरों बल्कि क़रीब तरीन अ़ज़ीज़ों बल्कि सगे भाई बहनों तक की बच्चियों के साथ और इसी त़रह़ अपनी मुन्नियों को दूसरों के मुन्नों के साथ खेलने से बाज़ रखने में काम्याब हो जाएं और बयान कर्दा दीगर अस्बाब से बचाने की भी सअ़्य करें तो **इश्क़े मजाज़ी** से काफ़ी ह़द तक छुटकारा मिल सकता है। बच्चों को बचपन ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **ह़बीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** का दर्स देना चाहिये। अगर किसी के दिल में ह़क़ीक़ी मा'नों में **मह़ब्बते** रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जा गुज़ीं हो गई तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **इश्क़े मजाज़ी** से मह़फ़ूज़ हो जाएगा।

मह़ब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह
मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

शादी कितनी उ़म्र में होनी चाहिये ?

सुवाल : निकाह़ कितनी उ़म्र में करना चाहिये ?

जवाब : वालिदैन को चाहिये कि जूं ही औलाद बालिग़ हो इन का निकाह़ कर दें। इस ज़िम्न में दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ जिस के घर लड़का पैदा हो वोह उस का अच्छा नाम रखे, नेक अदब

सिखाए और **जब बालिग़** हो फिर उस का **निकाह़** कर दे। अगर उस का निकाह़ बुलूग़त के वक़्त (या'नी बालिग़ हो जाने के बा वुजूद) न किया और वोह किसी **गुनाह** का मुर-तकिब हुवा तो इस का गुनाह बाप पर होगा।

(شُعَبُ الْاِیْمان لِلْبَیْہَقِی ج٦ص ٤٠١حدیث ٨٦٦٦)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "इस का गुनाह बाप पर होगा" के तह़्त फ़रमाते हैं : येह इस सूरत में है कि बच्चा ग़रीब हो ख़ुद निकाह़ करने पर क़ादिर न हो और अगर बाप अमीर हो और औलाद का निकाह़ कर सकता है मगर ला परवाही या अमीर (घराने की लड़की) की तलाश में निकाह़ न करे, तब बच्चे के गुनाह का वबाल उस ला परवाह बाप पर होगा। (मिरआत, जि. 5, स. 30) ﴿2﴾ "तौरात" में लिखा हुवा है जिस की लड़की **बारह साल** की हो गई और वोह उस का निकाह़ न करे अगर वोह लड़की किसी गुनाह को पहुंची तो इस का गुनाह बाप पर होगा। (شُعَبُ الْاِیْمان ج٦ص٤٠٢ حدیث٨٦٦٩) मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 5 **सफ़ह़ा** 31 पर इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "जिस की लड़की **बारह साल** की हो गई और वोह उस का निकाह़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

न करे'' के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी कुफ़्व मिलता हो और येह शख़्स निकाह़ कर देने पर क़ादिर हो फिर भी मह़ज़ दौलत मन्द की तलाश में ला परवाही से निकाह़ न करे। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि रब तआ़ला तौफ़ीक़ दे तो लड़की का निकाह़ बारह साल की उ़म्र से पहले ही कर दे। अब तो पच्चीस तीस साल तक की लड़कियां घरों में बैठी रहती हैं, न बी.ए. (पास किया हुवा) लखपती मिलता है न निकाह़ होता है। रब तआ़ला मुसल्मानों की आंखें खोले। और ''इस का गुनाह बाप पर होगा'' के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी इस का गुनाह बाप पर भी है क्यूं कि वोह इस का सबब बना। (मिरआत, जि. 5, स. 31) **अफ़्सोस !** आज कल दुन्यवी रस्मो रवाज की वज्ह से शादियों में ग़ैर मा'मूली ताख़ीर की जाती है जिस की वज्ह से **इश्क़े मजाज़ी** भी परवान चढ़ता और बे शुमार गुनाहों का सिल्सिला चलता है। काश ! कोई ऐसा म-दनी रवाज क़ाइम हो जाए कि बच्चा और बच्ची जूं ही बुलूग़त की देहलीज़ पर क़दम रखें उन के निकाह़ हो जाया करें कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ हमारा मुआ़-शरा बे शुमार बुराइयों से बच जाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنز العمال)

जिन्न अगर औ़रत पर आ़शिक़ हो जाए तो......?

सुवाल : जिन्न अगर किसी औ़रत पर आ़शिक़ हो जाए और रक़म वग़ैरा दे तो क्या करे ?

जवाब : इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से एक ऐसी औ़रत के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया जिसे **जिन्न** रुपै वग़ैरा दे जाता था तो इर्शाद फ़रमाया : "वोह **जिन्न** जो कुछ उस औ़रत को देता है उस का लेना ह़राम है कि वोह ज़िना की रिश्वत है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 566)

जिन्न अगर औ़रत को ज़बर दस्ती तोह़फ़ा दे तो......?

सुवाल : अगर वोह **जिन्न** औ़रत को ज़बर दस्ती रक़म दे तो क्या करे ?

जवाब : अगर वोह लेने पर मजबूर करे (तो) ले कर फ़ु-क़रा पर तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कर दिया जाए अपने सर्फ़ (या'नी इस्ति'माल) में लाना ह़राम है। (ऐज़न, स. 567)

आ़शिक़ व मा'शूक़ के तोह़फ़े का हुक्मे शर-ई

सुवाल : आ़शिक़ व मा'शूक़ आपस में एक दूसरे को तह़ाइफ़ देते हैं इन का क्या हुक्म है ?

जवाब : (येह रिश्वत है और), गुनाहे कबीरा, क़त़ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अल बह़रुर्राइक़ में है : "आ़शिक़ व मा'शूक़ आपस में एक दूसरे को जो तह़ाइफ़ देते हैं वोह

रिश्वत है, इन का वापस करना वाजिब है और वोह मिल्किय्यत में दाख़िल नहीं होते ।" (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٦ ص ٤٤١)

ना जाइज़ तोहफ़े लौटाने का त़रीक़ा

सुवाल : इस त़रह़ के तह़ाइफ़ जिस से लिये थे वोह फ़ौत हो गया हो तो क्या करे ? क्या तौबा कर लेने से रखना जाइज़ हो जाएगा ?

जवाब : रिश्वत के माल का हुक्म बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जो माल रिश्वत या तग़न्नी (या'नी गाने या अश्आ़र पढ़ कर) या चोरी से ह़ासिल किया उस पर **फ़र्ज़** है कि जिस जिस से लिया उन पर वापस कर दे, वोह न रहे हों उन के वु-रसा को दे, पता न चले तो फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ (ख़ैरात) करे, **ख़रीदो फ़रोख़्त किसी काम में उस माल का लगाना ह़रामे क़त़ई है,** बिग़ैर सूरते मज़्कूरा के कोई त़रीक़ा इस के वबाल से सुबुकदोशी का नहीं । येही हुक्म सूद वग़ैरा उ़क़ूदे फ़ासिदा का है फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहां (या'नी म-सलन सूद) जिस से लिया बिल खुसूस उन्हें वापस करना फ़र्ज़ नहीं बल्कि इसे इख़्तियार है कि उसे वापस दे ख़्वाह इब्तिदाअन तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) कर दे ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 551) आ'ला ह़ज़रत,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर (नाचने गाने वाली को रक़म देने का) अस्ल मक़्सूद आशनाई (मह़ब्बत) बढ़ाना और अपनी त़रफ़ लुभाना (माइल करना) है तो बेशक **रिश्वत** क़रार पाएगा और इसी हुक्मे मग़्सूब में दाख़िल हो जाएगा ।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 509)

अम्रद को तोह़फ़ा देना कैसा ?

सुवाल : मर्द का शह्वत की वज्ह से **अम्रद** से दोस्ती रखना और उस को मज़ीद हिलाने के लिये तोह़फ़ा व दा'वत का सिल्सिला रखना कैसा है ?

जवाब : ऐसी दोस्ती ना जाइज़ व ह़राम है बल्कि फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "**अम्रद की त़रफ़ शह्वत से देखना भी ह़राम है ।**" (تفسیرات احمدیہ ص٥٠٩) और शह्वत की वज्ह से **अम्रद** को तोह़फ़ा देना या उस की दा'वत करना भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

औ़रत ना मह़रम को तोह़फ़ा दे सकती है या नहीं ?

सुवाल : इस्लामी बहन अपने ना मह़रम रिश्तेदार म-सलन बहनोई, ख़ालू, फूफा वग़ैरा को निय्यते सालिह़ा के साथ किसी मह़रम के ज़रीए तोह़फ़ा भिजवा सकती है या नहीं ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

जवाब : नहीं भिजवा सकती। तोह़फ़े की तासीर अ़जीब होती है। ह़दीसे पाक में है कि "तोह़फ़ा ह़कीम (या'नी अ़क़्ल मन्द व दाना) को अन्धा कर देता है।" (اَلْفِرْدَوْس بِمَأثُور الْخَطّاب ج٤ص٣٣٥حديث٦٩٦٩) एक और ह़दीसे मुबारक में है : "तोह़फ़ा दो मह़ब्बत बढ़ेगी।" (اَلسُّنَنُ الْکُبریٰ لِلْبَیْہَقِی ج٦ ص ٢٨٠ حديث١١٩٤٦) बहर ह़ाल औ़रत को अपने ना मह़रम रिश्तेदार के दिल में मह़ब्बत की जड़ें उस्तुवार करने की इजाज़त नहीं दी जा सकती।

सुवाल : बा'ज़ इश्क़ी मिज़ाज लोग बेबाकी के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और **ज़ुलैख़ा** का ह़वाला देते हैं उन को क्या जवाब दिया जाए ?

जवाब : यक़ीनन वोह आ़शिक़ाने नादान सख़्त ख़त़ा पर हैं। अपने नफ़्स की शरारतों के मुआ़-मले में शैत़ान की बातों में आ कर बे सोचे समझे किसी भी नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में ज़बान खोलना ईमान के लिये इन्तिहाई ख़त़रनाक होता है। **याद रखिये ! नबी** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **की अदना गुस्ताख़ी भी कुफ़्र है।** ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी थे और हर नबी मा'सूम। नबी से हरगिज़ कोई मज़्मूम ह़-र-कत सादिर नहीं हो सकती। चुनान्चे **अल्लाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

तबा-र-क व तआला पारह 12 **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ

(پ ١٢ يوسف ٢٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक औरत ने उस का इरादा किया और वोह भी औरत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : अल्लाह तआला ने अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के **नुफ़ूसे** ताहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा व अफ़्आले रज़ीला (या'नी मज़्मूम अख़्लाक़ और ज़लील कामों) से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा ताहिरा मुक़द्दसा पर उन की ख़िल्क़त फ़रमाई है इस लिये वोह हर ना कर्दनी (या'नी हर बुरे) फ़े'ल से बाज़ रहते हैं। एक रिवायत येह भी है कि जिस वक़्त ज़ुलैख़ा आप عَلَیْہِ السَّلام के दर पै हुई उस वक़्त आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने अपने वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام को देखा कि अंगुश्ते मुबारक दन्दाने अक़्दस के नीचे दबा कर इज्तिनाब (या'नी बाज़ रहने) का इशारा फ़रमाते हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 380)

हक़ीक़त येही है कि **इश्क़** सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** की तरफ़ से था हज़रते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दामन इस से क़त्अन यक़ीनन पाक था। पारह 12 **सूरए यूसुफ़** आयत नम्बर 30 में शु-रफ़ाए मिस्र की बा'ज़ औरतों का क़ौल इस त़रह़ नक़्ल किया गया है :

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِی الْمَدِیْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِیْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝۳۰

(پ۱۲ یوسف ۳۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और शहर में कुछ औरतें बोलीं कि अ़ज़ीज़ की बीबी[1] अपने नौ जवान[2] का दिल लुभाती है, बेशक उन[3] की महब्बत इस[4] के दिल में पैर गई[5] है, हम तो इसे[6] सरीह़ ख़ुद रफ़्ता[7] पाते हैं।

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "**ज़ुलैख़ा** को रग़बत थी मगर ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام त़ाक़त व क़ुदरत रखने के बा वुजूद इस (या'नी ज़ुलैख़ा की त़रफ़ रग़बत) से बाज़ रहे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बाज़ रहने के अ़मल को ख़ूब सराहा।" (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص ۱۲۹)

मदीना

1. या'नी ज़ुलैख़ा, 2. या'नी ह़ज़रते यूसुफ़, 3. या'नी ह़ज़रते यूसुफ़, 4. या 'नी ज़ुलैख़ा, 5. या'नी समा गई, 6. या'नी ज़ुलैख़ा को, 7. या'नी इ़श्क़ में बे क़रार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ज़ुलैख़ा की दास्तान

सुवाल : "ज़ुलैख़ा की दास्तान" भी सुना दीजिये ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में फैलाई जाने वाली ग़लत़ फ़हमियों का भी इज़ाला किया जा सके।

जवाब : ज़ुलैख़ा का क़िस्सा बड़ा अ़जीब है, **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की तफ़्सीरे "सूरए यूसुफ़" में बयान कर्दा इन्तिहाई त़वील क़िस्से को समेट कर अ़र्ज़ करने की सअ़्य करता हूं : **ज़ुलैख़ा** एक मग़रिबी बादशाह **त़ैमूस** की इन्तिहाई ख़ूब सूरत शहज़ादी थी। नव बरस की उ़म्र में इस ने जब **ख़्वाब** में पहली बार ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दीदार किया तो उसी वक़्त आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दीवानी हो गई। **हुस्ने यूसुफ़** عَلَیْہِ السَّلَام की भी क्या बात है ? **जब आप** عَلَیْہِ السَّلَام **को बाज़ारे मिस्र में लाया गया तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने ह़क़ीक़ी हुस्ने यूसुफ़ से पर्दा उठा दिया, लोग दीदार के लिये बे क़रार हो कर दौड़ पड़े। इस इज़्दिहाम** (और धक्कापील) **में 25 हज़ार मर्द व औ़रत हलाक हो गए। हुस्ने यूसुफ़ की ताब न ला कर** (मजीद)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

पांच हज़ार मर्द और 360 कुंवारी औ़रतों ने दम तोड़ दिया। जुलैख़ा जो कि बुत परस्त थी उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पाने के लिये बहुत जतन किये ह़त्ता कि मुरूरे ज़माना के सबब बूढ़ी, अन्धी और कंगली हो गई। जब ह़ज़रते सय्यिदुना **या'कूब** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मिस्र तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने लश्करों समेत इस्तिक़्बाल के लिये निकले। **ज़ुलैख़ा** भी एक औ़रत का हाथ पकड़े राह में खड़ी थी और उस से कह रखा था जूं ही ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गुज़रें मुझे ख़बर कर देना। उस ने जब ख़बर दी तो **ज़ुलैख़ा** ने ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पुकारा। मगर आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तवज्जोह शरीफ़ न गई। उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रईले अमीन** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आए और सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुवारी के ख़च्चर की लगाम थाम कर कहा : उतरिये और इस औ़रत को जवाब दीजिये। आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उतर कर उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तू कौन है ?

ज़ुलैख़ा ने अपने सर पर ख़ाक डाली और कहने लगी : मैं वोही **ज़ुलैख़ा** हूं जिस ने अपने तन मन से तेरी ख़िदमत की आप علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने ब हुक्मे रब्बुल इ़ज़्ज़त **ज़ुलैख़ा** से उस की ह़ाजत दरयाफ़्त की, उस ने निकाह़ का मुत़ा-लबा किया । फ़रमाया : मैं तुझ काफ़िरा से कैसे निकाह़ कर सकता हूं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रईले अमीन** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام **ने ज़ुलैख़ा को छुवा तो गया हुवा शबाब** (या'नी जवानी) **और बे मिसाल हुस्नो जमाल लौट आया, बुत परस्ती से तौबा कर के वोह मोमिना हो गई ।** ह़ज़रते सय्यिदुना **या'क़ूब** علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام से उन का निकाह़ पढ़ा दिया । कहते हैं, ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ुलैख़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہَا ईमान लाने के बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की ज़ौजिय्यत में दाख़िल हुई तो उन का **जिन्सी मैलान** दब गया और वोह इ़बादतो रियाज़त में इस क़दर मश्ग़ूल हुई कि बहुत बड़ी **आ़बिदा और ज़ाहिदा** बन गई । एक रिवायत के मुत़ाबिक़ वोह आप علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की ख़िदमते

सरापा अ़-ज़मत में 73 बरस रहीं और उन के बत़्न से ग्यारह लड़के पैदा हुए। (तफ़्सीरे सूरए यूसुफ़ मुतर्जम, स. 93, 96, 184, 237, 239, मुलख़्ख़सन) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आ़शिक़ाने नादान का रद हो गया !

इस ह़िकायत से اَظْھَرُ مِنَ الشَّمْسِ وَاَبْیَنُ مِنَ الْاَمْس या'नी सूरज से ज़ियादा रोशन और रोज़े गुज़श्ता से ज़ियादा क़ाबिले यक़ीन हो गया कि आज कल के जो **आ़शिक़ाने नादान** अपने गुनाहों भरे सड़े हुए इ़श्क़ को दुरुस्त साबित करने के लिये مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और **ज़ुलैख़ा** के वाक़िए को आड़ बनाते हैं वोह बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। सूरए यूसुफ़ में सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** की त़रफ़ से इ़श्क़ का तज़्किरा है मगर कहीं भी कोई इशारा तक नहीं मिलता कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी उस के इ़श्क़ में शरीक थे। लिहाज़ा जो लोग ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी इ़श्क़ में शरीक ठहराते हैं वोह इस से तौबा करें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَیْہِ السَّلَام की शान

बहुत अ़ज़ीम होती है और वोह गुनाहों से मा'सूम होते हैं।

या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! हमें अपनी मह़ब्बत और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची पक्की उल्फ़त नसीब फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! दुन्या की चाहत हमारे दिल से निकाल दे। या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! जो मुसल्मान गुनाहों भरे "इश्क़े मजाज़ी" के जाल में फंसे हुए हैं उन्हें रिहाई दे कर अपने म-दनी मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों का असीर बना दे। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मह़ब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह

मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

सुवाल : अगर सिन्फ़े मुख़ालिफ़ (म-सलन लड़के पर कोई लड़की) आ़शिक़ा हो कर पीछे पड़ जाए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : हरगिज़ हरगिज़ उस की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** नहीं होना चाहिये कि अगर शैत़ान को उंगली दी तो वोह हाथ पकड़ लेगा और फिर गुनाहों से बचना दुश्वार ही नहीं शायद ना मुम्किन हो जाएगा। फ़ौरन कहीं मुनासिब जगह अपनी शादी की तरकीब बना ली जाए कि इस त़रह़ भी **अक्सर इश्क़े** मजाज़ी से जान छूट जाती है।

बुरक़अ़ पोश आ'राबिय्या

नज़र की हि़फ़ाज़त करने वाले एक ख़ुश नसीब ख़ूब सूरत नौ जवान की **ईमान अफ़्रोज़ हि़कायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़ गार, बेह़द ख़ूब-रू और ह़सीन नौ जवान थे। सफ़रे ह़ज के दौरान **मक़ामे अबवा** पर एक बार अपने ख़ैमे में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का रफ़ीक़े सफ़र खाने का इन्तिज़ाम करने के लिये गया हुवा था। नागाह एक **बुरक़अ़ पोश आ'राबिय्या** (या'नी देहाती औ़रत) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ैमे में दाख़िल हुई और उस ने चेहरे से निक़ाब उठा दिया! उस का हुस्न बहुत ज़ियादा फ़ितना बरपा कर रहा था, कहने लगी : मुझे कुछ दीजिये। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه समझे शायद रोटी मांग रही है। कहने लगी : मैं वोह चाहती हूं जो बीवी अपने शोहर से चाहती है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّ وَجَلَّ से लरज़ते हुए फ़रमाया : "तुझे मेरे पास शैत़ान ने भेजा है।" इतना कहने के बा'द

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने अपना सरे मुबारक घुटनों में रखा और ब आवाज़े बुलन्द रोने लगे। येह मन्ज़र देख कर **बुरक़अ़ पोश आ'राबिय्या** घबरा कर तेज़ तेज़ क़दम उठाए ख़ैमे से बाहर निकल गई। जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का रफ़ीक़ आया और देखा कि रो रो कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने आंखें सुजा दी हैं और गला बिठा दिया है, तो उस ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने अव्वलन टालमटोल से काम लिया मगर उस के पैहम इस्रार पर ह़क़ीक़त का इज़्हार कर दिया तो वोह भी फूट फूट कर रोने लगा। फ़रमाया : तुम क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ की : मुझे तो ज़ियादा रोना चाहिये क्यूं कि अगर आप की जगह मैं होता तो शायद सब्र न कर सकता (या'नी शायद गुनाह में पड़ जाता)। दोनों ह़ज़रात رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمَا रोते रहे यहां तक कि **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ह़ाज़िर हो गए। त़वाफ़ व सअ़्य वग़ैरा से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار **ह़त़ीमे का'बा** में चादर से घुटनों के गिर्द घेरा बांध कर बैठ गए। इतने में ऊंघ आ गई और आ़लमे ख़्वाब में पहुंच गए, एक हुस्नो जमाल के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

पैकर, मुअ़त्तर मुअ़त्तर ख़ुश लिबास दराज़ क़द बुज़ुर्ग नज़र आए, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने पूछा **:** आप कौन हैं ? जवाब दिया **:** मैं (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नबी) **यूसुफ़** हूं । अ़र्ज़ की **:** या नबिय्यल्लाह ! **ज़ुलैख़ा** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ आप का क़िस्सा भी एक अ़जीब वाक़िआ़ है। फ़रमाया **: मक़ामे अबवा** पर आ'राबिय्या के साथ होने वाला आप का वाक़िआ़ अ़जीब तर है। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص ۱۳۰ مُلَخَّصاً) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना **सुलैमान बिन यसार** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने ख़ुद चल कर आने वाली **बुरक़अ़ पोश आ'राबिय्या** को भी ठुकरा दिया बल्कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से रोना धोना मचा दिया, जिस के नतीजे में ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। बहर ह़ाल दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि जिन्से मुख़ालिफ़ लाख दिल लुभाए और गुनाह पर उक्साए मगर इन्सान को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

चाहिये कि हरगिज़ शैत़ान के दामे तज़्वीर (या'नी धोके) में न आए, हर सूरत में उस के चुंगल से ख़ुद को बचाए और ख़ूब अज्रो सवाब कमाए।

सुवाल : अगर किसी से इ़श्क़ हो जाए, बद निगाही वग़ैरा गुनाहों का सिल्सिला भी हो और शादी की तरकीब भी मुम्किन न हो, तो उस से किस त़रह़ छुटकारा ह़ासिल करे ?

जवाब : वाक़ेई येह मुआ़–मला बड़ा सब्र आज़मा है। इस दौरान जो भी गुनाह हुए हों उन से सच्चे दिल से तौबा कर के इस इ़श्क़ सरापा फ़िस्क़ से नजात के लिये **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के आ़ली दरबार में गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगे, उस को देखने से बचे, बल्कि अगर उस की **तस्वीर**, तोह़फ़ा या कोई और निशानी अपने पास हो तो उसे भी न देखे और फ़ौरन वोह अश्या अपने से अलग कर दे, उस का **फ़ोन** न सुने, उस का **इ़श्क़िया मक्तूब** न पढ़े, ह़त्ता कि उस के **तसव्वुर** से भी हर मुम्किन सूरत में पीछा छुड़ाए। अपने आप को दीनी कामों में एक दम मश्ग़ूल कर दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** अपने दिल में बढ़ाए। और बारगाहे रिसालत में इस्तिग़ासा (या'नी फ़रियाद) पेश करे :

महब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह
मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

इश्क़बाज़ी से पीछा छुड़ाने का रूहानी इलाज

सुवाल : इश्क़बाज़ी से पीछा छुड़ाने के लिये कोई वज़ीफ़ा भी बता दीजिये।

जवाब : गुज़श्ता सुवाल के जवाब की इब्तिदा में जो म-दनी फूल पेश किये इस के साथ साथ बेशक कुरआनी आयात पर मुश्तमिल येह "अ़मल" भी कर लिया जाए :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنۡتَ سُبۡحٰنَکَ اِنِّیۡ کُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِیۡنَ ۔ اَللّٰہُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۔ لَا تَاۡخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّلَا نَوۡمٌ ۔

बा वुज़ू तीन[3] बार पढ़ कर (अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पानी पर दम कर के पी ले। येह अ़मल 40 दिन तक करे। औ़रत नागे़ के दिनों में न करे पाक हो जाने के बा'द जहां से छोड़ा था वहीं से गिनती शुरूअ़ करे। नमाज़ की पाबन्दी ज़रूरी अशद ज़रूरी है।

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की तौबा का सबब

सुवाल : क्या ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

भी इश्क़े मजाज़ी में मुब्तला रह चुके हैं ?

जवाब : जी हां। मगर उन्हों ने इब्रत ह़ासिल कर के तौबा की और बुलन्द द-रजात पाए चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का वाक़िआ़ कुछ यूं है कि इब्तिदाअन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक आ़म से नौ जवान थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को एक कनीज़ से इश्क़ हो गया था और मुआ़-मला काफ़ी तूल पकड़ चुका था। **सख़्त सर्दियों** के मौसिम में एक बार दीदार के इन्तिज़ार में उस कनीज़ के मकान के बाहर सारी रात खड़े रहे यहां तक कि सुब्ह़ हो गई। रात बेकार गुज़रने पर दिल में मलामत की कैफ़िय्यत पैदा हुई और इस बात का शिद्दत से एह़सास हुवा कि इस कनीज़ के पीछे सारी रात बरबाद कर दी मगर कुछ हाथ न आया, काश ! येह रात इबादत में गुज़ारी होती। इस तसव्वुर से दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ालिस तौबा फ़रमाई, कनीज़ की **मह़ब्बत** से जान छुड़ाई, अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाई और क़लील ही अ़र्से में विलायत की आ'ला मन्ज़िल पाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शान इस क़दर बढ़ाई कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सांप मगस रानी कर रहा था

एक बार वालिदए माजिदा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तलाश में निकलीं तो एक बाग़ में गुलबुन या'नी **गुलाब के पौदे** के नीचे आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इस त़रह़ मह़्वे ख़्वाब (या'नी सोता) मुला-ह़ज़ा किया कि एक **सांप** मुंह में नरगिस की टहनी लिये **मगस रानी** कर रहा है या'नी आप के वुजूदे मस्ऊ़द पर से मक्खियां उड़ा रहा है। **(تذکرۃ الاولیاء ج۱ ص۱۶۶) अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुश नसीब आ़बिद की साबित क़-दमी

सुवाल : "इस्राईलियात" में से इम्तिह़ान में मुब्तला होने वाले किसी मर्द की साबित क़-दमी का ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ बता दीजिये जिस से इ़ब्रत और सब्र की क़ुव्वत मिले।

जवाब : जो मुसल्मान इम्तिह़ान से जी नहीं चुराता, नफ़्सानी शह्वत को पाए ह़क़ारत से ठुकराता, कैसी ही सब्र आज़मा घड़ी आए उस से नहीं घबराता, रिज़ाए रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये बड़ी से बड़ी मुसीबत को गले से लगाता और शैत़ान व नफ़्स से हर ह़ाल में टकरा जाता है वोह बारगाहे ख़ुदा वन्दी

عَزَّ وَجَلَّ से द-रजाते आ़लिया पाता और शानो शौकत के साथ जन्नतुल फ़िर्दौस में जाता है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बयान कर्दा एक **ह़िकायत** को मुख़्तसरन अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं : बनी इस्राईल में एक **आ़बिद** थे जो कि **सिद्दीक़** (या'नी अव्वल द-रजे के वली) के मन्सब पर फ़ाइज़ थे। शान येह थी कि **ख़ानक़ाह** पर बादशाह ह़ाज़िर हो कर ह़ाजत दरयाफ़्त करता मगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मन्अ़ फ़रमा देते। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इबादत ख़ाने पर **अंगूर की बैल** लगी हुई थी जो हर रोज़ एक **अनोखा अंगूर** उगाती थी कि जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस की त़रफ़ अपना मुबारक हाथ आगे बढ़ाते तो उस में से पानी उबल पड़ता जिसे आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नोश फ़रमा लेते।

एक दिन मग़रिब के वक़्त एक **जवान लड़की** ने दरवाज़े पर दस्तक दे कर कहा, अंधेरा हो गया है, मेरा घर काफ़ी दूर है, मुझे रात गुज़ारने के लिये इजाज़त दे दीजिये। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तर्स खा कर उसे अपनी **ख़ानक़ाह** में पनाह दे दी। रात जब गहरी हुई तो वोह एक दम गले पड़ गई कि मेरे साथ "काला मुंह" करो !!! यहां तक कि

مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस ने अपने कपड़े उतार दिये ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़ौरन आंखें बन्द कर लीं और उस को कपड़े पहनने का हुक्म दिया मगर वोह न मानी बल्कि बराबर मुता़-लबा करती रही। **आप** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुज़्त़रिब हो कर अपने नफ़्स से पूछा, **ऐ नफ़्स !** तू क्या चाहता है ? उस ने कहा, **ख़ुदा की क़सम !** मैं तो इस नादिर मौक़अ़ से फ़ाएदा उठाना चाहता हूं। फ़रमाया, तेरा नास हो ! **क्या** तू मेरी उ़म्र भर की इ़बादत ज़ाएअ़ करने का उम्मीदवार है ? **क्या** तू त़ालिबे अ़ज़ाबे नार है ? **क्या** तू दोज़ख़ के गन्धक के लिबास का ख़्वास्त-गार है ? **क्या** तू जहन्नम के सांपों और बिच्छूओं का त़लब गार है ? **याद रख !** ज़ानी को मुंह के बल घसीट कर **जहन्नम के गहरे** ग़ार में झोंक दिया जाएगा। मगर उस बद निय्यत लड़की के साथ साथ **नफ़्स** ने भी अपनी तह़रीक बराबर जारी रखी। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने नफ़्स से फ़रमाया **: चल** पहले तजरिबा कर ले कि आया तू **दुन्या की मा'मूली आग** भी बरदाश्त कर सकता है या नहीं ! येह कह कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **ने जलते हुए चराग़ पर हाथ रख दिया ! मगर वोह न जला** । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जलाल में आ कर पुकारा, **ऐ आग !** तुझे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

क्या हो गया है तू क्यूं नहीं जलाती ? इस पर **आग ने पहले अंगूठा जलाया, फिर उंग्लियों को पिघलाया हत्ता कि हाथ का सारा पन्जा खा गई !** येह दर्द अंगेज़ मन्ज़र देख कर उस लड़की पर एक दम ख़ौफ़ तारी हो गया, उस के मुंह से एक ज़ोरदार चीख़ बुलन्द हो कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई, वोह धड़ाम से गिरी और उस की रूह क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़ौरन उस की बरह्ना लाश पर चादर उढ़ा दी। **सुब्ह़े** दम इब्लीस ने चिल्ला कर ए'लान किया **:** "इस **आ़बिद** ने फुलाना बिन्ते फुलां के साथ रात को ज़ियादती कर के उस को क़त्ल कर दिया है।" येह ख़-बरे वह्शत असर सुन कर बादशाह आग बगूला हो कर सिपाहियों के साथ **आ़बिद** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ **की ख़ानक़ाह** पर आ पहुंचा। जब वहां से लड़की की बरह्ना लाश बरआमद हो गई तो **आ़बिद** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के गले में ज़न्जीर डाल कर घसीट कर बाहर निकाला गया और फिर सिपाहियों ने **ख़ानक़ाह** की ईंट से ईंट बजा दी। वोह **आ़बिद** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ सब्रो शिकेबाई का दामन थामे रहे यहां तक कि उन्हों ने अपना जला हुवा हाथ भी कपड़े में छुपाए रखा और किसी पर ज़ाहिर न होने दिया ! उस वक़्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

दस्तूर येह था कि ज़ानी को आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिया जाता था। चुनान्चे **बादशाह के हुक्म से आ़बिद** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **के सर पर आरा रख कर उन के बदन के दो परकाले कर दिये गए। आ़बिद** की वफ़ात हो जाने के बा'द **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उस औ़रत को ज़िन्दा किया और उस ने अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा सारी रूदाद सुनाई। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हाथ से कपड़ा हटाया गया तो लड़की के बयान के मुताबिक़ वाक़ेई वोह जला हुवा था इस के बा'द लड़की ह़स्बे साबिक़ फिर मुर्दा हो गई। **हैरत अंगेज़ ह़क़ीक़त** सुन कर लोगों के सर अ़क़ीदत से झुक गए और **ख़ुश नसीब आ़बिद** की इस दर्दनाक रेह़लत पर सभी **तअस्सुफ़** व ह़सरत करने लगे। **जब उन के लिये क़ब्र खोदी गई तो उस से मुश्को अ़म्बर की लपटें आने लगीं।** जूंही दोनों के जनाज़े लाए गए तो आस्मान से सदा आने लगी :

اِصْبِرُوا حتّٰى تُصَلِّيَ عَلَيْهِمَا الْمَلٰٓئِكَةُ

या'नी सब्र करो यहां तक कि इन पर फ़िरिश्ते नमाज़े जनाज़ा पढ़ लें।

तदफ़ीन के बा'द **अल्लाह** रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ ने **ख़ुश नसीब आ़बिद** की क़ब्र पर **चम्बेली** को उगाया। लोगों ने

मज़ारे पुर अन्वार पर एक **कत्बा** आवेज़ां पाया जिस में कुछ इस त़रह़ मज़्मून था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अपने बन्दे और वली की त़रफ़। मैं ने अपने फ़िरिश्तों को जम्अ़ फ़रमाया, जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुत़्बा सुनाया और **मैं ने पचास हज़ार दुल्हनों के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में इस** (अपने वली) **का निकाह़ फ़रमाया।** मैं अपने फ़रमां बरदारों और मुक़र्रबों को ऐसे ही इन्आ़मों से नवाज़ता हूं।

(بَحرُ الدُّمُوع ص١٦٩ مُلَخَّصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अम्बियाए किराम पर भी इम्तिह़ानात आए

देखा आप ने ! औ़रत का फ़ितना कितना ख़त़रनाक होता है ! मरदूद शैत़ान इस के ज़रीए़ औलिउर्रह़मान पर भी ह़म्ले करते नहीं चूकता मगर ख़ुदाए ज़ुल जलाल तबा-र-क व तआ़ला की मदद जिन के शामिले ह़ाल होती है वोह इब्लीसे ख़सीस के जाल में नहीं फंसते। इस ह़िकायत से शायद किसी को येह **वस्वसे** आएं कि "आख़िर इतने बड़े बा

करामत बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर इस क़दर गन्दे घिनौने काम और क़त्ले मुस्लिम का झूटा इल्ज़ाम कैसे लगा दिया गया और फिर बेचारे को बे दर्दी के साथ आरे से क्यूं चीर दिया गया ?" इन **वस्वसों का जवाब** येह है कि खु़दाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों का इम्तिह़ान लेता है और साबित क़दम रहने वालों को मह़्ज़ अपने लुत़्फ़ो करम से इन्आ़माते अ़ज़ीमा और द-रजाते रफ़ीआ़ मर्ह़मत फ़रमाता है। इस त़रह़ के इम्तिह़ानात के वाक़िआ़त से हमारी तारीख़ भरी पड़ी है। ह़ज़रते **सय्यिदुना ज़-करिय्या** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आरे से चीर दिया गया ! आप के फ़रज़न्दे अरजुमन्द ह़ज़रते **सय्यिदुना यह़्या** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी बे दर्दी के साथ शहीद किया गया नीज़ **मु-तअ़द्दिद अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बनी इस्राईल ने शहीद कर दिया, **करबला** का दर्दनाक वाक़िआ़ नेक बन्दों पर मसाइबो आलाम के पहाड़ टूटने के ह़वाले से इन्तिहाई मश्हूर है। लिहाज़ा हम में से कभी किसी पर इम्तिह़ान आन पड़े तो दामने सब्र नहीं छोड़ना चाहिये। **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहने ही में दोनों जहान की काम्याबी है। और येह भी याद रखिये कि इम्तिह़ान जितना सख़्त होता है सनद भी उतनी ही

आ'ला मिलती है। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 20 **सू-रतुल अन्कबूत** की इब्तिदाई आयाते करीमा में इर्शाद फ़रमाता है :

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(پ ۲۰ العنکبوت ۱۔۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें, हम ईमान लाए, और इन की आज़माइश न होगी ! और बेशक हम ने इन से अगलों को जांचा।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुसल्मानों का ब क़दर कुव्वते ईमानी के इम्तिह़ान लेना, क़ानूने इलाही है। बीमारी, नादारी, गुरबत, मुसीबत, येह सब रब की (त़रफ़ से) आज़माइशें हैं जिन से मुख़्लिस व मुनाफ़िक़ मुम्ताज़ हो जाते हैं। (या'नी इन का फ़र्क़ वाज़ेह़ हो जाता है) मोमिन राज़ी ब रिज़ा रहता है। कि कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा आरे से चीरा गया, बा'ज़ लोहे की कंघियों से पुर्ज़े पुर्ज़े किये गए, बा'ज़ को आग में डाला गया, बा'ज़ को हुक्म दिया गया कि अपने बच्चे को अपने हाथ से ज़ब्ह़ करो मगर वोह ह़ज़रात इस्तिक़ामत के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है। (ابویعلیٰ)

पहाड़ साबित हुए। (नूरुल इरफ़ान, स. 632)

वोह इश्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता

जो रन्जो मुसीबत से दो चार नहीं होता

इश्के मजाज़ी ने तबाही मचाई है

आह ! बहुत नाजुक दौर है, मख़्लूत़ ता'लीम वग़ैरा के बाइस शर्मो ह़या का तसव्वुर मिटता जा रहा है, इश्क़बाज़ी आ़म है, तबाही मची हुई है, सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के नाम पर आने वाले **मक्तूबात** में ऐसी ऐसी ह़या सोज़ तह़रीरात होती हैं कि ग़ैरत मन्द आदमी पढ़ कर शर्म से पानी पानी हो जाए। येह **आ़शिक़ाने नादान** बसा अवक़ात बिला तकल्लुफ़ एक दूसरे के नाम व पते वग़ैरा बयान कर के अपनी और सिन्फ़े मुख़ालिफ़ की आबरू की ख़ूब धज्जियां बिखेर रहे होते हैं ! इस त़रह़ के **बे ह़या आ़शिक़ों** की तह़रीरों की चन्द मिसालें ह़ाज़िरे ख़िदमत हैं मगर इन को पढ़ कर सिर्फ़ उन्हीं को झटका लगेगा जिन को ह़या से कोई ह़िस्सा नसीब हुवा हो, बाक़ी जिन बेचारों को शर्मो ह़या की हवा भी न लगी होगी वोह तो बस यूंही पढ़ कर गुज़र जाएंगे, शायद उन को इन कलिमात के अन्दर कोई बुराई का पहलू भी नज़र नहीं आएगा !

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنز العمال)

आ़शिक़ों के जज़्बात के सात ह़या सोज़ कलिमात

(इस त़रह़ के मज़ामीन के फ़िक़्रे मुझे भेजे जाने वाले मक्तूबात में ब कसरत होते हैं)

﴾1﴿ मैं ने फ़ुलां से मह़ब्बत की है कोई गुनाह तो नहीं किया। (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

﴾2﴿ फ़ुलां लड़की से मुझे वालिहाना इ़श्क़ हो गया है, वोह न मिली तो मैं ह़राम की मौत मर जाऊंगा। (या'नी مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुदकुशी कर लूंगा)

﴾3﴿ फ़ुलां लड़की को मैं बचपन से चाहता हूं मगर दो महीने हुए हैं वालिदैन ने उन की दूसरी जगह शादी कर दी है दुआ़ करें उस को त़लाक़ हो जाए वरना मैं दूल्हा को इस दुन्या में नहीं रहने दूंगा जिस ने मेरी मह़ब्बत मुझ से छीन ली है।

﴾4﴿ ''उस'' की याद बहुत तड़पाती है येह मा'लूम है कि शराब ह़राम है मगर ग़म मिटाने के लिये थोड़ी सी पी लेता हूं।

﴾5﴿ मेरी मह़ब्बत अगर मुझे न मिली और किसी दूसरी जगह लड़की की शादी हो गई तो वोह दिन मेरी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन होगा !

﴾6﴿ हर वक़्त उस की याद में खोया रहता हूं, कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

﴾7﴿ आप को ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासित़ा मुझे मेरी मह़बूबा दिला दें।

आ़शिक़ात के जज़्बात के 12 ह़या सोज़ कलिमात

﴾1﴿ फुलां लड़के से मुझे इ़श्क़ हो गया है, उन की याद मेरी ज़िन्दगी है, अगर वोह मुझे न मिले तो मैं ख़ुदकुशी कर लूंगी।

﴾2﴿ अगर "कॉलेज फ्रेन्ड" से मेरी शादी न हुई तो "कोर्ट मेरेज" कर लूंगी आप हमारे वालिदैन को लिखें कि हमारी शादी करवा दें।

﴾3﴿ उन की याद दिल में रच बस चुकी है, न खाना अच्छा लगता है न पीना, इसी वज्ह से त़बीअ़त में चिड़चिड़ा पन पैदा हो गया है, वालिदैन से भी गुस्ताख़ी कर जाती हूं।

﴾4﴿ फुलां को मैं दिलो जान से चाहती हूं मगर उस को पता नहीं कि मैं उसे चाहती हूं, उस से इज़्हार भी नहीं कर सकती कोई ऐसा अ़मल बताइये कि उस को मेरी मह़ब्बत का पता चल जाए और वोह मेरा हो जाए।

﴾5﴿ हम दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते हैं, फ़ोन पर हमारी गुफ़्त-गू होती रहती है, कभी कभी अपने घर वालों को चक्मा दे कर सहेली का बहाना बना कर घर से निकल कर उस से मिलने भी चली जाती हूं, मैं उसे अपना बनाना चाहती

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

हूं मगर घर वाले नहीं मानते।

﴾6﴿ फुलां से बहुत मह़ब्बत करती हूं, उस ने शादी के बड़े वा'दे किये मगर अब मुकर गया है। कुछ कीजिये, उस को समझाइये।

﴾7﴿ मुझे उन से इतनी **मह़ब्बत** हो गई है कि उन को एक दिन न देखूं (या'नी مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ बद निगाही न करूं) तो दिल को चैन नहीं मिलता। काश ! वोह मुझे मिल जाएं।

﴾8﴿ अब सब्र का पैमाना लबरेज़ हो चुका है, मैं उन के बिग़ैर नहीं जी सकती, अगर वोह न मिले तो जान दे दूंगी। (या'नी مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ खुदकुशी कर लूंगी)

﴾9﴿ मैं अपने मह़बूब को बहुत चाहती हूं ऐसा ता'वीज़ दें कि वोह भी मुझ से मह़ब्बत करने लग जाए। مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾10﴿ हर सूरत में मुझे मेरा मह़बूब चाहिये।

﴾11﴿ वोह दिलो दिमाग़ में बस चुका है अब किसी और का तसव्वुर भी नहीं कर सकती।

﴾12﴿ चार सालों से हम एक दूसरे से मिलते रहे वोह मेरी मह़ब्बत का दम भरता रहा मगर अब वोह मुझ से दूर हो चुका है उस ने मेरी खुशियों को चक्ना चूर कर दिया।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

इश्क़ में होने वाली शादियों के बारे में सुवाल जवाब

कोर्ट की शादी

सुवाल : इश्क़े मजाज़ी करने वाले बा'ज़ नौ जवान घर वालों की मुख़ा-लफ़त के बा वुजूद कोर्ट में जा कर शादी कर लेते हैं । क्या ऐसा करना मुनासिब है ?

जवाब : हरगिज़ मुनासिब नहीं बल्कि लड़का अगर लड़की का **कुफ़ू** न हो और लड़की ने **वली** की इजाज़त के बिग़ैर निकाह़ किया हो तो येह निकाह़ ही **बात़िल** ठहरेगा ! बिलफ़र्ज़ कुफ़ू भी मिल गया और निकाह़ भी मुन्अ़क़िद हो गया तब भी कोर्ट में जा कर शादी करने वालों से मां बाप की सख़्त दिल आज़ारी होती, अहले ख़ानदान के माथे पर कलंक का टीका लग जाता और दीगर भाई बहनों की शादियों में रुकावटें खड़ी हो जाती हैं । नीज़ ऐसा करने से अक्सर ग़ीबतों, तोहमतों, ऐ़ब दरियों, बद गुमानियों और दिल आज़ारियों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों का दरवाज़ा खुल जाता है लिहाज़ा हरगिज़ ऐसा क़दम नहीं उठाना चाहिये ।

सुवाल : वली किसे कहते हैं ?

जवाब : लफ़्ज़े वली के लुग़वी मा'ना दोस्त, और मददगार के हैं उ़र्फ़े आ़म में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दे को **वली** कहा जाता है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

मगर इस्तिलाहे फ़िक़्ह में **वली** से मुराद लिये जाने वाले मा'ना बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हैं। इस्तिलाहे फ़िक़्ह में **वली** उस आ़क़िल बालिग़ शख़्स को कहते हैं जिसे दूसरे की जान या माल पर मख़्सूस कुदरत या'नी "ऑथोरिटी" ह़ासिल हो। **बहारे शरीअ़त** में है : "**वली** वोह है जिस का क़ौल दूसरे पर नाफ़िज़ हो, दूसरा चाहे या न चाहे।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 42)

सुवाल : रिश्तेदारों में **वली** कौन कहलाएगा ? या'नी क़राबत की बुन्याद पर जिसे निकाह़ के मुआ़-मलात में **वली** क़रार दिया गया है इस की क्या तफ़्सील है ?

जवाब : क़राबत की वज्ह से विलायत अ़-सबह बि नफ़्सिही (रिश्तेदारों की एक क़िस्म का नाम है येह वोह होते हैं कि जिन से रिश्तेदारी क़ाइम होने के लिये किसी औ़रत का वासित़ा नहीं आता जैसा कि चचा। जब कि मामूं की रिश्तेदारी मां के वासित़े से है) के लिये है इन में तरजीह़ (या'नी एक को दूसरे पर फ़ौक़िय्यत देने) के लिये यहां भी इसी तरतीब का लिह़ाज़ रखा गया है जो विरासत में मो'तबर है या'नी इन रिश्तेदारों में से जो सब से नज़्दीकी द-रजा या'नी रिश्ता रखे उसे वलिये अक़्रब (क़रीब तरीन और मुक़द्दम वली) क़रार दिया जाता है और अक़्रब (सब से मुक़द्दम) के होते हुए **अब्अ़द**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سُنّی)

(दूरी वाला) **वली** अपने ह़क़ का इस्ति'माल करने से मह़रूम रहता है। यूं द-रजे के ए'तिबार से एक वक़्त में सिर्फ़ एक ही वली हो सकता है हां अगर एक से ज़ाइद अफ़राद एक ही द-रजे में आते हों तो मु-तअ़द्दिद अफ़राद भी वली की अहलिय्यत पर फ़ाइज़ हो सकते हैं इस की गुन्जाइश है। जिस औ़रत का आ़क़िल बालिग़ बेटा या पोता नीचे तक न हो उस का **वली** बाप है बाप न हो तो दादा वली है। और अगर बेटा मौजूद हो तो बेटा ही सब से मुक़द्दम **वली** है बेटा न हो तो पोते का दूसरा नम्बर है नीचे तक। इस के बा'द बाप फिर दादा वली होगा। दादा न हो तो परदादा **वली** होगा ऊपर तक, अगर्चे कई पुश्त ऊपर का दादा हो उस के होते हुए कोई **वली** नहीं हो सकता।

सुवाल : येह पांच रिश्ते जो बयान किये गए अगर येह न हों तो फिर **वली** कौन होगा ? और क्या मां भी **वली** हो सकती है ?

जवाब : इन पांच रिश्तेदारों के बा'द भाई फिर चचा फिर चचाज़ाद अ़-सबह रिश्तेदार अपनी तफ़्सील के साथ वली बनेंगे इन की तफ़्सील के लिये देखिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 7 **सफ़ह़ा** 43। जब **अ़-सबह बि नफ़्सिही** की फ़ेहरिस्त में शामिल कोई भी रिश्तेदार न हो तो फिर मां **वली** होगी मां भी न हो तो फिर दादी फिर नानी

वली होंगी وَغَیرُ ذٰلِک इस मक़ाम पर भी रिश्तेदारों की एक त़वील फ़ेहरिस्त है इस फ़ेहरिस्त की तफ़्सील के लिये भी बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 सफ़ह़ा 42 ता 52 का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

कुफ़ू किसे कहते हैं ?

सुवाल : कुफ़ू किसे कहते हैं ?

जवाब : मुह़ा-व-रए आ़म (या'नी आ़म बोलचाल) में फ़क़त़ हम क़ौम को **कुफ़ू** कहते हैं और शरअ़न वोह कुफ़ू है कि नसब या मज़्हब या पेशे या चाल चलन या किसी बात में ऐसा कम न हो कि उस से निकाह़ होना औलियाए ज़न (या'नी औ़रत के बाप दादा वग़ैरा) के लिये उ़र्फ़न बाइ़से नंगो आ़र (या'नी शरमिन्दगी व बदनामी का सबब) हो । (फ़तावा मलिकुल उ़-लमा, स. 206) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** में फ़रमाते हैं **:** किफ़ाअत (या'नी कुफ़ू होने) में छ[6] चीज़ों का ए'तिबार है **:** (1) नसब (सिल्सिलए ख़ानदान) (2) इस्लाम (3) ह़िर्फ़ा (पेशा) (4) ह़ुर्रिय्यत (आज़ाद होना) (5) दियानत (दीनदारी) (6) माल ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 53)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وَ الہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

कुफ़ू की तमाम शराइत़ की वज़ाह़त

(1) नसब का बयान

सुवाल : नसब में **कुफ़ू** होने से क्या मुराद है ?

जवाब : नसब में **कुफ़ू** होने से मुराद येह है कि ब ए'तिबार उ़र्फ़ लड़की के मुक़ाबले में लड़के का नसब या तो आ'ला हो या बराबर और अगर कुछ कम हो भी तो इतना कम न हो कि लड़की के औलिया (या'नी बाप दादा वग़ैरा) के लिये आ़र (ज़िल्लत) का बाइ़स बने। नसब के आ'ला (उ़म्दा) व अदना (कमतर) या बराबर है़सिय्यत के होने में कुछ तफ़्सील है : (1) कुरैश में जितने ख़ानदान हैं वह सब बाहम (या'नी आपस में) **कुफ़ू** हैं। यहां तक कि "कुरैशिये ग़ैरे हाशिमी" हाशिमी का **कुफ़ू** है। **फ़तावा र-ज़विय्या** में है : "सय्यिदानी का निकाह़ कुरैश के हर क़बीले से हो सकता है ख़्वाह अ़-लवी हो या अ़ब्बासी या जा'फ़री या सिद्दीक़ी या फ़ारूक़ी या उ़स्मानी या उ-मवी।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 716) (2) कोई "ग़ैरे कुरैशी" कुरैश का **कुफ़ू** नहीं (3) कुरैश के इ़लावा अ़रब की तमाम क़ौमें एक दूसरे की **कुफ़ू** हैं। अन्सार व मुहाजिरीन सब इस में बराबर हैं (4) **अ़-जमिय्युन्नस्ल** अ़-रबी का **कुफ़ू** नहीं मगर आ़लिमे दीन कि इस की

शराफ़त नसब की शराफ़त पर फ़ौक़िय्यत रखती है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 7, स. 53) (5) **अ़जम** की क़ौमों (या'नी ग़ैर अ़-रबिय्यों) में नसब के इ़लावा बाक़ी उमूर का किफ़ाअत में लिह़ाज़ किया जाएगा और अ़-जमी क़ौमों (को रज़ील या'नी घटिया क़रार देने) का अक्सर मदार (या'नी दारो मदार) पेशों (या'नी धन्दे रोज़गार) पर है। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 2, स. 132) लिहाज़ा उ़र्फ़ में किसी क़ौम को उस के पेशे की बिना पर कम ह़ैसिय्यत का समझा जाता हो तो येह बात भी लड़के के कुफ़ू न होने का बाइ़स होगी। (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 705)

अ़-जमी लड़का और अ़-रबी लड़की

सुवाल : अ़-जमी (या'नी ग़ैरे अ़-रबी) अ़-रबी का **कुफ़ू** है या नहीं ?

जवाब : अ़-जमिय्यों में से आ़लिमे दीन के इ़लावा कोई और अ़-रबी का **कुफ़ू** नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हि़स्सा 7 **सफ़्ह़ा** 53 पर फ़रमाते हैं : कुरैश में जितने ख़ानदान हैं वोह सब बाहम (या'नी आपस में) **कुफ़ू** हैं, यहां तक कि "क़-रशिये ग़ैरे हाशिमी" हाशिमी का **कुफ़ू** है और कोई "ग़ैरे क़-रशी" कुरैश का **कुफ़ू** नहीं। कुरैश के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

इलावा अ़रब की तमाम क़ौमें एक दूसरे की **कुफ़ू** हैं, अन्सार व मुहाजिरीन सब इस में बराबर हैं, अ़-जमिय्युन्नस्ल (या'नी ग़ैरे अ़-रबी) अ़-रबी का कुफ़ू नहीं मगर आ़लिमे दीन कि इस की "शराफ़त" नसब की शराफ़त पर फ़ौक़िय्यत रखती है। (فتاوٰی قاضی خان ج۱ ص۱۶۳،عالمگیری ج۱ ص ۲۹۰،۲۹۱)

आ़लिम की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 11 **सफ़ह़ा** 713 पर फ़रमाते हैं : फ़तावा ख़ैरिय्या में हैं कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا ने फरमाया : "उ़-लमा को आ़म मुअमिनीन पर सात सो (700) द-रजात बरतरी है और हर दो द-रजों में पानसो (500) साल का सफ़र है।" और इस पर इज्माअ़ है और तमाम इ़ल्मी कुतुब, क़ु-रशी पर आ़लिम के तक़द्दुम (फ़ौक़िय्यत) में मुत्तफ़िक़ हैं, जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इर्शाद "هَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَالَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ط" क्या आ़लिम और जाहिल बराबर हैं" (پ۲۳،الزمر ۹) में क़ु-रशी और ग़ैरे क़ु-रशी की कोई तफ़रीक़ (या'नी अ़ला-ह़-दगी) नहीं फ़रमाई। (فتاوٰی خیریہ ۲ ص ۲۳٤) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

फ़रमाते हैं : قُلْتُ (या'नी मैं कहता हूं), हम आ़लिम को "दीन का आ़लिम और दीनदार आ़लिम" से मुक़य्यद करेंगे क्यूं कि ह़क़ीक़तन आ़लिम येही है जब कि गुमराह (बद मज़्हब) उ़-लमा तो जाहिलों से बदतर हैं اھ। मज़ीद जिल्द 11 ही के **सफ़ह़ा** 714 पर फ़रमाते हैं : वोह आ़लिम इस क़ैद से भी **मुक़य्यद** होना ज़रूरी है कि वोह इन्तिहाई ह़क़ीर और कमतर मश्हूर न हो, जैसा कि जूलाहा, नाई, मोची, चमड़ा रंगने वाला और इन की मिस्ल, क्यूं कि दारो मदार इस बात पर है कि अ़लाक़े के उ़र्फ़ में वोह ह़क़ीर शुमार न हो, जैसा कि अकाबिर उ़-लमा ने तस्रीह़ फ़रमाई है। मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ने "**फ़त्हुल क़दीर**" में फ़रमाया कि अहले उ़र्फ़ का नाक़िस समझना सबब है लिहाज़ा हुक्म का दारो मदार इस पर ही होगा اھ। मज़ीद **सफ़ह़ा** 715 पर फ़रमाते हैं : जूलाहे, धोबी, नाई और मोची की आ़र (ऐ़ब व ख़ामी) इ़ल्म की वज्ह से ख़त्म नहीं होती, हां जब येह लोग क़दीम (या'नी अ़र्सए दराज़) से येह काम छोड़ चुके हों और लोग मुअ़ज़्ज़ज़ अन्दाज़ में इन से मानूस हो चुके हों और लोगों के दिलों में इन का वक़ार और आ़म निगाहों में इन की वक़्अ़त (इ़ज़्ज़त) क़ाइम हो चुकी हो कि अब बड़े लोगों की लड़कियों के लिये आ़र (या'नी रुस्वाई का सबब) नहीं रहे तो और बात है اھ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

मैमन और सय्यिदह का कोर्ट मेरेज

सुवाल : अगर सय्यिद ज़ादी ने बाप से छुप कर राज़ी ख़ुशी के साथ किसी मैमन लड़के से कोर्ट के ज़रीए़ शादी कर ली तो निकाह़ सह़ीह़ हो गया या नहीं ?

जवाब : ऐसी सूरत में निकाह़ **मुन्अ़क़िद** (या'नी क़ाइम) ही नहीं होगा इस लिये कि **सादाते किराम** का ख़ानदान **मैमन** बिरादरी से आ'ला व अरफ़अ़ है लिहाज़ा **मैमन** लड़का सय्यिद ज़ादी का **कुफ़ू** नहीं और जब लड़की **वली** की इजाज़त के बिग़ैर निकाह़ करे तो निकाह़ होने के लिये **कुफ़ू** का पाया जाना ज़रूरी है।

सुवाल : अगर शादी के बा'द घर वालों से सुल्ह़ हो गई और **सय्यिद ज़ादी** के वालिद साहिब ने बख़ुशी उस **निकाह़** पर रिज़ा मन्दी का इज़्हार कर दिया अब तो कोई ह़रज नहीं ?

जवाब : ह़रज क्यूं नहीं ! उस **सय्यिद ज़ादी** की रिज़ा मन्दी के साथ साथ उस के **वालिद साहिब** की रिज़ा मन्दी भी **निकाह़** से पहले ज़रूरी थी। **निकाह़** के बा'द की इजाज़त मुफ़ीद नहीं। शरीअ़त के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ नए सिरे से **निकाह़** करना होगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** "शर-अ़ में ग़ैर **कुफ़ू** वोह है कि नसब या मज़्हब या पेशे

या चाल चलन में ऐसा कम हो कि उस के साथ औ़रत का निकाह़ औलियाए ज़न (या'नी औ़रत के सर परस्तों) के लिये बाइ़से नंगो आ़र (या'नी ज़िल्लतो रुस्वाई का सबब) हो, ऐसे शख़्स से अगर बालिग़ा बत़ौरे ख़ुद निकाह़ करेगी निकाह़ होगा ही नहीं अगर्चे न वली (सर परस्त) ने मन्अ़ किया हो न उस के ख़िलाफ़े मरज़ी हो। येह निकाह़ उस सूरत में जाइज़ हो सकेगा कि वली ने पेश अज़ निकाह़ उस ग़ैरे कुफ़ू ब मा'ना मज़्कूर की ह़ालते मज़्कूरा पर मुत्त़लअ़ हो कर दीदा व दानिस्ता सरा-ह़तन बालिग़ा को उस के साथ निकाह़ करने की इजाज़त दे दी हो, इन में से एक शर्त़ भी कम हो तो बालिग़ा का किया हुवा वोह निकाह़ बात़िल मह़्ज़ होगा और वली को इस के फ़स्ख़ (मन्सूख़) करने या इस का फ़स्ख़ (मन्सूख़ी) चाहने की क्या ह़ाजत कि फ़स्ख़ (मन्सूख़, केन्सल) तो जब हो कि निकाह़ हो लिया हो, येह तो सिरे से हुवा ही नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 280)

सय्यिद ज़ादे और मैमन लड़की का कोर्ट मेरेज

सुवाल : अगर बालिग़ **सय्यिद ज़ादा** अपने वालिद साह़िब की इजाज़त के बिग़ैर अपने घर की बालिग़ा **मैमन नोकरानी** से कोर्ट में जा कर निकाह़ कर ले तो ?

जवाब : अगर कोई और मानेए़ शर-ई न हो तो **निकाह़** सह़ीह़ हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

जाएगा। मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 7 **सफ़्हा** 53 में है **:** "किफ़ाअत (या'नी कुफ़ू होना) सिर्फ़ मर्द की जानिब से मो'तबर है औ़रत अगर्चे कम द-रजे की हो इस का ए'तिबार नहीं। बाप दादा के सिवा किसी और वली (सर परस्त) ने ना बालिग़ लड़के का निकाह़ **ग़ैर कुफ़ू** से कर दिया तो निकाह़ सह़ीह़ नहीं। और बालिग़ अपना खु़द **निकाह़** करना चाहे तो **ग़ैरे कुफ़ू** औ़रत से कर सकता है कि औ़रत की जानिब से इस सूरत में किफ़ाअत मो'तबर नहीं और ना बालिग़ में दोनों से किफ़ाअत का ए'तिबार है।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा **:** 7, स. 53) येह मस्अला **निकाह़** के **मुन्अ़क़िद** होने की ह़द तक तो दुरुस्त है। अलबत्ता इस त़रह़ "कोर्ट मेरेज" करने से घरेलू मसाइल खड़े हो जाते और ख़ानदान की ठीकठाक बदनामी होती है येह भी पेशे नज़र रखना होगा। लिहाज़ा **निकाह़** मां बाप की रिज़ा मन्दी ही से किया जाए।

सुवाल : अगर किसी पठान लड़की ने राजपूत क़ौम के मुसल्मान लड़के से बिग़ैर इजाज़ते वली निकाह़ किया, क्या निकाह़ **मुन्अ़क़िद** हो जाएगा ?

जवाब : राजपूत मुअ़ज़्ज़ज़ क़ौम है लिहाज़ा अगर बाक़ी शराइते़ कुफ़ू पाए जाते हों और दीगर शराइते़ निकाह़ पाई जाएं तो निकाह़ हो जाएगा। फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में है **:** "हिन्दुवानी

क़ौमों में चार क़ौमें शरीफ़ गिनी जाती हैं इन में छतरी या'नी ठाकुर दूसरे नम्बर पर है, हिन्दुस्तान में अक्सर सल्तनत इसी क़ौम की है, व लिहाज़ा इन्हें "राजपूत" कहते हैं। तो हिन्दी क़ौमों में इन का मुअ़ज़्ज़ज़ होना ज़ाहिर है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 719) हां अगर लड़की किसी क़ौम के ऐसे लड़के से बिला इजाज़ते वली निकाह़ करे जो अपने पेशे (या'नी रोज़गार) की बिना पर उ़र्फ़ में मा'यूब समझे जाते हों तो ऐसी सूरत में निकाह़ न होगा ऐसी ही सूरत पर मुश्तमिल **फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल** से एक सुवाल जवाब मुला-ह़ज़ा कीजिये : **सुवाल** "हिन्दा जो क़ौम से पठान है और लड़का जो क़ौम से घांची या'नी मुस्लिम तेली है वोह हिन्दा के लिये **कुफ़ू** हो सकता है या नहीं ?" **जवाब** "किफ़ाअत का दारो मदार उ़र्फ़ पर है अगर वहां के उ़र्फ़ में पठान की लड़की का घांची या'नी मुस्लिम तेली से निकाह़ करना वालिदैन के लिये बाइ़से आ़र (रुस्वाई का सबब) हो तो फ़स्ख़े (या'नी मन्सूख़िये) निकाह़ की ज़रूरत (ही) नहीं कि मज़्हबे मुफ़्ता बिही[1] पर वोह निकाह़ सिरे से हुवा ही नहीं।"

(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 705)

1. "मज़्हबे मुफ़्ता बिही" येह फ़िक़्ही इस्तिलाह़ है इस के मा'ना हैं : वोह मज़्हब जिस पर फ़तवा दिया जाता है।

ग़ैरे सय्यिद और सय्यिदह का निकाह़

सुवाल : अगर ग़ैरे सय्यिद पठान और आ़क़िला बालिग़ा सय्यिद ज़ादी का निकाह़ लड़की के वालिद की रिज़ा मन्दी से हुवा तो ?

जवाब : सय्यिद ज़ादी और इन के वालिदे मोह़तरम को दूल्हे के पठान होने का इ़ल्म है और दोनों ही या'नी शहज़ादी साहि़बा और इन के वालिदे मोह़तरम इस **निकाह़** पर राज़ी हैं इस सूरत में ऐसा **निकाह़** बिला शुबा जाइज़ है। इस ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 11 **सफ़ह़ा** 704 से एक "सुवाल जवाब" मुला-ह़ज़ा हो। **सुवाल : पठान** के लड़के का **सय्यिद** की लड़की से **निकाह़** जाइज़ है या नहीं ? بَیِّنُوا تُوجَرُوا (या'नी बयान फ़रमाइये अज्र कमाइये)। **अल जवाब :** साइले मुज़्हिर (या'नी सुवाल पूछने वाले के बयान से ज़ाहिर है) कि लड़की जवान है और उस का बाप ज़िन्दा, दोनों को मा'लूम है कि येह पठान है और दोनों इस अ़क़्द (निकाह़) पर राज़ी हैं, बाप ख़ुद उस के सामान में है, जब सूरत येह है तो इस निकाह़ के जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) में अस्लन (या'नी बिल्कुल) शुबा नहीं كَمَا نَصَّ عَلَیْہِ فِی رَدِّالْمُحتار وغیرہ مِنَ الْاَسْفَار (या'नी जैसा कि रद्दुल मुह़तार वग़ैरा कुतुब में इस पर नस है) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है। (ابن عساکر)

(2) इस्लाम में कुफ़ू होना

सुवाल : कुफ़ू होने में इस्लाम का भी ए'तिबार है इस से क्या मुराद है ?

जवाब : ब ए'तिबारे इस्लाम **कुफ़ू** की सूरत बयान करते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** में फ़रमाते हैं **:** "जो ख़ुद मुसल्मान हुवा या'नी उस के बाप दादा मुसल्मान न थे वोह उस का **कुफ़ू** नहीं जिस का बाप मुसल्मान हो और जिस का सिर्फ़ बाप मुसल्मान हो (वोह) उस का **कुफ़ू** नहीं जिस का दादा भी मुसल्मान हो और बाप दादा दो पुश्त से इस्लाम हो तो अब दूसरी त़रफ़ अगर्चे ज़ियादा पुश्तों से इस्लाम हो **कुफ़ू** हैं मगर बाप दादा के **इस्लाम** का ए'तिबार "ग़ैरे अ़रब" में है। अ़-रबी के लिये ख़ुद मुसल्मान हुवा या बाप दादा से **इस्लाम** चला आता हो सब बराबर हैं।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 54)

मुसल्मान लड़की का नौ मुस्लिम से निकाह़

सुवाल : काफ़िर लड़के और मुसल्मान लड़की में अगर इ़श्क़ हो और लड़का मुसल्मान हो जाए फिर दोनों कोर्ट में जा कर आपस में शादी कर लें तो शरअ़न क्या हुक्म है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

जवाब : मुसल्मान हो जाना मरह़बा ! मगर शादी के लिये यहां भी किफ़ाअत (या'नी कुफ़ू होना) ज़रूरी है लिहाज़ा मज़्कूरा सूरत में अगर लड़की **वली** की इजाज़त के बिग़ैर नौ मुस्लिम से निकाह़ करेगी तो निकाह़ ही नहीं होगा। येह हुक्म उस सूरत में है जब कि लड़की नौ मुस्लिम न हो बल्कि मुसल्मान के घर पैदा हुई हो।

(3) पेशे (काम धन्दे) में कुफ़ू होना

सुवाल : पेशे (या'नी profession) में **कुफ़ू** होने से क्या मुराद है ?

जवाब : पेशे में **कुफ़ू** होने से मुराद येह है कि लड़का ऐसे पेशे (या'नी रोज़गार) से वाबस्ता न हो जिस को उ़र्फ़ में ह़क़ीर समझा जाता हो और इस बिना पर लड़की के औलिया आ़र (या'नी ज़िल्लत) महसूस करते हों। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हि़स्सा 7 **सफ़ह़ा** 55 पर फ़रमाते हैं **:** जिन लोगों के पेशे (काम धन्दे) ज़लील समझे जाते हों वोह अच्छे पेशे (काम धन्दे) वालों के कुफ़ू नहीं, म-सलन जूता बनाने वाले (या'नी मोची), चमड़ा पकाने वाले (या'नी चमार), साईस (या'नी घोड़ों की देखभाल करने वाले और) चरवाहे येह उन के कुफ़ू नहीं जो कपड़ा बेचते, इ़त्र फ़रोशी करते, तिजारत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشكوال)

करते हैं और अगर ख़ुद जूता न बनाता हो बल्कि कारख़ाने दार है कि उस के यहां लोग नोकर हैं (और वोही नोकर) येह काम करते हैं या दुकानदार है कि बने हुए जूते लेता और बेचता है तो ताजिर वग़ैरा का **कुफ़ू** है। यूहीं और कामों में।

ताजिर की लड़की का कुफ़ू है या नहीं ?

सुवाल : जो ह़ज्जाम या मोची है वोह "ताजिर" की लड़की का **कुफ़ू** है या नहीं ?

जवाब : नहीं है।

ह़ज्जाम और मोची का आपस में कुफ़ू होना

सुवाल : ह़ज्जाम की लड़की और **मोची** का लड़का एक दूसरे के **कुफ़ू** हैं या नहीं ?

जवाब : जिन पेशों (काम धन्दों) को ह़क़ीर समझा जाता है उन से वाबस्ता अफ़राद एक दूसरे के **कुफ़ू** होते हैं लिहाज़ा **ह़ज्जाम** की लड़की और **मोची** का लड़का एक दूसरे के **कुफ़ू** हैं।

(ماخوذ ازرد المحتار ج٤ ص ٢٠٣)

सुवाल : ताजिर की लड़की ने रह़मानी या'नी **कुम्हार** के लड़के से बिला इजाज़ते **वली** निकाह़ किया लेकिन लड़के के वालिद अब अपना पेशा या'नी मिट्टी के बरतन वग़ैरा बनाना छोड़ कर तिजारत से वाबस्ता हैं और अपना आबाई पेशा छोड़ चुके हैं क्या इस सूरत में **निकाह़** दुरुस्त है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

जवाब : अगर तो ऐसा है कि किसी जगह रह़मानी क़ौम या'नी कुम्हार से वाबस्ता अफ़राद अ़र्सए दराज़ से मिट्टी के बरतन बनाने छोड़ चुके हैं और तिजारत या किसी और मुअ़ज़्ज़ज़ पेशे से वाबस्ता हो चुके हों और अब लोगों के दिलों में येह मुअ़ज़्ज़ज़ समझे जाते हों तो निकाह़ दुरुस्त है वरना नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जूलाहे, धोबी, नाई और मोची की आ़र (ऐ़ब व ख़ामी) इ़ल्म की वज्ह से ख़त्म नहीं होती, हां जब येह लोग क़दीम (या'नी अ़र्सए दराज़) से येह काम छोड़ चुके हों और लोग मुअ़ज़्ज़ज़ अन्दाज़ में इन से मानूस हो चुके हों और लोगों के दिलों में इन का वक़ार और आ़म निगाहों में इन की वक़्अ़त (इ़ज़्ज़त) क़ाइम हो चुकी हो कि अब बड़े लोगों की लड़कियों के लिये आ़र (या'नी रुस्वाई का सबब) नहीं रहे तो और बात है اِلخ ।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 11, स. 715)

(4) दियानत में कुफ़ू होना

सुवाल : दियानत में **कुफ़ू** होने से क्या मुराद है ?

जवाब : दियानत से मुराद तक़्वा, मकारिमे अख़्लाक़ (या'नी अख़्लाक़ी ख़ूबियां) और दुरुस्त अ़क़ाइद में हम पल्ला होना है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

सुवाल : फ़ासिक़ बाप की सालिहा (या'नी नेक परहेज़ गार) लड़की बिला इज़्ने वली फ़ासिक़ से निकाह़ कर ले तो निकाह़ होगा या नहीं ?

जवाब : ऐसा निकाह़ हो जाएगा। (رَدُّالْمُحتار ج٤ ص٢٠٢)

फ़ासिक़ और बिन्ते मुत्तक़ी

सुवाल : एक नौ जवान शराब पीता है और उस का येह अ़मल लोगों में मा'रूफ़ है येह शराबी लड़का, मुत्तक़ी परहेज़ गार बाप की बेटी का **कुफ़ू** है या नहीं ?

जवाब : कुफ़ू नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 7 **सफ़ह़ा** 54 पर फ़रमाते हैं : फ़ासिक़ शख़्स मुत्तक़ी (या'नी परहेज़ गार) की लड़की का **कुफ़ू** नहीं अगर्चे वोह लड़की खुद मुत्तक़िय्या (या'नी परहेज़ गार) न हो। (دُرِّمُختار ج٤ ص ٢٠١ وغیرہ) और ज़ाहिर है कि फ़िस्क़े ए'तिक़ादी (अ़क़ाइद की ख़राबी) फ़िस्क़े अ़-मली (आ'माल की ख़राबी) से ब द-र-जहा (या'नी कई द-रजे) बदतर, लिहाज़ा सुन्नी औ़रत का **कुफ़ू** वोह बद मज़्हब नहीं हो सकता जिस की बद मज़्हबी ह़द्दे कुफ़्र को न पहुंची हो और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

जो बद मज़्हब ऐसे हैं कि उन की बद मज़्हबी **कुफ़्र** को पहुंची हो (या'नी मुरतद हो चुके हों), उन से तो निकाह़ ही नहीं हो सकता कि वोह मुसल्मान ही नहीं, **कुफ़ू** होना तो बड़ी (दूर की) बात है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 54)

(5) माल में किफ़ाअत (या'नी कुफ़ू होना)

सुवाल : माल में कुफ़ू होने से क्या मुराद है ?

जवाब : माल में किफ़ाअत (या'नी कुफ़ू होने) के येह मा'ना हैं कि मर्द के पास इतना माल हो कि महरे मुअ़ज्जल (या'नी नक़्द मह्र) और न-फ़क़ा (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा) देने पर क़ादिर हो, अगर पेशा (धन्दा) न करता हो तो एक माह का न-फ़क़ा देने पर क़ादिर हो, वरना रोज़ की मज़दूरी इतनी हो कि औ़रत के रोज़ के ज़रूरी मसारिफ़ (या'नी अख़्राजात) रोज़ दे सके। इस की ज़रूरत नहीं कि माल में येह उस के बराबर हो।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, स. 54)

कुफ़ू से मु-तअ़ल्लिक़ मु-तफ़र्रक़ात

सुवाल : क्या ना बालिग़ और ना बालिग़ा के निकाह़ के लिये भी **कुफ़ू** की ह़ाजत रहती है ?

जवाब : ना बालिग़ लड़का या लड़की ख़ुद ईजाब व क़बूल की अहलिय्यत नहीं रखते इन के निकाह़ के लिये **वली** ही ईजाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

व क़बूल करता है लिहाज़ा **ना बालिग़** का निकाह़ तो **वली** के बिग़ैर हो ही नहीं सकता अलबत्ता बा'ज़ सूरतों में यहां भी लड़के का **कुफ़ू** होना निकाह़ के लिये शर्त़ है। म-सलन एक सूरत येह है कि **ना बालिग़ा** लड़की का निकाह़ जब बाप दादा की ग़ैर मौजू-दगी में कोई और **वलिये अब्अ़द** (या'नी दूर का वली) करे तो **कुफ़ू** का होना ज़रूरी है। इसी त़रह़ **ना बालिग़ा** का निकाह़ बाप सिर्फ़ एक ही मर्तबा **ग़ैरे कुफ़ू** में कर सकता है इस एक का निकाह़ कर देने के बा'द अब अपनी किसी और बेटी का निकाह़ भी **ग़ैरे कुफ़ू** में करे तो इस का उसे इख़्तियार नहीं। चुनान्चे **ना बालिग़ा** के निकाह़ के मु-तअ़ल्लिक़ मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 11 **सफ़ह़ा** 717 पर फ़रमाते हैं **:** और अगर **ना बालिग़ा** है और उस का निकाह़ बाप दादा के सिवा कोई वली अगर्चे ह़क़ीक़ी भाई या चचा या मां ऐसे शख़्स से कर दे (जो कि ना बालिग़ा लड़की से कमतर हो) तो वोह भी बात़िल व मरदूद होगा और बाप दादा भी एक ही बार (ना बालिग़ा का) ऐसा निकाह़ कर सकते हैं (जिस में लड़का, लड़की से कमतर हो) दोबारा अगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

किसी दुख़्तर का निकाह़ ऐसे (कमतर) शख़्स से करेंगे तो उन का किया हुवा (निकाह़) भी बात़िल होगा।

सुवाल : लड़की ने एक शख़्स के साथ बिला इजाज़ते औलिया निकाह़ किया। वक़्ते निकाह़ वोह लड़की का **कुफ़ू** था लेकिन बा'द में **बद चलन** हो गया और सरे आ़म शराबें पीने लगा ! क्या इस इक़्दाम में **निकाह़** पर कोई असर पड़ेगा ?

जवाब : सिर्फ़ वक़्ते निकाह़ **कुफ़ू** का ए'तिबार किया जाता है पूछी गई सूरत में लड़का जब वक़्ते निकाह़ लड़की का **कुफ़ू** था तो निकाह़ **मुन्अ़क़िद** हो गया और बा'द में लड़के के **बद चलन** होने से निकाह़ के इन्इक़ाद पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। **फ़तावा र-ज़विय्या** में है : "किफ़ाअत का ए'तिबार इब्तिदाए निकाह़ के वक़्त है अगर उस वक़्त **कुफ़ू** हो फिर किफ़ाअत जाती रहे तो उस का लिहाज़ न होगा।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 704)

सुवाल : ज़ैद ने बक्र को हर त़रह़ से इत़्मीनान दिलाया कि वोह बक्र का **कुफ़ू** है उस की बातों का ए'तिमाद करते हुए और ज़ैद को अपना **कुफ़ू** जानते हुए बक्र ने अपनी ना बालिग़ा लड़की हिन्दा का निकाह़ ज़ैद के साथ कर दिया निकाह़ के कुछ दिन बा'द मा'लूम हुवा कि ज़ैद **कुफ़ू** नहीं। इस सूरत में निकाह़ हो गया या नहीं ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

जवाब : जब औलिया ने किसी से लड़की का निकाह़ बशर्ते कफ़ाअत किया या'नी इस शर्त़ के साथ कि तुम लड़की के **कुफ़ू** हो बा'द में लड़का **कुफ़ू** न निकला तो मज़्हबे मुफ़्ता बिही में ऐसा निकाह़ **मुन्अ़क़िद** ही न हुवा।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 725, 728)

सुवाल : अगर कोई बालिग़ा लड़की अज़ ख़ुद बिला इजाज़ते औलिया अपना निकाह़ किसी ऐसे शख़्स से करे जिस ने ग़लत़ बयानी और धोका देही से काम लेते हुए अपने आप को उस लड़की का **कुफ़ू** बताया म-सलन लड़की **सय्यिदह** थी लड़के ने वक़्ते निकाह़ अपना **सय्यिद** होना ज़ाहिर किया लेकिन बा'दे निकाह़ ह़क़ीक़त खुल कर सामने आई कि वोह शख़्स **सय्यिद** नहीं बल्कि **शैख़** बिरादरी से है ऐसी सूरत में निकाह़ दुरुस्त हुवा या नहीं ?

जवाब : अगर सूरत वाक़ेई येही थी कि बालिग़ा लड़की ने औलिया की इजाज़त के बिग़ैर जिस से निकाह़ किया उस ने झूट बोल कर अपना **कुफ़ू** होना ज़ाहिर किया बा'दे निकाह़ उस का **ग़ैर कुफ़ू** होना साबित हुवा तो शरअ़न ऐसा निकाह़ **मुन्अ़क़िद** ही नहीं हुवा बल्कि येह निकाह़ बात़िल है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 702, 703)

दूसरे को बाप बना लेना

याद रहे ! अपने ह़क़ीक़ी बाप को छोड़ कर किसी दूसरे को अपना बाप बताना या अपने ख़ानदान व नसब को छोड़ कर किसी दूसरे ख़ानदान से अपना नसब जोड़ना ह़राम और जन्नत से मह़रूम कर के दोज़ख़ में ले जाने वाला काम है। इस बारे में बड़ी सख़्त वईदें ह़दीसों में आई हैं चुनान्चे दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो अपने बाप के ग़ैर को अपना बाप बनाने का दा'वा करे ह़ालां कि वोह जानता है कि वोह उस का बाप नहीं है तो उस पर **जन्नत ह़राम** है। (بُخاری ج٤ ص٣٢٦ حدیث٦٧٦٦)

शादी कार्ड में बाप का नाम ग़लत़ डालना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो ले पालक बच्चे का दिल रखने के लिये उस पर अपने आप को ह़क़ीक़ी बाप ज़ाहिर करते हैं और वोह भी बेचारा उ़म्र भर उसी को अपना ह़क़ीक़ी बाप समझता है, अपने सच्चे बाप को ईसाले सवाब और उस के लिये दुआ़ करने तक से मह़रूम रहता है। याद रखिये ! ज़रूरी दस्तावेज़ात, शनाख़्ती कार्ड, पासपोर्ट और शादी कार्ड वग़ैरा में भी ह़क़ीक़ी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

बाप की जगह मुंह बोले बाप का नाम लिखवाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। त़लाक़ शुदा या बेवा औ़रतें भी अपने अगले घर के बच्चों को उन के ह़क़ीक़ी बाप के **मु-तअ़ल्लिक़** अंधेरे में रख कर आख़िरत की बरबादी का सामान न करें। आ़म बोलचाल में किसी को **अब्बाजान** कह देने में ह़रज नहीं जब कि सब को मा'लूम हो कि यहां "जिस्मानी रिश्ता" मुराद नहीं। हां अगर ऐसे "अब्बाजान" को भी किसी ने सगा बाप ज़ाहिर किया तो गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : आज कल बे शुमार लोग अपने आप को **सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी व उ़स्मानी व सय्यिद** कहने लगे हैं ! उन्हें सोचना चाहिये कि वोह लोग ऐसा कर के कितने बड़े गुनाह के दलदल में फंसे हुए हैं। ख़ुदा वन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को सिरात़े मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इस ह़राम व जहन्नमी काम से उन लोगों को तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन) (जहन्नम के ख़त़रात, स. 182, मुलख़्ख़सन)

सुवाल : मज़्हबी आदमी या लड़के को लड़की देना हमारे मुआ़-शरे में उ़र्फ़न مَعَاذَاللّٰہ आ़र समझा जाता है और ऐसे निकाह़ के

मु-तअ़ल्लिक़ कहा जाता है कि फुलां की लड़की को किसी ने नहीं लिया तो मौलवी के खाते में डाल दी ! ऐसी सोच रखना कैसा है और क्या इस आ़र का कुफ़ू में ए'तिबार किया जाएगा ?

जवाब : जो सोच कुरआनो ह़दीस से टकराती हो वोह सरासर बात़िल होती है और ऐसी सोच की हरगिज़ रिआ़यत नहीं की जा सकती । शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने तो सोच ही येह दी है कि निकाह़ करते वक़्त मज़्हब और दीन को तरजीह़ दो चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रत से निकाह़ चार बातों की वज्ह से किया जाता है (या'नी निकाह़ में इन का लिह़ाज़ होता है) (1) माल व (2) ह़सब व (3) जमाल व (4) दीन । और तू दीन वाली को तरजीह़ दे ।"

(صَحِیحُ البُخارِیّ ج ۳ ص۴۲۹ حدیث ۵۰۹۰)

मज़्कूरा ह़दीस गो लड़की के इन्तिख़ाब के ए'तिबार से है लेकिन शरीअ़त के मक़्सूद और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द और ख़ुशनूदी की भी ख़बर देती है कि दीनदारी को तरजीह़ दी जाए लिहाज़ा लड़के के इन्तिख़ाब में जब कुफ़ू की दीगर शराइत़ पूरी हों तो मज़्हबी लड़के ही को तरजीह़ दी जाए और सुवाल में दर्ज सोच को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

हरगिज़ न अपनाया जाए। फ़िस्क़ो फ़ुजूर वालों में रिश्ता करने वाले दुन्यावी त़ौर पर अपने फ़े'ल को कितना ही अच्छा समझते हों लेकिन इस में आख़िरत का नुक़्सान ही नुक़्सान है। एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिस ने अपनी लड़की शराबी के निकाह़ में दी गोया उस ने अपनी लड़की को ज़िना में झोंक दिया।" क्यूं कि शराबी जब नशे में होता है तो कई दफ़्आ़ त़लाक़ वाक़ेअ़ होने वाली बातें करता है यूं उस पर बीवी ह़राम हो जाती है जब कि उसे पता ही नहीं होता। (تَنۡبِیۡہُ الغافِلِین ص۸۱)

सुवाल : इस्लाम ने तो येह दर्स दिया है कि गोरे को काले और काले को गोरे पर फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं फिर कुफ़ू के मुआ़-मले में ज़ात और बिरादरी का इतना क्यूं लिह़ाज़ किया जाता है ?

जवाब : इस्लाम ने जो येह कहा है कि गोरे को काले और काले को गोरे पर फ़ज़ीलत नहीं इस से मुराद येह है कि तमाम मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त आबरू जान माल की ह़िफ़ाज़त बिग़ैर किसी फ़र्क़ के की जाए और एह़तिराम और इ़ज़्ज़त में किसी को घटिया न समझा जाए यूंही **अल्लाह** और उस के **रसूल** के जो अह़काम हैं उस पर अ़मल करने में भी तमाम बराबर हैं गोरे को काले और काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं। इस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

बात की भी गुन्जाइश नहीं कि ग़रीब जुर्म करे तो उसे सज़ा मिले और अमीर जुर्म करे तो उसे छोड़ दिया जाए तो सुवाल में इस्लाम के जिस फ़ल्सफ़े का ज़िक्र हुवा वोह बिल्कुल ह़क़ है लेकिन उस की मुराद क्या है येह ज़िक्र कर दी गई। अब रहा मुआ़-मला **कुफ़ू** में ज़ात, बिरादरी और पेशा धन्दा वग़ैरा देखने का। अव्वल तो येह कि इस का ए'तिबार करने का हुक्म भी इस्लाम ही ने दिया है रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपनी लड़कियों का निकाह़ न करो मगर सिर्फ़ **कुफ़ू** में।" (السّنن الکبرٰی للبیہقی ج۷ ص۲۱۵ حدیث ۱۳۷۶۰)

तिरमिज़ी शरीफ़ में **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि ताजदारे **मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तीन चीज़ों में ताख़ीर न करो (1) नमाज़ का जब वक़्त आ जाए (2) जनाज़ा जब मौजूद हो (3) बे शोहर वाली के निकाह़ में जब **कुफ़ू** मिल जाए। (ترمذی ج۲ ص۳۳۹ حدیث ۱۰۷۷)

दूसरी बात येह है कि चूंकि शादी एक ज़िन्दगी भर रहने वाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

बन्धन का नाम है जिस में ज़ेह्नी हम आहंगी और मिज़ाज के मिलने का ए'तिबार और लिह़ाज़ करना एक ज़रूरी चीज़ है। किसी भी जोड़े की काम्याब ज़िन्दगी के लिये सिर्फ़ येही नहीं कि उन दोनों के दरमियान इत्तिफ़ाक़ और हम आहंगी होना ज़रूरी है बल्कि दोनों त़रफ़ के ख़ानदानों में भी हम आहंगी होना ज़रूरी है। और **कुफ़ू** का ए'तिबार इस मक़्सूद के हुसूल में मुआ़विन व मददगार होता है। इसी बिना पर इस की रिआ़यत करने का हुक्म है।

तीसरी बात येह है **कुफ़ू** का ए'तिबार दर ह़क़ीक़त ह़क़्क़े औलिया की बिना पर है या'नी बाप दादा वग़ैरा चूंकि सर परस्त होते हैं। **कुफ़ू** की रिआ़यत न किये जाने पर लोगों के त़ा'नो तश्नीअ़ का येही लोग हदफ़ बनते हैं और इन्हें जिस आ़र (रुस्वाई) का सामना करना पड़ता है वोह किसी से पोशीदा नहीं। इस बिना पर इन को आ़र (ज़िल्लत) से बचाने के लिये खु़द इन्हें **कुफ़ू** का ए'तिबार करने का हुक्म दिया गया। और अगर लड़की उन की इजाज़त के बिग़ैर कहीं और ग़ैर कुफ़ू में निकाह़ कर लेती है तो ह़क़्क़े औलिया की रिआ़यत न होने की बिना पर निकाह़ के मुन्अ़क़िद न होने का हुक्म दिया गया।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मियां बीवी का एक दूसरे पर शक करना कैसा ?

सुवाल : मियां बीवी का शक की वज्ह से एक दूसरे पर बदकारी की **तोहमत** रखना कैसा ?

जवाब : कबीरा गुनाह, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। आज कल येह मुसीबत आ़म है। बा'ज़ लोग शुकूक व शुबुहात में पड़ कर **बद गुमानी** और **बोहतान** तराशी कर के अपना आबाद घर अपने ही हाथों बरबाद कर बैठते हैं। शक की बिना पर कभी मियां अपनी बीवी को ज़ानिया कहता और कभी बीवी अपने शोहर को ग़ैर औ़रत के साथ मन्सूब समझती है, दोनों मह़ज़ शक की वज्ह से एक दूसरे के सर तोहमत धरते, उलझते और अपने ख़ानदान पर वोह बदनुमा धब्बा लगा बैठते हैं कि सात समुन्दर का पानी भी बदनामी के इस दाग़ को न धो पाए ! ऐसे लोगों को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से डरना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **اِنَّ قَذْفَ الْمُحْصَنَةِ يَهْدِمُ عَمَلَ مِائَةِ سَنَةٍ** या'नी किसी पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना सो साल की नेकियों को बरबाद करता है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانِی ج ۳ ص ۱۶۸ حدیث ۳۰۲۳)

इस ह़दीसे पाक से उन शोहरों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो सिर्फ़ शक की बिना पर अपनी पारसा बीवियों पर तोह्मते ज़िना बांध बैठते हैं। नीज़ वोह औ़रतें भी इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने शोहरों के बारे में त़रह़ त़रह़ की बातें करती हैं ह़त्ता कि उन पर ज़िनाकारी का इल्ज़ाम धरती हैं और हर त़रफ़ इस त़रह़ कहती फिरती हैं, घर पर तो वक़्त देता नहीं, बस अपनी "रखाउ" के पास पड़ा रहता है, सारे पैसे उसी को दे आता है, उस के साथ "काला मुंह" करता है। वग़ैरा

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

किसी को रन्डी कहना कैसा ?

सुवाल : आज कल बा'ज़ औ़रतें गुस्से में आ कर एक दूसरी को "रन्डी" की गाली देती हैं, इस का क्या वबाल है ?

जवाब : येह बात सख़्त दिल दुखाने वाली बहुत ही बड़ी और बुरी गाली है, और दोज़ख़ में ले जाने वाली है।

गाली की दुन्यवी सज़ा

जो लोग बात बात पर गन्दी गालियां निकालने के आ़दी हैं वोह येह न समझें कि उन की कोई पकड़ ही नहीं (मुरव्वजा

हर गाली लिखना मुम्किन नहीं दो मिसालें अ़र्ज़ करता हूं) म–सलन अगर किसी को व–लदुज़्ज़िना या ज़िना की औलाद कहा या किसी पाक दामन औ़रत को ज़ानिया कह दिया (जैसा कि औ़रतें उ़मूमन एक दूसरी को गुस्से में आ कर कह दिया करती हैं) येह सब तोह्मतें और ह़राम व गुनाहे कबीरा हैं। यहां येह दलील नहीं चलेगी कि "मैं ने तो यूं ही कह दिया मेरी निय्यत येह नहीं थी" **याद रखिये !** इस में आख़िरत का अ़ज़ाब तो है ही, दुन्या में भी बा'ज़ सूरतों में इस की सख़्त सज़ाएं हैं। म–सलन **किसी मर्द या औ़रत ने किसी पाक दामन मर्द को ज़िनाकार या औ़रत को ज़ानिया, कह दिया तो इस्लामी अ़दालत में मुक़द्दमा दाइर हो जाने की सूरत में अगर चार चश्म दीद गवाह पेश न कर सका तो ख़ुद उस तोहमत लगाने वाले को 80 कोड़े लगाए जाएंगे। और ऐसी तोहमत लगाने वाले की आयिन्दा किसी मुआ़–मले में कभी भी गवाही क़बूल न होगी।** (येह अह़काम मुह़सन या मुह़सना या'नी मुसल्मान मर्द व औ़रत आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़ पाक दामन को इल्ज़ाम लगाने के हैं) ज़िना की **तोहमत** को "क़ज़फ़" और **तोहमत** लगाने वाले को "क़ाज़िफ़" और इस्लामी अ़दालत से मिलने

वाली इस की सज़ा को ''ह़द्दे क़ज़्फ़'' कहते हैं। बहर ह़ाल ज़िना का इल्ज़ाम लगाने वाले मर्द या औ़रत को सिर्फ़ दो ही चीज़ें सज़ा से बचा सकती हैं ﴿1﴾ जिस पर इल्ज़ाम लगा है वोह अपने जुर्म का इक़्रार कर ले ﴿2﴾ या फिर **तोहमत** रखने वाला चार ऐसे गवाह ह़ाकिमे इस्लाम के रू बरू पेश करे जिन्हों ने अपनी आंखों से मर्द व औ़रत को ज़िना करते देखा हो और येह देखना इतना आसान कहां है और इस का सुबूत फ़राहम करना इस से भी मुश्किल तर। लिहाज़ा सलामती का रास्ता येही है कि अगर किसी को किसी की ज़िनाकारी का मा'लूम हो भी जाए तब भी पर्दे ही में रहने दे ताकि **गन्दगी** जहां है वहीं पड़ी रहे। वरना बोल पड़ने की सूरत में अगर **चार चश्म दीद गवाह** पेश न कर सका तो ''मक़्ज़ूफ़'' (या'नी जिस पर ज़िना की तोहमत लगी उस) के मुत़ा-लबे पर अपनी पीठ पर 80 कोड़े खाने के लिये तय्यार रहे। बहारे शरीअ़त में है : किसी अ़फ़ीफ़ा (या'नी पाक दामन) औ़रत को **रन्डी** कहा तो येह क़ज़्फ़ है और ''ह़द'' का मुस्तह़िक़ है कि येह लफ़्ज़ उन्हीं के लिये है जिन्हों ने ज़िना को पेशा कर लिया है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 116)

शक की बिना पर इल्ज़ाम मत लगाइये

ज़रा अन्दाज़ा तो लगाइये कि शरीअ़ते **मुत़ह्हरा** को मुसल्मान मर्द व औ़रत की इ़ज़्ज़त व आबरू किस क़दर अ़ज़ीज़ है और इन की नामूस की ह़िफ़ाज़त का कितना ज़बर दस्त एहतिमाम फ़रमाया है । बेशक वोह बहुत बुरे बन्दे हैं जो किसी मुसल्मान के बारे में मह़ज़ शक की बिना पर या सुने सुनाए ऐ़ब दूसरों के आगे बयान कर डालते हैं । वोह येह न समझें कि आज बिलफ़र्ज़ कोई पूछने वाला नहीं है तो कल क़ियामत में भी कुछ नहीं होगा । दो अह़ादीसे मुबा-रका सुनिये और ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से लरज़िये :

लोहे के 80 कोड़े

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना **इ़क्रमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक औ़रत ने अपनी बांदी को **ज़ानिया** कहा, (इस पर) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : तूने ज़िना करते देखा है ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं । फ़रमाया : **وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَتُجْلَدَنَّ لَھَا یَوْمَ الْقِیَامَۃِ ثَمَانِیْنَ** या'नी क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है क़ियामत के रोज़ इस की वज्ह से तुझे **80** कोड़े मारे जाएंगे ।

(مُصَنَّفُ عبدُالرَّزّاق ج ۹ ص ۳۲۰ حدیث ۱۸۲۹۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلٰی)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्नुल **मुसय्यब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : जो अपनी लौंडी को ज़िना की तोहमत लगाए उसे क़ियामत के रोज़ लोहे के **80** कोड़े मारे जाएंगे। (اَیضاً حدیث ۱۸۲۹۲)

ऐ़ब छुपाओ जन्नत में जाओ !

सुवाल : किसी का गुनाह मा'लूम हो जाए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : उस का पर्दा रखना चाहिये कि बिला मस्लह़ते शर–ई किसी दूसरे पर इस का इज़्हार करने वाला गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। मुसल्मानों का **ऐ़ब** छुपाने का ज़ेह्न बनाइये कि जो किसी का ऐ़ब छुपाए उस के लिये जन्नत की बिशारत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : **"जो शख़्स अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।"** (مُسنَدُ عَبدِ بنِ حُمَید ص۲۷۹ رقم ۸۸۵) लिहाज़ा जब भी हमें मा'लूम हो कि फ़ुलां ने مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़िना या लिवात़त का इरतिकाब किया है, बद निगाही की है, झूट बोला है, बद अ़हदी या ग़ीबत की है या कोई भी ऐसा जुर्म छुप कर किया है जिस को ज़ाहिर करने में कोई शर–ई मस्लह़त नहीं तो हमें उस का पर्दा रखना लाज़िम है और दूसरे पर ज़ाहिर करना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

गुनाह। यक़ीनन ग़ीबत और आबरू रेज़ी का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

ऐ़ब खोलने का अ़ज़ाब

सुवाल : ग़ीबत और आबरू रेज़ी की सज़ा भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : मे'राज की रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मन्ज़र येह भी देखा कि कुछ लोग तांबे के नाख़ुनों से अपने चेहरों और सीनों को नोच रहे थे। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार पर अ़र्ज़ की गई : "येह लोगों का गोश्त खाते थे (या'नी ग़ीबत करते थे) और लोगों की **आबरू रेज़ी** करते थे।" (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٣٥٣ حدیث ٤٨٧٨) मज़ीद तफ़्सीलात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब **ग़ीबत की तबाह कारियां** हदिय्यतन ह़ासिल कर के ज़रूर पढ़ लीजिये।

जादू टोना करवाने का इल्ज़ाम

सुवाल : आज कल आ़मिल की बातों में आ कर रिश्तेदार एक दूसरे के बारे में **जादू का बोहतान** रख देते हैं येह कैसा है ?

जवाब : किसी मुसल्मान पर **बोहतान** रखना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। आ़मिल के बताने या ख़्वाब या फ़ाल या इस्तिख़ारे के ज़रीए़ पता चलने को **शर-ई सुबूत** नहीं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

कहते कि जिस को बुन्याद बना कर किसी मुसल्मान की त़रफ़ इन गुनाहों को मन्सूब किया जा सके। यहां शर-ई सुबूत येह है कि या तो मुल्ज़िम ख़ुद इक़रार कर ले कि मैं ने जादू किया या करवाया है। या दो मुसल्मान मर्द या एक मुसल्मान मर्द और दो मुसल्मान ओ़रतें गवाही दें कि हम ने इस को ख़ुद जादू करते या करवाते देखा है।

बोहतान का अ़ज़ाब

सुवाल : जादू टोना कराने या मुख़्तलिफ़ त़रह़ के इल्ज़ामात रखने वाले की उख़रवी सज़ा भी बयान फ़रमा दीजिये ताकि मुसल्मान डरें और तौबा करें।

जवाब : दो रिवायात मुला-ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे **रह़मान** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो किसी मुसल्मान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक दोज़ख़ियों के कीचड़, पीप और ख़ून में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए।"

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۳ ص۴۲۷ حدیث ۳۵۹۷)

﴾2﴿ **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : किसी बे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

कुसूर पर बोहतान (इल्ज़ाम) लगाना आस्मानों से भी भारी गुनाह है। (نوادرالاصول للحکیم الترمذی ج۱ ص۹۳)

तौबा के तक़ाज़े पूरे कर लीजिये !

सुवाल : अगर किसी से इल्ज़ाम तराशी वग़ैरा के गुनाह हो गए हों वोह क्या करे ?

जवाब : अगर किसी ने महूज़ बद गुमानी या क़ियास के बाइस या सुनी सुनाई बातों में आ कर किसी पर ज़िना, लिवात़त, बद निगाही, चोरी, झूट, वा'दा ख़िलाफ़ी, जादू टोना करवाने वग़ैरा का **बोहतान** लगाने की ख़त़ा की है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तौबा करे और जिन जिन के आगे बोहतान लगाया है उन को भी अपनी ग़-लत़ी बता कर अपनी तौबा पर मुत्तलअ़ करे ताकि जिस ग़रीब को बिग़ैर सुबूते शर-ई के रुस्वा किया है उन की नज़रों में उस की इ़ज़्ज़त बह़ाल हो जाए। अगर साह़िबे मुआ़-मला (या'नी जिस पर इल्ज़ाम लगाया गया है उस) को भी मा'लूम हो गया है तो बसद नदामत उस से भी मुआ़फ़ी मांग कर उसे ख़ुश करे। यहां مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ानियों (और इग़लामियों वग़ैरा) की हौसला अफ़्ज़ाई नहीं है बल्कि उन को भी तौबा के तमाम तक़ाज़े पूरे करने ज़रूरी हैं वरना दुन्या व आख़िरत में उन के लिये "क़ाज़िफ़" (या'नी

ज़िना की तोहमत लगाने वाले) के मुक़ाबले में ज़ियादा सख़्त सज़ाएं हैं। इस त़रह़ के मुजरिम बल्कि हर त़रह़ का गुनाह करने वाले भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर तौबा करें। हु़क़ूक़ुल इ़बाद की पामाली की सूरत में इन की मुआ़फ़ी तलाफ़ी के तक़ाज़े भी पूरे करें वरना अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

बद गुमानी के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : दुआ़ या इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में किसी को रोता देख कर येह समझना कैसा कि येह सब को दिखाने के लिये रो रहा है!

जवाब : येह बद गुमानी है और मोमिने सालेह़ पर बद गुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** की आयत नम्बर 36 में इर्शाद फ़रमाता है **:**

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इ़ल्म नहीं, बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 26 **सू-रतुल हु़जुरात** की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہِ و اٰلہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (پ۲۶ الحجرات ۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए उमम** صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (लोगो !) बद गुमानी से बचो क्यूं कि बद गुमानी करना सब से झूटी बात है। (بخاری ج ۳ ص ۴۴۶ حدیث ۵۱۴۳) अइम्मए दीन رَحِمَهُمُ اللہُ الْمُبِین फ़रमाते हैं : ख़बीस गुमान ख़बीस दिल से पैदा होता है। (فیضُ القدیر للمناوی ج ۳ ص ۱۵۷ تحت الحدیث ۲۹۰۱)

रोने वाले पर बद गुमानी का नुक़्सान

ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल दिमश्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब तुम किसी को रोते देखो तो उस के साथ रोने लग जाओ येह **बद गुमानी** न करो कि वोह लोगों को दिखाने के लिये ऐसा कर रहा है। मैं ने एक बार एक शख़्स को रोता देख कर **बद गुमानी** की थी कि येह **रियाकारी** कर रहा है तो इस की सज़ा में एक साल तक (ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में) रोने से मह़रूम रहा।"

(تَنبِیہُ المُغتَرِّین ص ۱۰۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

मियां बीवी के ग़ुस्ले मय्यित के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : बीवी अपने मर्हूम शोहर को ग़ुस्ल दे सकती है या नहीं ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : औ़रत अपने शोहर को ग़ुस्ल दे सकती है जब कि मौत से पहले या बा'द कोई ऐसा अम्र न वाक़ेअ़ हुवा हो जिस से उस के निकाह़ से निकल जाए। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 812)

सुवाल : अपनी मर्हूमा बीवी को शोहर ग़ुस्ल दे सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं दे सकता। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : औ़रत मर जाए तो शोहर न उसे नहला सकता है न छू सकता है और देखने की मुमा-न-अ़त नहीं।

(ऐज़न, स. 813, دُرِّمُختار ج۳ ص۱۰۵)

सुवाल : क्या शोहर अपनी मर्हूमा बीवी का मुंह भी नहीं देख सकता ?

जवाब : मुंह देख सकता है। **बहारे शरीअ़त** में है : अ़वाम में जो येह मशहूर है कि शोहर औ़रत के जनाज़े को न कन्धा दे सकता है न क़ब्र में उतार सकता है न ही मुंह देख सकता है येह मह़्ज़ ग़लत़ है। सिर्फ़ नहलाने और उस के बदन को बिला ह़ाइल हाथ लगाने की मुमा-न-अ़त है।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 812)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सुवाल : मियां अपनी बीवी को नहीं नहला सकता जब कि बीवी अपने मियां को नहला सकती है इस में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : शोहर का मरने के फ़ौरन बा'द निकाह़ टूट जाता है जब कि औ़रत का इ़द्दत तक बा'ज़ अह़काम में निकाह़ बाक़ी रहता है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं **:** शोहर बा'दे वफ़ात अपनी औ़रत को देख सकता है मगर उस के बदन को छूने की इजाज़त नहीं, इस लिये कि मौत वाक़ेअ़ हो जाने से निकाह़ मुन्क़तेअ़ हो जाता (या'नी टूट जाता) है। और औ़रत जब तक **इ़द्दत** में है अपने शोहरे मुर्दा का बदन छू सकती है, उसे ग़ुस्ल दे सकती है जब कि इस से पहले **बाइन** (या'नी ऐसी त़लाक़ जिस में दोबारा निकाह़ की ज़रूरत हो सिर्फ़ रुजूअ़ कर लेने से काम न चल सकता हो) न हो चुकी हो, इस लिये कि इ़द्दत की वज्ह से औ़रत के ह़क़ में उस का निकाह़ बाक़ी रहता है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 234)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ उम्महातुल मुअमिनीन और बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का वासित़ा हमारी तमाम इस्लामी बहनों को चादरे ह़या नसीब कर और ह़क़ीक़ी म-दनी बुरक़अ़ के साथ शर-ई पर्दा करना नसीब फ़रमा। मेरी और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

त़ालिबे ग़मे मदीना
व
बक़ीअ़
व
मग़्फ़िरत
11 र-जबुल मुरज्जब 1430 हि.
24-6-2009

مآخذ ومراجع

1	قرآن پاک	ضیاء القرآن پبلی کیشنز	21	المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت
2	ترجمۂ کنز الایمان	ضیاء القرآن پبلی کیشنز	22	المعجم الاوسط	دار الکتب العلمیة بیروت
3	تفسیر مدارک	دارالمعرفة بیروت	23	الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیة بیروت
4	تفسیر درمنثور	دار الفکر بیروت	24	مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
5	تفسیرات احمدیه	پشاور	25	کنز العمال	دار الکتب العلمیة بیروت
6	روح البیان	کوئٹه	26	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیة بیروت
7	تفسیرسورۂ یوسف	فضل نور اکیڈمی	27	کشف الخفاء	دار الکتب العلمیة بیروت
8	خزائن العرفان	رضا اکیڈمی بمبئی هند	28	الکامل فی ضعفاء الرجال	دار الکتب العلمیة بیروت
9	نور العرفان	پیر بهائی اینڈ کمپنی	29	مصنف عبدالرزاق	دار الکتب العلمیة بیروت
10	صحیح بخاری	دار الکتب العلمیة بیروت	30	الفردوس بمأثور الخطاب	دار الکتب العلمیة بیروت
11	صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	31	الترغیب والترهیب	دار الکتب العلمیة بیروت
12	سنن ترمذی	دار الفکر بیروت	32	حلیة الاولیاء	دار الکتب العلمیة بیروت
13	سنن نسائی	دار الحیل بیروت	33	شرح مسلم للنووی	افغانستان
14	سنن ابو داود	دار احیاء التراث العربی بیروت	34	مرقاة المفاتیح	دار الفکر بیروت
15	سنن ابن ماجه	دار المعرفة بیروت	35	اشعة اللمعات	کوئٹه
16	سنن دار قطنی	مدینة الاولیاء ملتان	36	فیض القدیر	دار الکتب العلمیة بیروت
17	السنن الکبری	دار الکتب العلمیة بیروت	37	مراٰة المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
18	شعب الایمان	دار الکتب العلمیة بیروت	38	هدایه	دار احیاء التراث العربی بیروت
19	المستدرك	دار المعرفة بیروت	39	فتاوی قاضی خان	کوئٹه

20	مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	40	البحر الرائق	کوئٹہ
41	محیط برہانی	دار احیاء التراث العربی بیروت	60	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیة بیروت
42	بدائع الصَنائع	دار احیاء التراث العربی بیروت	61	المواہب اللدنیة	دار الکتب العلمیة بیروت
43	تبیین الحقائق	دار الکتب العلمیة بیروت	62	الرسالة القشیریہ	دار الکتب العلمیة بیروت
44	فتاوٰی عالمگیری	دار الفکر بیروت	63	روض الریاحین	دار الکتب العلمیة بیروت
45	درمختا ر	دار المعرفة بیروت	64	حلیة الاولیاء	دار الکتب العلمیة بیروت
46	رد المحتار	دار المعرفة بیروت	65	بحر الدموع	مکتبة دار الفجر دمشق
47	فتاوٰی خیریہ	باب المدینہ کراچی	66	تنبیہ المغترین	دار البشائر بیروت
48	مفاتیح الجنان	بیروت	67	تنبیہ الغافلین	پشاور
49	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	68	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
50	فتاوٰی امجدیہ	مکتبہ رضویہ باب المدینہ	69	اتحاف السادة	دار الکتب العلمیة بیروت
51	فتاوٰی ملك العلماء	المجمع الرضوی بریلی	70	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ تہران
52	فتاوٰی نعیمیہ	مکتبہ اسلامیہ	71	مکاشفة القلوب	دار الکتب العلمیة بیروت
53	وقار الفتاوٰی	بزم وقار الدین باب المدینہ	72	کتاب الکبائر	پشاور
54	فتاوٰی فیض الرسول	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور	73	تلبیسِ ابلیس	بیروت
55	بہارِ شریعت	مکتبة المدینہ باب المدینہ	74	تذکرة الاولیاء	انتشارات گنجینہ تہران
56	اَحکامِ شریعت	مکتبة المدینہ باب المدینہ	75	اخبار الاخیار	فاروق اکیڈمی
57	الملفوظ	مکتبة المدینہ باب المدینہ	76	جذب القلوب	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
58	شمائل محمدیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت	77	مدارج النبوت	مرکز اہلسنت برکات رضا
59	قرة العیون	کوئٹہ	78	جہنم کے خطرات	مکتبة المدینہ باب المدینہ

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा